Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. CC-NC-SA. Kashi Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112-3-20

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा - पुस्तक

१८५५ ई०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षासुधा

112720

हमारा हिय हुलसाए।

रचयिता—श्री० महेन्द्र सागर प्रचंडिया

नयी जान देकर बदली
मानव की मानवता।
आज मनुजता की कूँची से
दी बुहार चिर दानवता ॥१॥

इसी वर्ष की वर्ष गाँठ पर
आज मनुज मन हर्षित है।
बदली जिससे प्रकृति प्रकृति
की छटा वस्तुतः दर्शित है ॥२॥

इसे सँभालो करो अर्चना
देव मही मुसकाए।
लिए हुए आँगन पर मोहक
उषा किरन छिटकाए॥
हमारा हिय हुलसाए॥३॥

जनवरी १९५५ ई०

प्रति अंक मूल्य १) इस अंक का =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

संस्थापक
स्व रामकुमार अग्रवाल

सम्पादक
वीरेन्द्र कुमार
बी० ए० विशारद

इस अंक में

१	श्रद्धा दीप	श्री रघुनाथ प्रसाद साधक	१
२	भारतवर्ष के विद्यालय और शिक्षा प्रणाली	श्री सत्यनारायण शर्मा	२
३	गीत	श्री सरोज एम० ए०	३
४	काना कौआ	सोवियत भूमि से	४
५	महामना मालवीय जी	श्री प्रेम नारायण दुबे प्रेमी	७
६	विज्ञान के चमत्कार	यू० एस० आई० एस०	९
७	आज मन मदमत्त गाले	श्री भुवनेश्वर प्रताप शर्मा भुवनेश	११
८	युग परिवर्तन	श्री प्रचंडिया एम० ए०	१४

बाल-मण्डल

९	टुन्नु का घोड़ा		१७
१०	भाग्य चक्र	श्री रामाधार शुक्ल	१८
११	पहेली	श्री शिवेन्दु	२१

प्रिय पाठक गण !

अति हर्ष का विषय है कि श्री रामनारायण जी मिश्र विशारद शिक्षा सुधा परिवार में फिर सम्मिलत हो गये हैं। पहले भी वे कई वर्ष अपने लेखों और कविताओं द्वारा पाठकों की सेवा कर चुके हैं। आगामी मास से वह अपना एक लेख भी प्रतिमास देंगें। आशा है उनके संपादकत्व में सुधा के पाठकों को और रूचिकर सामग्री मिलेगी।

—संचालक

वार्षिक मूल्य
एक रुपया।

गुप्ता ब्रदर्स, पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, मण्डी धनौरा

एक प्रति
दो आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112720

शिक्षा-सुधा

कलश १८, बून्द ७—जनवरी १९५५ ई०

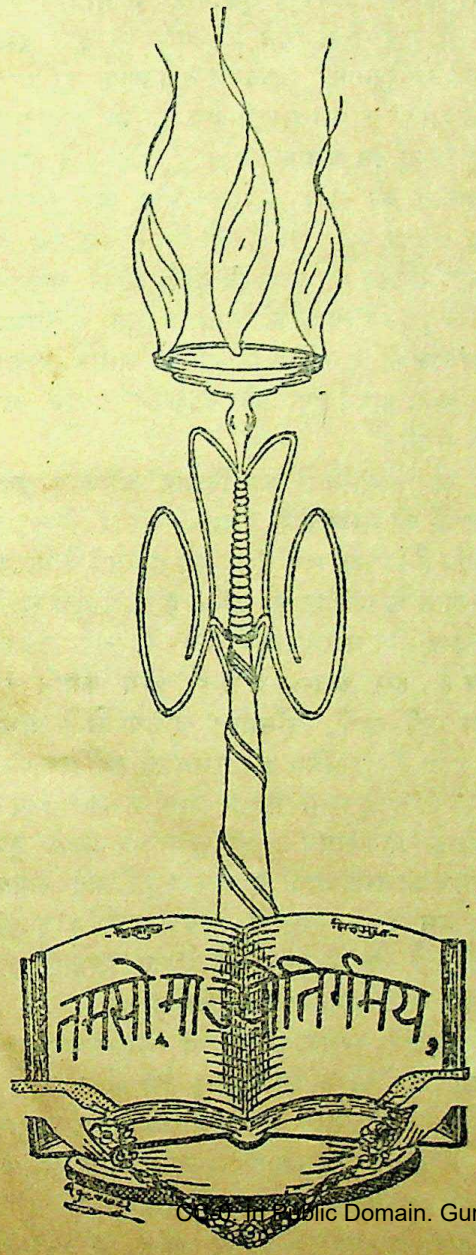

❀ श्रद्धा-दीप ❀

(श्री रघुनाथ प्रसाद "साधक")

क्या सखि श्रद्धा दीप जलाये ?
किस 'अज्ञात-नगर' से तेरे कौन देव बन पाहुन आये।
क्या सखि श्रद्धा दीप जलाये ॥
विजय पूर्णिमा के सुहाग में,
राग छिड़ा तेरा विहाग में।
स्वागत है फिर क्यों विराग में,
रागारूण शशि मुख पर तेरे, क्यों विषाद-घन छाये।
सखि श्रद्धा दीप जलाये ॥
सस्मित भाव लिए आनन में,
बैठी थी जीवन-कानन में।
पुलक प्रगट मेरे प्राणन में,
मिलन-प्रतीक्षा की पथ बेला, विरह जलद बरसाये।
सखि श्रद्धा दीप जलाये ॥
विरह विथा घन-श्याम निशा में,
स्मृति चपला चतुर्दिशा में।
दर्शन जल अभिलाष तृषा में,
स्वागत हेतु बढ़ी जलनिधि से नयन बयन भरि आये,
सखि श्रद्धा दीप जलाये ॥
रोकर स्वागत कर न सकी मैं,
हँस कर जीवन भर न सकी मैं।
विरह विथा में मर न सकी मैं,
अब संयोग-प्रश्न झूठा है, घर आये लौटाये।
सखि श्रद्धा दीप जलाये ॥
लौट गया जो, क्यों आएगा,
निष्ठुर मन क्यों कर पाएगा।
'अभाव' ही केवल भाएगा,
यह उपचार व्यर्थ है सजनि ना जीवन सरसाये।
सखि श्रद्धा-दीप जलाये ॥
मेरे गृह का सूना कोना,
कम्पित, लख दीपक का रोना।
होता है जो कुछ है होना,
विरह-अमा में फिर क्यों साधक नेह बिनाजल पाये।
सखि श्रद्धा दीप जलाये ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष के विद्यालय और शिक्षा-प्रणाली

—कविरत्न पं० सत्यनारायण शर्मा थुगांव।

किसी देश के साहित्य का नाश करना ही उस देश का नाश करना है। क्योंकि ऐसा करने से उस देश के निवासी अपने प्राचीन गौरव और अतीत कीर्ति को भूल जाते हैं। उनकी मनोवृत्तियाँ मर जाती हैं मस्तिष्क का विकास नहीं होने पाता और मुर्दादिली बढ़ती जाती है। एक दिन ऐसा आता है कि वह उस गुलामी के शिकंजे में फँस जाता है जो मृत्यु से भी बढ़कर है, अधिक दुखदाई है।

खेद के साथ कहना पड़ता है कि भारतवर्ष की आज यही स्थिति है। हां, यह बात दूसरी है कि आजकल कुछ जाग्रति हो रही है, जिससे भविष्य में कुछ आशा की जा सकती है, किन्तु वह जाग्रति भी नहीं के बराबर है। जब तक इस वर्तमान शिक्षा-प्रणाली का पूर्णतः बहिष्कार न करदें तब-तक यह आशा करना ही व्यर्थ है। भारतीय विद्यालयों में जो शिक्षा आजकल दी जाती है वह आदि से अन्त तक अस्वाभाविक है, इसके भयङ्कर परिणाम के याद आते ही हम सिहर उठते हैं। इस शिक्षा के हर पहलू पर गंभीरता-पूर्वक विचार करने से उक्त कथन की सत्यता प्रकट हो जायेगी।

सर्व प्रथम हमारा ध्यान विद्यालयों के संचालकों की ओर आकर्षित होता है। इन लोगों में अधिकतर ऐसे ही होते हैं जो धनवान हैं, किन्तु शिक्षा से प्रायः अनभिज्ञ। यदि कुछ विद्वान् भी हुये तो वे ऐसे होते हैं कि जिन्होंने टुकड़ों के लिए अपनी आत्मा को बेच दिया है। कुछ स्वतन्त्र वृत्ति के हैं जो मौन रहना पसन्द करते हैं। परिणाम वही होता है जो होना चाहिए।

इनके बाद नम्बर आता है उन शिक्षकों का, जो खुद गुलामी के वायु मण्डल से पले हुए रहते हैं। अधिक संख्यक शिक्षक इतने अँग्रेजीदाँ हैं कि उनको देश भाषा का अभिमान ही नहीं रहता, या कहिए कि ज्ञान नहीं रहता। फिर भला भावी पीढ़ी को योग्य बनाकर राष्ट्र के निर्माण में वे क्या योग देंगे? उनके हृदय में स्वतन्त्रता के भाव पैदा होना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है। जो खुद गुलाम हों, गुलामों से पढ़े हुए हों, गुलामी में रहते हों, और जिन्होंने कभी अपने साहित्य का अध्ययन नहीं किया हो उनसे क्या आशा की जा सकती है? यह मत हमारा ही नहीं किन्तु उन विद्वानों का भी है, जिन्होंने भारत के मस्तक को सदा के लिए ऊँचा कर दिया। कुछ शिक्षक भी ऐसे हैं जो अपने साहित्य के प्रकांड पण्डित हैं, वे अपने कर्त्तव्य को समझते हैं किन्तु इनमें त्याग की मात्रा न होने के कारण वे संचालकों के कठिन नियमों के सामने लाचार हैं। अतः अपने हृदय को खोलकर सामने नहीं रख सकते।

अब विद्यार्थियों का विचार करिए। कुछ विद्वानों की सम्मति में विद्यार्थी संसार बिलकुल निर्दोष है। किन्तु सब ऐसा नहीं मानते। वे घातक परिणाम के अनिष्ट को जानते हुये भी मुर्दा दिलों की तरह मौन धारण किये रहते हैं, यही उनका दोष है। इस अवस्था में उन्हें पैसा कमाने की फिक्र नहीं रहती, साँसारिक दुनिया से वे अभी दूर रहते हैं, इसलिए इस समय तो उन्हें एक कर्म वीर की तरह आगे बढ़कर काम करना चाहिए। स्कूल से आते समय उनकी मुखाकृति खिले हुए गुलाब की तरह रहती है और स्कूल जाते समय एक दम इसके विपरीत। यह क्यों? उनका कर्तव्य है कि वे इस दूषित शिक्षा प्रणाली का अपनी सारी शक्ति लगाकर विरोध करें।

किताबें:—विद्यालयों में जो किताबें आजकल पढ़ाई जाती हैं वे सब जला देने के योग्य हैं। चाहे वे अँग्रेजी की हो, चाहे इतिहास की, चाहे राजनीति की चाहे राज्य शासन की। हिन्दी की किताबें भी उतनी अच्छी नहीं होतीं जितनी होनी चाहिए। हाँ, कुछ विद्यालय अवश्य ही अपवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप हैं, जहाँ योग्य पुरुषों द्वारा उत्तम किताबें पढ़ाई जाती हैं जिनमें वह शिक्षा नहीं दी जाती है जिससे भारतवर्ष के बच्चे डरपोक बनें, कायर बनें हम लाचार है कि हमें कटु-सत्य कहना पड़ता है।

विषयः—यहां के विद्यालयों में अधिकतर ऐसे ही विषय पढ़ाये जाते हैं जिनका जीवन में कोई उपयोग नहीं होता। वैसे तो हर एक विषय कुछ न कुछ अपना निजी महत्व रखता है, किन्तु विद्यार्थियों का मगज कबड़िये का गल्ला तो है नहीं कि उसमें आठ दस विषय जबरदस्ती भर दिए जायँ, पहले यह तो देख लेना चाहिए कि उनका ध्यान उन विषयों को चाहता है या नहीं। पर इस पर कोई ध्यान नहीं देता।

परीक्षाः—साधारणतः परीक्षाओं से विद्यार्थियों की योग्यता का पता चलता है। जिनके पास जितनी अधिक उपाधियां हो वह उतना ही अधिक विद्वान्। हमेशा कई बी० ए० एम० ए० विशारद और साहित्य रत्नों के दर्शन होते हैं परन्तु जो चमकता है वह सब सोना ही नहीं होता। यह कहना असमीचीन न होगा कि कई विद्वान परीक्षाओंमें असफल रहते हैं पर कोई उनकी विद्वत्ता में शंका नहीं कर सकता। इसी तरह कई उपाधिधारियों की ऐसी दुर्दशा है कि कहते हुए कलेजा मुँह को आता है। समझ में नहीं आता कि उन्होंने ये उपाधियां कैसे प्राप्त कर लीं।

व्यायामः—भारतीय विद्यालयों में व्यायाम तो और भी चमत्कारिक है। वहाँ भारतीयता का तो नाम भी नहीं रहता। रहे भी कैसे ? वहाँ के अधिकारियों को पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित होने के कारण अपना पता तो रहता ही नहीं। बहुत थोड़े विद्यालय ऐसे हैं जहाँ कुश्ती, मलखंभ आदि सिखाया जाता है; नहीं तो जहाँ देखो वहीं फुटबाल, हाकी और क्रिकेट का बाजार गर्म दिखाई देता है। आधुनिक शिक्षा-प्रणाली हमारे विद्यार्थियों के चरित्र गठन की ओर तो बिल्कुल ही ध्यान नहीं देती। हां वह उनको मशीन अवश्य बना देती है। विद्यार्थियों के मस्तिष्क का विकास नहीं हो पाता, वे रटटू तोते अवश्य बन जाते हैं। किसी ने सच कहा है कि आधुनिक विद्यालयों में हमारे विद्यार्थी जितनी शक्ति खर्च करते हैं और जितना पैसा खर्च करते हैं उसका पूरा मूल्य उन्हें नहीं मिलता। मिले भी कैसे ? जब कि वह पढ़ाई जाने वाली चीज विद्या ही नहीं है। विद्या तो उसे कहते हैं, जो स्वतन्त्रता व स्वावलम्बन के मार्ग पर अग्रसर करती है; जो विद्या आजकल हमारे विद्यार्थियों को पढ़ाई जाती है, क्या उसमें यह शक्ति है ? यदि नहीं तो उस शिक्षा से बच्चों का चरित्र गठन कैसे हो सकता है।

इस दृष्टि से विचार करने पर भारत देश के हर एक विद्यालय में पढ़ाई का ढंग भारतीय और माध्यम हिन्दी ही होना चाहिये तब कहीं भारत के विद्यालय और विद्यार्थी आदर्श हो सकेंगे।

★

गीत

(श्री 'सरोज' एम० ए०)

बदरा बरसो अँसुवन धार;

पुरवाई आई मदमाती घर बाहर न सुहाए।
याद किसी की रह रह मेरे दिल में आग लगाए,
तीर बनी, उर चीर रही यह बूँदों की बौछार।
बदरा बरसो अँसुवन धार,

उमड़ घुमड़ कर डर के नभ में छाए सुधि के बादल,
रिमझिम २ लगा बरसने, अँखियों से आँसू जल,
अनायास ही निष्ठुर तेरा छाया उर में प्यार।
बदरा बरसो अँसुवन धार,

साँझ सलोनी लेकर आए, सपनों का संसार;
मेरे मन में घिर घिर आए सजल सघन अंधियार,
उड़ न पाए प्राण पखेरु अपने पंख पसार।
बदरा बरसो अँसुवन धार।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

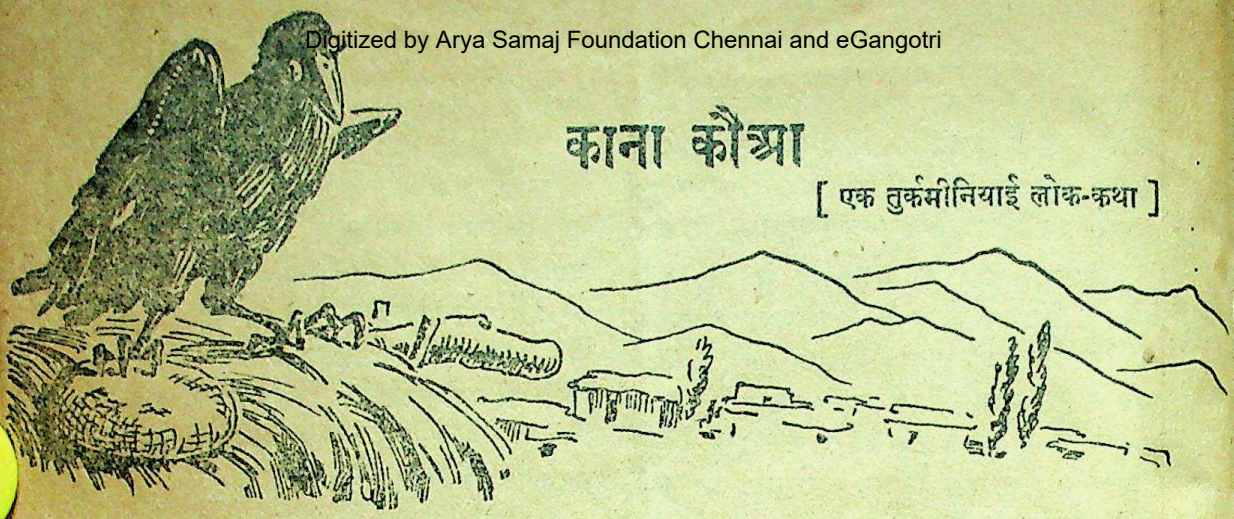

काना कौआ

[एक तुर्कमीनियाई लोक-कथा]

कहानी इस प्रकार है कि बहुत दिन हुए गरीब गड़रिया और उसकी पत्नी रहते थे।

गड़रिया दूसरों के रेवड़ की रखवाली करता था और उसके पास अपनी केवल एक गाय और एक पुरानी कुटिया थी।

उसकी पत्नी गाय दुहती और वह पनीर बना कर जाड़े के लिये सुखा लेता।

एक दिन गड़रिए ने अपनी कुटिया की छत पर नजर दौड़ायी जहाँ पनीर फैलायी गयी थी और उसने देखा कि लगभग आधी पनीर गायब है।

गड़रिया सारी रात चोर की ताक में जागता रहा। पौ फटते ही एक काना कौआ उड़ता हुआ आया और पनीर पर चोंच मारने लगा। गड़रिया के पाँव ऊपर गया और उसने कौए को पकड़ लिया।

वह उसे मारने ही जा रहा था कि यकायक वह कौआ मनुष्य की आवाज में बोलने लगा।

"ए अच्छे गड़रिए मुझे छोड़ दो और कल आकर मुझसे मिलना। मैं तुम्हें उपहार दूंगा।"

गड़रिए ने उसकी बात मान ली और कौए को छोड़ दिया और वह सड़क पर उड़ते हुए बोला "इस सड़क पर आगे जाकर पूछ लेना कि काने कौए की कुटिया कहाँ है। कोई भी बता देगा।"

दूसरे दिन गड़रिया अपने रेवड़ को हाँककर घर पहुँचाने के बाद काने कौए की कुटिया की खोज में निकल पड़ा।

वह उस सड़क पर चलता गया और रास्ते में घास के मैदान में उसे भेड़ों का बड़ा-सा रेवड़ मिला।

"ये भेड़ें किसकी हैं?" उसने गड़रिए से पूछा

"काने कौए की" उस आदमी ने उत्तर दिया।

"और उसकी कुटिया कहां है?"

"अगर तुम इसी सड़क पर चले जाओ तो तुम्हें घोड़ों का एक झुण्ड मिलेगा उसके रखवाले से पूछना, वह तुम्हें बता देगा कि काने कौए की कुटिया कहाँ है।

यह सुन कर गड़रिया आगे चल पड़ा, यहां तक कि उसे घोड़ों का एक झुण्ड मिला उस झुण्ड के रखवाले से पूछा "ये घोड़े किसके हैं?"

"काने कौए के" रखवाले ने उत्तर दिया।

"और उसकी कुटिया कहाँ है?"

"अगर तुम इसी सड़क पर चले जाओ तो तुम्हे ऊंटो का एक झुंड मिलेगा। उनके रखवाले से पूछना, वह तुम्हें बता देगा कि काने कौए की कुटिया कहाँ है।"

गड़रिया आगे चलता गया और ऊंटों का बड़ा-सा झुण्ड दिखायी दिया।

"ये ऊँट किसके हैं?" उसने रखवाले से पूछा।

"काने कौए के" रखवाले ने उत्तर दिया।

"और उसकी कुटिया कहां है?"

उस नौजवान ने एक ऊँची सी पहाड़ी की चोटी पर बनी हुई एक अकेली कुटिया की ओर संकेत कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गड़रिया पहाड़ी पर चढ़ गया और काना कौआ उसका स्वागत करने बाहर आया और उसे अन्दर आने का निमन्त्रण दिया।

कौए ने गड़रिए को सम्मानित पद पर बिठाया और चाय तथा टिकियों से उसकी खातिर की। और जब अतिथि चलने लगा तो कौए ने उसे एक मेजपोश उपहार में दिया और कहा "यह कोई साधारण मेजपोश नहीं है। जब तुम कहोगे, 'मेजपोश, खुल जाओ और अच्छे पकवान सजा दो!' तो यह खुल जायगा और नाना प्रकार के गोश्त और शरावें उस पर सज जायेंगी। खाना समाप्त करने पर कहना, मेजपोश, तह हो जाओ।"

गड़रिया मेजपोश लेकर घर गया जहाँ उसकी भूखी पत्नी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

"ए औरत," गड़रिए ने कहा, ज़रा पानी तो ले आ, हम लोग हाथ धोकर खाने को बैठ जायें।"

"घर में दूध के अलावा कुछ नहीं है," उसकी पत्नी ने कहा।

इस पर गड़रिये ने अपने कपड़ों के नीचे से मेजपोश निकाला और कहा 'मेजपोश, खुल जाओ और अच्छे-अच्छे पकवान सजा दो!"

मेजपोश फौरन खुल गया और उस पर नाना प्रकार के गोश्त और शरावें सज गयीं।

अपने जीवन में पहली बार गड़रिए और उसकी पत्नी ने भर पेट भोजन किया।

'मेजपोश तह हो जाओ' गड़रिए कहा।

मेजपोश पर से हर चीज गायब हो गयी और वह अपने आप तह हो गया।

गड़रिये की पत्नी ने सलाह दी. "बादशाह को खाने का न्योता दो और उसे ऐसी दावत खिलाओ जैसी उसने पहले कभी न खाई हो। शायद तब वह तुम्हें अपने यहाँ नौकर रख ले।"

उसकी पत्नी ने जैसा कहा था गड़रिए ने वैसा ही किया और बादशाह को तथा उसके पूरे दरबार को खाने का निमंत्रण दिया।

जब वह लोग आकर बड़ी कठिनाई से गड़रिये की छोटी-सी कुटिया में [illegible] ने मेजपोश उनके सामने रख दिया। इस प्रकार की आवभगत पर सबको आश्चर्य हुआ और बादशाह तो क्रुद्ध भी हुआ।

परन्तु इतने में गड़रिए ने कहा "मेजपोश, मेजपोश, खुल जाओ और अच्छे-अच्छे पकवान सजा दो!"

मेजपोश पूरी तरह खुल गया और उस पर ऐसे-ऐसे पकवान सज गये जैसे न बादशाह ने कभी खाये थे, न उसके दरबारियों ने। मेहमान दावत खाकर महल को लौट गये।

"गड़रिए के यहाँ जाओ और उससे मेजपोश छीन लो" बादशाह ने अपने वजीर को आज्ञा दी।

और वजीर ने मेजपोश छीन लिया और उसे महल ले आया।

गड़रिए ने काने कौए से जाकर बादशाह की शिकायत की।

"दुखी न हो," काने कौए ने कहा। "मेजपोश के बजाय में तुम्हें एक गदहा दूंगा। वह कोई साधारण गदहा नहीं है। ज्यों ही तुम उससे कहोगे 'चल बे' वैसे ही उसमें से सोने के सिक्के झरने लगेंगे।"

गड़रिया बहुत खुश हुआ। उसने काने कौए को धन्यवाद दिया और गदहे पर सवार होकर रवाना हो गया।

संयोगवश गड़रिए को बादशाह के महल के सामने से होकर जाना पड़ा। वह डर के मारे जल्दी जल्दी संतरियों के सामने से गुजरा गदहे से कहता रहा, चल बे, चल बे।'

अरे यह क्या! गदहे में से सोने के सिक्के झरने लगे।

बादशाह ने अपनी खिड़की में से सोने के सिक्के देखे और अपने संतरियों को गदहा छीन लेने का हुक्म दिया।

दूसरे दिन गड़रिया फिर काने कौए के पास गया और उससे शिकायत की "बादशाह ने मेरा गदहा छीन लिया है।"

"दुखी न हो," कौए ने कहा। "मैं तुम्हें एक [illegible] में [illegible] आदमी हैं। जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही तुम ढक्कन खोलोगे गदाधारी सन्दूक से बाहर निकल आयेगा और जो भी उसके सामने आयेगा उसे पीटना शुरू कर देगा। गदाधारी को फिर सन्दूक में वापस भेजने के लिए तुम्हें कहना होगा 'बस आराम करो सन्दूक में वापस जाओ !"

गड़रिये ने काने कौए को धन्यवाद दिया। और सन्दूक को कंधे पर लादकर चल दिया।

सन्दूक बहुत हल्का निकला, परन्तु महल के सामने गुजरते समय गड़रिये ने जानबूझकर अपनी कमर झुका ली मानो वह बहुत भारी बोझ ले जा रहा हो।

बादशाह ने उसे खिड़की में से देखा और सोचा, "इस सन्दूक में जरूर कोई खजाना होगा क्योंकि गड़रिए के पास मामूली चीजें तो होती नहीं हैं।" और उसने अपने संतरियों को सन्दूक छीन लेने का हुक्म दिया।

गड़रिये ने संदूक संतारियों को दे दिया और घर भाग गया। संदूक बादशाह के सामने लाकर रख दिया गया।

सारा दरबार वहां जमा हो गया। हर व्यक्ति गड़रिये के खजाने में से कुछ न कुछ पाने की बात सोच रहा था।

बादशाह ने अपने वजीर से संदूक खोलने को कहा।

वजीर ने ढक्कन उठाया ही था कि गदाधारी कूदकर बाहर निकला और बादशाह और तमाम दरबारियों को पीटने लगा।

वे चीखने-चिल्लाने लगे और उन्होंने संतरियों को बुलाया। संतरी भागे हुए आये लेकिन, किसी को भी यह नहीं मालूम था कि गदाधारी को सन्दूक में वापस कैसे भेजे और सबको उसके पास आने से डर लगता था।

गदाधारी ने बादशाह, उसके वजीर और तमाम दरबारियों की अच्छी तरह पिटाई की और फिर वह महल की दीवालें तोड़ने लगा। गड़रिया दूसरे दिन सुबह आया, उस समय तक महल की दीवारों के केवल खंडहर ही बाकी बचे थे फिर भी गदाधारी अपने आप को रोक नहीं सकता था और वह बची-खुची दीवारों को तोड़ने लगा।

तब गड़रिये ने उसे कहा, "बस आराम करो, संदूक में वापस जाओ !"

गदाधारी पलक मारते संदूक में सरक गया और संदूक बन्द हो गया।

गड़रिया अपना मेजपोश और गदहा लेकर घर चला गया। उसके बाद वह और उसकी पत्नी आजीवन सुखी रहे तथा जनता ने उन्हें बहुत धन्यवाद दिया कि उन्होंने गरीबों को निर्दयी बादशाह और उसके लालची वजीरों से छुटकारा दिलाया।

उत्तम बाल साहित्य

हमारे इस चुने हुए साहित्य में कविताएं कहानियाँ, ड्रामे, गीत तथा अन्य सभी प्रकार की उत्तम पुस्तकें हैं जो आपके बालकों को चरित्रवान तथा चतुर बनायेंगी।

	कमीशन
दो घड़ी की मौज	।) चौथाई
मनोरंजक कहानियाँ	।) "
आदर्श चरितावली	॥) "
नेताओं की कहानी	॥) "
सैर सपाटे की कहानी	।) आधा
देश देश के बालक	।=) "
विदेशी बच्चों की कहानियाँ	।) "
चतुर बालिकायें	।) "
बेसिक ड्रामा	॥) "
सेवा गान	≡) तिहाई
बटुक गान भाग १	=) चौथाई
बटुक गान भाग २	=) "

पूरा सैट प्राप्ति के लिए २॥) का मनीआर्डर भेजें

गृह शास्त्र तथा कला के लिए

गृह शास्त्र भाग १	१॥) कमीशन तिहाई
" भाग २	॥।) कमीशन तिहाई
सूचिका शिल्प भाग १	॥।=) कमीशन चौथाई
" भाग २	।=) कमीशन चौथाई
कला शिक्षक	१॥) कमीशन तिहाई
कला परिचय	॥।) कमीशन तिहाई
आधुनिक पुस्तककला	॥।) कमीशन तिहाई

गुरुकुल बाहरा मुरादाबाद, अलौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामना मालवीय जी

प्रेमनारायण दुबे 'प्रेमी'

जन्म लेते और मरते तो सभी हैं लेकिन अपने इहलौकिक जीवन के बाद, संसार के लिये अनुकरणीय आदर्श छोड़ जाने वाले महामानव मालवीय जी का ऐसा ही धन्य-जीवन था, जो आज यद्यपि हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका रूप हम आज भी उनके आदर्श एवं सिद्धांतों में देख रहे हैं।

सद्गुणों की प्रतिमा:—मालवीय जी के एक एक अनुकरणीय गुण पर एक एक पुस्तक लिखी जा सकती है। वे विनम्रता सदाचार, विनय, सैद्धान्तिक दृढ़ता, उदारता, हिन्दुत्व, अहिंसा, त्याग परोपकार, सरलता, प्रेम, बन्धुत्व और सादे रहन सहन एवं खान-पान की प्रतिमूर्ति थे। निश्चित रूप से इसमें अत्युक्ति नहीं होगी कि महामना मालवीय जी समस्त सद्गुणों की एक जीवित प्रतिमा थे। मालवीय जी में विभिन्न सद्गुणों का अद्भुत समन्वय था। यदि हमें एक चींटी की हत्या देखने में भी दुख का अनुभव करने वाले कोमल हृदय के साथ, आततायी के वध को धर्म स्वीकार करने वाला वज्रहृदय, एकता के पूर्णपक्षपाती होने के साथ ही सनातनधर्म, आर्य-संस्कृति और भारतीय आदर्श पर मिटने की शिक्षा-दीक्षा, बुद्धिवाद के महान आदर्श के साथ साथ श्रद्धा-भक्ति युक्त पितृपरम्परागत आचरणों के प्रति आदर का प्रत्यक्ष आचरणगत समावेश देखना हो तो महामना मालवीय के जीवन की पुण्यमयी झाँकी करना चाहिए।

बाल्य काल व शिक्षा:—भगवान श्री-राधा-कृष्ण के अनन्य भक्त, परमभागवत पंडित व्रजनाथ जी की मदन मोहन पांचवी सन्तान थे। हिन्दुत्व से पगा हुआ रक्त, सदाचार और प्रभु-विश्वास आपको पिता और पितामह से विरासत में प्राप्त हुआ था। आपका जन्म पौषकृष्णा अष्टमी संवत् १९१८ (सन् १८६१) को प्रयाग में हुआ था। सन् १८७७ में आपने एन्ट्रेंस की परीक्षा पास की। आपके सहपाठियों में से पं० मोतीलाल नेहरू, पं० सुन्दरलाल जी तथा डा० सतीशचन्द्र बनर्जी प्रमुख थे। अपने कालेज-जीवन में ही मालवीय जी ने सार्वजनिक कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। सन् १८८० में आपने प्रयाग में 'हिन्दू समाज' की स्थापना की। 'मध्य-हिन्दूसमाज' की स्थापना कर आपने हिन्दू-संगठन के कार्य को आगे बढ़ाया और हिन्दी के उद्धार का बीड़ा उठाते हुए आपने हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि सभा की नींव डाली।

सार्वजनिक क्षेत्र में—बी. ए. करने के उपरान्त मालवीय जी की इच्छा सार्वजनिक-कल्याण के कार्यों में संलग्न हो जाने की थी किन्तु गृह की दरिद्रावस्था से प्रभावित होकर आप सन् १८८४ में गवर्नमेंट हाई स्कूल प्रयाग में शिक्षक नियुक्त हुये। सन १८८६ में कलकत्ता में कांग्रेस का द्वितीय अधिवेशन हुआ उसमें मालवीय जी ने ऐसा प्रभावशाली भाषण दिया कि जनता पर उनके व्यक्तित्व का गहरा असर पड़ा देश, जाति और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म के सेवा कार्यों में जी-जानसे जुट जाने के लिए आपने सन् १८८७ में शिक्षक का पद त्याग दिया। मालवीय जी हरिद्वार में स्थापित 'भारत-धर्म महा-मंडल' के महोपदेशक बन गये और इसीवर्ष आपने कालाकांकर से निकलने वाले हिन्दी दैनिक 'हिंदुस्तान' का सम्पादन भार ग्रहण किया। सन १८९१ में एल. एल. बी. की परीक्षा पासकर वकालत करना प्रारम्भ कर दिया। आप देश-सेवा, समाज-सेवा, में इतने व्यस्त रहते थे कि वकालत करने का समय नहीं मिलता था। आपकी महत्वाकाक्षाएं थीं, समाज में फैली हुई कुरीतियों, को दूर किया जाए, अज्ञानान्धकार का अन्त किया जाए, हिन्दू समाज संगठित हो, हिन्दी का विस्तृत प्रचार और प्रसार हो, एवं सब प्रकार देश का हित हो। इन्हीं उद्देश्यों के कारण न आप वकील बन न सके और न धनधान्य सम्पन्न बन सके।

हिन्दी प्रेमी—मालवीय जी सन् १९०१ में इलाहाबाद म्युनिसपैल्टी के वाइस-चेयरमैन चुने गये और सन् १९०३ में आप प्रान्तीय कौंसिल के मेम्बर नियुक्त हुए। सन् १९०३ में आपने लग-भग ढाई लाख रुपया चन्दा एकत्रित कर प्रयाग के छात्रों के 'लिए छात्रावास की असुविधा दूर करने के लिए मेकडानेल हिन्दू होस्टल' नामक विशाल छात्रावास तैयार करवाया। अगले वर्ष आपने 'हिन्दू विश्वविद्यालय' की योजना बनाई जो प्रयाग में सनातन धर्म सभा के विराट अधिवेशन में सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गई। 'हिन्दू-विश्व-विद्यालय की स्थापना में श्रीमती एनीबेसेंट, राधाकुमुद मुखर्जी, विनय कुमार जी, आदि' अनेक सज्जनों ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया। 'हिन्दू विश्वविद्यालय' की स्थापना के लिए देश में दुन्दभी बज चुकी थी। मालवीय जी ने चन्दा एकत्रित करने के लिए देश में कई स्थानों का दौरा किया, लोगों ने जी खोल-कर मालवीय जी की झोली भरदी। यहाँ तक कि भिखारियों ने अपनी भीख में कमाया धेला और गरीबों ने अपने तन की फटी कमीज तक दान दे डाली। मालवीय जी के [illegible] सन् १९१६ को काशी में लार्ड हार्डिंग के द्वारा भारत के इस अद्वितीय विश्वविद्यालय की नींव डाली गई।

मालवीय जी ने जाति के अभ्युत्थान के लिए सन् १९०७ में 'अभ्युदय' पत्र निकाला। सन् १९०९ में विजयदशमी के दिन आपने 'लीडर पत्र की नींव डाली। सन् १९१० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन काशी में मालवीय जी के ही सभापतित्व में हुआ।

राजनैतिक क्षेत्र में:—महामना मालवीय जी कांग्रेस के नरम दल के सदस्य थे। सन १९०७ में जब सूरत कांग्रेस में गरम और नरम दल वालों का झगड़ा हुआ था तब बीच बचाव में आप पर भी मार पड़ गई थी। इसी कन्वेन्शन में सर्व प्रथम औपनिवेशिक स्वराज्य की माँग पेश की गई थी जिसमें मालवीय जी का प्रमुख हाथ था। सन् १९०८ में आप लखनऊ प्रान्तीय कांग्रेस के सभापति और सन् १९०९ में लाहौर अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुये थे। इस अधिवेशन में मालवीय जी ने केवल हिन्दू-मुस्लिम एकता ही नहीं बल्कि समस्त जातियों की एकता पर जोर दिया था। जलियान वाला बाग के हत्याकांड के सिलसिले में आपने जब इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल में अनेक जोरदार प्रश्न किये थे तब सर-कारी सदस्य उनका उत्तर तक न दे सके थे सन १९१४ से लेकर कई वर्ष बाद तक आप होमरूल लीग के आन्दोलन में भाग लेते रहे। सन् १९१८ में पुन दिल्ली कांग्रेस अधिवेशन के आप सभापति बनाए गये और आपने रौलेट बिल का कड़ा विरोध किया।

मालवीय जी आदर्शवादी होने के साथ-साथ घोर यथार्थता वादी थे, यही वास्तव में उनकी विलक्षणता थी। जब कि २७ जुलाई सन् १९२१ को बम्बई में काँग्रेस अधिवेशन में प्रिंसआफ-वेल्स का बहिष्कार करने का प्रस्ताव पास हो चुका था तब आपने अनेक विरोध के होते हुए भी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रिंसआफवेल्स का स्वागत किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। साइमन कमीशन का मालवीय जी ने घोर विरोध किया था जब कि लोगों की यह धारणा थी कि मालवीय जी संभवतः उसका विरोध नहीं करेंगे।

मालवीयजी ने सरदार पटेल के साथ देश भर में भ्रमण करके स्वदेशी आन्दोलन का प्रचार किया। इन आन्दोलनों में आप कई बार जेल गये। २९ अगस्त १९३१ को मालवीय जी गोलमेज परिषद में शामिल होने के लिये लन्दन गये, वहां आपने कई भाषण दिये। १४ जनवरी १९३२ को आप स्वदेश लौटे। इसी वर्ष जब आप दिल्ली-कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए और अगले वर्ष जब आप कलकत्ता अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये तो आसनसोल स्टेशन पर ही गिरफ्तार कर लिये गये। अगस्त १९३४ को मालवीय जी ने स्वतन्त्र राष्ट्रीयदल की स्थापना की।

यौवन काल से आरम्भ कर अपने जीवन के ५० वर्ष तक महामना मालवीय जी देश और धर्म की सतत सेवा करते रहे। नोआखाली-कांड से आपकी आत्मा अत्यन्त विक्षुब्ध हो उठी थी। २४ नवम्बर सन् १९४६ को इस महामानव ने महाप्रयाण कर भारतमाँ को रोता बिलखता छोड़ स्वर्ग की श्री में वृद्धि की थी।

बापू के उपास्यः—"मैं तो मालवीय महाराज का पुजारी हूँ। पुजारी कैसे स्तुति के वचन लिख सके है, जो कुछ लिखेगा उसे अपूर्ण सा प्रतीत होगा। आज मालवीय जी के साथ देशभक्ति में कौन मुकाबला कर सकता है। उनके विशाल हृदय में शत्रु भी समा सकते हैं। यौवनकाल से आरम्भ करके आज तक उनकी देशभक्ति का प्रवाह अविच्छिन्न चला आया है।"

—महात्मा गाँधी।

एकता की मूर्तिः—"मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि विभिन्न मतों के मध्य केवल मालवीय महाराज ही भारतीय एकता की मूर्ति बने खड़े हैं।"

—श्रीमती एनीबेसेंट—

देश भक्ति का हृदय—"पं० मदनमोहन मालवीय सिरसे लेकर पांव तक केवल मात्र हृदय ही हृदय है। मानवीय करुणा की दुग्धोपम शुभ्र सरलता उनमें भरी हुई है। वह अपने कार्यों में उदार, विचारों में निः स्वार्थ है। अपने देश की उन्नति के सम्बन्ध में वह अत्यन्त आस्थावान हैं। भारतीय नेताओं में महात्मा जी के बाद दूसरा स्थान उन्हीं का है।"

—सर सी. वाई. चिन्तामणि।

विज्ञान के चमत्कार

(१) नई किस्म की ईंटें—

कैलिफोर्निया के एक विशेषज्ञ ने मकानों को तैयार करने के लिए नये प्रकार की विचित्र ईंटें तैयार की हैं, जिनकी चुनाई में गारे या मसाले की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ती। इन ईंटों की बनावट इस तरह की होती है कि ये एक दूसरी को आसानी से जकड़ लेती हैं। अर्थात् ईंट का एक हिस्सा तो उभरा हुआ होता है और दूसरा हिस्सा अन्दर की ओर घुसा हुआ रहता है। ईंट के ऊपर की ओर निश्चित स्थान पर कुछ छेद होते हैं और नीचे की ओर इन्हीं छेदों के बराबर उभरे हुए दाँत से होते हैं। जब इन ईंटों (ब्लाक्स) को एक दूसरे के ऊपर रखा जाता है, तब इनके दांत छेदों में फँस कर ईंटों को जकड़ लेते हैं। इस प्रकार चुनाई के लिए किसी प्रकार का मसाला उपयोग में लाने की आवश्यकता नहीं की जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) रक्तचाप की उपचार सम्बन्धी नई औषधियाँ—

लुईविल (कैन्टकी) यूनिवर्सिटी के मैडिकल स्कूल के डाक्टरों ने "अमेरिकन हार्ट एसोसियेशन" की एक रिपोर्ट भेजी है, जिसमें यह बताया गया है कि भविष्य में लकड़ी की लुगदी और सोयाबीन के पौधों से रक्तचाप से पीड़ित व्यक्तियों के उपचार के लिए दवायें तैयार की जायेंगी।

लुईविल के विशेषज्ञों ने यह पता लगाया है कि सामान्य व्यक्ति के रक्त में पाये जाने वाले "क्लोरेस्टोल" की मात्रा को इन औषधियों के सेवन से कम किया जा सकता है। रक्त में "क्लोरेस्टोल" की मात्रा बढ़ जाने से ही धमनियों में अकड़न पैदा हो जाती है और इसके फलस्वरूप खून का दबाव बढ़ जाता है।

उक्त पौधों और लकड़ी की लुगदी से तैयार होने वाली इन दवाओं को "स्टोल्स' कहा जाता है। इन दवाओं से, भोजन में बिना किसी किस्म का परहेज़ किये, खून का दबाव कम किया जा सकता है। इस बारे में अब तक अनेक सफल परीक्षण किये जा चुके हैं।

(३) कृत्रिम हृदय के उपयोग से हृदय की चीरफाड़ आसान होगी—

डिट्रायट (मिशिगन) के हारवर अस्पताल में एक रोगी के हृदय का जब औपरेशन हो रहा था, तब एक नये प्रकार के "कृत्रिम हृदय" ने उस के रक्तप्रवाह की गति को ५० मिनट तक जारी रखा। "कृत्रिम हृदय" की पिचकारी से रोगी के हृदय में विद्यमान समस्त रक्त बाहर निकाल लिया गया, ताकि शल्य चिकित्सक (सर्जन) हृदय के भीतरी भाग को टटोलने के स्थान पर अच्छी तरह से देखकर औपरेशन कर सकें। "कृत्रिम हृदय" का चीरफाड़ में उपयोग अभी प्रयोगावस्था में ही है। जनरल मोटर्स की अनुसन्धानशाला के विशेषज्ञों और मिशिगन हार्ट एसोसियेशन के डाक्टरों ने मिलकर 'कृत्रिम हृदय" के इस यन्त्र को तैयार किया है।

(४) तेज रफ्तार वाले विमानों के लिए नई धातु—

विमानों को तैयार करने वाली "डग्लस एयर क्रैफ्ट" नामक कम्पनी के इंजीनियर स्पैन्सर एल० शा ने यह बताया है कि ७००० मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ने वाले विमानों के लिए खास किस्म की नयी मजबूत धातुयें तैयार की जा चुकी हैं। लौस एन्जैल्स में "सोसाइटी औव् औटोमोटिव इंजीनियर" की एक सभा में भाषण देते हुए आप ने यह बताया कि ४० मील की ऊंचाई पर ७००० मील प्रतिघण्टा की रफ्तार से उड़ने वाले विमान के पंख १४०० डिग्री तक गरम होजाते हैं। अलमुनियम धातु तो २०० डिग्री तापमान होने पर ही काम नहीं कर सकती है।

श्री शा ने बताया कि स्टेनलेस स्टील (जंग न लगने वाला इस्पात) और कोबाल्ट धातु के मिश्रण से एक ऐसी नयी धातु तैयार की जा सकती है, जो १४०० डिग्री के तापमान को भी सहन कर सकेगी।

(५) रेडियो सक्रिय एलब्यूमिन द्वारा रक्त प्रवाह की ठीक जानकारी—

शल्य चिकित्सा और खास औषधियों के उपचार में रोगी के रक्त प्रवाह का ठीक से पता लगाने के लिए वैज्ञानिकों ने, रेडियो सक्रिय एलब्यूमिन से हाल ही में परीक्षण किये हैं। न्यूजर्सी के "जर्सी सिटी मैडिकल सैन्टर" में आइसोटोप शाखा के उद्घाटन करते समय डाक्टरों ने रक्तप्रवाह की कमी वाले एक रोगी के बाजू में रेडियो सक्रिय एलब्यूमिन का इंजैक्शन लगाया। गाइगर काउन्टर नामक यन्त्र की सहायता से रोगीके रक्त में एलब्यूमिन के प्रसार का ठीक से पता लगाया गया। डाक्टरों का यह कथन है कि औपरेशन क्रिया या औषधियां प्रदान करने पर रोगी के रक्तप्रवाह में कितना सुधार हुआ, इस बात की पूरी-पूरी जानकारी अब प्राप्त हो जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) बालों से व्यक्ति की आयु और लिंग का पता चल सकेगा—

वैज्ञानिकों ने प्रभावशाली अणुवीक्षण यन्त्र और "रिफ्रैक्टोमीटर" नामक यन्त्र की सहायता से बालों की सूक्ष्म जाँच-पड़ताल करके व्यक्ति की आयु और लिंग जानने का नया तरीका निकाला है। सैंट लुई (मिसूरी) की वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के डा० औलिवर एच० डगिन्स २० वर्षों के अध्ययन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं। अध्ययन से उन्हें पता चला कि पुरुषों और स्त्रियों के बालों में अन्तर होता है और आयु के साथ साथ उनमें काफी अन्तर पड़ता जाता है।

(७) एक्सरे मशीन हवाई जहाजों के लिए भी उपयोगी—

अमेरिका की "कैपिटल एयरलाइन्स" नामक हवाई कम्पनी अपने जहाजों के हिस्सों की भीतरी बनावट की जाँच-पड़ताल करने के लिए आजकल एक्स-रे मशीन का इस्तेमाल कर रही है। हवाई जहाजों की जब नियमित रूप से जाँच-पड़ताल होती हैं तब उनके पंखों, पुर्जों तथा अन्य हिस्सों की तस्वीरें एक्स-रे मशीन द्वारा उतारी जाती हैं और उनसे किसी टूटे हुए पुर्जे या किसी हिस्से की भीतरी खराबी का आसानी से पता चल जाता है। उक्त कम्पनी ने बताया है कि एक्स रे मशीन के इस्तेमाल से न केवल हवाई जहाजों की जांच-पड़ताल कम समय में हो सकेगी, अपितु दुर्घटनाएं भी कम हो जायेंगी।

आज मन मद मत्त गाले

—भुवनेश्वर प्रताप शर्मा "भुवनेश"

आज मिलकर के सभी हम,
प्रेम के अब गीत गालें।
आज जीवन की निशा में,
फिर ऊषा का आगमन रे।
आज जग कल केलि करता,
हो रहा दुख का गमन रे।
तू बना क्यों मौन ? उठ चल
प्राण की वीणा बजालें।
आज फिर आशा प्रकृति की,
पूर्ण होने जा रही है।
देख तो उस आम्र तरु पर,
कोकिला क्या गा रही है।
आज तू भी खिल खिलाकर,
क्यों न अपना घर सजाले।

आज जग की दिव्य दिशाओं
में भरा कलरव खगों का।
आज सचमुच जग उठा है,
भाग्य सब सूने मगों का।
आज तू भी बावले मन,
शोक की घड़ियाँ भुलाले।
आज जग कहता कि मादक
विश्व है, मादक बनो सब।
हर्ष की सरिता प्रवाहित,
है अरे ! सुख में सनो सब।
वह हमारे मन अभागे,
विश्व स्वर में स्वर मिलाले।
आज मन मद मत्त गाले।

❀❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण के बालपन की झलक

— रामहर्ष पाठक 'प्रेमी'

सूरदास जी ने कृष्ण के बाल चरित्र का अनुपम वर्णन किया है। भगवान् कृष्ण की बाल लीला का चित्र खींच देने में वह अत्यन्त सफल हुये हैं। इसकी कुछ झांकी देखिए।

जन्म के पश्चात यशोदा जी उनको पालने में झुलाती हैं ताकि वह सो जाँय। परन्तु वह कभी आँख मूंद लेते हैं। कभी ओंष्ठों को फरकाते हैं। माता उनको सोता जान कर शान्ति रूपी कारागार में कुछ समय के लिये बन्द हो जाती हैं। और भगवान कृष्ण चौंक पड़ते हैं। उस समय यशोदा जी मीठे स्वरों में गीत गाने लग जाती हैं।

यशोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै दुलराय मल्हावै जोइ सोइ कछु गावै।
मेरे लाल को आउ निंदरिया काहे न आनि सुलावै॥

श्रीकृष्ण अब कुछ बड़े हो चले हैं। बैंया २ चलने लगे हैं। वे मुँह में दही लपटाये हैं, शरीर में धूल लगाये हैं उनके नेत्र चंचल हैं। ज्ञात होता है कि सुन्दरता उनके पीछे पड़ी है। उस समय सूरदास जी क्या ही सुन्दर चित्र चित्रित करते हैं। सोभित कर नवनीत लिए।

घुटुरुवन चलत रेनु तनु,
मंडित मुख दधि लेप किए।
चारु कपोल लोल, लोचन,
गौरोचन तिलक दिये।
लर लटकन मनोमत्त मधुप गन,
माधुरी मधुर पिये।
कठुला कण्ठ वज्र के हरि नख राजत रुचिर हिये।
धन्य सूर एकौ पल यह सुख का सत कल्प जिये॥

वह इतना नादान मालूम पड़ते हैं कि अपने प्रतिबिम्ब को पकड़ने लगते हैं। चूंकि परछाईं चंचल है, और इसीलिए वह इनको नाच नचाती है। उनके हँसने से एक प्रकार की अनोखी अलौकिक आभा विहंस पड़ती है। उनका घर सोने से बना हुआ है। आंगन में वह अपनी बाल लीला करते हैं। कभी गिर पड़ते हैं और कभी फिर चलने लगते हैं उनकी इस क्रीड़ा को देखने के लिए यशोदा जी नन्द को बुलाती हैं।

किलकित कान्ह घुटुरुवन आवत।
मनिमय कनक नन्द के आँगन,
मुख प्रतिबिम्ब पकरिबे धावत॥
कबहुँ निरखि हरि आप छाँह को
कर सों पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ
पुनि पुनि तिहि अवगाहत॥
बाल दशा सुख निरखि जशोदा।
पुनि पुनि नन्द बुलावत।
अंचरा तर लै ढाँकि सूर की
प्रभु को दूध पियावत॥

अब वह नन्द जी द्वारा चलाए जाते हैं। कभी गिरते कभी चलते हैं। बलशाली भी हो चले हैं। नन्द उनको बोलना सिखाते हैं। परन्तु वह घर को भाग जाते हैं। यशोदा भोजनालय जाती हैं। परन्तु बिना कृष्ण के उनको चैन कैसे पड़ सकता है वह उनको पुकारती हैं। घुटुनों के बल दौड़कर आते जिससे उनके धूल लग जाती है वह उनको पोंछकर कहती हैं, कि तुम बड़े नटखट हो।

नन्द धाम खेलत हरि डोलत
जसुमति करत रसोई भीतर,
आपुन किलकत बोलत।

जसोदा के लाख सिखाने पर भी वे नहीं चल सकते हैं बलराम को जसोदा जी यह कह कर कि दोनो भाई खेलो, बुलाती हैं।

सिखवत चलन जसोदा मैय्या।
अरबराय करि पानि गहावत,
डगमगाय धरे पैय्या
कबहुक कुल देवता मनावति,
चिरजीवी मेरे बाल कन्हैया।
कबहुक बल को हेरि बुलावति,
इहि आँगन खेलो दुह भैय्या॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान कृष्ण तुतलीआवाज से बोलने लगते हैं। उनको दही रोटी बहुत पसन्द है वे अपनी मैय्या से बारम्बार दही रोटी माँगते है।

गोपाल राय मांगत दधि औ रोटी।
माखन सहित देहि मेरी जननी सुपक सुमंगल मोटी
सूरदास को ठाकुर ठाढ़ो, हाथ लकुट लिए छोटी॥

जसोदा जी उनको दूध पिलाती हैं। नाना भाँति से उनको बहकाकर दूध पिलाती हैं और कहती हैं कि तुम्हारी चोटी दूध पीने से बढ़ जाएगी। इस पर वे दूध पीने लगते हैं और चोटी भी देख रहे हैं कि बढ़ती है अथवा नहीं। उनकी करतूती पर माता जी को सहसा हंसी आ जाती है।

कजरी के पय पियहु लाल
तेरी चोटी खूब बढ़ै।
यह सुन कर हरि पीवन लागे
ज्यों त्यों लयों लुढ़ै।

अब वह ठीक ठीक बोलने भी लगे हैं। यशोदा को मैंय्या कह कर पुकारने लगे हैं। नन्द को बाबा, बलदाऊ को भैय्या कह कर पुकारते हैं। जसोदा जी उनको सावधानी से रखती हैं। कहीं ऐसा न हो किसी की गैय्या मार दे। अब ग्वाल सखाओं के बीच में गाते, नाचते हैं। कभी बाबा को बुलाते, कभी माखन खाते कभी खम्भे में अपनी परछाईं देखते हैं। यशोदा जी यह सब आड़ में खड़ी देख रही है और मन ही मन प्रसन्न हो रहीं हैं।

हरि अपने आगे कुछ गावत।
तनक तनक चरनन सो नाचत,
मन ही मनहिं रिझावत॥

खाते समय नन्द बाबा की गोद में बैठते हैं। कुछ खाते और कुछ जमीन पर गिराते हैं। बाबा को भी अपने कोमल हाथों से खिलाते हैं। इस परमानन्द का वर्णन सूरदास ने कैसा ही अनोखा किया है। वे कृष्ण जी के जूठन के लिए व्याकुल हैं।

कछुक खात कछु धरनि गिरावत
छवि निरखत नन्दरनियाँ॥

जब वह रात को नन्द की गोद से अलग सोते हैं नन्द को चैन नहीं पड़ती। वे व्याकुल हैं। प्रातः होते ही वह उनके मुँह पर से कपड़ा हटा देते हैं। उस समय वह सो ही रहे हैं।

प्रात समय उठि सोवत हरि को बदन उघारयो नंद।
रहि न सकत देखन को आतुर नैन निशा कै द्वन्द॥

अब वे रूठ गये हैं। खेलने नहीं जाते हैं। कि कहते हैं बलराम हमको चिढ़ाते हैं कि तू देवकी का पुत्र है। तुमको यशोदा जी ने कब पैदा किया है। फिर नन्द बाबा, तथा यशोदा गोरी हैं तुम तो कालेहो। मोहन खिसिया जाते हैं। नन्द बाबा उनको इस प्रकार देखकर छाती से लगा लेते हैं। और भगवान् कृष्ण उस समय मन ही मन प्रसन्न होते हैं।

पांडे जी को नेउता दिया गया है। पाँडे जैसे ही ध्यान करने के लिये आखें मूदते हैं। वैसे ही वे उनकी थाली उठा ले जाते हैं।

पाँडे नहिं भोग लगावन पावै।
करि करि पाक जबहिं अरपत हैं,
तबहिं तबहिं छे आवै।
इच्छा करि मैं ब्राह्मन न्यो त्यौं,
तू कैसे उठि धावै॥

वे अत्यन्त ही नटखट और ऊधमी हो गये हैं। जिसके घर को सूना देखते हैं, घुस जाते हैं। और दही चुरा २ कर खूब खाते और अपने साथियों को खिलाते हैं। छींके पर से दही उतार लाते हैं। बरतन भडवां भी फोड़ डालते हैं। ग्वालिन के सोते लड़कों पर जूठा दही छिड़क कर जैसे भागने लगे, कि ग्वालिन आ जाती है और यशोदा जी के पास उनकी शिकायत ले जाती है।

श्याम गए ग्वालिन घर सूनों।
माखन खाय डारि सब
गोरस बासन फौरि सारे हट ह्यो॥

जब गाय चराने जाते हैं उस समय ग्वाल उनको तंग करते हैं वे शिकायत लेकर यशोदा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल पत्रिका
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास आते हैं इस पर वे बहुत ही प्रसन्न होती हैं। वह कहती हैं।

मैय्या मैं न चरे हौं गाय।
सिगरे ग्वाल घिरावत मो सों,
मेरे पांय पिराइ।

एक ग्वालिन ने माखन चोरी का दावा यशोदा के सामने कृष्ण के सहित पेश किया है। वह तरह तरह की कसमें खाते हैं और कहते हैं कि मैंने मांखन नहीं खाया है।

मैय्या मेरी मैं नहिं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे,
मधुबन मोहिं पठायो।
चार पहर बन्शीवट भटक्यो,
सांझ परे घर आयो॥

इस मधुर बाल लीला को पढ़कर हृदय गद्गद् हो जाता है।

युग-परिवर्तन

(श्रीयुत प्रचंडिया, एम० ए०)

वहीं जहाँ के तहाँ दीखते आज,
गगन में चांद सितारे।
वही वही भू मंडल प्यारा,
वहीं आज भी साँझ सकारे॥
किन्तु बदलता दीख रहा है,
आज मनुज का रुप अहम्।
आज धरा पर मनुज जरा को,
जीता जाता व्याप्त वहम्॥
अरे बुहारी आज जा रही,
मानवता अवनी से।
आज रो रहा फूट फूट नर,
कर निज दुष्करनी से॥

आज ही आर्डर दीजिए

दीवार पर टांगने के चित्र—

१—प्राकृतिक तथा राजनैतिक सीमाएं तथा आवागमन के साधन ४॥) प्रत्येक
३०″ × ४०″ कपड़ा—रौलर लगे वार्निशहुए
भारत-एशिया-यूरोप-उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका
आस्ट्रेलिया-अफ्रीका-संसार
२—उपरोक्त ४०″ × ६०″— ८) ,,
३— प्रदेशीय चित्र अर्थात उत्तर प्रदेश, बिहार पंजाब आदि ५॥) ,,
४—आऊट लाइन ब्लैक (सिर्फ खाका)— ३६″ × ४२″ १२) ,,
५—विश्व अथवा भारत की वाल एटलस
प्रत्येक में सात चित्र ३४″ × ४४″ ५५) सैट

कृषि के चार्ट—

(१) भारतीय पत्तियां (२) फल (३) तने (४) पौधे (५) फूल (६) जड़े प्रत्येक कपड़े रौलर व वार्निश सहित २०″ × ३०″ २॥) प्रत्येक १३) सैट

जापानी ढंग से चावल की उपज १॥)

प्रसार कार्य साइज २०″ × ३०″ } (१) इनका आदर करो (४) एकता (२) शिक्षा का प्रसार (५) छुआ छूत से बचो। (३) सफाई रक्खो (६) बुरी आदतों सेबचो } केवलकागज–६) सैट कपड़ा लगे– १२) ,,

नागरिक शास्त्र चित्र १५″ × २०″ २५) सैट

इनके अतिरिक्त सैकड़ों प्रकार के अन्य चार्ट हैं कीमतों के लिए लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने क्लास रूम और स्कूल को सजाइये !

घर को सुन्दर बनाइये !

जवाहर लाल, गाँधी जी, सुभाषचन्द और गौतमबुद्ध की प्रतिमाएं १ फीट ऊंची ४) प्रति

शिव पार्वती, राधाकृष्ण और गौतमबुद्ध सजाई हुई ५) प्रति

गाँधी जी सफेद या सुनहरी और कृष्ण की २० इंच ऊंची खड़ी प्रतिमाएं हुई ७) प्रति

विद्रोही बानपुर मूल्य सवा रुपया

सन् ५७ के गदर में झांसी वाली रानी के सहायक महाराजा बानपुर का इतिहास सन् १९-५४ में विन्ध्य सरकार द्वारा इतिहास विषय में सर्वप्रथम छत्रसाल पुरस्कार द्वारा सम्मानित।

त्रिवेणी के संगम पर मूल्य सवा रुपया

विभिन्न विषयों पर ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली की कविताओं का सरस संकलन।

संस्कृत प्रश्नोत्तर

चार आना कमीशन चौथाई

सन् ५२, ५३, ५४ की जू० हा० स्कूल की संस्कृत परीक्षा के प्रश्न-पत्र और उनके उत्तर। हमारे अन्य प्रश्नोत्तरों की तरह उपयोगी और उत्तम। चिकना कागज बढ़िया छपाई मू० केवल चार आना।

A BEST WAY OF IDIOMS & PROVREBS

छः आना कमीशन चौथाई

पहले क्रमानुसार अंग्रेजी कहावतों का हिन्दी तथा सरल अंग्रेजी में अर्थ। उसके बाद अंग्रेजी की Proverbs का सरल अंग्रेजी और हिन्दी में अर्थ और अन्त में अंग्रेजी की कहावत तथा उसकी समानन्तर हिन्दी कहावत दी गई है। प्रयोग विद्यार्थियों के लिए ही छोड़ दिया गया है। यह पुस्तक विद्यार्थियों का उचित मार्ग प्रदर्शन करेगी तथा उनकी रटने वाली आदत छुड़ायेगी।

हाई स्कूल परीक्षा सालव्ड पेपर्स

सब प्रश्नोत्तर सन् १९५४ ई० तक हल हैं।

भारतीय इतिहास प्रश्नोत्तर	१॥) क० आधा	जनरल साइन्स	१॥) क० आधा
प्रश्नोत्तर वर्ल्ड हिस्ट्री	॥।) ,, ,,	इकोनामिक्स	२) ,, ,,
भूगोल प्रश्नोत्तर	२) ,, ,,	आर्थिक भूगोल	२॥) ,, ,,
मैथमैटिक्स प्रश्नोत्तर	२) ,, ,,	इंगलिश प्रश्नोत्तर (एडवान्स) मूल्य	३) ,, ,,
एलीमेन्ट्री मैथ्स	॥।) ,, ,,	हिन्दी प्रश्नोत्तर ,,	४) ,, ,,
विज्ञान प्रश्नोत्तर	२) ,, ,,	टु डे एंड टुमारो की कुञ्जी क० ८ मू०	२) क० आ०
सिविक्स	३) क० आधा	कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग १ ,,	≡) ,, ,,
बुक कीपिंग	१॥।) ,, ,,	कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग २ ,,	≡) ,, ,,
कामर्स	२) ,, ,,	कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग ३ ,,	।=) ,, ,,

मैनेजर—गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जू० हा० स्कूल परीक्षा प्रश्नोत्तर

विज्ञान प्रश्नोत्तर	छः आना
प्रश्नोत्तर आर्ट, क्राफ्ट	बारह आना
,, व्यापारिक शिक्षा व व्यापार प्रणाली	छः आना
,, ज्यामेट्री	आठ आना
,, भूगोल	दस आना
,, इतिहास	दस आना
,, गणित	एक रुपया
,, स्वास्थ्य रक्षा	आठ आना
,, ग्राम्यज्ञान	बारह आना
प्रश्नोत्तर हिन्दी व्याकरण, साहित्य	चार आना
,, अपठित, रचना	आठ आना
,, इतिहास, भूगोल	सवा रुपया
इंगलिश प्रश्नोत्तर	एक रुपया
संस्कृत प्रश्नोत्तर	चार आना
प्रश्नपत्र पठित, अपठित	आठ आना

कमीशन सब पर चौथाई।

हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकें

इण्टर, हाई स्कूल, जूनियर हाई स्कूल तथा हिन्दी की अन्य परीक्षाओं जैसे विशारद, प्रभाकर तथा प्रथमा आदि के लिए उत्तम पुस्तकें।

	मू०	कमीशन
हिन्दी साहित्य कोष	५)	चौथाई
काव्य चन्द्रिका	१।)	,,
निबन्धावली	१॥)	तिहाई
निबन्ध भूषण	१)	,,
हिन्दी व्याकरण परिचय	१)	,,
हिन्दी व्याकरण सार	।=)	,,
कहावत मुहावरे	।॥)	,,
अनुवाद मंजरी	॥)	,,
अन्त्याक्षरी पद संग्रह	॥)	चौथाई
सुमन संचय	१॥)	,,

परीक्षा की कापी

प्रति हज़ार ६½″ × ८½″ साइज़ की कवर पर आपके स्कूल का नाम छापा जायगा।

	८ पेजी	१२ पेजी	१६ पेजी
१० lb. का कागज़	२२)	३०)	४०)
८ lb. का कागज़	२०)	२५)	३५)

मिलने का पता—

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

गणित की पुस्तकें

गणित नोट बुक	१॥)	तिहाई
बाल बीजगणित	१)	आधा
भूमिति शिक्षिका	।)	तिहाई
बहीखाता	।=)	चौथाई
गणित प्रश्नोत्तर हाई स्कूल	२)	आधा
,, ,, जूनियर हाई स्कूल	१)	चौथाई

इतिहास की पुस्तकें व एटलसें

एतिहासिक एटलस भाग १	१)	तिहाई
,, ,, भाग २	।॥)	,,
भारतीय इतिहास प्रश्नोत्तर हाई स्कूल	१॥)	आधा
,, ,, जू० हा० स्कूल	॥=)	चौथाई
भारत का इतिहास कक्षा ६	।॥)	आधा
सरल नागरिक ज्ञान	।=)	,,

उपयोगी प्रश्नोत्तरियाँ

सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी प्राचीन भारत	चार आना
सरल प्रश्नोत्तरी मध्यकालीन भारत	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी अर्वाचीन भारत	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग १	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग २	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग ३	आठ आना

आपके पुस्तकालय के लिए

हमारी चुनी हुई पुस्तकें

आजादी की कहानी	२॥)	क० चौथाई
हिन्दी साहित्य कोष	५)	,,
नेताओं की कहानी	॥)	,,
मधुर गीता	॥)	,,
जादू के खेल	॥=)	,,
घरेलू इलाज व दस्तकारी	॥=)	,,
केले और पपीते की खेती	।)	,,
गृह शास्त्र भाग १	१॥)	तिहाई
,, २	।॥)	,,
बेसिक ड्रामा	॥)	आधा

मैनेजर—गुप्ता ब्रदर्स, मण्डी धनौरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालमण्डल

जनवरी सन् १९५५ ई०

टुन्नू का घोड़ा

★

टुन्नू ने एक डन्डा पाया, कपड़ों से फिर उसे सजाया,
पकड़ मूँठ बाँधी रस्सी से, कूद चढ़ा उस पर जल्दी से,
दौड़ा हुआ गया चुन्नू तक, बोला उससे कुछ मुस्कराकर,
देखो चुन्नू, मेला घोला, घास न खाता चलता घोला,
अभी दोलाता हूँ मैं, इसका खेल दिखाता हूँ मैं,
टिक टिक कर उसको दौड़ाया, खटर खटर कर शोर मचाया,
पैर थक गये जब टुन्नू के, उसको लौटाया दे झटके,

उतर उसने सहलाया घोड़ा,
कैसा है टुन्नू का घोड़ा ॥

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग्य चक्र।

[ले. आशु कवि पं० रामाधार शुक्ल छिदवाड़ा]

सूर्य भगवान अस्त हो रहे थे। सभी मनुष्य एवं पक्षी अपने नीडों को वापस आ जा रहे थे। गडरिये की बेटी रूपवती भी अपनी बकरी चराकर लौट रही थी। सुबह से कुछ न खाने के कारण उसके पग आगे न बढ़ते थे। उसे याद आया कि उसकी विमाता ने कुछ खाने को साथ में बाँध दिया था। रूपवती ने क्षुधा शान्ति हेतु चिथड़े में लिपटी सूखी मिट्टी मिश्रित रोटी निकाली, जिससे तालू तक छिल जायें। देख कर बेचारी कुछ विचार कर अनायास ही बिलख बिलख कर रोने लगी। संसार में चाहे मनुष्य मनुष्य का साथ न दे परन्तु आंसू सदा दुखः दर्द के साथी होते हैं।

सोचती थी हाय मैं कितनी अभागिन हूँ जो पैदा होते ही माँ की मृत्यु हो गई। पिता जी ने तो दूसरी शादी कर अपने अभाव की पूर्ति की एवं सुख पाया। क्या मेरी मां जीवित होती तो मुझसे इतना काम करवाती झूंठा एवं सूखा भोजन खाने को तथा चिथड़े पहिनने को देती इतना ही नहीं मुझे विमाता की क्रूर ठोकरें भी खानी पड़ती हैं। ऐसा विचार कर फिर वह जोर से रो पड़ी सौभाग्य की बात शंकर पार्वती उधर से अपने वाहन पर भ्रमण के लिए जा रहे थे। वन में विलाप सुनकर करूणामयी पार्वती का कोमल हृदय द्रवित हो उठा। उन्होंने शंकर जी से उस स्थान की ओर चलने को कहा। पहले तो शिवजी ने आनाकानी की पर अन्त में जाना ही पड़ा। अन्तरयामी प्रभु शंकर ने सब कुछ जानते हुये भी रूपवती से पूछा।

शंकर—तुम क्यों रो रही हो बेटी।

रूपवती—(सटपटा कर) कुछ नहीं बाबा मेरे भाग्य में रोना ही लिखा है।

शंकर—बेटी तुम निराश क्यों होती हो मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। यदि तुम चाहो तो अब भी उसका निर्माण कर सकती हो।

रूपा ने कुछ और न कहकर अपने रोने का सारा कारण बता दिया। शिवजी ने एक सोटा रूपा को देकर कहा जब तुम इसे बेर के झाड़ पर मारोगी तुम्हें मन चाहा भोजन मिलेगा और शिवजी अन्तर ध्यान होगए।

अब रूपा उस सोटे के कारण काफी प्रसन्न रहने लगी, प्रसन्नता एवं मोटापा उसकी विमाता के आँखों में खटकने लगा तथा उसने रूपा से इसका कारण पूछा। बेचारी रूपा जो कि सीधी-सादी, झूठ पाप से अनभिज्ञ थी, सब सच बात बता दी सोटा भी दिखा दिया। विमाता ने सुअवसर पा सोटा चुरा लिया और आनन्दित हुई अपने इस तुच्छ कार्य पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर रूपा अपना सर्वस्व खोकर काफी दुखित हुई और फिर से भाग्य की परीक्षा लेने के लिये वन में जाकर विलाप करने लगी। पार्वती जी विलाप सुनकर विघ्न उठी और शिव से कहा-ज्ञात होता है उस लड़की पर फिर विपत्ति आ गई है। शंकर जी ने आनाकानी की और कहा यह तो संसार है यहाँ विपत्तियाँ लगी ही रहती हैं। परन्तु पार्वती के हठ से उन्हें जाना ही पड़ा। इस बार फिर शिवजी ने रूपा से रोने का कारण पूछा, रूपा ने उत्तर में रो रो कर सारी घटना सुना दी। विपत्ति से छुटाने के लिये शंकर जी ने एक डिब्बी दी और कहा इससे तुम जो भी भोजन मांगोगी मिलेगा, और प्रभु अन्तर ध्यान हो गये।

रूपा इस डिब्बी की परीक्षा करने के लिये बहुत उत्सुक हो रही थी, तुरन्त ही उसने कहा यदि तुम में कुछ सत्यता है, तुरन्त ही सब प्रकार के खाद्य पदार्थ तैयार हो जायँ, कहते ही सब प्रकार के भोजन उपस्थित हो गये। वह अत्यधिक प्रसन्न हुई और इच्छा भर भोजन किया, इस प्रकार वह स्वस्थ एवं प्रसन्न रहने लगी, पर सुख सदा स्थाई नहीं रहता! विमाता की क्रूरता और घृणा उसके प्रति और बढ़ती गई! तथा काफी कष्ट देने लगी। क्योंकि उसकी बहन चम्पा उसके सम्मुख नौकरानी सी प्रतीत होती थी।

एक दिन सांयकाल विमाता ने पति से आग्रह किया कि रूपा के कारण उसे बहुत मुसीबत का सामना करना पड़ता है। अतः उसे वन में छोड़ दिया जाय। पति पत्नी का हठ न टाल सके और रूपा को बेर खिलाने के बहाने वन में ले गये। बेटी से बेर तोड़ लाने को कहा और स्वयं आराम करने लगे। रूपा किसी भी अनहोनी की आशंका न कर बेर तोड़ने में व्यस्त हो गई इसी समय उसके पिता ने अपना कुर्ता टोपी झाड़ पर टाँग घर की राह ली।

जब रूपा काफी बेर तोड़कर लौटी तो अपने पिता को न पाकर अत्यन्त दुखी हुई तथा रोने लगी। और सोचने लगी दुनियाँ में कोई किसी का नहीं होता यहाँ तक पिता भी मुझे धोखा दे गये। अब मैं भाग्य के आसरे इसी वन में अकेली रहूँगी! वह छोटी सी झोंपड़ी बना अपनी अमूल्य निधि डिब्बी के साथ रहने लगी। कुछ समय पश्चात् उसी वन में एक राजकुमार शिकार के लिये आये। उन्हें प्यास लगी पर जल न मिलने के कारण व्याकुल हो गये अचानक उन्हें रूपा की झोंपड़ी दिखाई दी, और आशा भी हुई। राजकुमार ने वहां जाकर जल माँगा। रूपा ने डिब्बी से जल एवं भोजन माँगकर राजकुमार तथा उनके साथियों को संतुष्ट किया। राजकुमार उस अबोध बालिका के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर घर वापस आ गये। घर आकर राजकुमार खाट से लगे, तथा अब जल भी छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया ! माँ के कारण पूछने पर उन्होंने कहा कि मैं तो वन में रहने वाली गडरिए की लड़की से विवाह करूंगा-पहले तो माँ ने समझाया पर अन्त में राजकुमार के निश्चय के आगे उनकी कुछ न चली।

अतः राजा ने गडरिया के यहां शादी की खबर भेजी गडरिया की स्त्री यह समझ कर कि चम्पा रानी बनेगी बहुत प्रसन्न हुई पर जब राजा ने कहा जंगल वाली लड़की से शादी होगी तो उसका मन मलिन होगया है। अन्त में शादी तय हो गई। बरात वन में गई। और राजकुमार की शादी रूपा के साथ हो गई। रूपा की प्रसन्नता का पारावार ही न रहा। बरात राजकुमार के देश वापिस चली मार्ग में राजकुमार के छोटे भाई को प्यास लगी उन्होंने भइया से कहा। राजकुमार ने सम्मुख जल न देखकर कहा कि अपनी भाभी से जल मांगो। रूपा ने उसे डिब्बी से जल मांगकर दिया। राज्य में काफी खुशियां मनाई गई।

पर सुख के पीछे दुख परछाई की भांति लगा रहता है। रूपा सुसराल से घर आई। रूपा की बिमाता जो उससे ईर्षा करती थी एक दिन सिर धोने के बहाने उसने रूपा के सिर में एक कीला गाड़ दिया। जिससे रूपा तुरन्त चिड़िया बनकर उड़ गई। बिमाता बहुत ही प्रसन्न हुई। और जब राजकुमार रूपा को बिदा कराने आये तो उसने अपनी बेटी चम्पा को बिदा कर दिया।

राजकुमार हर्ष समेत चम्पावती को बिदा कर आ रहे थे। मार्ग में उनके छोटे भाई को प्यास तथा भूख लगी। राजकुमार ने पानी तथा खाना भाभी से माँगने को कहा पर अबकी बार उन्हें जल न मिला और चम्पावती ने कहा—

यहां चूल्हा न चाकी, मैं रोटी कहां से लाऊं।
न कुआ न बावरी मैं कहाँ से पानी लाऊं॥

राजकुमार यह सुनकर अचम्भे में पड़ गये ! तथा सोचने लगे अवश्य ही गडरिये ने हमारे साथ कोई छल कपट किया है।

परन्तु राजकुमार कुछ समझ न सके। वह अपने राजमहल पहुँचे, वहां उनके उपवन में प्रति दिन एक चिड़िया आती और गाती।

रूपवती है डमर जय, चम्पावती है डेरा !
ऐसे राजा भूल गये, नारंगी नीचे डेरा।

हंसती तो फूल गिरते रोती तो मोती।

राजकुमार उसकी बात सुनकर बड़े आश्चर्य में पड़ गया और उसने उस चिड़िया को पकड़वा मंगाया। तत्पश्चात् चिड़ियां को नहलाते समय कीला राजकुमार के हाथ में गड़ा। उन्होंने उसे सुनार के यहां निकलवाने भेज दिया। रूपा फिर अपने वास्तविक स्वरूप में आ गई और उसने सारी बात कह सुनाई जिससे राजकुमार ने चम्पावती को मृत्यु दण्ड एवं रूपा को रनिवास की आज्ञा दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112720

बाल मण्डल की सदस्यता के नियम

(१) पन्द्रह वर्ष तक उम्र का कोई भी बच्चा छपा हुआ बाल मण्डल सदस्यता कूपन भर कर इस मण्डल का सदस्य हो सकता है।

(२) इसमें बालोपयोगी रचनाएं ही प्रकाशित हुआ करेंगी

(३) बाल मण्डल सदस्यता कूपन भर कर आने पर सदस्य का नाम प्रकाशित किया जावेगा।

(४) बच्चों द्वारा भेज गई समस्त रचनाएं इसमें प्रकाशित की जावेंगी।

(५) सदस्यता कूपन तथा रचनाएं प्रकाशनार्थ "सम्पादक बालमण्डल" शिक्षासुधा मण्डी धनौरा मुरादाबाद) के नाम भेजा जाना चाहिये।

बाल मण्डल के सदस्य

१—अम्बिका प्रसाद सिंह अरैला
२—सत्यदेव शुक्ल कोड़ाजहानाबाद
३—श्रीराम पाण्डेय लालपुर
४—विनोद कुमार धनौरा
५—रमेश चन्द्र पाली खुर्द
६—यतीन्द्र धनौरा
७—रामदत्तमिश्र लालपुर शिवराजपुर
८—ब्रजेन्द्र कुमार मेरठ
९—रामनाथ मौर्य सिकरारा
१०—विजय बहादुर श्रीवास्तव मीरापुर

★

भूगोल की पुस्तकें, एटलसें व अभ्यास कापियाँ तथा नकशे

जगत मान् चित्रावली	ढाई रुपया
एशिया मान चित्रावली	डेढ़ रुपया
भारत मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
अभ्यासकापी संसार व भारत	बारह आना
" भारत	छः आना
विश्व भू वर्णन	दस आना
एशिया भू वर्णन	पाँच आना
प्राकृतिक भूगोल भाग ३	तीन आना
" " भाग १,२	तीन आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
" भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
नकशे	छः आना प्रति

(संसार, भारत, उत्तर प्रदेश जिला बिजनौर तथा हर एक महाद्वीप का रंगीन राजनैतिक मानचित्र। एशिया, भारत प्राकृतिक मानचित्र)

दुनिया की मश्की कापी	दस आना
एशिया " " "	छः आना
भारत " " "	छः आना
भूगोल प्रश्नोत्तर	दस आना
नवीन भूगोल भारत कक्षा ६	आठ आना
" " एशिया " ७	आठ आना

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनाम जीतिये !

१०) दस रुपया

अन्तिम तिथि १५—२—५५

प्रथम पुरस्कार सर्व शुद्ध हल पर ५) पांच रुपया
द्वितीय पुरस्कार एक अशुद्धि पर ३) तीन रुपया
तृतीय पुरस्कार दो अशुद्धियों पर २) दो रुपया

वल्लभ पहेली नं० १

[निम्न पत्र में जो खाली स्थान हैं उनमें शरीर के अँग प्रत्यंग का नाम देकर पहेली पूरा करना है]

प्रिय राम—!

मैं कल — पुर दिवा — के साथ जारहा हूँ। गंगा —आज—रस जायेगा। उसकी पूरी खातिरदारी करना। उसे वि — मत करना। मैंने सुना है पं० व्योम — भी आजकल वहीं विशा—की परीक्षा देने गए हैं। तुम इतना घबड़ा क्यों रहे हो ? वि— में मनुष्य को धैर्य से काम लेना चाहिए। दो चार दिन में तुम्हारे लिए एक नौ— भेज दूंगा। पूजा की छुट्टी में काशी विद्या देख आना मैं — पुर में एक — केदार के यहाँ ठहरूँगा।

तुम्हारा: नील

नोट:—उपर्युक्त पत्र में जो खाली स्थान हैं उनमें शरीर के एक एक अंग प्रत्यंग का नाम देकर पत्र पूरा करना है। कृपया नियम अवश्य पढ़िए तथा अन्तिम तिथि का ध्यान रखिए।

वल्लभ पहेली नं० १ के आवश्यक नियम

(१) इस पहेली में वही सम्मिलित होगा जो "शिक्षा सुधा" के बाल मण्डल का सदस्य होगा।

(२) पहेली के साथ "शिक्षा-सुधा" के बाल मण्डल में छपा हुआ सदस्यता, पहेली कूपन भी आना चाहिए।

(३) पहेली के साथ ।) चार आने के टिकट भी आने चाहिए।

(४) पहेली के लिए पत्र तथा पूर्तियाँ वल्लभ पहेली नं० १ मसवासी (उन्नाव) के नाम भेजनी चाहिए।

नोट:—(१) पहेली का उत्तर "शिक्षा-सुधा" में ही फरवरी के अंक में प्रकाशित होगा।

वल्लभ पहेली नं० २ के आवश्यक नियम।

(१) प्रत्येक पहेली के हल के साथ ।) चार आने के टिकट आने अनिवार्य हैं।
(२) हल के साथ छपा हुआ कूपन भी आना आवश्यक है।
(३) हल तथा पहेली के विषय में पत्र व्यवहार "वल्लभ पहेली नं० २ मसवासी, उन्नाव" के नाम करना चाहिए।
(४) पहेली का हल वही शुद्ध माना जायगा जो "साहित्याश्रम मसवासी, उन्नाव" में रखे हुए सील मुहरबन्द सुरक्षित हल से मिल जावेगा।
(५) पहेली का सर्वशुद्धहल शिक्षा-सुधा के मार्च अंक में प्रकाशित होगा तथा पुरस्कार प्राप्त प्रतियोगियों नाम भी प्रकाशित होंगे। तथा शीघ्र ही पुरस्कार भेज दिया जावेगा।

मैनेजर—
वल्लभ पहेली नं० २
मसवासी, उन्नाव

वल्लभ पहेली नं० १ की तिथि
बढ़ाकर १५ फरवरी करदी गई है।
यदि आप पहेली के कूपन चाहें तो दिसम्बर मास का अंक मुफ्त मंगाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल मण्डल सदस्यता का कूपन

नाम सदस्य .....

पिता का नाम .....

आयु .....

निवास-स्थान .....

हस्ताक्षर सदस्य .....

कूपन वल्लभ पहेली नं० २

नाम सदस्य .....

आयु .....

पता .....

दिनांक .....

१५ रुपये के नकद पुरस्कार

सर्व शुद्ध हल पर प्रथम पुरस्कार ६ रुपये

१ अशुद्धि पर द्वितीय पुरस्कार ४ रुपये

२ अशुद्धि पर तृतीय पुरस्कार ३ रुपये

३ अशुद्धि पर चतुर्थ पुरस्कार २ रुपये

नोटः—एक प्रतियोगी ।) चार आने के टिकट भेजकर जितनी पूर्तियाँ चाहें उतनी स्वयं अपनी पूर्तियाँ भेज सकता है।

डाक द्वारा पूर्तियाँ भेजने की अंतिम तिथि—

१५ फरवरी सन् १९५५ ई०

स्थानीय हल प्राप्त होने की अंतिम तिथि—

१० फरवरी सन् १९५५ ई०

वल्लभ पहेली नं० २

नं०	संकेत	वह शब्द जिनमें से एक ठीक हो		सही हल लिखें
१	बच्चे का···यदि ठीक से हो तो उसका भविष्य अवश्य उज्जवल है।	लालन	पालन	
२	···तो क्षणिक है, इसके पीछे दौड़ना मूर्खता है।	छाया	माया	
३	बहुत से लोग · को ही अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं।	नाम	काम	
४	भारत की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए ग्राम्य शिक्षा···अनिवार्य है।	प्रचार	प्रसार	
५	भौतिक···अन्ततः दुखद सिद्ध होता है।	विलास	विकास	
६	यदि · स्वस्थ है तो सफलता की प्राप्ति कुछ भी कठिन नहीं।	तन	मन	
७	बच्चे स्वभावतः · के साथ खेलना पसन्द करते हैं।	धूल	फूल	
८	यदि·· न हो तो प्राणी जीवन संकट ग्रस्त हो जाय।	जल	थल	
९	·· कमल नेत्र-रञ्जक होता है।	नीला	पीला	
१०	यदि किसी की · ऊंची हो तो उसका सामाजिक जीवन वस्तुतः सुखमय है।	नाक	धाक	

टोकन वल्लभ पहेली नं० २

वल्लभ पहेली नं० २ के—खाके भेज रहा हूँ / रही हूँ मुझे आपका हर निर्णय स्वीकार होगा ।) चार आने के टिकट इसी लिफाफे में बन्द हैं।

नाम .....

पता .....

हल इस पते पर भेजिएः—

वल्लभ पहेली नं० २

ममवासी, उन्नाव

(उत्तर प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नई भेंट— // भू-प्रदर्शनी //

कई वर्ष के परिश्रम के बाद हमने संसार की एक एटलस तय्यार कराई है। साईज नकशों का १० × ८ इञ्च है छपाई बहु-रंगी बढ़िया आफसेट द्वारा की गई है। सब से बड़ी बात इस एटलस की उपयोगिता है जिसको अनुभवी अध्यापक परख सकेंगे। अभी तक छपी किसी हिन्दी एटलस में मानव विकास और अर्थ योजना इतनी स्पष्ट और व्यापक नहीं मिलेगी।

भारतवर्ष के चित्रों के साथ-साथ उत्तरप्रदेश के भी तत्सम्बंधी चित्र दिये हैं। चित्र कितने आकर्षक और उपयोगी हैं यह देखकर ही जाना जासकता है। चित्रों का थोड़ा सा वर्णन इस प्रकार है:—

१—पृथ्वी की आकृति और ऋतु परिवर्तन।
२—ग्रहण, ज्वार भाटा, भू-भाग निर्मित पर्वत ज्वाला मुखी आदि के १० चित्र।
३—भिन्न प्रकार के सोते, कुवें, घाटियों, मरू-उद्यान आदि के खोज पूर्ण ९ चित्र।
४—पृथ्वी पर वायु भार व चक्रवात के ८ चित्र।
५—भारत तथा यू० पी० की जलवायु के ४ चित्र और वर्षा तथा तापक्रम का ग्राफ।
६—भारत और यू० पी० के वन।
७— ,, ,, ,, खनिज।
८— ,, ,, ,, उपज।
९— ,, ,, ,, नहरों और विद्युत कुओं, तालाबों द्वारा सिंचाई और नवीन जल व विद्युत योजनायें।
१०—उद्योग और वार्षिक उत्पत्ति का ग्राफ।
११—वायु मार्ग और सड़कें।
१२—रेलें।
१३—आयात और निर्यात तथा प्रमुख व्यापारिक नगरों का अमूल्य वर्णन।
१४-१५-भारत व यू०पी० के प्राकृतिक और नैसर्गिक प्रदेश १६ से १९ तक एशिया के चित्र हैं।
२०—योरूप का राजनैतिक और प्राकृतिक चित्र।
२१—अफ्रीका ,, ,,
(नील की घाटी तथा स्वेज नहर)
२२, २३, २४—पर उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका और आस्ट्रेलिया के राजनैतिक तथा प्राकृतिक चित्र हैं। २५ से ३२ तक संसार के चित्र हैं।

जिनमें प्राकृतिक, राजनैतिक, जलवायु, वनस्पति, धारायें, शक्तिसाधन; खनिज उपज और उद्योग सम्बन्धी चित्र और आनुमानिक तालिकायें हैं। इस प्रकार यह नवीन एटलस सुन्दर और मनोहर सुदृढ़ आवरण पृष्ठ के साथ आपकी भेंट हैं। मूल्य दो रु० कमीशन चौथाई।

गुप्ता ब्रदर्स पब्लिशर्स एण्ड बुक्सेलर्स, मंडी धनौरा (मुरादाबाद)

Printed by Sagar Mal Garg at Gupta Bros Ptg. Works, Mandi Dhanaura. and Published by him for Editor "Shiksha-Sudha".
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१
४२६४५
२४-११-११

लन्दन में इंजीनीयरिंग प्रदर्शनी

फरवरी

★

वार्षिक
मू० १)

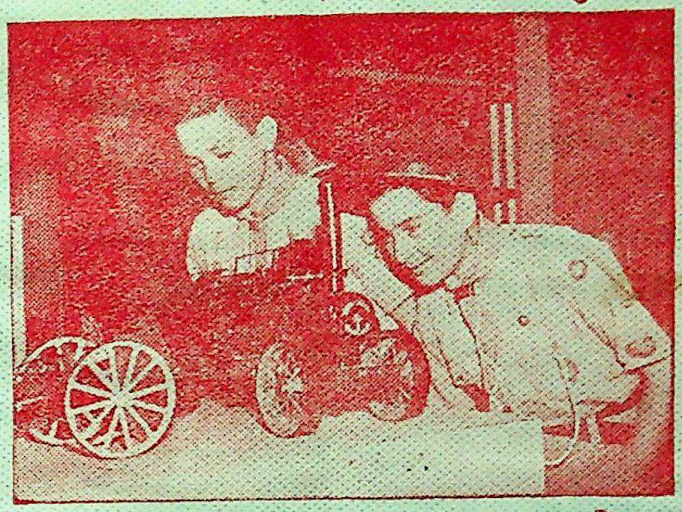

१९५५ ई०

★

एक प्रति
=)

१२ वर्ष से ८५ वर्ष तक की आयु के मनुष्यों द्वारा बनाए गए ३०० नमूनों की पिछले दिनों लन्दन में एक प्रदर्शनी हुई चित्र में दो बच्चे एक इंजन के नमूने का निरीक्षण करते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

संस्थापक
स्व० रामकुमार अग्रवाल

सम्पादक
वीरेन्द्र कुमार
बी० ए० विशारद

इस अंक में

कवि	श्री सुशील कुमार गुप्त 'शलभ'	१
कवि पन्त का जीवन दर्शन	श्री खीमसिंह पड्यार 'निर्मम'	२
काम और अध्ययन	श्री वाई० फिलोनोविच	४
विदाई पत्र		७
विज्ञान वैचित्र्य		९
मैंने देखा	श्री कृष्ण प्रकाश शर्मा	१०
तू प्रेम सुधा की गागरी	श्री राममिलन सुधाकर	१०
किसान	श्री भोला प्रसाद	११
भोजन में कौन और कितनी चीजें		१२
स्व० पराड़कर जी से एक भेंट	श्री कमलेश	१३

बाल-मण्डल

मूर्ख पिता पुत्र	श्री भगवानसिंह चन्देल	१७
देखो रे शीत भागया है	श्री अरुण कुमार	१८
सेवा	श्री सत्यदेव शुक्ल	१८
पाजामे का किस्सा	श्री गयाप्रसाद	१९
किसान और खेत	श्री सनन्दन	२०

सूचना—

बल्लभ पहेली के परिणाम आगामी अंक में प्रकाशित होंगे।

वार्षिक मूल्य
एक रुपया

गुप्ता ब्रदर्स, पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, मण्डी धनौरा

एक प्रति
दो आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

कलश १८, बून्द ८—फरवरी १९५५ ई०

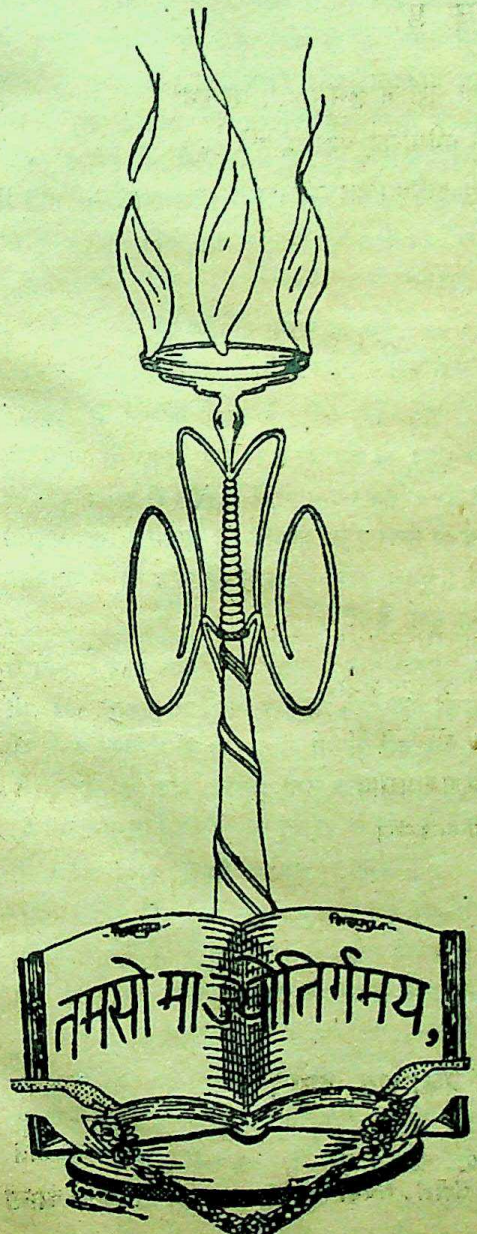

कवि !

श्री सुशील कुमार गुप्त 'शलभ'

कवि ! जग का विध्वंस साथ लो
जिससे युग हुँकारों के पथ
असफल मौन चरण चलते हों—
जन की श्वासों का निज कम्पन
नव युग से नव चरण मिलाकर
असफल जय स्वर बोल रहे हों ॥१॥

विश्वासों का भार ग्रहणकर
जिसमें मानव दर्शन पलकर
युग के सत्वर चरण चले हैं—
युग की दानवता के पथ पर
असफल जग की सफल श्वास ले
चरणों में इतिहास लिखे हैं ॥२॥

कवि ! असफल जयनाद वहनकर
जिसमें उसके चरण चिन्ह से
युग के असफल द्वार खुले हैं—
आसूँ के विस्तार उगलकर
युग के रोये जन जन से
ले युग के विश्वास चले हैं ॥३॥

संक्रांति काल के गति ग्रहणकर
जिसमें युग के दर्शन के पथ
शोषित जन के द्वार खुले हैं—
युग के शोषण के युग-पथ पर
नूतन जग की नई मान्यता
जिसमें युग के प्राण पले हैं ॥४॥

कवि निज युग के राग अमर कर
उसकी बर्बरता के पथ पर
मानवता का स्वर फिर भर दो
मनु का मानव खड़ा द्वार पर—
विस्मय, विस्मृति के कंटों में
फिर विश्रुत इतिहास घोल दो ॥५॥

निर्मम जग से राग बधिर कर
खोए विश्वासों के पथ पर
मानवता के गीत बजा दो—
खँडहर की ध्वनियों में बसकर
युग महान के युग पदतल पर
कम्पित विश्व जगा दो ॥६॥

महाक्रांति के स्वर सँगम पर
कवि ! जीवन की साध साध लो
कवि ! जग का विध्वंस साथ लो ॥७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृत्ति के पुरोहित-पंत का जीवन दर्शन

ले०—खीमसिंह पड्यार "निर्मम" 'साहित्य रत्न'

इस बीसवीं शती में चाहे अन्य कितने ही परिवर्तन हुए हों पर हिन्दी-साहित्य के इतिहास में एक अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। जिसके कारण आज हिन्दी राष्ट्र-भारत की राष्ट्र-भाषा होने जा रही है। यद्यपि इस युग को गद्य का युग कहा जाता है, परन्तु जिस युग में प्रकृत्ति के पुरोहित कविवर पंत जैसे महान कवि उत्पन्न हुए उस युग यह की संज्ञा सर्वथा पूर्ण-रूपेण उचित नहीं।

हिमालय की तलहटी-प्रकृत्ति की क्रीड़ा भूमि में बीसवीं शती के प्रथम वर्ष में ही इस अमर कलाकार ने जन्म लिया। जो अब इस शती के साथ ही साथ आगे बढ़ता जा रहा है।

आज के युग में मनुष्य की आवश्यकताओं की अत्यन्त वृद्धि हो जाने से मनुष्य अपने में ही इतने उलझ गए हैं कि उनका सृष्टि के साथ रागात्मक सम्बन्ध ढीला पड़ गया है। ऐसी स्थिति में उस सम्बन्ध-विच्छेद को बचाने के लिए अमर कलाकारों की आवश्यकता है।

श्री श्यामसुन्दरदास जी अपने 'साहित्यालोचन' में लिखते हैं कि "ज्यों ज्यों मनुष्य के व्यापार का क्षेत्र जटिल और सघन होता गया त्यों त्यों सृष्टि के साथ उनके रागात्मक सम्बन्ध के विच्छेद की आशंका बढ़ती गई। ऐसी स्थिति में बड़े बड़े कवि ही इसे संभालते आए हैं।"

ठीक इसी उक्ति के अनुसार ही कविवर पंत जी ने भी स्थिति संभाली कविता की प्रेरणा इन अमर कवि को प्राकृतिक वातावरण से मिली अल्मोड़ा जैसे प्रकृति की लीला भूमि में अपने विद्यार्थी जीवन ही से कविता के प्रति इनका स्वाभाविक झुकाव रहा। स्वयं कवि ने अपने शब्दों में लिखा है—"जब मैंने पहले लिखना प्रारम्भ किया था तब मेरे चारों ओर प्राकृतिक परिस्थितियाँ तथा प्राकृत्तिक सौन्दर्य का वातावरण ही ऐसी सजीव वस्तु थी जिससे मुझे प्रेरणा मिलती थी"

कवि के लिए प्रत्येक वस्तु कविता का विषय बन जाती है यदि वह वस्तु सुन्दर हो तो फिर कहना ही क्या?

वन, बाग, तड़ाग, झरने, लहरें, पशु, पक्षी ये सब वस्तुएँ प्रकृत्ति के सौन्दर्य की वृद्धि करती हैं। जिनकी प्रचुरता ने कवि पंत के बाल हृदय में एक रहस्यमय चेतना जाग्रत कर दी और कवि के किशोर हृदय ने 'विहग बालिका' और 'मधुबाला' के स्वर में स्वर मिलाकर 'गुनगुनाना' प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार प्रकृत्ति से कविता ही नहीं संगीत की भी प्रेरणा 'कवि' को मिली। जिसने पंत जी की कविताओं में—"सोने में सुगन्ध" का काम कर दिखाया और कवि भावुक होकर गा उठा—

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि तूने कैसे पहचाना
कहो कहाँ हे बाल विहंगनि पाया तूने यह गाना

इस भाँति कवि के कर्म कौशल ने 'वीणा' नामक संग्रह को जन्म दिया। इस संग्रह में कवि के शब्दों में—"इन रचनाओं में प्रकृत्ति ही अनेक रूप धर कर चपल मुखर-नुपुर बजाती हुई अपने चरण बढ़ाती रही है। समस्त काव्य पट प्राकृतिक सुन्दरता के धूप-छाँह से बना हुआ है।"

इसके बाद 'पल्लव' के रचना काल में कवि से प्रकृत्ति की गोद छिन जाती है पर जिस प्रकार कोई भी मनुष्य एक बार अपनी मातृभाषा को सीखकर कभी भी नहीं भूल सकता ठीक उसी प्रकार कवि के हृदय में 'प्रभावों' के रूप में प्रकृत्ति का सौन्दर्य विद्यमान रहा।

पुनः कवि ने क्रमशः हिन्दी काव्य जगत को सिंचित करते हुए एक भारी कमी की पूर्ति की। स्थानाभाव के कारण संक्षेप में कह सकते है कि कवि के जीवन व कविता के विकास के अनुसार निम्न वर्गीकरण कर सकते हैं—

(१)—पूर्व पंत (२)—मध्य पंत (३) उत्तर पंत 'वीणा,' 'पल्लव,' 'ग्रंथि,' 'गुंजन,' 'ज्योत्सना,' से 'पूर्व पंत' का अध्ययन किया जा सकता है। 'युगांत,' 'युगवाणी,' और 'ग्राम्या,' से मध्य पंत का और 'स्वर्ण-किरण,' 'स्वर्ण धूलि,' तथा 'उत्तरा' से उत्तर पंत का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि की जीवन नौका प्रकृति से मानव व्यापार और दर्शन की ओर अग्रसर होती गई और कवि अपने ही में भूला न रह सका।

प्रारम्भ में कवि ने अपने को 'जन भीरू' भले ही ज्ञात किया हो लेकिन अब कवि जनभीरू नहीं रह गया है। जहाँ तक मेरा विचार है अब इस अमर कवि को मनुष्यों के बीच में—कोलाहल पूर्ण वातावरण में भी—बुरा नहीं लगता होगा।

"कविता की महती शक्ति इसी में है कि वह वस्तुओं का वर्णन इस प्रकार करती है; हममें उनके विषय में एक अद्भुत, पूर्ण, नवीन और गहरी भावना उत्तेजित हो जाती है। इस प्रकार वह उनसे हमारा सबंध स्थापित करती है। हमें इस बात का पता नहीं लगता कि वह भावना भ्रमात्मक है अथवा वास्तविक; अथवा हमें वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति या गुणों का ज्ञान कराती है या नहीं। हमें तो इस बात से काम है कि कविता हममें इस भावना को उत्तेजित करती है। इसी में उसकी महत्ता है।" (साहित्यालोचन) के अनुसार कवि पंत की कविताओं की क्या महत्ता हो यह बात किसी से छिपी नहीं है।

जो कविता जीवन के प्रति जिननी अधिक उदासीन रहेगी वह उतनी ही हेय समझी जायेगी। कल्पना के आकाश में उड़ना ही कविता का सर्वस्व नहीं है इसी भाव से प्रेरित होकर कवि ललकार उठता है—

ताक रहे हो गगन ? मृत्यु नीलिमा गहन गहन
निःस्पन्द शून्य, निर्जन, निस्वन ?
देखो भू को स्वर्गिक भू को !
मानव पुण्य प्रसू को !

इस संसार से परे स्वर्ग लोक की कल्पित बातें भी कवि नहीं सुनना चाहता—

मनुज प्रेम से जहाँ रह सकें-मानव ईश्वर
और कौनसा स्वर्ग चाहिए तुझे इस धरा पर ?

इस प्रकार कवि सुगम भू पर प्रेम पूर्ण मानव व्यवहार द्वारा स्वर्ग स्थापन की शुभ कामना करता है।

कवि प्रकृति को व मानव संसार को अपनी मनोवृत्तियों भावनाओं व विचारों द्वारा परखने की चेष्टा करता है; जिसमें उसका जीवन दर्शन स्पष्ट झलकता है। 'बाल-रवि' कभी उसके लिए सोने का थाल बन जाता है और कभी आग का गोला कभी प्रकृति का रूप उसे अति आकर्षक ज्ञात होता है तो कभी महान भयंकर और क्रूरता लिए हुए। इस प्रकार कवि का बाह्य जगत से संबन्ध अपने मनोवृत्तियों के अनुसार ही स्थापित होता है। पर हमारे प्रकृति के पुरोहित कवि पंत ने प्रकृति को क्रूर व क्रुद्ध रूप में नहीं के बराबर ही देखा।

सुख दुःख को कवि स्थाई व एक दूसरे के पूरक के रूप में देखता है—

बिना दुःख के सुख निस्सार ! बिना आंसु के जीवनभार
दीन दुर्बल है रे संसार ! इसी से दया, क्षमा औ प्यार
आज का दुःख कल का आह्लाद !
और कल का सुख आज विषाद
समस्यास्वप्न गूढ़ संसार ! पूर्ति जिसकी उस पार
जगत जीवन का अर्थ विकास ! मृत्यु गति क्रम का ह्रास

इस प्रकार कवि कहता है नित्य जग में उक्त क्रम सदा चलता रहेगा उसकी पूर्ति यहाँ सम्भव नहीं। साथ ही 'अनित्य जग' में—

खोलता इधरजन्म लोचन ! मूँदती उधर मृत्यु क्षण क्षण
अभी उत्सव औ हास हुलास ! अभी अवसाद अश्रु उच्छ्वास
अचिरता देख जगत की आप ! शून्य भरता समीर निःस्वास
डालता पत्तों पर चुपचाप ! ओस के आँसू नीलाकाश
सिसक उठता समुद्र का मन ! सिहर उठते उडगन

कवि एक क्रान्ति लाकर परिवर्त्तन नहीं चाहता वरन सागर तक को वह इस परिवर्त्तन में असमर्थ पाता है। वास्तव में सृष्टि का यह नियम शाश्वत है।

कवि विनाश चाहता है पर नव सृजन के साथ—

"आओ हे दुर्धर्ष वर्ष ! लाओ विनाश के साथ नव सृजन
विंश शताब्दी का महान विज्ञान ज्ञान, ले उत्तर यौवन"

'उत्तर पंत' की अधिकांश रचनाओं में योगिराज अरविंद का जीवन दर्शन इस प्रकार उतर आया है; जिस प्रकार पहाड़ की चोटी से सूर्य की किरणें। कवि अब दार्शनिक अधिक बन गया है। प्रकृति का पुरोहित अब भी है पर गौण रूप से।

अभी हिन्दी काव्य जगत को पंत जी से बड़ी बड़ी आशायें हैं पर मुझे तो लग रहा है वे अब कविता के प्रति उतने जागरूक नहीं हैं। जितनी हिन्दी का व्यजगत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम और अध्ययन

—वाई० फिलोनोविच

सोवियत संघ में विविध प्रकार के शिक्षालयों का व्यापक जाल फैला हुआ है। शहरों और गाँवों में, पूर्वी साईबेरिया के तुषाराच्छादित तुन्द्रा तथा दूरवर्ती इलाकों में—जहाँ भी सोवियत जनता रहती हैं बच्चों के लिए स्कूल तथा किशोरों एवं वयस्कों के लिए शैक्षिक प्रतिष्ठानों का निर्माण हो रहा है। देश में ५७० लाख से ज्यादा लोग अध्ययन कर रहे हैं। उच्च शैक्षिक प्रतिष्ठानों एवं विशेष प्रकार के माध्यमिक स्कूलों में आज तीस लाख से ज्यादा लोग पढ़ रहे हैं। सोवियत संघ में शिक्षा की खास विशिष्टता यह है कि न सिर्फ स्कूल के बच्चों और छात्रों के लिए बरन कल कारखाने और दफ्तर के श्रमिकों तथा किसानों के लिए औद्योगिक प्रतिष्ठानों, संस्थानों अथवा सामूहिक कृषि-शाला के खेतों में काम करते हुए पढ़ने की सुविधा है।

वयस्कों के लिए सांयकालीन स्कूलों के व्यापक जाल पत्र लेखन द्वारा शिक्षा प्राप्त करने की व्यवस्था, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षालय, विविध प्रकार के प्राविधिक एवं वोकेशनल (उद्योग धंधों के शिक्षा देने वाले) स्कूल, ज्ञान पिपासा शांत करने तथा सोवियत विधान के अंतर्गत हासिल शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार का उपभोग करने के लिए जनता के हवाले कर दिए गए हैं। इस समय पाँच लाख से ज्यादा लोग पत्र लेखन द्वारा बीस अखिल संघीय पत्र लेखन इंस्टीच्यूटों तथा उच्च शिक्षालयों के ३८६ पत्र लेखन विभागों में अध्ययन कर रहे हैं। शहरों एवं गाँवों के नवजवान सामान्य शिक्षा देने वाले सायंकालीन स्कूलों को बहुत ज्यादा पसन्द करते हैं जहां पूर्ण माध्यमिक शिक्षा दी जाती है। इन स्कूलों की संख्या बढ़ रही है वर्तमान स्कूली वर्ष में मास्को, लेनिनग्राद, स्वेर्दलोवस्क मोलोतोव, आदि नगरों तथा देहाती इलाके में नए सायंकालीन स्कूल खोले गए हैं। अकेले रूसी संघ में लगभग दस लाख तरूण श्रमिक एवं सामूहिक किसान अपना काम करते हुए अध्ययन कर रहे हैं।

देश में इस तरह के बहुत से कल कारखाने हैं जहाँ श्रमिक वर्कशाप में अपना काम करते हुए माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर सकता है, एक टेकनिशियन और इंजीनियर तक बन सकता है। उदाहरणार्थ स्वेर्दलोवस्क में युराल्स मशीन बिल्डंग फैक्टरी (मशीन बनाने का कारखाना) एक ऐसा ही कारखाना है जो देश के सबसे बड़े औद्योगिक कारखानों में एक है। यह एक मौलिक शिक्षा केन्द्र हैं। यहाँ हर दूसरा श्रमिक अध्ययन करता है अध्ययन करने की इच्छा रखने वाले तरुण श्रमिको के सात स्कूलों, सायंकालीन इन्जीनियरिंग स्कूल, युराल्स पोलीटेकनिकल इन्स्टीच्यूट के सायंकालीन विभाग, तथा टेकनिकल ट्रेनिंग देनेवाले संस्थानों के हालों में अध्ययन कर सकते हैं। १९५३ में युराल्स पोलीटेकनिकल इंस्टीच्यूट तथा अखिल संघीय कारेस्पोंडेंस मशीन बिल्डिंग इन्स्टीच्यूट से २६ तथा सायंकालीन मशीन बिल्डिंग टेकनिकल स्कूल से ८० श्रमिकों तथा विशेषज्ञों ने पास किया। आज विभिन्न इंस्टीच्यूटों में ४६५ लोगों ने पत्र लेखक कोर्स लिया है तथा मशीन बिल्डिंग स्कूल में ३६० लोग पढ़ते हैं टेकनिकल विज्ञानों में एम० एस० सी० की डिग्री के लेने के लिए ४० इंजीनियर गवेषणामूलक निबन्ध तैयार करने में लगे हैं।

दूसरा दृष्टांत ताशकंत की मिलों का है जहाँ बहुत सी उजबेक स्त्रियाँ काम करती हैं। उनमें नूरिया मैवसुमोवा नाम की महिला बुनकर जो उजबेक सोवियत

को आवश्यकता है और आशा है। उनका मार्ग अब सीमित दायरे के अन्दर बँध सा गया है।

कवि के लिए आजन्म स्वतंत्र रहना उसकी महानता का द्योतक है, इसी महानता के लिए उसे अनेकों स्वार्थों का त्याग करना पड़ता है और कविता की बलि-बेदी पर समय पड़ने पर अपने तक को बलिदान करना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाजवादी जनतंत्र की सर्वोच्च सोवियत की सदस्या है, इन शब्दों में अपने अनुभव बयान करती है:—

क्रांति से पहले समूचे ताशकंत में जितने लोग अध्ययन करते थे उससे कहीं अधिक इस समय सिर्फ हमारे औद्योगिक कारखाने में अध्ययन करते हैं। कारखाने में टेक्सटायल इंस्टीच्यूट की एक शाखा टेक्सटायल माध्यमिक स्कूल का एक सायंकालीन विभाग, तरुण श्रमिकों के लिए दो माध्यमिक स्कूल अग्रगामी प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम, प्राविधिक पाठ्यक्रम चालू हैं। मिल के दो हजार सात सौ तेतालीस श्रमिक अपना काम करते हुए इन शिक्षालयों में शिक्षा पाते हैं एक सौ से ऊपर कपड़ा मिल के मजदूर पत्र लेखन इंस्टीच्यूट तथा विशेष प्रकार के माध्यमिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करते हैं।

सोवियत संघ में विशेषज्ञों का बड़ा हिस्सा उन श्रमिकों का है जिन्होंने अपना काम करते हुए माध्यमिक, प्राविधिक अथवा उच्च शिक्षा प्राप्त की है। सोवियत संघ के लोग इसलिए अध्ययन करना चाहते हैं कि प्राप्त ज्ञान के सहारे जटिल आधुनिक टेकनीक में निपुणता प्राप्त करने, अपनी योग्यता बढ़ाने तथा अपने काम में सफलता प्राप्त करने में उन्हें मदद मिलती है।

लूबोव पोलीटेकनिकल इंस्टीच्यूट के सायंकालीन विभाग में चार सौ पच्चीस यानी पिछले साल की तुलना में दुगुने लोग उच्च शिक्षा पा रहे हैं। वे श्रमिक, फोर्मैन, टेकनीकल; रेटसेटर तथा लूबोव के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के नियोजनक हैं। नए स्कूली साल में पोलीटेकनिकल इंस्टीच्यूट के सायंकालीन विभाग का विस्तार करने तथा छात्रों की संख्या ७०० तक संख्या बढ़ाने की योजना बनाई गई है।

अपना काम करते हुए श्रमिकों को न सिर्फ टेकनिकल ज्ञान बढ़ाने या सामान्य शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त है। वरन शाम के समय उनमें से कुछ लोग कला विद्यालय, माध्यमिक संगीत विद्यालय में जाते हैं अथवा साहित्य-दर्शन विभागों में पत्र लेखन कोर्स लेते हैं। हर एक अपनी रूचि के अनुसार शिक्षा संस्थान का चयन करता है।

कृषि के क्षेत्र में काम करने वाले भी अध्ययन करते हैं। समाजवादी कृषि एवं पशुपालन का और भी अधिक विकास करने का कार्य सिर्फ शिक्षित एवं संस्कृत लोगों द्वारा, ऐसे लोगों द्वारा जिन्हें उच्च विज्ञान एवं टेकनीक के मूलभूत तत्वों की जानकारी है सफलता पूर्वक पूरा किया जा सकता है। बहुत से सामूहिक कृषक कृषिविज्ञान एवं टेकनिक के कोर्स लेते हैं जो कृषि-विशेषज्ञों को ट्रेन करते हैं, अथवा ट्रैक्टर चलाने, कम्बाईन चलाने या मोटर ड्राईवरी का कोर्स लेते हैं या कृषि एवं अन्य विशेष प्रकार के माध्यमिक स्कूलों या संस्थानों में पत्र लेखन कोर्स लेते हैं।

क्योंकि सोवियत राज्य शहर और देहात की श्रमिक जनता के सांस्कृतिक एवं प्राविधिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए दैनंदिन प्रयत्नशील रहता है, इस लिए सोवियत संघ में व्यापक पैमाने पर अध्ययन और काम साथ साथ चलता है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों एवं संस्थानों के प्रबन्ध विभाग उन लोगों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करते हैं जो अपना काम करते हुए अध्ययन करते हैं। परीक्षा की तैयारी करने के किए उन्हें छुट्टी दे दी जाती है। पुस्तकालय, टेकनिकल रूम, प्रयोगशालायें और परामर्श देने वाला केन्द्र कुल चीजें निःशुल्क उनके हवाले कर दी गयी हैं।

सोवियत जीवन की समस्त यथार्थता सोवियत जनता के अन्दर अध्ययन करने तथा देश की और भी आगे की प्रगति एवं उन्नति में अपने प्रयास एवं शक्ति लगाने की इच्छा जाग्रत करती है।

गृह शास्त्र तथा कला के लिए

गृह शास्त्र भाग १	१।।) कमीशन तिहाई
" भाग २	।।।) कमीशन तिहाई
सूचिका शिल्प भाग १	।।।=) कमीशन चौथाई
" भाग २	।=) कमीशन चौथाई
कला शिक्षक	१।।) कमीशन तिहाई
कला परिचय	।।।) कमीशन तिहाई
आधुनिक पुस्तक कला	।।।) कमीशन तिहाई

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्को के प्रसूति अस्पताल में

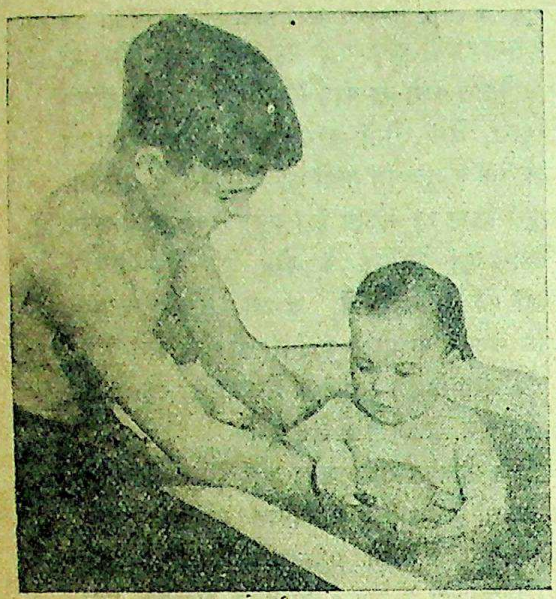

इस बार उसके भाई स्लावा ने मातवेईका को नहलाया।

पापा को समाचार सुनाने के लिए शाम तक प्रतीक्षा करना लीना के लिए कठिन था: "पापा, जल्दी घर आ जाइए, हमें किशोर पायनियर कैम्प का पास मिल गया है।"

नन्हे मातवेईका को भी भुलाया नहीं जाता। बहन उसकी खूबी से पूरी तरह संतुष्ट हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुमन-सञ्चय' तथा 'हिन्दी-साहित्य-कोष' के रचयिता

पं० रामचन्द्र शर्मा 'हिन्दी-प्रभाकर', 'साहित्य-रत्न' की कार्य-निवृत्ति के अवसर पर बैंड के साथ हाथी पर जलूस

आदर्श जूनियर हाई स्कूल नरौली मुरादाबाद के आदर्श हेड मास्टर पं० रामचन्द्र शर्मा को २६ दिसम्बर को समारोह पूर्वक मान-पत्र भेंट किया गया, और बाजे तथा 'पंडित जी की जय', 'शर्मा जी की जय', 'गुरु जी की जय' की तुमुल ध्वनि के बीच हाथी पर शानदार विदाई दी गई। इस अवसर पर कई समयोचित कवितायें सुनाई गईं तथा चित्र लिए गए। शर्मा जी ने अपने सुदीर्घ कार्य-काल में ऊपर की किसी प्रकार की आय का एक पैसा भी कभी ग्रहण नहीं किया। वरन अपने खाली समय में छात्रों को निश्शुल्क शिक्षा देते रहे।

विदाई-पत्र

डि० बो० आदर्श जूनियर हाई स्कूल नरौली के प्रधानाध्यापक, श्री पं० रामचन्द्र जी शर्मा 'हिन्दी प्रभाकर', 'साहित्य रत्न' के कार्य-निवृत्ति के अवसर पर सादर समर्पित।

श्रद्धेय शर्मा जी,

आपने स्कूल, गृहस्थ तथा अनेकों सार्वजनिक दायित्वों का यथोचित पालन करते हुए, अपने ही अध्यवसाय से 'विशेष योग्यता', 'हिन्दी प्रभाकर', 'साहित्यरत्न' जैसी उच्चातिउच्च साहित्यिक परीक्षाएँ सम्मान-पूर्वक उत्तीर्ण कर, नवयुवकों का मार्ग प्रशस्त किया। 'विशेष-योग्यता' परीक्षा तो आपने उसकी स्थापना के वर्ष (सन् १९१९ में) ही प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

मुरादाबाद तहसीली स्कूल का ख्याति-प्राप्त 'सहायता-कोष' जिसकी सहायता से बहु-संख्यक साधन-हीन-छात्र शिक्षा प्राप्त करके आज सुख पूर्वक अपने गृहस्थ का पालन कर रहे हैं; आप ही के सतत उद्योग से जीवित एवं सञ्चालित रहा।

आपने मुरादाबाद के दीर्घतम तेईस वर्षीय अपने कार्य-काल में 'वैदिक धर्म', 'नागरी प्रचारणी सभा' तथा 'संयुक्त प्रान्तीय अध्यापक मंडल' के महत्व-पूर्ण पदों पर रहकर जो सेवायें कीं; वे चिरस्मरणीय रहेंगी।

आपने मुरादाबादीय उच्चतर शिक्षा संस्थाओं की साहित्य-गोष्ठियों और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं के पुरस्कार-निर्णायक तथा कवि सम्मेलनों के अध्यक्ष और सार्वजनिक परीक्षाओं के व्यवस्थापक एवं निश्शुल्क शिक्षक के रूप में वहाँ की जनता के हृदय पर जो छाप छोड़ी है, वह चिरकाल पर्यन्त अनुकरणीय बनी रहेगी।

आपने अपने अत्यन्त सीमित वेतन में भी ऊपर की आय का किसी प्रकार का एक पैसा भी कभी ग्रहण न करने की 'सुनने में अति सुगम किन्तु व्यवहार में कठिनतम' प्रतिज्ञा का अनेकों कष्ट सह कर भी अक्षरशः पालन करके अनुकरणीय आदर्श उपस्थित कर दिया है।

आपने 'वैदिक-कर्म पद्धति', 'हिन्दी-साहित्य-कोष' 'सुमन संचय', निबन्ध-चन्द्रिका' आदि लगभग एक दर्जन परम उपयोगी ग्रन्थों का संकलन कर छात्रों एवं अध्यापकों का महान उपकार किया है, तथा भविष्य में आपसे और भी अधिक उपकार की आशा है।

आपको असहयोग आन्दोलन-काल में गवर्नमेंट स्कूल में भेजने का अनुरोध किया गया, किन्तु आपने अपनी भावी-उन्नति एवं पेंशन का मोह त्याग कर स्वायत्त-शासन के स्कूलों में ही रहने पर सन्तोष किया। यदि उस समय आप उधर निकल गये होते; तो अब से कई वर्ष पूर्व किसी कालिज से रिटायर होकर, वर्त्तमान वेतन से भी कहीं अधिक पेंशन पा रहे होते।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के स्कूलों में अधिक से अधिक उन्नति सब डिप्टी इन्सपैक्टरी तक ही सम्भव थी, सो आपने उस पद को समय समय पर कई वर्षों तक सफलता पूर्वक सुशोभित किया।

जिले के जूनियर हाई स्कूलों की परीक्षाओं के रजिस्ट्रार, 'जूनियर हाई स्कूल परीक्षा' के परीक्षक, एवं प्रश्न पत्र निर्माता ही नहीं, वरन उक्त परीक्षा की एडवाइजरी बोर्ड की सदस्यता के दायित्व-पूर्ण पद पर वर्षों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक सफलता-पूर्वक कार्य किया। रजिस्ट्रारी में तो आपने पहले ही वर्ष में आश्चर्य-जनक बचत करके, सबको चकित कर दिया, तथा ४५०) का पारितोषिक प्राप्त किया।

आप विद्या बेचने को पाप कहा करते हैं। अत एव वेतन-ग्रहण के प्रायश्चित-स्वरूप अपने खाली समय में आप अपनी कक्षा के व अपने ही स्कूल के नहीं, अपितु अन्यान्य छात्रों को भी निश्शुल्क रूप से बड़े प्रेम पूर्वक विद्या दान किया करते हैं। आपके विद्या-मन्दिर का द्वार सदैव सब के लिए उन्मुक्त रहता है।

आपका जीवन 'कहनी कम तथा करनी अधिक' का सक्रिय उदाहरण है। आपके आदर्श-वाक्यों में से दो तीन उदाहरण-स्वरूप निम्नांकित है, जिनसे आपके हृदगत भावों का किञ्चिन्मात्र आभास सहज ही मिल सकेगा—

१—आधी और रूखी भली, सारी सों सन्ताप।
जो चाहेगा चूपरी, बहुत करेगा पाप॥

२—गुरू तो ऐसा चाहिए, शिष से कुछ ना लेय।

३—आय बढ़ाने की अपेक्षा अनावश्यक व्ययों का घटाना सहज तथा अपने वश की बात है।

आपने इस स्कूल के जन्म दिन से ही इसे अपने संरक्षण में लेकर, ५½ वर्ष के स्वल्प काल में ही पूर्ण उन्नत कर दिया। आज इसमें ६ अध्यापक, प्रत्येक कक्षा के दो दो वर्ग, तथा स्कूल और छात्रावास के अपने पृथक पृथक सुन्दर भवन, १० एकड़ से भी अधिक भूमि विद्यमान है। तथा अब तो बोर्ड ने इसे जिले का 'आदर्श' स्कूल घोषित कर, इसकी सम्मान-वृद्धि करने की कृपा की है। यह सब आपके ही सतत उद्योग एवं कर्मण्यता का फल है।

आपकी निस्पृहता, गम्भीरता, स्वच्छता और अनुक्रम तथा समय पालन, भारतीय संस्कृति की सच्ची निष्ठा और सबसे बढ़कर मन, वाणी तथा कर्म की एकता प्रशंनीय ही नहीं, वरन् अनुकरणीय भी है।

आप पर यह स्कूल और बस्ती ही नहीं, वरन् यह जिला भी उचित गर्व कर सकता है।

हमने आपके जीवन से अनेकों बातें सीखी हैं। यदि उनमें से कुछ को भी अपने चरित्र में ला सकें, तो, हम अपने को धन्य मानेंगे। ईश्वर हमें सामर्थ्य दे।

अन्त में हम आपसे यही प्रार्थना करते हैं कि आप भविष्य में भी हमारे ऊपर इसी प्रकार दया-भाव बनाये रहें। हमें आशा ही नहीं, दृढ़ विश्वास भी है कि आप हमें अपने पथ प्रदर्शन से वञ्चित न रखेंगे।

हम हैं
आपके सहकारी

जू० हा० स्कूल नरौली
बुद्ध, पौस शुक्ल ४ सं० २०११ वि०
२९-१२-'५४

———

जुग-जुग जियें शर्मा जी,
छात्रन-भाग्य जगाने वाले।
जिनसे बढ़ी स्कूल की शान,
जिन पर था हमको अभिमान।
पूर्ण किया छात्रों में ज्ञान,
शिक्षा-ज्योति जलाने वाले॥ जुग० जुग०॥
जिनके परिवर्तन की प्यास,
लिखती एक नया इतिहास।
हमको छोड़ चलेहैं निराश,
सच्चा ज्ञान सिखाने वाले॥ जुग० जुग०॥
इनके चरणों की ले धूल,
सुख से अपना सब कुछ भूल।
काँटे बन जाते हैं फूल,
जीवन-ज्योति जगाने वाले॥ जुग० जुग०॥
हम थे इनको पाय निहाल,
इनकी रक्षा करें कृपाल।
पावें जीवन भर जय-माल,
सबको सत्य बनाने वाले। जुग० जुग०।

मुहम्मद ओबैस
अध्यापक बड़गाँव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान वैचित्र्य

नये किस्म का उत्तर देने वाला टैलिफोन

"अमेरिकन बेल टैलिफोन लेबोरेटरीज" ने एक नये किस्म का उत्तर देने वाला टैलिफोन तैयार किया है। यह आप की अनुपस्थिति में छोड़े गए सन्देशों को टैलिफोन करने वालों तक पहुँचा देता है।

बाहर जाने से पहले आप एक बटन दबा कर अपना सन्देश नये टैलिफोन को लिखा जायें तथा साथ ही दूसरा बटन दबा कर इस टैलिफोन को स्वयं उत्तर दे सकने की स्थिति में छोड़ दें। जब किसी का टैलिफोन आयेगा, तब यह टैलिफोन चालू हो जायेगा। सुनने वाला आप की आवाज सुनेगा। आप अपना नाम बतायेंगे और टैलिफोन करने वाले का नाम और नम्बर पूछेंगे। साथ ही आप का सन्देश भी उस तक पहुँच जायेगा। टैलिफोन करने वाले व्यक्ति का जवाब भी यह मशीन नोट कर लेगी। जब आप वापस लौटेंगे तब आप टैलिफोन पर मिलने वाले सभी सन्देशों को जितनी बार चाहें बटन दबाकर सुन सकते हैं।

उक्त कम्पनी द्वारा तैयार की गयी टैलिफोन की इस नई मशीन में "टाकिंग रबर" (बोलने वाली रबड़) को प्रयुक्त किया गया है। प्लास्टिक और आयरन आक्साइड के मिश्रण से यह रबड़ उपर्युक्त कम्पनी ने तैयार किया है और इसे सन्देशों को रिकार्ड करने के लिये लाखों बार इस्तेमाल किया जा सकता है।

बिजली पैदा करने वाला ट्रैक्टर

शिकागो की "इण्टरनेशनल हार्वेस्टर कम्पनी" ने हाल ही में "इलैक्ट्राल" नामी एक छोटी सी मशीन का प्रदर्शन किया है। इस मशीन की विशेषता यह है कि ट्रैक्टर के इंजन की शक्ति से चलाये जाने पर यह मशीन बिजली पैदा कर सकती है। इलिनौय राज्य में हिन्सडेल के पास उक्त कम्पनी ने अपने एक खेत में इस मशीन को उपयोग में ला कर कृषकों को दिखाया। यह भी पता चला है कि कृषि और उद्योगों में इस्तेमाल करने के लिये इंजीनियर अब इस मशीन को मोटर ट्रकों में प्रयुक्त करने के बारे में परीक्षण कर रहे हैं।

विभिन्न कृषि उपयोगी मशीनों अर्थात् कटाई मशीनों, बर्मा मशीनों, रंदा मशीनों, संकटकाल में विद्युत् की व्यवस्था करने वाली मशीनों, दूध निकालने वाली मशीनों तथा बिजली चालित अन्य मशीनों को चलाने के लिए कृषक अब "इलैक्ट्रोल" मशीन प्रयुक्त कर सकेंगे। इस के अतिरिक्त खेतों में बिजली से चलने वाली मशीनों को चलाने के काम में भी "इलैक्ट्राल" का इस्तेमाल किया जा सकेगा। साथ ही कृषि यन्त्रों को भी "इलैक्ट्राल" से चलाया जा सकेगा। "इलैक्ट्राल" को मोटर ट्रकों में लगाकर खेती बाड़ी के सिवा हर तरह का काम लिया जायेगा।

जब विद्युत् शक्ति की आवश्यकता न हो, तब "इलैक्ट्राल" नामी मशीन को ट्रैक्टर से आसानी से अलग भी किया जा सकता है।

उक्त कम्पनी के अधिकारियों का कथन है कि हम यह ठीक से नहीं बता सकते कि "इलैक्ट्राल" नामी मशीन का निर्माण कब तक शुरू हो सकेगा और इस का दाम क्या होगा। हां, इतना कहा जा सकता है कि दाम इतने होंगे कि कृषक इस मशीन को खरीद सकेंगे।

वायुयानों के लिए रबड़ की तेलटंकियों का निर्माण—

अमेरिका की दो रबड़ कम्पनियों, अमेरिकी रबड़ कम्पनी और गुडइयर टायर एण्ड रबर कम्पनी, तथा अमेरिकी नागरिक उड्डयन प्रशासन ने इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि वे ऐसी तेल टंकियों के निर्माण में सफल हो गये हैं, जो एक निश्चित रफतार पर वायुयान के टकरा जाने की अवस्था में न तो फटेगी ही और न जिन में आग ही लग सकेगी। ये टंकियां रबड़ मिश्रित कपड़े से तैयार की गयी हैं। अभी तक इन टंकियों की परीक्षा की जा रही है। ये टंकियां खास तौर पर इस दृष्टि से तैयार की गयी हैं, जिससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायुयान के टकरा जाने पर भी ये साबित ही रहें और इन से किसी किस्म की हानि न हों।

सूर्य के ताप से मकान गरम रखे जायेंगे

अगले दस सालों में अमेरिका के बहुत से मकान सूर्य के ताप से गरम रखे जायेंगे। यह भविष्य-वाणी मैसेच्यूसेट्स इन्स्टिट्यूट ऑव टैक्नोलोजी के विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा० जौर्ज आरन्हे रीसन ने की है। आप का कथन है कि अमेरिका के दक्षिणी और दक्षिणपश्चिमी क्षेत्रों में खास तौर पर सूर्य के ताप से मकान गरम रखे जा सकेंगे। आपने यह भी बताया कि इस प्रक्रिया के लिये आवश्यक यन्त्र और सामग्री आदि का व्यय ही अभी तक इस कार्य में बाधक हैं और इससे सूर्य से मकान गरम रखने का काम लिये जाने में देरी हो रही है।

मनुष्य के आंसुओं से कैन्सर का इलाज

मनुष्य के आंसुओं में लाइसोजाइम नामी जो मूल रस विद्यमान है, उससे कैन्सर के उपचार में सहायता मिलने की सम्भावना है। बर्कली स्थित कैमिकल टैक्निकल लेबोरेटरीज के दो रसायन-शास्त्रियों ने यह सूचना प्रदान की है। उपयुक्त रसायन शास्त्रियों का कथन है कि कैन्सर से पीड़ित कुछ चूहों के शरीरों में उन्होंने लाइसोजाइम थोड़ी मात्रा में इन्जैक्शन के जरिये पहुँचाया था। इनका दावा है कि इसके फलस्वरूप रोग के कुछ चिन्ह दूर हो गये तथा साथ ही साथ रोग पीड़ित चूहों की आयु में भी वृद्धि हुई। इस सम्बन्ध में किये गये ५० प्रतिशत प्रयोगों में सफलता मिलने की सूचना इन रसायन-शास्त्रियों ने प्रदान की है।

मैंने देखा

(श्री कृष्णप्रकाश शर्मा)

मैंने वह दीपक देखे हैं, जिन पर शलभ नहीं आते हैं।
मैंने देखा भीषण संगर में,
रण चण्डी का हास पुराना,
देखा छोनिप संकेतों पर,
सुर बालाओं का बलि जाना,
मैंने वह रंग रलियाँ देखी, जिनमें सहसा गम छाते हैं।
मैंने देखा मद धनिकों का,
जिसमें जलती निर्धन काया
देखा करुणा क्रन्दन ऐसा
देख! उसे गिर सँभल न पाया,
मैंने वह अबोध शिशु देखे, जो बिन माता रह जाते हैं।
मैंने देखा जौहर ज्वाला में,
पति विहीन सतियों का जलना
देखा उन कायर पुरुषों को
बक झक करते ही मर जाना
मैंने वह नर तन देखे हैं, जो पर हित में मर जाते हैं।
मैंने देखा नव वधुओं की,
माँग संजोई का धुल जाना,
देखे वह मन मोहक मुखड़े
दिखा चमक धूमिल हो जाना,
मैंने वह चलचितवन देखी, जिस पर रसिक न ललचाते हैं

तू प्रेम सुधा की गागरी

[राम मिलन "सुधाकर"]

तू प्रेम सुधा की गागरी
संसृति के नीरव तट वासी;
प्रभु की करुणा के अभिलाषी;
सूने घन में थी वर्षा सी;
उर के आनन की राग री;
तू प्रेम सुधा की गागरी
तेरी चितवन से प्यार जगे;
उर की वीणा के तार जगे;
हँसते अधरों से प्यार जगे;
जीवन में अतुल सुहाग री
तू प्रेम सुधा की गागरी

हम प्रेम विटप की छाहों में;
मिल कर गायें गल बाहों में;
भूलों न प्रिये गरमाही में;
बीते न जवानी जाग री,
तू प्रेम सुधा की गागरी

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसान

लेखक—भोला प्रसाद

नंगा बदन, चिलचिलाती धूप से झुलसा हुआ शरीर, टूटी कमर, खड्डे में धँसी आँखें, हाथ में कुदाल लिए, अपने शरीर को कुदाल से टिकाए—वह खेत में कौन खड़ा है। अरे! वही तो किसान है, देश का अन्नदाता, जग का घर, आँगन भरने वाला, संघर्ष और परेशानियों से टूटा हुआ, दुर्भाग्य से लुटा हुआ, हड्डियों का ठट्ठर मात्र किसान।

अरे उसके चेहरे से तो आत्म सम्मान की किरणें फूटती सी मालूम पड़ रही हैं। उसके चेहरे पर पड़ी हुई झुर्रियाँ मानवता से प्रश्न पूछती मालूम पड़ रही हैं। उसकी मूक आँखें मानों बहुत कुछ कहना चाह रही हैं, कह नहीं पातीं। अरे! उसकी आँखें बरसना चाहती हैं? नहीं. नहीं उसकी आँखें बरस नहीं सकतीं। उसकी आँखें हँस नहीं सकतीं। उसकी आँखें तो बोलना चाहतीं, युग, युग की कहानी कहना चाहतीं।

उसको व्यर्थ ही हँसाने की कोशिश मत करो क्योंकि वह हँस नहीं सकता। उसके आँसू के स्रोत सूख चुके हैं, वह रो भी नहीं सकेगा। उसके हृदय में रहने वाले हास और अश्रु को किसने रौंद डाला है, किसने निर्मम प्रहार किया है उसे जड़ बैल का मूर्ख, भोला भाई किसने बना दिया है? उसके पुष्ट वक्षस्थल को किसने झकझोर कर तोड़ डाला है? उसके मजबूत पत्थर तोड़ दांत हिला-हिलाकर किसने ढीला कर दिया है? हाय! उसकी बुद्धि का विमल प्रकाश किसने छीन लिया है? उसके सुखों की कलियां किसने बीन ली है?

महलों में रंगरेलियाँ उड़ाने वाले, वैभव के पालने पर झूलने वाले! क्या इन सब मानव प्रस्तरों को प्रभु ने गढ़ा है? क्या प्रभु के यही आदेश हैं कि तुम इन लाचारों के शव पर ही अपने भव्य भवनों की नींव डालो। क्या प्रभु ने तुम्हें मानवता को मिटाकर मानव बनने का आदेश दिया? क्या प्रभु ने तुम्हें इनकी कुर्बानी पर विजय का डंका बजाने का आदेश दिया?

तुम अपनी आंखें खोलो, देखो, इनके भूखे उदर से कल ही विश्व व्यापी अग्नि प्रकट होगी। उसकी ज्वाला की लपटों में तुम्हारे कल्पना के महल जलकर क्षार हो जायेंगे, तुम्हारे गगनचुम्बी प्रासाद जमीन चूम बैठेंगे।

याद रक्खो! यह कोई बांकी छटा नहीं है, यह तो टूटी हुई कमर है। यह तो सदियों के निर्मम प्रहार के कारण हाँफता हुआ हाड़-पुंज है। इस कमर के झुकाव पर काल ने अपनी कहानी लिखी है। इस गहरी गुफा में कितने दुःख युग झांक रहे हैं। यह कुरूप दयनीय टूटी आकृति, अपनी परछाईं में दीन किसानों का चित्र अंकित कर रही है। इसकी प्रत्येक सांस दया की भीख नहीं, परिश्रम पुरस्कार मांग रही है।

पृथ्वी पुत्र जाग पड़े, शेषनाग का मस्तक हिल चुका सँभलो! लोभ की भीड़ समेटो, जीओ और जाने दो।

"लूट लेंगे तुझको ये लोभ,
समेटो इनकी भीड़ अपार।"

स्वास्थ्य फिर कैसे प्राप्त हो?

क्या आप या आप के घर की कोई स्त्री या आप का कोई बच्चा रोगी है और डाक्टरी इलाज कर देख चुके हैं कि उस इलाज से रोग जड़ से आरोग्य नहीं होता! अगर ऐसा है तो अब आप होमियोपैथिक चिकित्सा की ओर ध्यान दें, यह प्राकृतिक चिकित्सा है और निश्चय ही आपकी जटिल समस्या को हल कर सकती है सलाह लेने की कोई फ़ीस न ली जावेगी।

उत्तर के लिए डाक के टिकट भेजिये।

डाक्टर राजाराम गुप्त रजिस्टर्ड होमियोपैथ
एच० एम० डी०
मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन में कौन और कितनी चीजें ?

अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि हमारी रोजाना की खुराक में कौन कौन और कितनी मात्रा में चीजें होनी चाहिए। इस लेख में आपको इस महत्वपूर्ण विषय पर पक्की राय मिलेगी।

भूख

मानव शरीर मशीन की तरह है। जिस तरह मशीनों में लगे पुर्जों से तेल कोयला आदि के खत्म होने का पता चलता है, उसी तरह भूख से इस बात का पता लगता है कि शरीर की खुराक खत्म हो गयी है और उसे भोजन की जरूरत है। बच्चों को चीनी और मिठाई की बहुत अधिक चाह होती है। इससे मालूम होता है कि बच्चों को, उनकी क्रियाशीलता को ध्यान में रखते हुए, पौष्टिक भोजन की जरूरत है।

जो लोग मिर्च मसाले और चटपटी चीजें खाकर भूख को ज्यादा करते हैं अथवा वजन कम करने के लिए भूख की तेजी रोकते हैं, उनकी भूख मर जाती है। फिर भूख, निर्देशन का जो कार्य करती है, वह नहीं हो पाता। स्वाद और गंध से स्वाभाविक भूख का बड़ा गहरा संबंध है। भूख शान्त होने पर स्वाद और गन्ध की तेजी नहीं रहती। कम खाने या अधिक खाने से मानव शरीर की स्वाभाविक क्रिया में अन्तर आ जाता है। पाचन संबंधी बहुत सी खराबियाँ भोजन को ठीक तरह से न चबाने और स्वाद से न खाने के कारण होती हैं। भोजन के देखने और उसकी गन्धमात्र से ही रस बहाने वाले स्नायुओं में क्रिया उत्पन्न हो जाती है और वे आमाशय को आमाशयिक रस और लालग्रन्थियों को लालरस (लार) पहुँचाने लगते हैं। इस तरस भोजन को पचाने के लिए लालरस और आमाशयिक रस मिलते हैं। जब भूख नहीं होती, तो इन रसों का बहाव बहुत कम होता है। भूख न होने पर खाना खाने का अर्थ भोजन को जबरन पेट में ठूंसना है।

भोजन के तीन प्रकार

भोजन तीन तरह का होता है—१. शरीर पोषक, २. शरीर रक्षक तथा ३. शक्ति दायक। मानव शरीर और मशीन में फर्क यह है कि वह जानदार है और मशीन बेजान होती है। बेजान होने से मशीन तो बढ़ती नहीं। परन्तु शरीर के तन्तुओं की वृद्धि जरूरी है। दूध पनीर, मांस, मछली तथा अंडे शरीर पोषक चीजें हैं। इनके सेवन से शरीर के तन्तुओं की वृद्धि होती है। बच्चों और गर्भिणी स्त्रियों के लिए इनका सेवन बहुत जरूरी है।

शरीर रक्षक आहार से शरीर को रोग का मुकाबिला करने की ताकत मिलती है। इसमें प्रोटीन, विटामिन तथा खनिज लवण अधिक मात्रा में होते हैं। इस खुराक में दूध, मक्खन, पनीर, हरी सब्जियां और फल बहुत ही महत्वपूर्ण है। सभी शरीर पोषक पदार्थों में कुछ न कुछ मात्रा में शरीर रक्षक तत्व भी आवश्य होते हैं।

यह बात नहीं है कि शरीर जब काम करता है तभी उसे शक्तिदायक खुराक की जरूरत है। यदि शरीर आराम कर रहा हो तो भी कम से कम ताकत की जरूरत होती है। क्योंकि साँस लेना, खून का दौरा तथा शारीरिक तापमान संबंधी कार्य शरीर में होते रहते हैं। इसके अलावा शरीर जितना अधिक सक्रिय होगा, उतनी ही अधिक शक्ति की आवश्यकता होगी।

कुछ शक्तिदायक पदार्थों में या तो शरीर पोषक और शरीर रक्षक तत्व होते ही नहीं और यदि होते भी हैं तो बहुत कम मात्रा में। रोटी, चावल तथा चीनी आदि ऐसी ही चीजें हैं। लेकिन माँस, पनीर, रोटी तथा चीनी जैसे शरीर निर्माणकारी भोज्य पदार्थों में शक्तिदायक तत्व भी रहते हैं। साथ ही इनमें शरीर रक्षक तत्व भी हैं।

ठीक मिकदार में भोजन

एक प्रौढ व्यक्ति के संतुलित भोजन में प्रति दिन क्या चीजें और कितनी मात्रा में होनी चाहिए, उसका विवरण नीचे दिया जाता है:

खाने की चीजें	मात्रा
१. खाद्यान्न	७ छटांक
२. दाल	१॥ ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

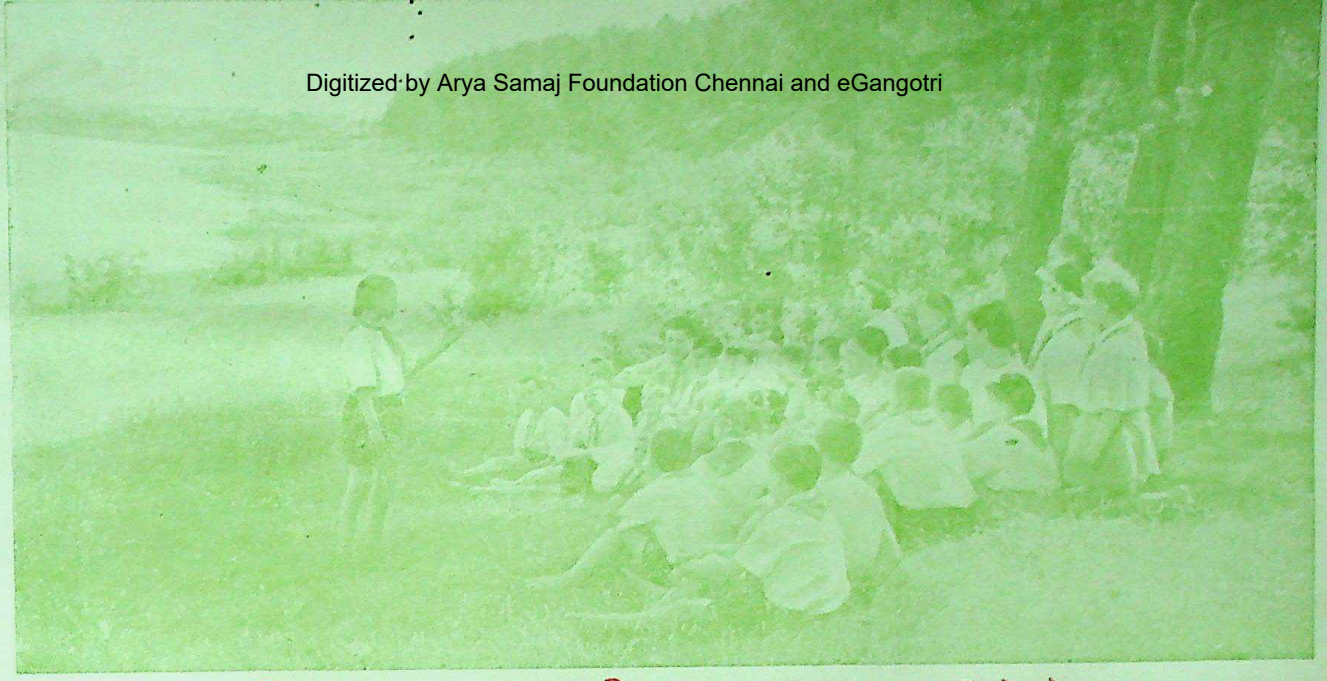

शिक्षा-सुधा कलेण्डर सन् १९५५

	जनवरी	अप्रैल	जुलाई	अक्टूबर
सोमवार	३१ ३ १० १७ २४,	× ४ ११ १८ २५,	× ४ ११ १८ २५,	३१ ३ १० १७ २४
मंगलवार	× ४ ११ १८ २५,	× ५ १२ १९ २६,	× ५ १२ १९ २६,	× ४ ११ १८ २५
बुधवार	× ५ १२ १९ २६,	× ६ १३ २० २७,	× ६ १३ २० २७,	× ५ १२ १९ २६
गुरुवार	× ६ १३ २० २७,	× ७ १४ २१ २८,	× ७ १४ २१ २८,	× ६ १३ २० २७
शुक्रवार	× ७ १४ २१ २८,	१ ८ १५ २२ २९,	१ ८ १५ २२ २९,	× ७ १४ २१ २८
शनिवार	१ ८ १५ २२ २९,	२ ९ १६ २३ ३०,	२ ९ १६ २३ ३०,	१ ८ १५ २२ २९
रविवार	२ ९ १६ २३ ३०,	३ १० १७ २४ ×,	३ १० १७ २४ ३१,	२ ९ १६ २३ ३०

	फरवरी	मई	अगस्त	नवम्बर
सोमवार	७ १४ २१ २८,	३० २ ९ १६ २३,	१ ८ १५ २२ २९,	० ७ १४ २१ २८
मंगलवार	१ ८ १५ २२ ×,	३१ ३ १० १७ २४,	२ ९ १६ २३ ३०,	१ ८ १५ २२ २९
बुधवार	२ ९ १६ २३ ×,	× ४ ११ १८ २५,	३ १० १७ २४ ३१,	२ ९ १६ २३ ३०
गुरुवार	३ १० १७ २४ ×,	× ५ १२ १९ २६,	४ ११ १८ २५ ×,	३ १० १७ २४ ×
शुक्रवार	४ ११ १८ २५ ×,	× ६ १३ २० २७,	५ १२ १९ २६ ×,	४ ११ १८ २५ ×
शनिवार	५ १२ १९ २६ ×,	× ७ १४ २१ २८,	६ १३ २० २७ ×,	५ १२ १९ २६ ×
रविवार	६ १३ २० २७ ×,	१ ८ १५ २२ २९,	७ १४ २१ २८ ×,	६ १३ २० २७ ×

	मार्च	जून	सितम्बर	दिसम्बर
सोमवार	७ १४ २१ २८,	× ६ १३ २० २७,	× ५ १२ १९ २६,	× ५ १२ १९ २६
मंगलवार	१ ८ १५ २२ २९,	× ७ १४ २१ २८,	× ६ १३ २० २७,	× ६ १३ २० २७
बुधवार	२ ९ १६ २३ ३०,	१ ८ १५ २२ २९,	× ७ १४ २१ २८,	× ७ १४ २१ २८
गुरुवार	३ १० १७ २४ ३१,	२ ९ १६ २३ ३०,	१ ८ १५ २२ २९,	१ ८ १५ २२ २९
शुक्रवार	४ ११ १८ २५ ×,	३ १० १७ २४ ×,	२ ९ १६ २३ ३०,	२ ९ १६ २३ ३०
शनिवार	५ १२ १९ २६ ×,	४ ११ १८ २५ ×,	३ १० १७ २४ ×,	३ १० १७ २४ ३१
रविवार	६ १३ २० २७ ×,	५ १२ १९ २६ ×,	४ ११ १८ २५ ×,	४ ११ १८ २५ ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० बाबूराव विष्णु पराड़कर से एक भेंट

श्री कमलेश

पहले दिन जब इन्टरव्यू के लिए समय माँगने के लिए गया तो 'आज' के संपादक श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर आराम कुर्सी पर बैठे थे। दुबला-पतला शरीर ठिगना कद, नंगा बदन, पटलीदार धोती और निसंकोच वार्तालाप सब मिलकर किसी भी व्यक्ति को उनकी सादगी और तपस्या का भान कराने वाले उपकरण थे। इससे भी अधिक चश्मे के भीतर से चमकने वाली आँखे सहसा सामने बैठे व्यक्ति को यह अनुभव करा देती हैं कि यह व्यक्ति गहराई तक देखने की क्षमता रखता है। देखते ही बोले—जब मैं किसी मिलने वाले को आते हुए देखता हूँ तो मुझे विपत्ति-सी जान पड़ती है।"

इन्टरव्यू का समय तो निश्चित कर दिया था पर उस समय वे 'मूड' में थे। इसलिए घण्टे-डेढ़ घण्टे तक साहित्यकारों के संस्मरण सुनाते रहे। उन संस्मरणों में अधिकाँश संस्मरण आचार्य पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी के थे उन संस्मरणों द्वारा द्विवेदीजी की जागरूकता और साहित्य-सेवा की लगन पर प्रकाश पड़ता था स्वयं उनसे संबंधित एक संस्मरण मुझे बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कहा—"एक बार ऐसा हुआ कि मैं संपादकीय लिखने बैठा। लिखने के लिए कोई विषय नहीं सूझता था। बैठे बैठे पर्याप्त समय बीत गया था और कंपोजीटर सर पर सवार था। इस बार मैंने 'क्या लिखें?' शीर्षक संपादकीय लिखा। वह आचार्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पढ़ा और दूसरे ही दिन मेरे पास उनका एक पत्र आया। इस पत्र में मेरे उस संपादकीय की मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई थी उस समय मुझे द्विवेदी जी की गुण ग्राहकता का परिचय मिला। यह कहते-कहते वह गदगद हो गए।

दूसरे दिन जब मैं दुबारा उनसे मिलने पहुँचा तो अपने पत्रकार जीवन की कहानी सुनाते हुए उन्होंने बताया—मेरा जन्म काशी में हुआ और बचपन भी काशी में ही बीता। मेरे चार भाई और एक बहन थी। मैं सबसे बड़ा था। पढ़ाई का क्रम उस समय उल्टा था। आजकल की भाँति स्टैण्डर्ड (दर्जे) नहीं होते थे, क्लास होते थे। बारह वर्ष की उम्र में जब मैं पाँचवीं क्लास में था, मैंने अंग्रेजी पढ़ना आरम्भ किया। पढ़ने का मुझे इतना शौक था कि बचपन में ही अठारह पुराण पढ़ डाले थे। कसरत करना और अखाड़े में जाना गुण्डापन समझता था पर फुटबाल खेलने में बड़ा मजा आता था। उस मजे की सजा भी मुझे अच्छी मिली। मेरी हंसली की हड्डी टूट गई।

"जब मैं पन्द्रह वर्ष का था तब मेरे पिता चल बसे। सन १९०१-२ में प्लेग की ऐसी भयंकर बीमारी फैली कि गलियों में मुर्दे बिछे रहते थे। यह बीमारी माँ को ले गई। उस समय मैं एन्ट्रेन्स में था। परिवार में सबसे बड़ा। काशी में रहना और बिना माता-पिता के सबको संभालना कठिन कार्य था। इस कारण नौकरी करने की सोची। संयोग की बात है कि उन्हीं दिनों स्वदेशी आन्दोलन के प्राण और हितवाद के संपादक श्री सखाराम गणेश देऊसकर अपनी बड़ी लड़की की शादी में काशी आए वे मेरे दुःख दूर के मामा होते थे नवयुवकों को प्रोत्साहन देना उनकी विशेषता थी। उन्होंने मुझसे प्रश्न किया—"औरंगजेब अच्छा या अकबर?

३. हरी पत्तेवाली तरकारियाँ	२ छटाँक	९. मछली और मांस	१॥ छटाँक
४. कंद मूल गाजर आदि	१॥ ,,	१०. अंडा	१ ,,
५. अन्य तरकारियाँ	१॥ ,,	११. दूध	५ ,,
६. फल	१॥ ,,		
७. चीनी और गुड़	१ ,,		
८. बनास्पति तेल या घी आदि	१ ,,		

जो लोग मांस नहीं खाते हैं वे मांस मछली और अंडे के बजाय दूध और दूध की बनी चीजें ले सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने कहा—"अकबर।"

उन्होंने पूछा—"क्यों?"

मैंने बताया—"इतिहास में ऐसा ही लिखा है।"

इस पर उन्होंने मुझे समझाया—"ऐसा कहना ठीक नहीं है। अकबर को अच्छा लिखने वाले वे अंग्रेज हैं, जो अकबर की नीति पर चलकर शताब्दियों से भारत को गुलाम बनाये हुए हैं। अच्छे बुरे का निर्णय स्वयं करना चाहिए।" उन्होंने मुझे 'केसरी' मंगाने की राय दी।

देश सेवा के रास्ते पर

उस दिन से मेरी प्रवृत्ति देश सेवा की ओर हुई यहाँ तक कि मैं एफ० ए० की परीक्षा भी न दे सका। मैंने कुछ दिन पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ में नौकरी की लेकिन शीघ्र ही मुझे देऊसकरजी का पत्र मिला जिसमें मुझे बंगवासी में सहायक संपादक होकर आने को लिखा था। मैं तत्काल कलकत्ता चल दिया। ठहरा भी उन्हीं के यहाँ। वहाँ मुझे खाने पीने का कोई खर्च नहीं करना पड़ता था। फिर राजनीति की चर्चा भी वहाँ खूब होती थी। उस वातावरण से लाभ उठाकर मैंने सप्ताह में तीन दिन इम्पीरीयल लायब्रेरी (अब नेशनल लायब्रेरी) में जाना आरम्भ किया। चार महीने बाद मुझे उस का स्थायी पास मिल गया। जो,कुछ मैंने पढ़ा इसी बीच पढ़ा। घर पर क्रियात्मक राजनीति की चर्चा और लायब्रेरी में सैद्धान्तिक ज्ञान दोनों प्रकार से मेरा मानसिक गठन प्रौढ़ता प्राप्त करने लगा देऊसकरजी का आतंकवादियों से भी संबन्ध था। इसलिए मेरा भी उनसे संपर्क हो गया। यह सन १९०६ की बात है देऊसकरजी बंगाल नेशनल कालिज में इतिहास पढ़ाते थे। उन्होंने मुझसे वहाँ मराठी पढ़ाने के लिए कहा। 'बंगवासी' के प्रबन्धकों ने इस पर आपत्ति करते हुए कहा कि 'बंगवासी' में रहते हुए ऐसा नहीं हो सकता। मैंने इसपर त्याग पत्र दे दिया और दूसरे ही दिन 'हितवार्ता' का संपादक हो गया। हिन्दी समाचार पत्रों में गंभीर राजनीति का समावेश 'हितवार्ता' से ही हुआ। 'प्रताप' में गणेश जी तक अच्छा कार्य कर रहे थे। सन् १९११ में मैं "दैनिक भारत मित्र" में गया जहाँ श्री अंबिका प्रसाद वाजपेयी से मेरा साथ हुआ।

सन् १९२० में काशी से श्री शिवप्रसाद गुप्त ने 'आज' निकाला और मुझे उसका सम्पादक बनाया। फलस्वरूप मैं कलकत्ता छोड़कर काशी आया। 'आज' में आने पर एक मित्र ने कहा—"यदि तुम पाँच वर्ष यहां टिक जाओ तो मेरी नाक काट लेना।" दस-पन्द्रह वर्ष बाद जब मैं उनसे मिला तो कहा—"देखिये अभी तक मैं आज में हूं और आपकी नाक भी अपने स्थान पर है।" इस पर वे लज्जित हो गये। यह मेरे पत्रकार जीवन की कहानी है; पर मैं यह मानता हूँ कि कोई अदृश्य शक्ति ही मुझे इस ओर खींच ले गयी और राजनीति में गाँधीजी के आने के बाद तो पत्रकारिता ही मेरा जीवनाधार बन गयी।

लेकिन देऊसकरजी के अतिरिक्त आपके पत्रकार के निर्माण में किन-किन व्यक्तियों का हाथ रहा?" मैंने पूछा।

वे बोले—"देऊसकरजी के अतिरिक्त सर्वश्री गोविन्दनारायण मिश्र, दुर्गाप्रसाद मिश्र और अम्बिका प्रसाद वाजपेयी प्रमुख हैं। गोविन्दनारायण मिश्र ने भाषा तथा साहित्य का दृष्टिकोण और वाजपेयीजी ने परिश्रम का जो दान दिया था वह मेरे जीवन की सबसे बड़ी सम्पति है। वाजपेयीजी तो मेरे भाई की ही भाँति है। आपको आश्चर्य होगा कि जब मैं आतंकवादियों से सम्पर्क रखने के कारण जेल गया तो वाजपेयी के पिता फूट-फूटकर रोये थे। यही नहीं मरते समय भी उन्होंने मेरे विषय में पूछा था।"

पत्रकार कैसा हो

पत्रकार कला और सफल पत्रकार बनने का प्रसंग चला तो वे कहने लगे—'सफल पत्रकार बनने के लिए सबसे पहली बात तो यह है कि पत्रकार में काम की लगन हो। उसका हृदय काम में होना चाहिये। केवल नौकरी की भावना से काम करके कोई सफल पत्रकार नहीं बन सकता। सी. वाई. चिन्तामणि, अतमृलाल चक्रवर्ती, श्री निवासन इसके प्रमाण हैं इसीलिये कोई युवक मेरे पास पत्रकार बनाने की अभिलाषा लिये आता है तब मै उससे कहता हूँ कि यदि तुम में काम की लगन होगी तो नौकरी तुमको ढूढ़ती जायगी, तुम्हें नौकरी नहीं ढूढ़नी पड़ेगी। काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो, फल कभी न कभी अवश्य मिलेगा।

दूसरी बात पत्रकार की भाषा की है। उसकी भाषा शुद्ध और मुहावरेदार होनी चाहिए (पहले मेरा आदर्श श्री गोविन्द नारायण मिश्र की भाषा थी पर वह जीवित भाषा न थी इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया और अपनी शैली स्वयं बना ली) मेरा विचार है कि भाषा हृदय के भावों के अनुकूल होनी चाहिये क्यों कि भाषा वही अच्छी है, जिसके शब्द कानों को बुरे न लगें। शैली-निर्माण में जानसन की भाँति मैं भी यही मानता हूँ कि परिश्रमशीलता ही प्रतिभा है।

तीसरी बात कभी शान्त न होने वाली अधिकाधिक जानने की भूख है मुझे स्वयं पढ़ने की बड़ी आदत रही है। अच्छी किताब मिली और मुझे दो तीन रात नींद नहीं आयी, उसे ही पढ़ता रहा। देउसकरजी मुझे रोकते थे पर अब मैं अनुभव करता हूँ कि पत्रकार के लिए अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। और पत्रकार को थोड़ा थोड़ा सब जानना चाहिये तथा उसे यह पता होना चाहिये कि अमुक विषय कहां मिलेगा। इस प्रवृत्ति के वशीभूत होकर ही मैं 'सुश्रुत-संहिता' भी पढ़ गया था।

चौथी बात यह है कि अनुवाद करते समय जिस भाषा में वह अनुवाद कर रहा है उसकी उसे पूरी जानकारी होनी चाहिये। इसका मुझे निजी अनुभव है। मेरी मातृभाषा मराठी है। हिन्दी नहीं, इसलिये पहले बहुत दिन तक मेरे अनुवाद में मराठी का प्रभाव आ जाता था। वर्षों मैं अनुवाद को सही करने के लिये दूसरों से पूछता रहा और अनुवाद दूसरों से कराता रहा। मेरा विचार है कि इन बातों को ध्यान में रखने वाला अवश्य सफल पत्रकार हो सकता है।

लिखने का ढंग

"आप के लिखने का ढंग क्या है?" मैंने चर्चा आगे बढ़ायी।

उन्होंने कहा—मैं आज तक होल्डर-दवात से लिखता हूँ। फाउन्टेनपेन से विचार विकृत हो जाते हैं। लिखने के लिये डैस्क या टेबुल होना आवश्यक है। अग्रलेख और टिप्पणी लिखने के लिये डिमाई साइज के कागज के आठवें हिस्से वाले स्लिप बहुत अच्छे लगते हैं। मैं लाईनदार कागज पर नहीं लिख सकता क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि लाईन एक बाधा बन कर खड़ी है। बहुधा मैंने रात को लिखा है और दिन को पढ़ा है लेकिन आवश्यकता पड़ने पर रात और दिन दोनों में भी लिखा है! लिखते समय जब मस्तिष्क कुहासे से ढ़का जान पड़ता है तब मैं कोई अच्छी पुस्तक उठा लेता हूँ और पढ़ने लग जाता हूँ। पृष्ठ-आधा पृष्ठ पढ़ते ही मस्तिष्क स्वच्छ हो जाता है और मैं लिखने की स्फूर्ति अर्जित कर लेता हूँ। इसके लिये यह आवश्यक नहीं कि पुस्तक हिन्दी की ही हो, वह किसी भी भाषा की हो सकती है। यह देउसकरजी का मंत्र है, जो बड़ा लाभप्रद सिद्ध हुआ।"

पत्रकारों में 'ट्रेड यूनियन' भावना के विरोधी

पत्रकारों की आर्थिक स्थिति पर बातचीत होने लगी तो मैंने उनसे हिंदी पत्रकारों के ट्रेड यूनियन के आधार पर हुए संगठन का जिक्र किया और कहा कि इस समय मुझे तो यही एक मार्ग पत्रकारों के हितों की रक्षा का दिखायी देता है। पराड़करजी इससे अपनी असहमति प्रकट करते हुए बोले—ट्रेड हो तो ट्रेड यूनियन की जरूरत है। हिंदी में पत्र लाभ की दृष्टि से नहीं निकाले गये। अनेक पत्र घाटे में चले हैं और आज भी चल रहे हैं। अमेरिका और ब्रिटेन की-सी स्थिति यहां नहीं है। वहाँ ट्रेड हैं इसलिये ट्रेड यूनियन भी है। मेरा निजी अनुभव है जिसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि मालिकों को कुछ भी नहीं मिलता। मुझ से खराब स्थिति बहुतों की नहीं है; पर मैं ट्रेड यूनियन के विरुद्ध हूँ। मेरी दृष्टि में पत्रकारिता एक मिशन है। मिशन मानता हूँ इसीलिये वृद्धावस्था में भी मेरी यह दशा है कि मैं बिना पत्र का काम किये बीमार हो जाता हूँ। मुझे लगता है कि जब तक मैं यह काम कर रहा हूँ तभी तक जीवित हूँ।

बरसाती मेंढ़कों की बाढ़ रुके

यहां वे कुछ रुके और सहज आवेश में आकर कहने लगे—"पत्रकारों की जो स्थिती खराब है उसका कारण है और वह यह कि वे बेकारी के कारण इस पेशे को अपनाते हैं पहले ऐसी बात नहीं थी। पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग नाम के लिये आते थे। दूसरी बात यह है कि अधिक पत्रों का प्रकाशन भी बंद होना चाहिये। चुनावों के जमाने में तो बरसाती मेंढक की भांति पत्र निकलते हैं और पत्रकार-कला को कलंकित करते हैं यदि इसी प्रकार की स्थिति रहेगी तो पत्रों और पत्रकारों का स्तर कैसे ऊंचा होगा ? बीस वर्ष पहले पत्र-संचालकों और पत्रकारों के सम्बन्ध का पता इससे लगता है कि 'आज' में रहते हुए मैंने अपना वेतन घटाया था, क्योंकि 'आज' की स्थिति खराब हो गई थी। इस पर बाबू शिवप्रसाद गुप्त के आंसू आ गये थे।"

"लेकिन आज के अनेक पूंजीपति पत्र संचालक बाबू शिवप्रसाद गुप्त नहीं हैं और इनकी दृष्टि शोषण की है। उनसे कैसे भुगता जायगा ?"

"इस सम्बन्ध में यही कहूँगा कि पत्रकारों को अपनी योग्यता और परिश्रम तथा 'मिशनरी स्प्रिट' से पत्र—संचालकों को यह अनुभव करा देना चाहिए कि बिना उनके काम चलना कठिन है।"

जब मैंने उनसे हिन्दी समाचार पत्रों की वर्तमान दशा और भविष्य की संभावनाओं के विषय में पूछा तो उन्होंने कहा —"हमारे आज के पत्रों का स्तर बंगला, मराठी और गुजराती के पत्रों से अच्छा हैं। यह 'प्रताप' तथा 'आज' जैसे मिशनरी पत्रों के कारण ही हुआ है। 'आज' का विश्वास तो अंग्रेजी पत्रों से भी अधिक किया जाता है और विरोधी तक उसकी प्रशंसा करते हैं। भविष्य भी पत्रों का बड़ा उज्वल है। कारण, राजनीतिज्ञों में ८० प्रतिशत अंग्रेजी न जानने वाले हैं और हिन्दी पत्रों को ही अपनाते हैं। पाठकों की संख्या भी बराबर बढ़ रही है। यह शुभ चिन्ह है।"

मार्क्स के विरोधी

अन्त में चाय पीते समय कम्यूनिज्म का जिक्र आ गया। इस विषय में उनका मत था कि मार्क्सवाद से मनुष्य मशीन बनता जा रहा है, जिसमें मेरा विश्वास नहीं है। अर्थ शास्त्र की अति से, जिनका मार्क्सवाद हामी हैं, नैतिकता का ह्रास अवश्यम्भावी है। यदि ऐसी व्यवस्था आई तो आदमी आदमी न रहेगा। इससे आर्थिक नियमों को मानवीय नियमों पर आधारित करना इस देश के लिए नितान्त आवश्यक है।

(नवभारत टाइम्स से साभार उद्धृत)

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी का ५५ वां वार्षिकोत्सव

गुरुकुल काँगड़ी का ५५ वाँ वार्षिकोत्सव ८ से ११ अप्रैल १९५५ तक मनाया जायगा।

इस अवसर पर अनेक महत्वपूर्ण और शिक्षाप्रद सम्मेलनों तथा व्याख्यानों का भी आयोजन किया गया है। देश के अनेक नेता, विद्वान् और सन्यासी महात्मा इस अवसर पर एकत्रित होंगे।

आचार्य, **गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी**

हाई स्कूल परीक्षा सालव्ड पेपर्स

सब प्रश्नोत्तर सन् १९५४ ई० तक हल हैं।

भारतीय इतिहास प्रश्नोत्तर	१॥) क० आधा	जनरल साइन्स	१॥) क० आधा
प्रश्नोत्तर वर्ल्ड हिस्ट्री	॥।) ,, ,,	इकोनामिक्स	२) ,, ,,
भूगोल प्रश्नोत्तर	२) ,, ,,	आर्थिक भूगोल	२॥) ,, ,,
मैथमैटिक्स प्रश्नोत्तर	२) ,, ,,	इंगलिश प्रश्नोत्तर (एडवान्स) मूल्य	३) ,, ,,
एलीमेन्ट्री मैथ्स	॥।) ,, ,,	हिन्दी प्रश्नोत्तर ,,	४) ,, ,,
विज्ञान प्रश्नोत्तर	२) ,, ,,	टु डे एंड टुमारो की कुञ्जी क० ८ मू०	२) क० आ०
सिविक्स	३) क० आधा	कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग १ ,,	≡) ,, ,,
बुक कीपिंग	१॥) ,, ,,	कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग २ ,,	≡) ,, ,,
कामर्स	२) ,, ,,	कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग ३ ,,	।=) ,, ,,

मैनेजर—गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालमण्डल

फरवरी सन् १९५५ ई०

बालोपयोगी कहानी—

मूर्ख पिता पुत्र

रचयिता—भगवानसिंह चन्देल 'चन्द्र' चन्देल-भवन, आलमपुर।

किसी नगर की यात्रा करने, निकले पिता और थे पुत्र।
लिया साथ में बैल एक था बढ़िया सुन्दर और पवित्र ॥
चले मार्ग में जब वे दोनों, मिले बटोही दो, दस बीस।
कहते जाते थे आपस में, "कृषक बड़े जग के अवनीस ॥"
कुछ बोले—"हां, बुद्धि हीन, हैं कहो भले उनको जगदीश।"
"अपढ़ व्यक्ति क्या, कहला सकते, मानवता के उत्तम ईश ॥
देखो—बैल लिये जाते हैं, कृषक बुद्धि का है यह हाल।
इतना भी ये सोच न पाते विधि की गति कितनी विकराल ॥
पैदल चलना क्या अच्छा है, जब ये ले जाते हैं बैल।"
वृद्ध पिता से बोले—दादा, डाले क्या कानों में तैल ॥"
पुत्र, मर्म की बात समझकर, बोला—दादा, बैठो आप।
थक गये होंगे पैर आपके, वे देते होंगे अभिशाप ॥
कुछ दूरी पर चल पाये थे, दोनों ये बेटे औ बाप।
फिर बोले कुछ यात्री इनसे, "है अयोग्य कितना यह बाप ॥
स्वयं चढ़ा है दूल्हा बनकर, बेटे को रगेदता साथ।
बड़े, बड़े कहलाते जग में, लघुजन - जीवन इनके हाथ ॥"
सुनी बाप ने बात मर्म की, उतरा तब तो शीघ्र तपाक।
बेटे को बैठाया अब तो, चला स्वयं पैदल ज्यों डाक ॥
कुछ दूरी तक चढ़ा पुत्र था, मिली मार्ग में वृद्धा मेम।
कहा पुत्र से—"शर्म न आती, तुझ में नहीं दया लघु प्रेम ॥
मेरे यहां सभी जन करते, अपने बूढ़े जन का मान।
यहाँ अनादर अतिशय दिखता, देखा कैसा हिन्दुस्तान ॥"
एक विदेशी महिला के जब, सुने अटपटे ऐसे विधि बोल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब तो—पिता, पुत्र से बोला, बेटा ! वृषभराज दो खोल ॥
बेटा बोला—नहीं पिता जी, मुझको आया अच्छा ध्यान ।
चढ़ें पीठ पर हम-तुम दोनों, मेरी भी हिकमत लो मान ॥
पिता प्रसन्न हुआ यह सुनकर, बोला—तेरी बुद्धि अपार ।
यह उपाय तो सबसे बढ़कर, सब की रुचि का है यह सार ॥
चले इस तरह दोनों चढ़कर, मिले मार्ग में इनके मित्र ।
कहा—मित्रवर ! यह क्या ढंग है, बैल बना इतना अपवित्र ॥
गधा समान भार वाही यह, बना लिया क्यों उत्तम बैल ।
नहीं शर्म आती क्यों तुमकों, बना रहे क्यों इसका खेल ॥"
तब तो लज्जित हुए बाप-सुत, किया परस्पर दृढ़ संकल्प ।
पिता-पुत्र ने हिकमत सोची, इसमें किंचित नहीं विकल्प ॥
बाधें चारों पैर उठाओ, कंधे पर लकड़ी से तात ।
सब की मानी—अब घर - जानी, खाली मन में चोखी घात ॥
बना स्वांग अद्भुत अलबेला, चले जा रहे पुल के पार ।
बैल हिला, चौका छटपटकर, गिरा नदी की गहरी धार ॥
गए प्राण-पखेरू उड़ तब, कर बैठे पशु-धन का नाश ।
पिता पुत्र की करनी लखर मानो रोता था आकाश ॥
सिर धुनकर दोनों ही रोए, लगा तमाशा था सब ओर ।
पिता-पुत्र की हीन बुद्धि का, दर्शक जन करते थे शोर ॥
हित - अनहित का ध्यान न रखकर, जो करते हैं जग में काम ।
धन खोकर अपयश वे पाते, पीछे होते हैं बदनाम ॥

"देखो रे शीत आगया है"

अरुण कुमार 'पगला'

देखो रे शीत आगया है,
नूतन अरि जग पर छा गया है ।
पवन बह रहा है धीरे धीरे,
कँपा रहा है शरीर को रे ।
उधर सूर्य उदय हो रहा है,
जैसे कोई दीन रो रहा है ।
कम्पित हो कह रहा है,
"क्यों रे शीत क्यों सता रहा है ।
गरीब का यह संसार है नहीं
ओढ़न को वस्त्र औ रहने को ठौर नहीं ।"
कर जोड़ तुम से करूँ विनय,
दीनों को न सताओ हे दया मय ।

★

सेवा

सत्यदेव शुक्ल "सत्य"

सेवा में माता अरु पिता की,
श्रवण ऐसे नाम है ।
चक्रयुद्ध होने में सदा,
अभिमन्यु का भी नाम है ।
दान करने में सदा,
कर्ण आता ध्यान है ।
सन्देश विद्या का सुनाना,
शिक्षा-सुधा का काम है ।

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाजामे का किस्सा

—गयाप्रसाद गुप्ता कक्षा ८ जू० हा० स्कूल शहजादपुर

किसी शहर में एक मुसलमान रहता था। वह महीने भर में अदालत में जाया करता था। एक बार उसने दर्जी से कुछ नये वस्त्र बनवाये। घर आकर देखा तो पैजामा २ गिरह बड़ा था। उसके पुराने वस्त्र मैले हो गये थे। उसने सोचा कि इस थोड़े से कार्य के लिये दर्जी के पास क्या जाऊँ अपने घर ठीक करा लूगाँ। उसने अपनी स्त्री से कहा-प्रिये यह पाजामा दर्जी ने २ गिरह बड़ा कर दिया है इसे काट कर ठीक कर देना। स्त्री ने कहा-तुम्हें मालूम है कि मुझे एक मिनट की भी फुरसत नहीं मिलती। वह अपनी लड़की के पास गया और बोला-बेटी इसे दो गिरह काटकर मोड़ देना कल मुझे शहर जाना है। लड़की ने कहा-पिता जी मुझे बच्चों के कार्य से फुरसत नहीं मिलती। मियां जी लाचार होकर अपनी बहन के पास गये और कहा-बहन यदि तुम्हें फुरसत हो तो २ गिरह पैजामा काट कर मोड़ दो। उन दोनों से कहा पर उन्हे फुरसत नहीं है। बहन ने उत्तर दिया भाई खाना बनाने तथा तुम्हारे घर के काम से ही मुझे फुरसत नहीं मिलती नहीं तो तुम्हारा पैजामा अवश्य बना देती। अब मियां ने सोचा की बिना हमारे किये काम नहीं चलेगा। बिगड़े पर कोई सहायता नहीं देता है। अतः अन्त में उसने अपने आप ठीक कर लिया। रात हो गई सब खा पीकर आराम करने लगे। मियां जी की स्त्री ने सोचा कि कल उन्हे शहर जाना है तो मैं जाकर पाजामा ठीक कर दूँ। अतः उसने दो गिरह काट कर मोड़ दिया।

२ घड़ी रात बीतने पर लड़की ने सोचा कि पिता जी को कल कचहरी के काम से इलाहाबाद जाना है। पिता जी सोचेगें तनिक सा काम भी न किया। अतः वह उठी और दो गिरह काट कर सो रही।

खूब रात बीतने पर बहन ने ख्याल किया कि मेरे भाई का पैजामा न ठीक हुआ तो भाई नाराज रहा करेंगे उसने भी २ गिरह काट कर मोड़ दिया और सो गई।

सुबह मियां जी पैजामा को लेकर इलाहाबाद चले गये और अदालत के निकट जाकर पैजामा निकाला और पहना तो २ गिरह बड़ा क्या अब ६ गिरह छोटा हो गया। अब क्या करें ? नये वस्त्र नहीं हैं और पुराने मैले हैं। मियां जी नया पैजामा पहनकर अदालत गये। जहाँ जाते वहीं हँसाई होती। मियां जी बड़े लज्जित हुये घर लौटे तो असली बात पता चली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसान और खेत

[ले० पं० सनन्दन]

मैं खेत हूँ। मैं किसान की आशा हूँ, जीवन हूँ। मेरे और उसके बीच गहरा नाता है। वह मुझे प्यारा लगता है। मैं पीढ़ियों से उसके परिवार का भरण-पोषण करता आया हूं।

मुझ पर जब नुकीला हल चलता है, तो मैं चीख नहीं उठता; मुझ पर जब बैलों के जोशीले कदम चलते हैं तो मैं घबरा नहीं जाता, मुझे उनके पदरव मीठे लगते हैं। उससे भी अधिक अच्छा तब लगता है कि जब मुझ पर किसान के आशा भरे कदम आगे बढ़ते हैं। उसके पद-पद में आशा की झलकती हुई खुशी देखकर मेरा मन हरा हो जाता है।

किसान मुझे जोतता है, बोता है। मैं उसकी आशा के बोये हुये बीजों को हिफाजत से अपनी गोद में ले लेता हूँ। उसकी खुशी मेरी खुशी है। जब वह दुखी हो जाता है, तो मुझ पर भी गहरी उदासी छा जाती है। आसमान में उमड़े हुए बादलों की ओर जब उसकी आशाभरी निगाह दौड़ती है तो मेरे मन में हलचल-सी मच जाती है। गरजते हुए बादल बिना बरसे ही चले जाते हैं, तो मुझे भी किसान के साथ-साथ बड़ा सदमा पहुँचता है। जब उमड़े हुए बादलों की बूँदें गिरने लगती हैं तो किसान की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता। मेरी गोद में पड़े हुए उसकी आशा के बीज खिल उठते हैं तब उसे उतना ही आनंद होता है जितना एक माँ को अपना पुत्र देखकर होता है।

मुझे प्रसन्नचित्त देखकर वह मेरे कोमल हरे-हरे पौधों से मीठी-मीठी बातें करता है। वह मीठे सुरीले गीत गाता है। कटाई के समय सभी किसान मारे हर्ष के फूल जाते हैं, आनन्दोत्सव मनाते हैं। किसान का अन्न मैं ही पैदा करता हूँ। हम जीवन-साथी हैं। हम विश्व के मूक सेवक हैं। वह किसान है, मैं खेत हूँ।

नवीन पुस्तकें

(स्वामी संकल्पानन्द रचित)

१-गणित फलित ज्योतिष २-सृष्टि की आयु ३-वैदिक खगोल विद्या ४-सत्य असत्य का निर्णय ५-भारत के आदिवासी आर्य ही थे। उपरोक्त पाँचों पुस्तकें दो पैसा प्रत्येक नैट

बाँटने वालों को २) सैकड़ा

(श्री चन्द्रप्रकाश अग्रवाल रचित)

भजन प्रार्थना — मूल्य दो आना

दूध चाय (नाटक) — मूल्य तीन आना

दोनों पुस्तकों पर कमीशन २५ प्रतिशत

Vocabulary for High School classes

मूल्य छः आना कमीशन ५० प्रतिशत

गुप्ता ब्रदर्स

मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यालय रजिस्ट्रार, शिक्षा विभागीय परीक्षायें उत्तर प्रदेश

इलाहाबाद

जूनियर हाई स्कूल परीक्षा, १९५५ ई० का कार्यक्रम

वार तथा तिथि	विषय	समय
सोमवार ११ अप्रैल	हिंदी साहित्य तथा व्याकरण	७ बजे से १० बजे तक
,,	हिंदी-अपठित तथा निबन्ध रचना	३ ,, से ६ ,, ,,
मंगलवार १२ अप्रैल	विशेष गणितअथवा अंक गणित (केवल बालिकाओं के लिए)	७ बजे से १० बजे तक
,,	कला (आर्ट)	३ बजे से ६ बजे तक
बुद्धवार १३ अप्रैल	भूगोल	७ बजे से १० बजे तक
,,	स्वास्थ्य विज्ञान	३ बजे से ६ बजे तक
गुरुवार १४ अप्रैल	इतिहास तथा नागरिक शास्त्र	७ बजे से १० बजे तक
,,	व्यापारिक शिक्षा	३ बजे से ६ बजे तक
शुक्रवार १५ अप्रैल	अंग्रेजी	७ बजे से १० ,, ,,
,,	ग्रामोपयोगी शिक्षा	३ बजे से ६ ,, ,,
,,	कताई बुनाई अथवा काष्ठ कला धातु कला पुस्तक कला कृषि गृहशिल्प (केवल बालिकाओं के लिए)	३ बजे से ५ बजे तक
शनिवार १६ अप्रैल	सामान्य विज्ञान	७ बजे से १० बजे तक
,,	संस्कृत, अरबी अथवा फारसी	३ बजे से ६ बजे तक
सोमवार १८ अप्रैल	संगीत	७ बजे से ९ बजे तक
,,	उर्दू अथवा बंगाली ,, मराठी ,, गुजराती ,, सिन्धी ,, पंजाबी	३ बजे से ६ बजे तक

इलाहाबाद
१९ जनवरी, १९५५ ई०

जे० एन० सी० पैट्रिक,
रजिस्ट्रार
शिक्षा विभागीय परीक्षायें, उत्तर प्रदेश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI 5 MAR 55 SAHARANPUR

एक वर्ष भर—

॥ भू-प्रदर्शनी ॥

[illegible] वर्ष के परिश्रम के बाद हमने संसार की एक एटलस तय्यार कराई है। साईज नकशों का १०×८ [illegible] छपाई [illegible] रंगी बढ़िया आफसेट द्वारा की गई है। सब से बड़ी बात इस एटलस की उपयोगिता है जिसको अनुभवी अध्यापक परख सकेंगे अभी तक छपी [illegible] एटलस में मानव विकास और अर्थ योजना इतनी स्पष्ट और व्यापक नहीं मिलेगी।

भारतवर्ष के चित्रों के साथ-साथ उत्तरप्रदेश के भी तत्सम्बंधी चित्र दिये हैं। चित्र कितने आकर्षक और उपयोगी है यह देखकर ही जाना जासकता है। चित्रों का थोड़ा सा वर्णन इस प्रकार है:—

१—पृथ्वी की आकृति और ऋतु परिवर्तन।
२—ग्रहण, ज्वार भाटा, भू-भाग निर्मित पर्वत ज्वाला मुखी आदि के १० चित्र।
३—भिन्न प्रकार के सोते, कुवें, घाटियों, मरू-उद्यान आदि के खोज पूर्ण ९ चित्र।
४—पृथ्वी पर वायु भार व चक्रवात के ८ चित्र।
५—भारत तथा यू० पी० की जलवायु के ४ चित्र और वर्षा तथा तापक्रम का ग्राफ।
६—भारत और यू० पी० के वन।
७— ,, ,, ,, खनिज।
८— ,, ,, ,, उपज।
९— ,, ,, ,, नहरों और विद्युत कुओं, तालाबों द्वारा सिंचाई और नवीन जल व विद्युत योजनायें।
१०—उद्योग और वार्षिक उत्पत्ति का ग्राफ।
११—वायु मार्ग और सड़कें।
१२—रेलें।
१३—आयात और निर्यात तथा प्रमुख व्यापारिक नगरों का अमूल्य वर्णन।
१४-१५-भारत व यू०पी० के प्राकृतिक और नैसर्गिक प्रदेश १६ से १९ तक एशिया के चित्र हैं।
२०—योरूप का राजनैतिक और प्राकृतिक चित्र।
२१—अफ्रीका ,, ,,
(नील की घाटी तथा स्वेज नहर)

२२, २३, २४—पर उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका और आस्ट्रेलिया के राजनैतिक तथा प्राकृतिक चित्र हैं। २५ से ३२ तक संसार के चित्र हैं।

जिनमें प्राकृतिक, राजनैतिक, जलवायु, वनस्पति, धारायें, शक्तिसाधन; खनिज उपज और उद्योग सम्बन्धी चित्र और आनुमानिक तालिकायें हैं। इस प्रकार यह नवीन एटलस सुन्दर और मनोहर सुदृढ़ आवरण पृष्ठ के साथ आपकी भेंट हैं। मूल्य दो रु० कमीशन चौथाई।

गुप्ता ब्रदर्स पब्लिशर्स एण्ड बुक्सेलर्स, मंडी धनौरा (मुरादाबाद)

Printed by Sagar Mal Garg at Gupta Bros Ptg. Works, Mandi Dhanaura and Published by him for Editor "Shiksha-Sudha".

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब्राहम लिंकन की दृष्टि में गोरे और काले लड़कों में कोई भेद नहीं था।
चित्र में दो बालक स्प्रिंग फील्ड में स्थित लिंकन की मूर्ति के पास
खड़े हैं। स्प्रिंग फील्ड वह स्थान है जहां लिंकन ने जन्म लिया
और वहीं उसकी समाधि है

वार्षिक मूल्य १) | मार्च १९५५ ई० | एक प्रति =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

संस्थापक
स्व० रामकुमार अग्रवाल

सम्पादक
वीरेन्द्र कुमार
बी० ए० विशारद

इस अंक में

★

१	मौन सन्देश	श्री रुद्र प्रताप शर्मा निधि	१
२	गद्य साहित्य का विकास	श्री अमर सिंह साहित्य रत्न	२
३	विश्व को भारत की देन	श्री भोला प्रसाद	३
४	बालकों की बन्दर वृत्ति	श्री सनन्दन जी	५
५	इमली	श्री रामेश बेदी	८
६	आज यह अन्तिम विदाई	श्री हनुमान बली पाण्डेय	१०
७	ज्ञातव्य बातें	श्री राम हर्ष पाठक	१२
८	चित्रावली		१३—१६

★

बाल-मण्डल

१	किसान		१७
२	तोता राम की टर्र	श्री भगवान सिंह चन्देल	१८
३	हरिजन उत्थान	श्री राम पाण्डेय	२१
४	जागो	श्री अरुण कुमार	२२

वार्षिक मूल्य
एक रुपया

गुप्ता ब्रदर्स, पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, मण्डी धनौरा

एक प्रति
दो आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

कलश १८, बून्द ९—मार्च १९५५ ई०

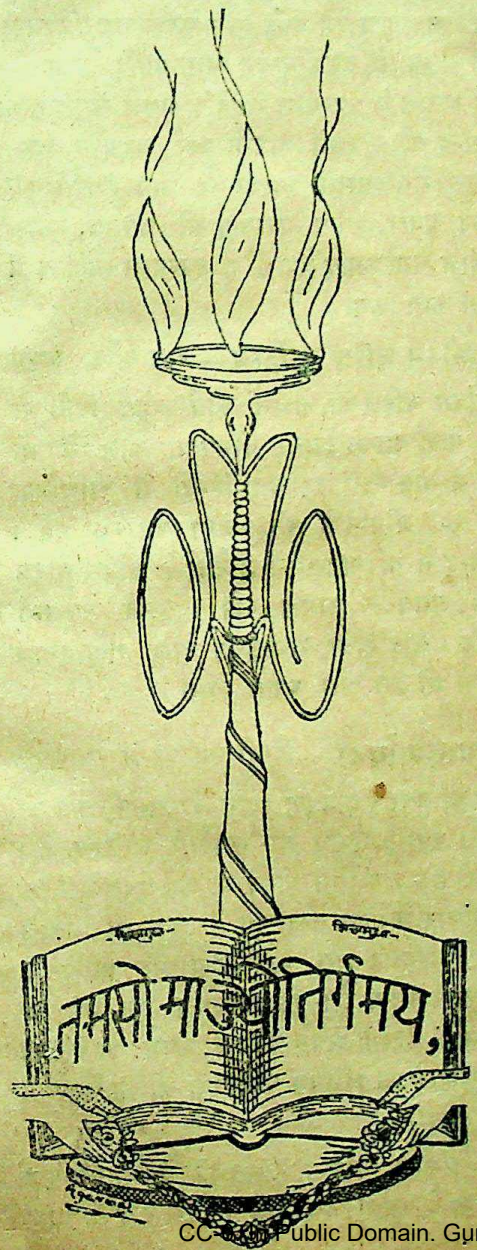

मौन संदेश

श्री रुद्र प्रताप शर्मा "निधि"

करो स्वकर्म नम्र हो, सुकर्म मौन हो करो।
सुधर्म है वही जिसे—
समाज शुद्ध मानले,
अधर्म है महा जिसे—
समाज हेय ठान ले।
सुकर्म औ कुकर्म में—
विभेद एक है यही
सुविज्ञ भद्र मंडली—
कहें सुधर्म है वही,
अतः समाज संगठन—
सु व्यक्ति-यूथ से करो
करो स्वकर्म नम्र हो, सुकर्म मौन हो करो।
न सत्य और झूठ है,
भला बुरा न है कहीं,
समाज निन्द्य-कार्य जो—
छिपा-करे बुरा वहीं।
विशाल जन समूह का—
मताधिकार पा सके,
तथा उसी समाज में
विशिष्ट ख्याति पा सके—
जिन्हें भला कहें सभी—
वही भलाइयां करो।
करो स्वकर्म नम्र हो, सुकर्म मौन हो करो ॥२॥
सत्य है वही कि जो
समक्ष दृष्टि के रहे।
यथा स्वरूप नेत्र में—
बने, परोक्ष में कहे।
सत्य है वही जिसे न—
काल भी मिटा सके,
मिलें कु-कष्ट आदि किन्तु
विश्व अन्त में झुके।
आत्मा प्रजन्य सत्य,
मन विकार से डरो।
करो स्वकर्म नम्र हो, सुकर्म मौन हो करो ॥३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गद्य साहित्य का विकास

लेखक—श्री अमर सिंह साहित्यरत्न

रीति कालीन काव्य सरिता का जो प्रवाह केशवदास की चिंतामणि ने बहाया था वह पद्माकर के समय तक क्षीण पड़ चुका था। जीवन की उच्च भावनायें नष्ट हो चुकी थी। कवि अपने सीमान्त प्रदेश में ही रह गये थे। किन्तु राष्ट्रीय जागृति के साथ ही साथ साहित्यिक क्षेत्र में भी उन्नति प्रारम्भ हो गई। यद्यपि दासता की बेड़ियों ने मस्तिष्क की शाँति को समूल नष्ट कर दिया। मानवसुलभ भावनायें हृदय की उग्र भावनायें लेखनी के सहारे कोरे कागज पर अभिव्यंजित होने लगी इन जागृति के गीतों में नवराष्ट्रनिर्माण की भावना ने जन्म पाया।

इस युग में मेरठ के आस पास खड़ी बोली ने जन्म लिया। यवनों के आगमन के पश्चात् इस भाषा का प्रचार दिल्ली में भी आरम्भ हो गया अरब और फारस से आए हुए सैनिकों ने इस भाषा को और आगे बढ़ाया। कुछ समय के पश्चात् इसमें रचना भी प्रारम्भ हो गई। और धीरे धीरे गद्य साहित्य उन्नति की सीमा पर पहुँच गया। गंग, जठमल, सदासुख तथा इन्शाअल्ला खाँ की कहानियों ने इस भाषा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

उपन्यास

हिन्दी साहित्य के प्रारंभिक युग में काव्य का अधिकार होने के कारण अब साहित्यकारों की प्रवृतियाँ कथा साहित्य की ओर भी बढ़ी। कथा साहित्य का आदि रूप हमें ऋगवेद, उपनिषद बौद्ध अथवा जैन साहित्य में मिलता है। 'रानी केतकी की कहानी' इंशाअल्ला खाँ की सर्वप्रथम हिंदी साहित्य की कहानी थी। तत्पश्चात् लल्लूलाल जी तथा सदल मिश्र की रचनायें सामने आईं हैं। इसके पश्चात् हिन्दी में उर्दू तथा संस्कृत के उपन्यासों का भी चलन रहा परन्तु शीघ्र ही भारतेन्दु द्वारा मौलिक रचनायें प्रारम्भ हो गई।

उपन्यास साहित्य के द्वितीय उत्थान काल में विशेष सहायता देने वाले बाल कृष्ण भट्ट, किशोरी लाल गोस्वामी, देवकीनन्दन खत्री आदि लेखक हैं। तृतीय उत्थान में उपन्यास साहित्य सबसे समृद्ध हुआ प्रेमचन्द जी ने इसमें अपना पूर्ण सहयोग दिया श्री चतुरसेन शास्त्री, विश्वम्भर नाथ "कौशिक" जैनेन्द्र कुमार, प्रताप नारायण श्री वास्तव, वृन्दावनलाल वर्मा आदि लेखकों ने उपन्यास साहित्य में विशेष कार्य किया।

जीवन चरित्र साहित्य—राम और कृष्ण के जीवन चरित्र का लेखन कार्य बहुत दिनों से होता चला आ रहा था। वीरगाथा काल में भी वीरों के गीत गाये गए अतः हिन्दी में आधुनिक रीति से जीवनियों की रचना आरम्भ हुई। भारतेन्दु ने चरितावली में छोटे छोटे जीवन चरित्र हिन्दी जगत के समक्ष रखे। इसके उपरान्त कार्तिक प्रसाद खत्री, राधाकृष्ण दास, गोकुलनाथ शर्मा ने भी इस ओर ध्यान दिया।

आख्यायिका—हिन्दी साहित्य में आख्यायिका का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है मनोविज्ञान की दृष्टि से कहानी मानव का सर्वप्रिय साहित्य है। जायसी हमारे कहानी काव्य के सर्व प्रथम मौलिक कहानीकार थे। भारतेन्दु युग में भी श्री निवास दास, राधाकृष्ण दास, बाल कृष्ण भट्ट आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमति' कहानी अपने ढंग की प्रथम कहानी थी बंग साहित्य की अनुपम कहानियाँ भी साहित्य में अच्छा स्थान रखती थीं।

प्रेमचन्द, निराला, प्रसाद की कहानियाँ पूर्ण कुशलता के साथ लिखी गईं। इनमें कुछ तो सादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं कुछ में विशद व्याख्या, मार्मिक व्यंजना तथा देशकाल अथवा राजनीतिक आन्दोलन का चित्रण किया है।

निबंध साहित्य—निबन्ध साहित्य का नवीनतम रूप है। राष्ट्रीय जागृति के साथ निबन्ध ही उग्र भावनाओं को प्रदर्शित करने का अच्छा माध्यम ठहराया गया भारतेन्दु तथा उनके समकालीनों का युग संकट व विशृंखलता का युग था। राजनीतिक अत्याचार ने भारतवर्ष में असंतोष और जागृति का बीज बो दिया। भारतेन्दु निबन्ध साहित्य के प्रथम आचार्य हैं। उन्होंने अंग्रेजी कृतियों की गंभीर आलोचना भी की थी। इनके पश्चात बालकृष्ण अपनी भावात्मक शैली के कारण प्रमुख समझे जाते थे इनके निबन्धों में हास्य का पुट अधिक रहता था।

प्रतापनारायण मिश्र, माधवप्रसाद मिश्र, पद्मसिंह शर्मा, वियोगी हरि, आदि भावात्मक निबन्धों के अतिरिक्त विचारात्मक, वर्णनात्मक निबन्धों की भी रचना की। इसमें अधिक उल्लेखनीय अम्बिका प्रसाद, बालमुकुंद आदि हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पं० श्यामसुन्दर दास, मिश्रबन्धु, पदुमलाल बख्शी, जोशी, गुलाबराय, रामकुमार वर्मा आदि भी अच्छे निबंधकार हैं।

नाटक—भारतेन्दु युग में पुनः नाटकों की रचना प्रारम्भ हुई। धीरे धीरे नाटकों की बाढ़ सी आ गई। नाटक और रंगमंच द्वारा हिंदी का अच्छा प्रचार हुआ द्विवेदी युग के अंतिम समय में श्री जयशंकर प्रसाद ने मौलिक नाटकों की रचना की। उनकी शैली में नवीन तथा प्राचीन शैली का सुन्दर समन्वय झलकता है।

समालोचना—रसों और अलंकारों विवेचन व्यास ने अग्नि पुराण में किया। इस कार्य को नाटयकार भरत भूमि ने और आगे बढ़ाया। इस प्रकार किसी प्रकार के भी काव्य के गुण दोष परखने के लिए कसौटी प्रस्तुत की गई। यहीं से समालोचना साहित्य की नींव पड़ी। आधुनिक काल में प्रेमघन ने निवासदास की संयोगिता स्वयंवर की आलोचना की थी। यह आलोचना केवल दोषों को दिखाने के लिए की गई थी। बाद में मिश्रबन्धु, लाला भगवानदीन, पद्मसिंह शर्मा, आदि ने लेखनी उठाई आधुनिक युग में समालोचना साहित्य का प्रमुख स्थान है।

विश्व को भारत की देन

लेखक—श्री भोला प्रसाद

इस बात पर विचार करने के पहले कि विश्व को भारत की क्या देन है यह आवश्यक सा हो जाता है कि भारत की महत्ता और गौरव के सम्बन्ध में मैं दो शब्द कह दूँ। भारत की महत्ता तो विष्णुपुराण के निम्न श्लोक से स्पष्टतः प्रकट हो जाती है।

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तुते भारत-भूमि भागे।
स्वर्गापवर्गास्पद मार्ग भूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरास्ते॥

अर्थात् मनुष्य की कौन कहे देवता के कण्ठ से भी इस गीत की धारा फूट निकलती है कि भारत भूमि के निवासी धन्य हैं। वही भूमि स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) का मार्ग है। वहीं के निवासी आगे चलकर देवत्व प्राप्त करेंगे या मोक्ष प्राप्त करेंगे।

पूज्य बापू, जो आज हमारे बीच नहीं रहे, के शब्दों में "भारतवर्ष भोग भूमि नहीं, वरन कर्म-भूमि है। यहाँ के लोग सदा से ही फल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसक्ति छोड़कर कार्य करते रहे हैं। 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते' यहाँ के लोगों की प्रेरक शक्ति रही है।

अब मेरा विश्व को भारत की क्या देन है इस पर विचार करना अभीष्ट है। विश्व के सारे देश जब असभ्यता एवं अज्ञानता के आँचल में भटक रहे थे, भारत सभ्य होकर ज्ञान का प्रकाश बिखेर रहा था।

"अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा"

सभ्यता की सबसे पहली किरण इसी पवित्र भूमि पर फूटी। दूसरे शब्दों में हम भारत को प्रकाश का देश कह सकते हैं। यह देश सदा से प्रकाश-पथ की ओर उन्मुख रहता आया है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् अँधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। यही इसके जीवन का मूल मंत्र रहा है। इसी मंत्र के सहारे यह सदा अपनी मंजिल पर बढ़ता रहा है। कालान्तर से इस पृथ्वी पर अनेक साम्राज्यों का सृजन हुआ, विनाश भी, अनेक संस्कृतियाँ बनीं और मिटीं। अनेक धर्मों की आँधी उठी और फिर विलीन भी हो गई। परन्तु भारतीय संस्कृति और सभ्यता ज्यों की त्यों बनी रहीं। काल के निर्मम प्रहार भी इसकी रीढ़ तोड़ने में सर्वथा असफल ही रहे।

भारत ने ही विश्व को समन्वय का पाठ पढ़ाया। अनेकता में एकता का दर्शन विश्व को भारत ने ही कराया। बिखरी शक्तियों को जोड़ना भारत ने ही सिखाया। भारत ने ही दिव्य जीवन का आदर्श विश्व के सामने रक्खा। सत्य और अहिंसा का पाठ संसार को भारत ने ही पढ़ाया। सत्य और अहिंसा का सहारा लेकर भारत ने संसार को यह दिखला दिया कि सत्य का मार्ग ही चिरंतन है और भौतिकता पर अध्यात्म की विजय निश्चित है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता का आधार पार्थिव न होकर अपार्थिव रहा है। स्थूल न होकर सूक्ष्म रहा है। जिस प्रकाश में इसने अपने को देखा है, उसी में इसने अपने भीतर की दुनिया भी देखी है और इससे बाहर जो प्रकाश की दुनिया है उससे इसने साक्षात्कार किया है।

भारत ने सर्वदा से शांति का मार्ग अपनाया है। और आज भी हमारे देश के कर्णधार महामना पं० नेहरू भी शान्ति का मशाल लेकर आगे बढ़ रहे हैं और उन्होंने दुनिया के सामने स्पष्ट रूप से यह दिखला दिया है कि यदि हम सुखमय जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो हमें युद्ध की नीति छोड़कर शांति का मार्ग अपनाना होगा। युद्ध से विनाश भले ही सम्भव हो, समस्या का समाधान कदापि सम्भव नहीं हो सकता। भारत ने संसार को परहित के लिए स्वहित का बलिदान करना सिखाया है। जब कि संसार मृत्यु के भय से आक्रांत हो रहा था, भारतवर्ष ने आत्म प्रकाश देकर उसे मृत्यु के भय से मुक्त किया। जब कि संसार में चारों ओर मारो, मारो की आवाज उठ रही थी, भारत ने बचाओ, बचाओ का नारा लगाया। लोभ और मोह से मुक्त होकर भारत ने विश्व को अपरिग्रह का पाठ पढ़ाया। उतना ही रक्खो जिससे जीवन-रक्षा हो। दूसरे को मार कर जीना तो निकम्मी जिन्दगी है यह पवित्र मंत्र विश्व को भारत ने ही दिया। यों तो और भी चीजें भारत ने विश्व को दी हैं परन्तु स्थानाभाव में उन सबों का उल्लेख सम्भव नहीं हो सकेगा। थोड़े में यही कह देना पर्याप्त होगा कि सत्य, अहिंसा, ज्ञान ध्यान, जप-तप आदि का सुन्दर पाठ भारत ने विश्व को पढ़ाया है। इसीलिए तो भारत विश्व गुरू की पवित्र संज्ञा से अभिहित हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालकों की बन्दर वृत्ति

लेखक—पं० सनन्दन जी

बालकों में अनुकरण करने की वृत्ति होती है। बालक अनुकरण से जो सीखता है और अपने भावी जीवन का जो निर्माण करता है, वह अन्य बातों से नहीं। जिस बालक में अनुकरण वृत्ति का प्रमाण अधिक होता है, उस बालक की इस वृत्ति को हम बन्दर वृत्ति कहते हैं। परन्तु इसी बन्दर वृत्ति पर उसके भावी जीवन का निर्माण है।

बालक अपने बड़ों का, अभिभावकों का, अध्यापकों का अनुकरण किये बिना नहीं रहता। इस बात का पता बालक का निरीक्षण करने पर ही मिलता है। बालक जब स्कूल से आता है, तो अध्यापक बन जाता है और अपने घर के अपढ़ नन्हों को पढ़ाने की चेष्टा करता है। बालक कभी घर के पुराने डाक-पत्र एकत्रित करके, डाक बाबू या डकिया बन जाता है। कभी चोर और पुलिस के रूप में, कभी डाक्टर और मरीज़ के रूप में खेल खेलता है। वह देखी हुई घटनाओं का अपनी स्मृति के आधार पर अनुकरण ही करता है इससे बालक तथा कथित विषय का अनुकरण तो करता ही है, उसका ज्ञान भी बढ़ता है।

बालक तो पाठशाला में सीखने के लिए जाते हैं। वे पाठशाला के बालकों की अच्छी या बुरी चेष्टाएँ भी सीख लेते हैं। उनका अनुकरण शील स्वभाव इन वृत्तियों का अनुकरण ही करता है। ऐसी वृत्तियों का बार बार अनुकरण करने से वे सभी वृत्तियाँ उनके मानस में स्थाई बन जाती हैं। और उनका ऐसा चरित्र निर्मित हो जाता है। अच्छे गुरु के छात्र निहायत अच्छे ही बनते हैं। अगर अध्यापक की चेष्टाएँ या चरित्र शंकनीय रहा, तो बालक का निर्माण भी शंकापूर्ण ही रहता है।

तदुपरान्त बालक गृह के वातावरण में अधिक रहता है। इससे वह अपने अभिभावकों की वृत्तियों का भी अधिक अनुकरण करता है। मेरे अभिभावक ऐसा करते हैं, फिर मैं ऐसा क्यों न करूँ? ऐसे विचार बालक को आदर्श पथ से हटा देते हैं। इससे अभिभावकों को भी अपने कार्यों की ओर सजग रहना चाहिए और अपने व्यवहारों को भली भाँति देखना चाहिए कि इससे बाल मन पर बुरी छाप तो नहीं पड़ जाएगी? बालक को सुचरित्र बनाने के लिए उसे अच्छे वातावरण में रखना चाहिए।

हम कहते हैं अनुकरण मरण है किन्तु वह तभी है, जब की हमारे व्यवहार अच्छे न हो। अच्छे व्यवहारों का अनुकरण सभी करते हैं। हम सब महापुरुषों का अनुकरण करते हैं, अधिक लोग जिस मार्ग का अनुसरण करते हैं, उसी पर हम जाते हैं, क्यों? इसी में ही अच्छापन है, इसी में ही भलाई है?

बालकों की सोचने की शक्ति परिमित होती हैं। उनकी आँखें जो देखती हैं, उनके अंग उसी के अनुसार हिलने को उद्यत हो जाते हैं। लेकिन उनके दिमाग़ के सोच समझ का दरवाजा तो जल्दी खुलता ही नहीं, इसी कारण बालक भले बुरे को सोचे बिना ही अनुकरण करता है। किन्तु यह बात अभिभावकों एवं अध्यापकों को सोच लेनी चाहिए कि बालक का भला या बुरा किसमें है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल की पुस्तकें, एटलस व अभ्यास कापियाँ तथा नकशे

जगत मान् चित्रावली	ढाई रुपया
एशिया मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
भारत मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
अभ्यासकापी संसार व भारत	बारह आना
" भारत	छः आना
विश्व भू वर्णन	दस आना
एशिया भू वर्णन	पाँच आना
प्राकृतिक भूगोल भाग ३	तीन आना
" " भाग १,२	तीन आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
" भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
नकशे	छः आना प्रति

(संसार, भारत, उत्तर प्रदेश जिला बिजनौर तथा हर एक महाद्वीप का रंगीन राजनैतिक मानचित्र। एशिया, भारत प्राकृतिक मानचित्र)

दुनिया की मश्की कापी	दस आना
एशिया " " "	छः आना
भारत " " "	छः आना
भूगोल प्रश्नोत्तर	दस आना
नवीन भूगोल भारत कक्षा ६	आठ आना
" " एशिया " ७	आठ आना

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा

उत्तम बाल साहित्य ★

हमारे इस चुने हुए साहित्य में कविताएं कहानियाँ, ड्रामे, गीत तथा अन्य सभी प्रकार की उत्तम पुस्तकें हैं जो आपके बालकों को चरित्रवान तथा चतुर बनायेंगी।

		कमीशन
दो घड़ी की मौज	।)	चौथाई
मनोरंजक कहानियाँ	।)	"
आदर्श चरितावली	॥)	"
नेताओं की कहानी	॥)	"
सैर सपाटे की कहानी	।)	आधा
देश देश के बालक	।=)	"
विदेशी बच्चों की कहानियाँ	।)	"
चतुर बालिकायें	।)	"
बेसिक ड्रामा	॥)	"
सेवा गान	≡)	तिहाई
बटुक गान भाग १	=)	चौथाई
बटुक गान भाग २	=)	"

पूरा सैट प्राप्ति के लिए २॥) का मनीआर्डर भेजें

गृह शास्त्र तथा कला के लिए

गृह शास्त्र भाग १	१॥)	कमीशन तिहाई
" भाग २	॥।)	कमीशन तिहाई
सूचिका शिल्प भाग १	॥।=)	कमीशन चौथाई
" भाग २	।=)	कमीशन चौथाई
कला शिक्षक	१॥)	कमीशन तिहाई
कला परिचय	॥।)	कमीशन तिहाई
आधुनिक पुस्तक कला	॥।)	कमीशन तिहाई

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जू० हा० स्कूल परीक्षा प्रश्नोत्तर

विज्ञान प्रश्नोत्तर	छः आना
प्रश्नोत्तर आर्ट, क्राफ्ट	बारह आना
,, व्यापारिक शिक्षा व व्यापार प्रणाली	छः आना
,, ज्यामेट्री	आठ आना
,, भूगोल	दस आना
,, इतिहास	दस आना
,, गणित	एक रुपया
,, स्वास्थ्य रक्षा	आठ आना
,, ग्राम्यज्ञान	बारह आना
प्रश्नोत्तर हिन्दी व्याकरण, साहित्य	चार आना
,, अपठित, रचना	आठ आना
,, इतिहास, भूगोल	सवा रुपया
इंगलिश प्रश्नोत्तर	एक रुपया
संस्कृत प्रश्नोत्तर	चार आना
प्रश्नपत्र पठित, अपठित	आठ आना

कमीशन सब पर चौथाई।

हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकें

इण्टर, हाई स्कूल, जूनियर हाई स्कूल तथा हिन्दी की अन्य परीक्षाओं जैसे विशारद, प्रभाकर तथा प्रथमा आदि के लिए उत्तम पुस्तकें।

	मू०	कमीशन
हिन्दी साहित्य कोष	५)	चौथाई
काव्य चन्द्रिका	१।)	,,
निबन्धावली	१॥)	तिहाई
निबन्ध भूषण	१)	,,
हिन्दी व्याकरण परिचय	१)	,,
हिन्दी व्याकरण सार	।=)	,,
कहावत मुहावरे	।॥)	,,
अनुवाद मंजरी	॥)	,,
अन्त्याक्षरी पद संग्रह	॥)	चौथाई
सुमन संचय	१॥)	,,

परीक्षा की कापी

प्रति हज़ार ६½" × ८½" साइज़ की कवर पर आपके स्कूल का नाम छापा जायगा।

	८ पेजी	१२ पेजी	१६ पेजी
१० lb. का कागज़	२४॥)	३३)	४४)
८ lb. का कागज़	२२)	२७॥)	३८॥)

मिलने का पता—

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

गणित की पुस्तकें

गणित नोट बुक	१॥)	तिहाई
बाल बीजगणित	१)	आधा
भूमिति शिक्षिका	।)	तिहाई
बहीखाता	।=)	चौथाई
गणित प्रश्नोत्तर हाई स्कूल	२)	आधा
,, ,, जूनियर हाई स्कूल	१)	चौथाई

इतिहास की पुस्तकें व एटलसें

एतिहासिक एटलस भाग १	१)	तिहाई
,, ,, भाग २	।॥)	,,
भारतीय इतिहास प्रश्नोत्तर हाई स्कूल	१॥)	आधा
,, ,, जू० हा० स्कूल	॥=)	चौथाई
भारत का इतिहास कक्षा ६	।॥)	आधा
सरल नागरिक ज्ञान	।=)	,,

उपयोगी प्रश्नोत्तरियाँ

सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी प्राचीन भारत	चार आना
सरल प्रश्नोत्तरी मध्यकालीन भारत	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी अर्वाचीन भारत	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग १	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग २	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग ३	आठ आना

आपके पुस्तकालय के लिए

हमारी चुनी हुई पुस्तकें

आजादी की कहानी	२॥)	क० चौथाई
हिन्दी साहित्य कोष	५)	,,
नेताओं की कहानी	॥)	,,
मधुर गीता	॥)	,,
जादू के खेल	॥=)	,,
घरेलू इलाज व दस्तकारी	॥=)	,,
केले और पपीते की खेती	।)	,,
गृह शास्त्र भाग १	१।)	तिहाई
,, २	।॥)	,,
बेसिक ड्रामा	॥)	आधा

मैनेजर—गुप्ता ब्रदर्स, मण्डी धनौरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्मियों का शीतल पेय—इमली

लेखक—श्री रामेश बेदी

भारत में इमली उत्तर प्रदेश के देहरादून और सहारनपुर जिलों में सब जगह बोई जाती है। हरिद्वार के आस पास यह प्राकृतिक अवस्था में स्वयं उगती है। पंजाब में ईमली के वृक्ष कम होते हैं, पर बंगाल और दक्षिण में खूब होते हैं।

सदा हरा भरा रहने वाली इमली का वृक्ष ७० से ८० फुट तक ऊँचा चला जाता है। फूल मई जून में खिलते हैं और फूलने के १०-११ महीने बाद मार्च अप्रैल में फल आते हैं। इमली की फली तीन से आठ इंच तक लगती है।

इमली के बीजों के अन्दर का भाग पीस कर लेई बनाया जाता है जो जिल्दसाजी और प्लाइ-वुड उद्योगों में तख्तों को जोड़ने के लिए अत्यन्त उपयोगी पदार्थ है।

इमली का गोंद काला और मैला होता है तथा किसी काम नहीं आता विवाह आदि उत्सवों पर बारी इमली की पत्तियों से बड़ी बड़ी पतलें बनाकर लोगों को दिखाता हैं और पुरस्कार मांगता है। पत्तों से पीला या लाल रंग बनाया जाता है।

इमली की छाया बड़ी घनी होती है परन्तु लोगों में यह सामान्य विश्वास पाया जाता है कि इस वृक्ष के नीचे आवास अच्छा नहीं होता। वन अनुसंधान संस्था देहरादून के श्री ट्रोटर ने एक व्याख्यान में बताया था कि इमली के पत्तों से कहा जाता हैं कि रात को एक अम्ल निकलता है। श्री मैम्मल के अनुसार इमली के वृक्षों के नीचे गाड़े गए तम्बुओं पर यदि एक दो दिन तक ऊपर से गिरे हुए पत्ते पड़े रहने दिए जाय तो उसका कपड़ा जल्दी ही गल जाता है। मैंने स्वयं इसका अनुभव किया है। जानकार पाठक इस विषय पर अपने अनुभव लिखने की कृपा करें।

भोजन मे उपयोग

इमली का कच्चा फल खट्टा होता है। पके फल का स्वाद मिठास लिए खट्टा होता है। चिकित्सा की अपेक्षा भोजन में फल का उपयोग अधिक होता है। उत्तर प्रदेश पंजाब आदि के गाँवों में जैसे साल भर के उपयोग के लिए गुड़ आदि चीजें रख ली जाती हैं वैसे बंगाल के देहातों में इमली को घड़ों में बन्द कर रख लेते हैं। दाल सब्जी और चटनियों में इमली के फलों का प्रयोग किया जाता है उड़ीसा और दक्षिण बंगाल में आंवलों के साथ इमली का रस पीते हैं। खट्टी होने से इमली की कोमल पत्तियों की चटनी बनाई जाती है। बच्चे कोमल पत्तियां और फूलों को चाव से खाते हैं। श्री सखाराम अर्जुन ('बाम्बे ड्रग्स' १८६९) के अनुसार इमली की एक किस्म से लाल इमली प्राप्त की जाती है यह पोषक होती हैं और सूखी खजूर की तरह खाई जाती है।

गर्मियों में उपयोग

पकी इमली तृषाशामक है। गर्मियों में इमली के शीतलपेय का बहुत उपयोग किया जाता है। इमली का पना प्रसिद्ध पेय है। इसके बनाने के लिए सामान्यतया दस छटाँक पकी इमली का गूदा घोड़ लेते हैं। गूदे को पहले धोकर साफकर लें। पानी में भिगोकर रख दें। सुबह मलकर गूदे को पानी में घोल दें। कपड़े में छान कर बीज और तन्तुओं को अलग करदें। इसमें काफी खाँड घोलने से यह स्वादिष्ट पेय बन जाता है। पीने वाले रूचि के अनुसार इसमें जरा सा नमक, काली मिर्च और जीरा भी मिला लेते हैं। देहातों में तो यह शक्कर या गुड़ से बनाया जाता है, परन्तु शहरों में खांड या चीनी से तैयार किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लू से बचने के लिए

गरमियों में गर्मी और लू से बचने के लिए इसका उपयोग खूब करते हैं। शौकीन लोग तो बर्फ में ठंडा कर के शीतपेयों की तरह दिन में दो तीन बार पी लेते हैं। सुन्दर रंग के इस स्वादु और सस्ते पेय ने अमीरों के घरों में भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त करली है यद्यपि यह गरीबों का पेय है, तथापि आकर्षक डिजाइनों वाले छोटे छोटे चमकदार शीशों के गिलासों में परोसा हुआ यह संपन्न भोजन नारंगी के रस गिलास से कम लुभावना नहीं दिखता। बोतलों में भरकर स्वादु पेय बेचने वालें व्यपारियों को मैं सलाह दूंगा कि वे इमली का अधिक व्यापक प्रचार करें।

बूंदी और आलू डाल कर जिस तरह दही का रायता बनाया जाता है, उसी तरह इसके रस से बूंदी और आलू मल कर भोजन में व्यंजन के रूप में गर्मियों में खाई जाती है।

जिन लोगों के शरीर में से बहुत दुर्गन्ध आती है, उन्हें इमली के बीजों को पीसकर शरीर पर लेप करना चाहिये।

जलीय प्रदेशों में प्रचुर उपयोग

पाचन दीपक होने के कारण इमली क्षार तथा लवणयुक्त जलवायु से उत्पन्न होने वाले विकारों को दूर रखती है। किसी बँगाली पंडित का कथन है कि जगत को आयु प्रदान करने वाली प्रमाण वायु क्षार भूमि में प्राणों को हरती है। औरों को जीवन प्रदान करने वाला जल भी यहां जीवन ले लेता है, परन्तु आश्चर्य है कि यमदूतिका इमली ऐसी जलवायु में प्राणों को देने वाली है। एक दूसरे श्लोक का भाव है कि मक्खन में दूध का उपयोग करने वाले गोकुल वासी कृष्ण भी कभी कभी इमली को स्वाद से पीते हैं. किसी विशेष समय में इमली भी पंचामृत का सा लाभ कर देती है। जलवायु के खराबी के कारण होने वाले प्रभावों से बचने के लिए ही समुद्र के किनारे के देश बंगाल मद्रास महाराष्ट्र और उड़ीसा की क्षारभूमियों में इमली के बिना भोजन नहीं किया जाता।

रक्तदोष में उपयोग

नींबू संतरे आदि के अभाव में स्कर्वी रक्तदोष) रोग को दूर करने के लिये इमली का गूदा देने से बहुत लाभ होता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि इससे दस्त अथवा आँतों में ऐंठन होने लगती हैं। तो इसका प्रयोग बन्द कर देना चाहिये। ये लक्षण न प्रकट हों तो यह मूल्यवान स्कर्वी नाशक पदार्थ है जिसका मल्लाहों को और समुद्र यात्रियों को उपयोग करना चाहिये। जिलों में इसे राशन का अंग बनाने के लिए भी १८७५ में एडवर्ड बेअरिंग ने सिफारिश की थी।

महास्त्रोतस् के रोग

पकी इमली को रातभर पानी में भिगोने के बाद मसलकर छानलें। गुड़ घोल कर दालचीनी इलायची और काली मिर्च का चूर्ण मिला दें। भोजन में अरूचि होने पर इसे खाना चाहिये। इसे पीने से भी भोजन में रूचि पैदा होगी। जठरअग्नि को तीव्र करने के लिए भविमिश्र ने इमली क्षार का उपयोग बताया है। यह गुल्म (वायु गोला) में भी इस देते हैं। पीसे बीज ग्राही हैं और प्रवाहीका (पेचिश) में प्रयोग किये जाते हैं। बंगाल में पुरानी इमली घरों में रख छोड़ते हैं। आम प्रवाहिका और रक्त प्रवाहिका में इसका शर्बत पिलाते हैं।

मलेरिया तथा अन्य ज्वर

पुराने मलेरिया ज्वर में जब जिगर और तिल्ली बढ़ी हुई हो तो कच्ची इमली का कषाय देते हैं। बंगाल में बाउल संप्रदाय के गुरु हरिनाम लेकर इमली के शर्बत के साथ भात खाने का पथ्य बतलाते हैं जिससे बुखार छूट जाता है। पैतिक ज्वरों में वमन को रोकने के लिए इमली का शीत कषाय पिलाते हैं मसूरिका ज्वर में इमली के पत्तों का शीत कषाय पिलाने से लाभ देखा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज़ यह अन्तिम विदाई

हनुमान बली पाण्डेय मुरादाबाद

[१]

साथ इतने दिन रहे,
सुख शाँति की वंशी बजी ।
प्रेम के जल धार से,
आनन्द की घड़ियाँ सजी ।
उर दहन को सोंच की, चिनगी किसी ने है जलाई ।
आज यह अन्तिम विदाई ।

[२]

एक तरु के पुष्प हम सब,
एक झंझा में गिरे झर ।
मौन होता है अभी,
लेकर व्यथा का भार सर पर ।
जी भर कर साथ हंस लो, फिर न होगी यह हंसाई ।
आज यह अन्तिम विदाई ।

[३]

चिर मिलन के दिन हमारे,
'आह' बन स्मरण आते ।
कौन होंगा अब कहाँ ?
ये ज्वाल धारे प्रश्न आते ॥
संयोग से इत उत मिलन, पर साथ होगी न मिलाई ।
आज यह अन्तिम विदाई ।

[४]

व्याकुल ज्वार देखो,
ले रहा अब अंगड़ाई ।
कब मिलेगें ? कब मिलेंगे,
बात यह सब उर समाई ।
रोयें रोयें में बीते ही दिनों की याद आई ।
आज यह अन्तिम विदाई ।

[५]

आज सब निरुपाय हैं,
उपहास हैं निष्ठुर समय का ।
सदा से ही देखो,
क्रूर था यह प्रेमियों का ।
अश्रुओं का अर्घ्य लेकर आज उर शीतल कराई ॥
आज यह अन्तिम विदाई ॥

[६]

चाह अब तक था हमारा,
एक पावन स्नेह बन्धन ।
अब वियोगी इन क्षणों में,
जाँयगे बन राख के कन ।
वायु अब पथरेणु सम, भिन्नता लेकर उड़ाई ।
आज यह अन्तिम विदाई ॥

[७]

आज इस अंतिम विदा पर,
नैन भर भर नीर लाते ।
फिर गले से मिलकर सब,
मन को यों समझाते ।
स्नेह अपना सत्य है, तो फिर मिलाई फिर मिलाई ।
आज यह अन्तिम विदाई ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोलम्बो विश्वविद्यालय के द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर भारत सम्बन्धी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नृत्तक प्रिय गोपाल ने मनीपुरी नृत्य दिखाया। चित्र में बाएँ से दाएँ, श्रीमती मेहता, श्री जी० एल०, मेहता, प्रियगोपाल, संध्या एवं डा० मौल अमेरिका के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ।

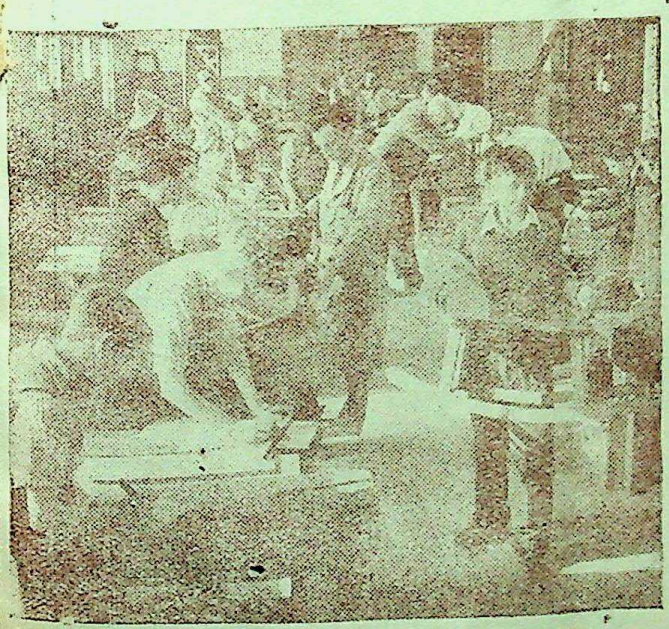

'मिडिल ग्रे सेकेन्डरी मॉडर्न' स्कूल [illegible] विद्यार्थी जिन्हें दो अध्यापक दस्तकारी सिखाते हैं। चित्र में बालकों द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

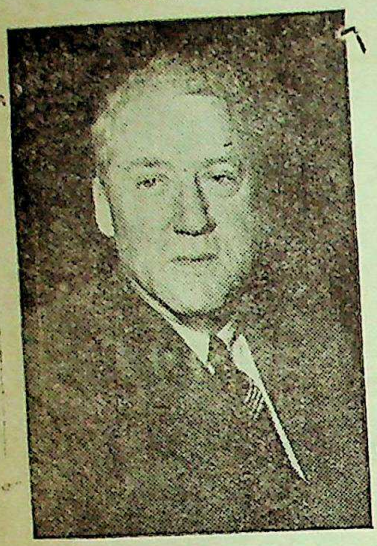

श्री जान शरमन कूपर—संयुक्त राज्य अमेरिका के भारत में नव नियुक्त राजदूत।

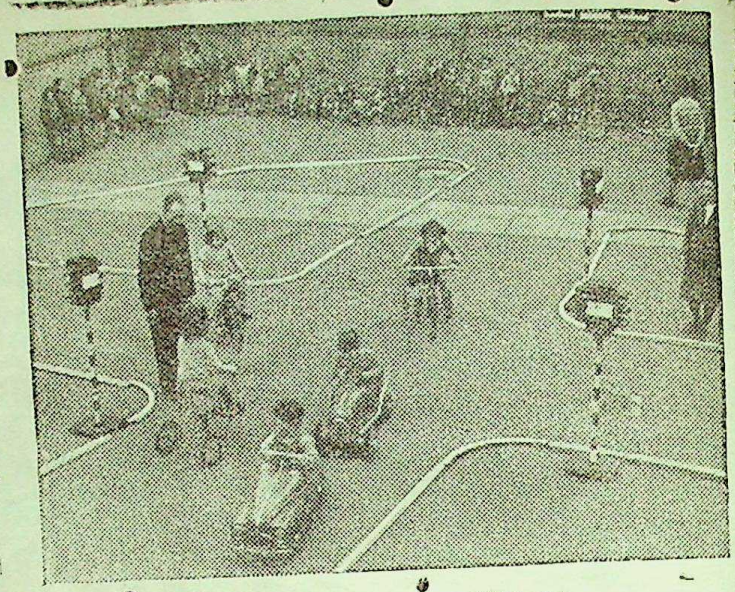

ब्रिटेन के बच्चों को नकली वातावरण, (सड़क, चौराहा, प्रकाश स्तम्भ आदि) बनाकर सड़क पर ठीक से चलना सिखाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लन्दन में इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट द्वारा भारत पाकिस्तान एवं श्रीलंका के बच्चों की कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। चित्र में ब्रिटेन के शिक्षा मन्त्री श्री डेविड एक्लिस श्रीमती विजय लक्ष्मी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

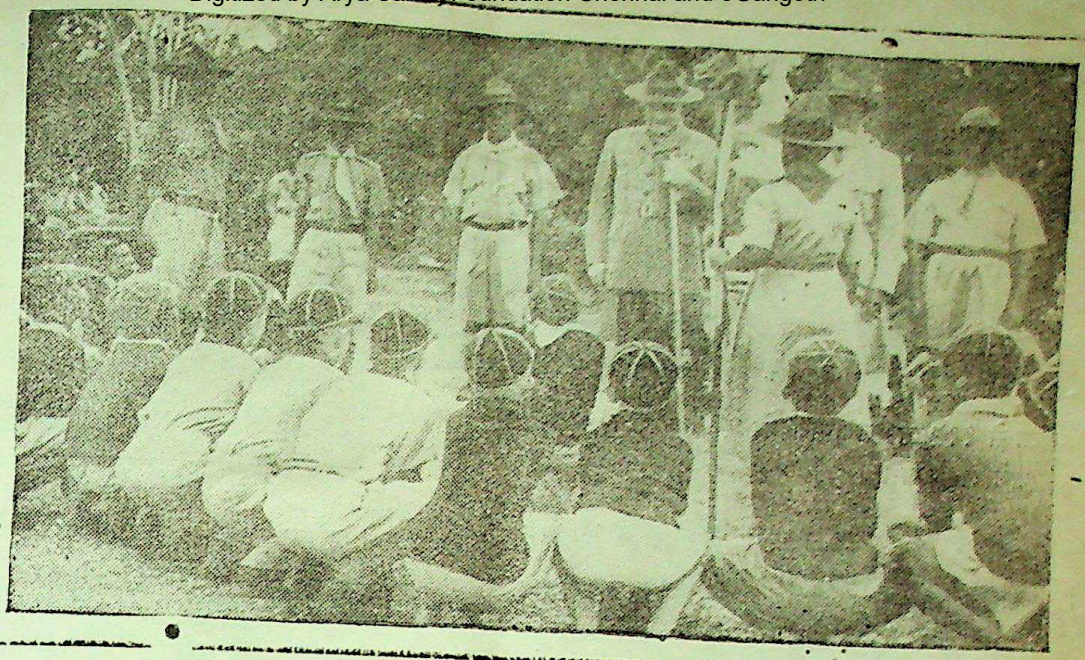

गोल्ड कोस्ट के कुछ स्काऊट अपने 'प्रमुख स्काऊट' गवर्नर सर चार्ल्स से बातचीत करते हुए।

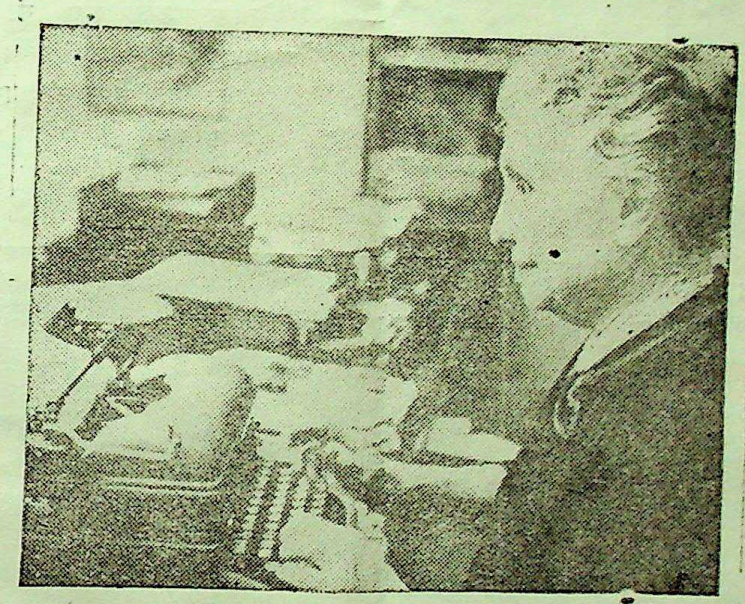

हेलन केलर

हेलन केलर अन्ध, बधिर नेत्री तथा शिक्षिका ने, बावजूद बाल्यकाल में गम्भीर बीमारी के कारण दृष्टि, श्रवण शक्ति तथा वाचाल शक्ति जाती रहने के, अमेरिका के शिक्षा-सम्बन्धी कार्यक्रमों में महत्व पूर्ण स्थान बना लिया है। अन्धों के हितार्थ कुमारी केलर ने अनेक देशों का देशाटन किया है। उनकी रचित पुस्तकें उन आधुनिक साधनों पर प्रकाश डालती हैं जो आज अमेरिका में विकलांगों के शिक्षणार्थ उपयोग में लाए जा रहे हैं। तालीम के इतिहास में वाचाल शक्ति पर विजय प्राप्त करना आपकी महान [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत से ११ पुस्तकालयाध्यक्षों का एक दल पाँच महीने की शिक्षा प्राप्त करने अमेरिका गया है।

प्रसिद्ध कवि वाल्ट विटमैन (१८१९-१८९२) जिनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'घास की पत्तियाँ' एक शताब्दी पूर्व प्रकाशित हुई थी।

एक बच्चे ने अपने हाथों में घास लाकर उनसे पूछा यह कौन सी घास है? मैं उस बच्चे को क्या जवाब देता? मैं भी उस घास के बारे में उस बच्चे से अधिक कुछ नहीं जानता था।

पंजाब की रानी सेखन। अमेरिकी रेडियो से हिन्दी के कार्यक्रम प्रसारित करती हैं।

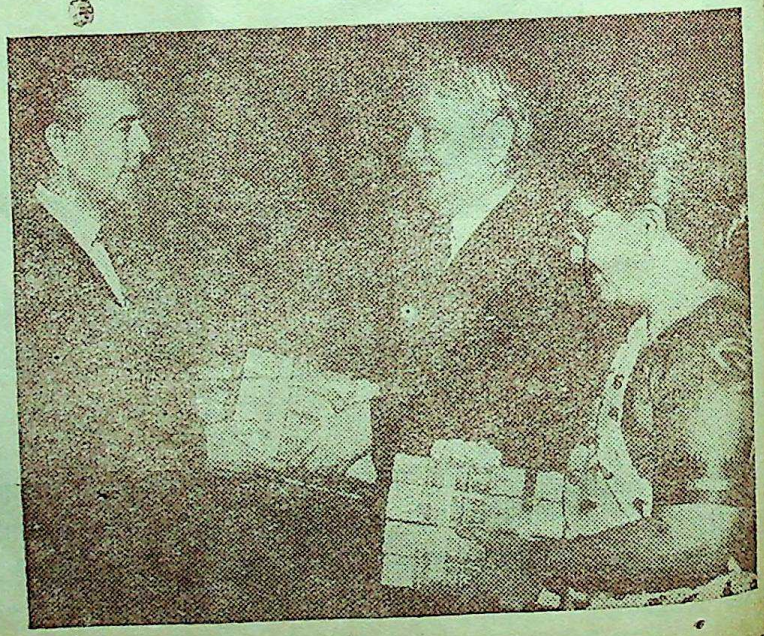

अमेरिका स्थित भारतीय राजदूत श्री गगन बिहारी लाल मेहता ने आज [illegible] में प्रकाशित महात्मा गाँधी की जीवनी 'अमेरिकन कांग्रेस पुस्तकालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालबन्धु

मार्च सन् १९५५ ई०

किसान

दैनिक कार्य

हम भारत के दुखी किसान,
हम से है भारत की शान,
मेहनत हैं खेतों में करते,
पानी पानी हो दम भरते ॥

(१) रहना—

बनी फूस की झोपड़ियाँ हैं,
लीपी पोती साफ सुथर हैं।
कासीफल की बेलें छाई,
फूली फली भली मन भाई ॥

(३) धैर्य्य—

महल अटारी मोटर कार,
हम को उस में लेश न सार।
बैलों की गाड़ी सुख दाई,
लख कर जैसे कबीर ले जाई ॥

(४) दूसरों की भलाई—

सी-सी करते ठंड निकलती,
बारिश सदा देह पर कटती।
सेठ, शाह, बनिया, व्यापारी,
हमरे बल पर बने हजारी ॥

(५) भोजन—

बड़े प्रेम से भाजी रोटी,
खाते हैं हम बांध लँगोटी।

व्यवहार—

एक दूसरे के सुख दुख में,
शामिल होते कपट न मन में ॥

(६) त्याग—

सब प्रकार का अनाज उगाते
दही मही का ढेर लगाते।
फिर भी हम कुछ पार न पाते,
ज्वार बाजरा, उरद समाते ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोता राम की टर्र

रचयिता—भगवान सिंह चन्देल क

श्यामपुरा के श्यामू भैया, धनी और थे नेक ।
उनके घर पर रखा हुआ था, सुन्दर पिंजड़ा एक ॥
जिसमें मैना पली हुई थी, गाती मीठे गीत ।
देख जिसे श्यामू सुख पाते, गया समय कुछ बीत ॥ १

जब श्यामू कुछ बड़े हुए तो, तोता रक्खा पास ।
पिंजड़े में रह कर फिर उसको बना लिया निज दास ॥
राम-राम नित कहता रहता बन गये तोताराम ।
दूध बताशा खूब उड़ाए, पाया अति आराम ॥

फिर भी दृष्टि बचाकर उस दिन, उड़ गये खिड़की खोल ।
दगा किसी का सगा नहीं है, सुना गए मृदु बोल ॥
मिले जाति में अपनी जाकर, किया बाग में वास ।
बने सुपंच सभी के फिर तो, अतिशय मिला सुपास ॥ ३

एक समय की कथा सुनावें, रखना इस का ध्यान ।
नकली असली में अन्तर है, इसको लेना मान ॥
हरे भरे सुन्दर उपवन में, खड़ा हुआ था आम ।
पहर बहुत से तोता मिलकर, करते थे विश्राम ॥

एक मनचला तोता बोला, सुनिए मेरी बात ।
सब पक्षी शादी कर रहते, नयी नहीं यह घात ॥
तोताराम हमारे दल के, सब प्रकार हैं विज्ञ ।
इनकी आज्ञा सब के सिर पर, हैं विशेष सर्वज्ञ ॥ ५

हो जावे यदि इनकी शादी, कठिन नहीं यह काम ।
दोनों दम्पति सुख पावेंगे, धन्य बनेगा धाम ॥
निश्चय किया सभीने मिलकर, हुआ बड़ा तब शोर ।
तोताराम की शादी होगी, दिया सभी ने जोर ॥

कन्या सुन्दर हम देखेंगे, गुड़ियों का नहीं खेल ।
भूल करेगा इसमें कोई, पावेगा वह जेल ॥
अच्छे पंडित को बुलवाकर, अच्छी देखी स्यात ।
लाखों पर बत्ती पड़ जावे, सुनी गयी यह बात ॥७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पग्गड़ धारी पंडित आए, काशी के विख्यात ।
सिर पर तिलक, गले में माला, कुप्पा सा था गात ॥
पंडित बोला—सुनो सभासद, गुण पूरे छत्तीस ।
लड़की सुघड़ सलोनी यह है, टेक रखी जगदीश ॥ ८

करो निमंत्रित पक्षी दल को, भारी होगा मौज ।
तोताराम सजें अब ऐसे, जैसे राजा भोज ॥
गया निमंत्रण बाग बाग में, पेड़ पेड़ के पास ।
लाखों पोस्टमैन बन दौड़े, आम बचे ना खास ॥ ९

मौसम अच्छा शादी का है, पके आम और बेर ।
धरती सजी फूल पत्तों से, क्यों बरात की देर ॥
काँव कांव, टें-टें रूं रूं का, हुआ बड़ा ही शोर ।
दौड़ धूप अपनी अपनी का, बढ़ा वहां पर जोर ॥ १०

लाखों पक्षी न्यौतारी थे, धरती पर के रंग ।
काले पीले नीले सुर्खी, लख पड़ते थे अंग ॥
कौआ कोयल बुलबुल गेंगा, कठ कोला औ मोर ।
मैना टिटरी सारस टेंका, पिड़की बाज चकोर ॥ ११

लक्खी हरिपल धोबी खंजन, गलगल बगुला कीर ।
तीतर, चील, बटेर हाड़ला, नीलकंठ मति धीर ॥
शिव बरात भी फीकी पड़ती, अनुपम था यह ठाट ।
कुछ तो छोटे मोटे पक्षी, हो गये बारह वाट ॥ १२

तीन मास औ तेरह दिन में, पहुँचे कन्या द्वार ।
सज्जन भेंट की बेला आई, हुए मंगलाचार ॥
कोकिल बेनी कोयल गाती, मोरें करती शोर ।
तीतर किड़कूं किड़कूं करते, तबले की झकझोर ॥ १३

कितने रव थे, कितने रंग थे, करता गणना कौन ।
वाणी इस शादी शोभा पर, मित्रो, होती मौन ॥
परम रम्य आराम मनोहर, अमराई का वास ।
जनवासे की शोभा अद्भुत, श्रेष्ठ मिला अधिवास ॥१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई ताल में कोई पाल में, कोई बैठा डाल ।
अपनी अपनी मिसल लगाकर, सुखित बने इस काल ॥
लड्डु बरफी क्या बिसात थी, षडरस फल के स्वाद ।
जिसको जो रुचि कारक होते, प्राप्त हुए वे खाद ॥ १५

तोताराम की शादी ही थी, मत पूछो कुछ ठाट ॥
सब तो थे जैसे वैसे ही यहां बिछी थी खाट ॥
दूल्हा, बनड़ा ! राजा थे ये, सब के ही सिरमौर ।
इनके सिर पर बंधा हुआ था, खासा सच्चा मौर ॥ १६

आँखों में काला कज्जल था, कटि तट में थे तीर ।
लंबा बागा तन पर पहिने, बने हुए थे मीर ॥
स्वागतार्थ जब बीबी आई, देने मुख में पान ।
नाक हिलाके, आंख चला के, भौंहें कुछ ली तान ॥ १७

मैना सखी साथ की बोली, राम राम हे लाल ।
तोताराम मुस्किरा बोले, अरे हो ! क्या है हाल ?
हम तुम दोनो एक साथ के, एक वधू एक बाल ।
तुम जैसे हो, मैं वैसी हूँ, पिंजड़े का है ख्याल ॥ १८

समझ गया तब पक्षी दल बल ये दासों के दास ।
इनमें क्या स्वातंत्र्य प्रेम का, मिल सकता आभास ॥
विगत दासता की गाथा सुन, उड़ छू-हुई बरात ।
उठा कोलाहल पक्षी दल में, पंच नहीं यह घात ॥ १९

खुली कलई जब दूल्हा भागा, सब बरात हुई भर्र ।
शादी ने बरबादी लादी, तोता राम की टर्र ॥
दल में बहुरुपिया बन आते, पाते वे उपहास ।
तोता मैना की चर्चा में, पाया यही मिठास ॥ २०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दम सब बोल उठे कि वे लोग तो अछूत हैं हम लोगों के मध्य वे कैसे बैठ सकते हैं !

महात्मा जी ने कहा यदि ऐसा है तो मैं उनके पास जाकर भाषण दूंगा। मैं यहां नहीं ठहर सकता हूँ। सब लोग अचम्भे में पड़ गये। महात्मा जी ने वहीं जाकर भाषण दिया और हरिजन भाइयों ने उत्कंठित हृदयों से महात्मा जी के दर्शन किये। महात्मा जी भाषण दिया कि—

जब अंग्रेज लोग हम भारतवासियों को "कुली" ऐसा कह कर पुकारते हैं तो हमें अत्यन्त बुरा लगता है हम लोग क्रोधित होते हैं। इसी प्रकार हम अपने ही देश वासी को अछूत कह कर पुकारें तो क्या उनको बुरा मालूम नहीं पड़ता है क्या उनका दुख नहीं होता। बेचारे चाहें जितने प्यासे हों जब कुयें पर जाते तो वहां से हम लोग भगा देते हैं। यदि वह शिक्षा के हेतु स्कूलों में जाते हैं तो कहा जाता है कि यह स्कूल अछूतों के लिये नहीं है। बेचारे भगवान के दर्शनों के प्यासे जब मन्दिरों में जाते हैं तो मन्दिर का दरवाजा बन्द हो जाता है बेचारे कहाँ जाये कहीं भी ठिकाना नहीं है। जो हमारे मल मूत्र को उठाकर महान् उपकार करते हैं तो क्या उनके साथ ऐसा बर्ताव करना उचित है। कभी नहीं अतः हमें उन्हें उन्नति के मार्ग पर लेजाना चाहिए। नहीं तो कहीं वे लोग दूसरे धर्म के लोगों में जाकर हमारे धर्म पर आक्रमण न करदें।

यह लोग एक प्रकार की शक्ति हैं। छुआ छूत को मिटाने का यह मतलब नहीं है कि आप उनके साथ बैठ कर खाना खायें हाँ इतना सरकार अवश्य प्रबन्ध कर रही है कि एक साथ बैठे उठें। हमारे संविधान में भी एक विशेषता है कि अछूतों व निर्धन, गरीबों को समान अधिकार प्राप्त है जिससे देश का कोई प्राणी भूखा निरक्षर एवं गरीब न रह सके।

तात्पर्य यह है कि अखिल सृष्टि ईश्वर की रचना है तथा सब प्राणी मात्र ईश्वर ने बनाये हैं इस लिये हमें अछूतों का अपमान न करना चाहिए और उनको ऊंचा उठाने में भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

★

अरुण कुमार 'पगला'

—:जागो:—

जागो प्यारे बेटा जागो।
अंधकार गया है टल,
आया प्रकाश उज्जवल,
जग गये पंछी सकल,
चहुं ओर है चहल पहल,
न करो व्यर्थ एक पल
अरुणामय हुआ गगन
प्रसून पूर्ण हुए चमन
देख मन होवे विकल ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन उत्थान

ले०—श्रीराम पाण्डेय

प्रिय पाठक गण ! जितनी संख्या हम लोगों की है लगभग उतनी ही अछूतों की है। वह भी मनुष्य हैं और हम लोग भी मनुष्य हैं। तथा एक ही परम पिता परमात्मा की हम दोनों सन्तान हैं। तो फिर हमें क्या उनको छोड़ देना चाहिये अथवा नहीं छूना चाहिये। यदि नहीं छूना चाहिये तो क्यों ? अछूत कोई बला नहीं है। जब भारत के प्राचीन निवासी आर्य लोग आये और गंगा यमुना के दोआबे में फैले तो उन्होंने वर्ण विभाग किये। १ ब्राह्मण २ क्षत्री ३ वैश्य ४ शूद्र लोग दूसरों की सेवा करके गुजर करने लगे। लेकिन उस समय ऐसा नहीं था कि इस भांति अछूत बन्धु दुर दुराये जाते हों। जितनी देर वे मल मूत्र उठाते थे उतनी देर उनको नहीं छुआ जाता था क्यों कि मल मूत्र से संक्रामक रोग फैल जाता है। ज्योंही वे लोग नहा धोकर आते थे सब के साथ बैठते उठते थे। तो आज इस प्रकार उन पर अत्याचार क्यों होता है ? हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी ने उनको काफी ऊपर उठाने का प्रयत्न किया फल स्वरूप वे जेल भी गये फिर भी इनका उत्थान करने में सदैव तत्पर रहे किन्तु अछूत वर्ग एवं हमारा (भारतवासियों का) अभाग्य था कि बापू जी हम से विदा हो गये नहीं तो एक दिन ऐसा आता कि अछूतों का ही राज्य होता। महात्मा जी स्वयं घूम घूम कर नारे लगवाते थे कि-Abolish untou chability अर्थात् छुआ छूत को दूर भगाओ। इसी के अनुसार एक लेख है कि किसी गांव में एक बहुत बड़ी सभा थी विभिन्न जाति वाले धनी निर्धन दरिद्र आदि सभी वर्ण वाले महात्मा जी के भाषण सुनने के लिये आये थे। उनमें कुछ हरिजन (अछूत) आदि भी आये वे लोग विचारने लगे कि हम लोग निश्चय ही अस्पृश्य हैं। लेकिन पतित वत्सल महात्मा जी के भाषण अवश्य सुनने चाहिये क्योंकि वे हमारे बहुत बड़े नेता हैं।

वे लोग सभा में आये। कुलीन एवं वही २० बिस्वा वाले पुरुष जो धनवान भी थे रुष्ट होकर बोले कि तुम लोग यहाँ कैसे आये तुम तो अछूत हो। अरे! दूर भागो। उन बेचारों ने कहा कि हम पर दया करो हम भी महात्मा जी की वाणी सुनेंगे लेकिन किसी ने भी बैठने न दिया।

इस प्रकार वे पद दलित हरिजन बन्धु दूर जाकर बैठ गये। कुछ समय पश्चात् जब महात्मा जी भाषण देने के लिये मंचारूढ़ हुये। तो एकाएक उनकी दृष्टि उन भगाये गये हरिजनों पर पड़ी तो तुरन्त ही पूछा कि ये कुछ मूर्तियां वहां क्यों बैठी हैं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य-समाज मंडी धनौरा (मुरादाबाद) में

कन्या-विद्यालय की स्थापना

स्थानीय आर्य-समाज के सदस्य म० बिन्दा-लालजी आर्य के ५०००) नक़द तथा २८) मासिक दुकानों के किराये के दान से उनकी धर्म-पत्नी श्रीमती जावित्री देवी के नाम पर, समाज के अधीन, 'आर्य-कन्या-विद्यालय' की स्थापना हुई। प्रबन्ध के लिए पांच सदस्यों की एक उपसमिति बनादी गई है। सम्प्रति विद्यालय में 'प्रयाग-महिला-विद्यापीठ' की परीक्षार्थिनियें तैयार की जायेंगी। अनेकों उपयोगी ग्रन्थों के संकलन-कर्त्ता, डि० बो० जूनियर हाई स्कूल के निवर्त्तमान प्रधानाध्यापक, पं० रामचन्द्र शर्मा 'हिन्दी-प्रभाकर', 'साहित्य-रत्न' की सेवायें विद्यालय के लिए प्राप्त कर ली गई हैं।

वीरेन्द्र कुमार
मन्त्री

वल्लभ पहेली नं० १ के प्रतियोगी

प्रथम पुरस्कार एक प्रतियोगी को मिला

सर्व शुद्ध हल प्रथम पुरस्कार:-५) पाँच रुपया

(१) शिव शंकर श्रीवास्तव, मोहम्मदपुर।

द्वितीय पुरस्कार १ अशुद्धि पर—प्रत्येक को ।।) पुरस्कार मिला।

(१) गिरजा शंकर द्विवेदी मगरवारा।

(२) महावीर प्रसाद दोस्तीनगर।

(३) बैजनाथ वर्मा मसवासी।

(४) गोकरन सिंह मगरवारा।

(५) कैलाश नाथ श्रीवास्तव लखनऊ।

(६) प्यारे लाल कुरील चमरौली।

दो अशुद्धियाँ किसी की भी नहीं आईं इसलिए तीन अशुद्धि वालों को तृतीय पुरस्कार दिया गया:-प्रत्येक को।) पुरस्कार मिला।

(१) रामनाथ मौर्य्य सिकरारा।

(२) अंबिका प्रसाद सिंह सैफाबाद।

(३) प्रकाश चन्द्र उपाध्याय शाही बरेली।

(४) रमेश चन्द्र पाली खुर्द इटावा।

(५) शारदा धर्मदास दाम नगर सौराष्ट्र।

(६) रघुराज सिंह गलगलहा।

(७) रामेश्वर प्रसाद लालगंज।

(८) गोवर्द्धन प्रसाद शुक्ल कानपुर।

वल्लभ पहेली नं० २

इसमें बहुत कम प्रतियोगियों ने पहेली भरकर भेजी और जो आई वह सब पुरस्कार पाने से असमर्थ रहीं।

वल्लभ पहेली नं० १ का सर्व शुद्ध हल

प्रिय राम पद !

मैं कल कानपुर दिवाकर के साथ जा रहा हूँ। गंगा चरण आज हाथ रस जायेगा। उसकी पूरी खातिर दारी करना। उसे विमुख मत करना। मैंने सुना है पं० व्योम केश भी आजकल कहीं विशारद की परीक्षा देने गये हैं। तुम इतना घबड़ा क्यों रहे हो ? विपद में मनुष्य को धैर्य्य से काम लेना चाहिये। दो चार दिन में तुम्हारे लिए एक नौकर भेज दूंगा। पूजा की छुट्टी में काशी विद्यापीठ देख आना। मैं कानपुर में एक तालुकेदार के यहाँ ठहरूंगा।

तुम्हारा:—नील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ भू-प्रदर्शनी ॥

कई वर्ष के परिश्रम के बाद हमने संसार की एक एटलस तय्यार कराई है। साईज नकशों का १० × ८ इञ्च है छपाई बहु-रंगी बढ़िया आफसेट द्वारा की गई है। सब से बड़ी बात इस एटलस की उपयोगिता है जिसको अनुभवी अध्यापक परख सकेंगे। अभी तक छपी किसी हिन्दी एटलस में मानव विकास और अर्थ योजना इतनी स्पष्ट और व्यापक नहीं मिलेगी।

भारतवर्ष के चित्रों के साथ-साथ उत्तरप्रदेश के भी तत्सम्बंधी चित्र दिये हैं। चित्र कितने आकर्षक और उपयोगी है यह देखकर ही जाना जासकता है। चित्रों का थोड़ा सा वर्णन इस प्रकार है:—

१—पृथ्वी की आकृति और ऋतु परिवर्तन।
२—ग्रहण, ज्वार भाटा, भू-भाग निर्मित पर्वत ज्वाला मुखी आदि के १० चित्र।
३—भिन्न प्रकार के सोते, कुवें, घाटियों, मरू-उद्यान आदि के खोज पूर्ण ९ चित्र।
४—पृथ्वी पर वायु भार व चक्रवात के ८ चित्र।
५—भारत तथा यू० पी० की जलवायु के ४ चित्र और वर्षा तथा तापक्रम का ग्राफ।
६—भारत और यू० पी० के वन।
७— ,, ,, ,, खनिज।
८— ,, ,, ,, उपज।
९— ,, ,, ,, नहरों और विद्युत कुओं, तालाबों द्वारा सिंचाई और नवीन जल व विद्युत योजनायें।
१०—उद्योग और वार्षिक उत्पत्ति का ग्राफ।
११—वायु मार्ग और सड़कें।
१२—रेलें।
१३—आयात और निर्यात तथा प्रमुख व्यापारिक नगरों का अमूल्य वर्णन।
१४-१५-भारत व यू०पी० के प्राकृतिक और नैसर्गिक प्रदेश १६ से १९ तक एशिया के चित्र हैं
२०—योरूप का राजनैतिक और प्राकृतिक चित्र।
२१—अफ्रीका ,, ,,
(नील की घाटी तथा स्वेज नहर)
२२, २३, २४—पर उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका और आस्ट्रेलिया के रा[illegible] तथा प्राकृतिक चित्र हैं। २५ से ३२ तक संसार के चित्र हैं।

जिनमें प्राकृतिक, राजनैतिक, जलवायु, वन-पति, धारायें, शक्तिसाधन, खनिज उपज और उद्योग सम्बन्धी चित्र और आनुमानिक तालिकायें हैं। इस प्रकार यह नवीन एटलस सुन्दर और मनोहर सुदृढ़ आवरण पृष्ठ के साथ आपकी भेंट है। मूल्य दो रु० कमीशन चौथाई।

गुप्ता ब्रदर्स पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, मंडी धनौरा (मुरादाबाद)

Printed by Sagar Mal Garg at Gupta Bros Ptg. Works, Mandi Dhanaura and Published by him for Editor "Shiksha-Sudha".

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

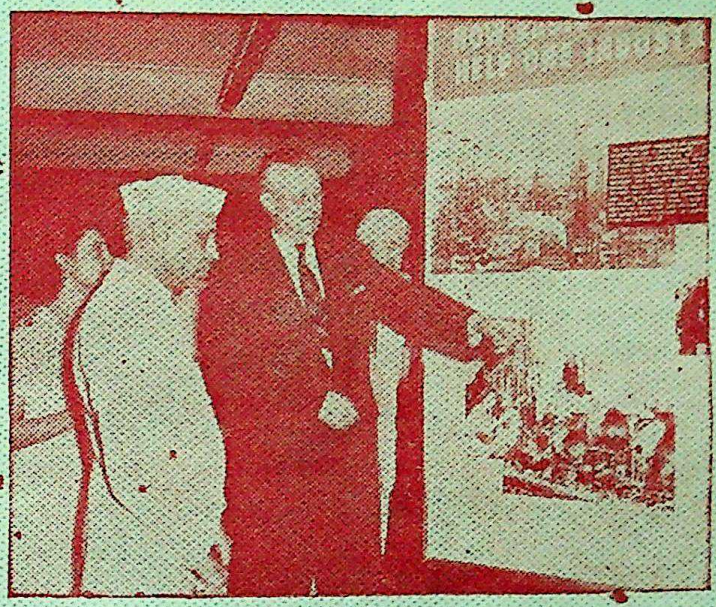

प्रधानमंत्री नेहरू ने हाल में नयी दिल्ली में अणुशक्ति के कल्याणकारी उपयोगों की प्रदर्शनी देखी। उनके साथ उनकी पुत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी भी थीं। चित्र में दायें से बायीं ओर डा० कृष्णन, श्रीमती गाँधी, श्री डोनाल्ड केनेडी और प्रधानमंत्री नेहरू दीख रहे हैं।

वार्षिक मूल्य १) | अप्रैल १९५५ ई० | एक प्रति =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शिक्षा-सुधा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थापक
श्री० रामकुमार अग्रवाल

सम्पादक
वीरेन्द्र कुमार
बी० ए० विशारद

इस अंक में

आज मैं उपहार हूँ	श्री नेमचन्द्र जैन	१
केवल ढाई दिन	श्री एस० आर० अरविन्द	२
बसन्त बरात	श्री रामाधार शुक्ल	३
बारह घंटे रात बारह घंटे दिन	श्री अरविन्द कुमार जैन	४
विद्यार्थी और दन्ड पद्धति	श्री सनन्दन जी	५
मत कविता का अपमान करो	श्री देवेन्द्र शर्मा	६
अलबर्ट आइन्सटाइन		७
ब्रह्मचर्य का महत्व	श्री श्रीराम पाठक	९
सत्य	श्री माधव लाल पाण्डेय	१२
भारत सरकार	संकलित	१३
ज्ञातव्य बातें	श्री राम हर्ष पाठक	१४

बाल बन्धु

भगवान से	श्री रामाधार शुक्ल	१७
साड़ी की साध	श्री भगवान सिंह चन्देल	१८
परिवर्त्तन	श्री रामनाथ मौर्य	१९
करे जग भारत का सम्मान	श्री कन्हैया लाल मिश्र	२०

वार्षिक मूल्य
एक रुपया

गुप्ता ब्रदर्स, पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, मण्डी धनौरा

एक प्रति
दो आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

कलश १८, बून्द १० — अप्रैल १९५५ ई०

आज मैं उपहार हूँ

श्री नेमचन्द्र जैन

आज मैं उपहार हूँ !!

कल किसी कर ने ही मुझ को था लताद्रुम में लगाया।
रूप देकर, गन्ध देकर था हृदय में मुस्कराया।
कल अलक्षित था मगर अब आज मैं साकार हूं।
आज मैं उपहार हूँ ॥

मैं पनपता जा रहा था आप अपने में विहंसता।
शीत, गर्मी में सदा हंसता रहा भी था सिसकता।
पर नहीं था भार बनता मैं मनुज का हार हूँ।
आज मैं उपहार हूँ ॥

था नया उल्लास मुझ में भृंग मुझ पर मुग्ध होते।
आज कुम्हलाने लगा तो क्षुब्ध होते दूर रहते।
कल बना जीवन किसी का आज मैं अंगार हूं।
आज मैं उपहार हूँ ॥

कन्टकों में हो रहा मेरा सदा अनजान जीवन।
छेद देते गात कोमल पर बना रहता अचिन्तन।
इन कटीली डारियों से ही बना मधुप्यार हूँ।
आज मैं उपहार हूँ ॥

मैं कभी का पल्लवित नव, धूल धुसरित हो रहा हूँ।
कल चढ़ा आकाश पर था अब धरा पर सो रहा हूं।
था किसी के शीश, कर में आज बिन आधार हूं।
आज मैं उपहार हूं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ढाई दिन

श्री एस० आर० अरविन्द

जिला एटा के एक क़स्बे 'राजा का रामपुर' से एक कवि सम्मेलन का निमन्त्रण था और कानपुर से भाई रमाकान्त श्रीवास्तव, जो प्रान्त के सुविख्यात हास्य व्यङ्गकार कवि हैं, और मैं ही वहां जाने को थे। निमन्त्रण वहां के एक हायर सैकेन्ड्री स्कूल के वार्षिकोत्सव समारोह के सम्बन्ध में था, दिसम्बर की १९ ता० के लिए। सब से पहिले तो एक दिन की छुट्टी का सवाल ही सामने था, फिर जाड़े की यात्रा और देहाती कस्बे का जाना। जी हिचका पर आने का वादा कर दिया था, अतः जाने का प्रोग्राम बनाना ही पड़ा। सोचा था, और कुछ न सही तो, एटा के जन कवि भाई बलबीर सिंह 'रंग' से तो भेंट हो ही जायगी।

चिकोटी सी काटती जाड़े की रात। शुक्रवार १८ तारीख ९ बजे चल कर रमाकान्त जी दरवाजा खटखटाया। बेचारे उठे और मेरे लिए अलग बिस्तर लगवाकर घड़ी में ढाई बजे का एलार्म लगा कर सो गए। सोते सोते उनकी एक गीत की कुछ पंक्तियां स्मरण हो आईः

खिड़की पर रखी सिरहाने घड़ी चल रही थी टिक टिक टिक। ..... रेडियम में सीझे वे अंक चमकते। गोया तम खुद बाहर आँखे फाड़ २ कर घूर रहा था।

और सचमुच, रात का सन्नाटा था, जब हम लोग सर्दी की लहरों पर तैरते स्टेशन पहुँचे और प्लेटफार्म पर पूरे दो घंटे कम्बलों में चिपके तेज हवा से मुंह छिपाते, उत्तर पूर्वीय रेलवे की पहली गाड़ी की प्रतीक्षा करते रहे।

गाड़ी ने घसिट घसिट कर पूरे ८ घंटे बाद हमें कानपुर से १०५ मील दूर रुदाइन स्टेशन पर उतार दिया और खुद चली गई। हमारा इक्का भी सात आठ सवारियाँ लादे कच्ची सड़क पर भाग चला। रास्ता ऊबड़ खाबड़, इक्का लचर और जानवर काफी तेज। दो मील में ही कचूमर निकल गया। इस दौड़ में अगर इक्के के डंडे स्थान च्युत हो जाते तो ..... इसके आगे सोच नहीं पाता।

पाँच छै हजार की छोटी सी आबादी में दो दो हायर सेकन्डरी स्कूल। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के स्कूल अलहदा। मेरे अनुमान के विपरीत इस हाई स्कूल की इमारत के बजाय टिन शेडस मिले और चालिस प्रतिशत से अधिक जनता सूटेड बूटेड मिली, जब कि मैं ८०% कुर्त्ता धोती की आशा कर रहा था। कस्बा पश्चिमी सभ्यता के सांचे में ढलता नजर आया और सदर सड़क चिकनी सीमेन्ट की बनी मिली। गनीमत यही क्या कम थी जो कोई होटल या रैस्ट्रां दिखाई नहीं पड़ा, हालांकि बाजार में छोटे बड़े चाय के लिप्टन, ब्रुकबॉंड के डिब्बे और पैकिट यह बता रहे थे कि चाय का भी यहाँ काफी प्रचार है।

स्कूल की बिल्डिंग देखकर तो निराशा सी हुई पर अन्य कार्य क्रम देख कर आश्चर्य चकित रह जाना पड़ा। पहली चीज जो हम लोगों को दिखाई गई वह थी प्रदर्शिनी। उस वातावरण के लिए नई चीज थी विद्यार्थियों औ छात्रों द्वारा निर्मित बहुत प्रकार की वस्तुऐं थीं। वाणिज्य छात्रों के लिए प्रैक्टिकल रूप में आदर्श बैंक दिखाया गया था। ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों का अपना बैंक है भी और साथ ही साथ कन्ज्यूमर्स स्टोर भी।

बड़ी चीज देखने में आई प्रबन्धकों और शिक्षकों का उत्साह और सहयोग। अक्सर मैनेजमेंट और स्टाफ में चला करती है पर यहाँ वह बात आदर्श रूप में मिली। स्कूल का नाम है बी० डी० आर० एस० हा० सै० स्कूल जिसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्ध डाक्टर गुप्ता के सुयोग्य हाथों में है और प्रधानाध्यापक श्री जगदीश कुमार निगम जैसा उत्साही और योग्य प्रिंसिपल, कम से कम मैंने तो नहीं देखा। नुमायश में उनकी अपनी बनाई बहुत सी वस्तुएं थी और उनमें एक था कागज का ताजमहल। बहुत ही आकर्षक और सजीव ६ फिट से अधिक ऊंचा।

दिन भर खेल कूद और साहित्यिक प्रतियोगिताओं के बाद सन्ध्या काल सात बजे से कवि सम्मेलन का आयोजन था। हमें बड़ी निराशा हो रही थी, जब मंच पर एक दो स्थानीय कवियों और हम लोगों को छोड़कर कोइ न आया।

और तभी एक सीटी बजी-लोगों को शान्त करने के लिए। और कूद कर मंच पर एक सात आठ वर्ष का बालक आया और निर्भीकता से दो पंक्तियां पढ़ कर फिर कूद कर अपने साथियों में जा मिला और लगभग ५० बालक कूद कर मंच पर इसी प्रकार आते रहे और दो चार पंक्तियाँ पढ़कर कूद २ कर भागते रहे।

तभी फिर एक सीटी बजी और कवि दर्बार की घोषणा के बाद सूर, तुलसी, भूषण, नरोत्तम, रसखान, गुप्त जी, दिनकर, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी सभी के प्रति रूप आकर मंच की शोभा बढ़ाते रहे और उपस्थित हजार बारह सौ की भीड़ शान्ति पूर्वक उन्हें सुनती रही।

इसके बाद कवि सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। संचालक ने इस क्रम से कविताएं और गीत पढ़वाए कि रात दो बजे तक आयोजन बड़ी सफलता पूर्वक चलता रहा और इसके बाद की रात हम लोगों ने गुप्तजी के घर आराम से बिताई।

अगले दिन रविवार को भी आना नहीं हो सका, क्योंकि सुबह ही सम्भ्रान्त नागरिकों के स्नेह अनुरोध वश एक गोष्टी की स्वीकृति भी देनी ही पड़ी और निगम साहब तथा गुप्ता जी के आग्रहवश सन्ध्या का पारितोषिक वितरण भी ऐटेन्ड करना ही पड़ा, किन्तु यह सोच कर कि अगले दिन आफिस पहुँचना है, फंकशन के बीच ही हम लोग बिदा लेकर चल पड़े। इस बार फर्रुखाबाद पर ट्रेन बदलनी थी। वहाँ की बैंच पर बिताए दो ढाई घंटे और वह खुली सरदी भी भूलना कठिन ही है।

सोमवार को ८ बजे सुबह घर आकर जब दफ्तर के लिए तैयार हो रहा था तो तीन रात की जगाई, सफर की थकन और जाड़े के मौसम ने ऐसा आक्रमण किया कि उस दिन आफिस से दोपहर में ही भाग आना पड़ा और उस दिन चारपाई रगड़ने के बाद स्वस्थ हो पाया।

अपने प्रकार का पहला ही अनुभव है, इसलिए लिखे ले रहा हूँ कि सनद रहे और वक्त जरुरत पर काम आवे।

—⊙⊙—

बसन्त-बरात

रचयिता - आशुकवि पं० रामाधार शुक्ल

आई है बरात ऋतुराज की उमंग भरे
साज बाज नये नये छटा दिखलाती है।
पीले पीत धारे कुछ पीले पाग बांधे सिर
देखते बरात "शुक्ल" दृष्टि रह जाती है।

केकी करे नृत्य, भृंगावली गान करें, शुकी
बिगुल फूंक २ अमृत बरसाती है।
पिकी हर्षाई देख रसालों पर बैठ शोभा
देती है बधाई मन फूली न समाती है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रधिया के—'बारह घंटे रात; बारह घंटे दिन'

ले०—श्री अरविन्द कुमार जैन

रधिया पुरानी हो चली है आज-कल वह ६० के साथ खिलवाड़ कर रही है। मगर काम-काज में बड़ी पैनी है। उसको अपनी उपज पर किसान की तरह गर्व है उसका हिया बांसों उछलने लगता है, जब कभी वह उसे खिल-खिलाती देख पाती। उसके जीवन की साध बस यही है।

वह धार्मिक नींव पर उपजी और उसी पर पल्लवित हुई। उसकी सन्तान उसी के अनुरूप है यानी नमी हवा से वंचित। विवेक—रधिया के घर की धरोहर मानो। नीचे से ऊपर, सभी सान्तर। आज सब पर रधिया की पालिश पुती है फलतः घर में चमक है। उजियाला है। रधिया उस उजियाले में सत्यता, सच्चरित्रता और उदारता को स्पष्ट देख लेती है। उसके जीवन का परिश्रम यहीं पर दूर हो जाता है।

मनुष्य एक पौधा है। उसकी कलम होने पर उसकी उमर दीर्घ हो जाती है। फल-फूल की आशा होने लगती है। मनुष्य प्रारम्भ में न संभाला जाय तो पेड़ की उमर पर वह मन चाहा नहीं बन सकता। रधिया यह बात जी से जानती है। और इसीलिए "बारह घण्टे रात और बारह घण्टे दिन" वह शिक्षात्मक काम करती रहती है।

धर्म-सुन्दर आचारों की दूसरी संज्ञा है। इसकी नींव सुदृढ़ होती है। उस पर कई मंजिल खड़ी की जा सकती हैं। और फिर भी प्रबल झंझा-वात में घनघोर वर्षा में अड़िग खड़े रहने की सतत आशा की जाती है।

आज रधिया के उद्यान में—जहाँ सत्य सुमन, मीठे फल और सचरित्र सुदृढ़ तरुमूल असंख्य सुखद समाचारक पातों के संग हिलोरें ले ले जगत को शान्ति का सन्देश देते थे – रधिया का अभाव है। अब उन पत्तों में फलों और फूलों में वह बात नहीं रही मीठे फलों का अभाव क्रमशः होने लगा। सहकारिता मानों सड़ गई। उल्लसित बौर अब न पेड़ों में और न लताओं में दिखाई देता है। रधिया रात दिन उद्यान को पल्लवित करने की चेष्टा करती थी।

सामान्यतः मनुष्य का स्वभाव है कि वह दूसरों के उत्कर्ष को देखकर उसे समूल नष्ट करने का प्रयत्न करने लगता है। रधिया के परिवार को पल्लवित देखकर पड़ौसी दाह करते थे। उसके हरे - भरे उद्यान पर येन-केन-प्रकारेण पिल पड़े और आज उसे उजाड़ दिया। जहाँ आप खड़े मिठास और माधुर्य का पाठ पढ़ाते थे वहाँ आज बबूल बिमारियाँ बढ़ा रहे हैं। जहाँ लतायें पल्लवित हो सहकारिता सिखाती थीं वहां अमर बेलि पसर रही है।

जिस उद्यान में चतुर माली का अभाव है, जिस घर में पुरखों की कमी है, वह उद्यान और घर कभी फल फूल नहीं सकते। चतुर माली और पुरखे बाजारों में नहीं बिका करते-वे प्रत्येक घरों में होते हैं। मगर मिलते उन्हें ही हैं जो उन्हें जी से पाने की सच्ची साधना करते हैं। आज धर्म की रक्षा तभी सम्भव है जब कि रधिया को प्रत्येक घर में तलाश करा जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी और दन्डपद्धति

लेखक—पं० सनन्दन जी

पाठशालाओं में जब विद्यार्थी कुछ गलती करता है—पढ़ाई की या कानून की, तब उसे दंड दिया जाता है। कभी आर्थिक दण्ड, कभी शारीरिक दण्ड भी दिया जाता है। अध्यापक दण्ड देकर इस बात का संतोषानुभव करते हैं कि उन्होंने अपना फर्ज पूर्ण किया। किन्तु गौर किया जाए, तो इससे अध्यापक की और भी जिम्मेदारी बढ़ गई है और उतना ही नहीं लेकिन अध्यापक ने स्वयं गलती की है। जो उन्हें नहीं करना चाहिए वही किया।

जब विद्यार्थी कोई भूल करता है, तो उसका क्या कारण है ? इसी कारण को ढूंढना अध्यापक का फर्ज है। अध्यापक का कार्य है, बालक को सिखलाना, उसका चरित्र ऊंचा उठाना उसके चरित्र को ऊँचे उठाने के लिए उसमें अच्छे भावों को कूट कूटकर भर देने चाहिये, प्रेम से, न कि दण्ड देकर। विद्यार्थी जब कोई अयोग्य कार्य करता है। तब उसे समझ नहीं होती कि वह अयोग्य कर रहा है इसे समझाने के बजाय अध्यापक उसे दण्ड देता है। दण्ड का जो असर होना चाहिए, जो परिणाम रहना चाहिए, वह नहीं रहता। विद्यार्थी का मानस विकृत बन जाता है, वह अपने आप में निराशा का अनुभव करने लगता है। वह पढ़ाई से, अध्यापक से, पाठशाला से नफरत करने लग जाता है।

सही तो यह है कि अध्यापक को गुनाह की, गलती की जड़ ढूँढ निकालनी चाहिए। अगर कोई कठिन विषय बालक की शक्ति के लिए अग्राह्य हो, तो उसे सुरुचिपूर्ण बनाना स्वयं अध्यापक का कार्य है। अगर वैसा न किया गया, तो इसमें विद्यार्थी का कहाँ पर कुसूर है ? बालक में जिज्ञासा वृत्ति एवं आत्म प्रदर्शन का भाव विशेष होता है। अगर वह किसी कला को पूर्ण तौर पर समझ न सका, अगर उसे आत्म प्रदर्शन का मौका न मिला, तो उसके मानस में आप एक तरह का असंतोष पैदा कराते हैं। बालक स्वयं शरारती बनने लगता है।

दण्ड देते समय अध्यापक को मनोवैज्ञानिक कारणों को भी भूलना नहीं चाहिए। बाल मन का विश्लेषण किया जाए विद्यार्थी के वातावरण को जान लिया जायें और विद्यार्थी के दोषों को मनोवैज्ञानिक ढंग से दूर किया जाये, तो दण्ड विधान की कोई जरूरत नहीं रहती।

विद्यार्थियों के दोषों को देखकर उसे ऐसे कार्य सौंप देने चाहिये, जिससे स्वयं उसे आत्म विश्लेषण करने का अवसर मिले। उनमें दूसरे बालकों के प्रति प्रेम जागृत होवें, अपने मन का अनुभव करने लगे। विद्यार्थी को गति शील रखने मे एवं सुरुचिपूर्ण कार्य सौंपने से, उसकी प्रवृति गलत मार्ग पर नहीं जाती। कुशल एवं व्यवहारी अध्यापकों को दण्ड देने का अवसर ही नहीं आता।

परीक्षा की कापी

प्रति हज़ार ६½″ × ८½″ साइज़ की कवर पर आपके स्कूल का नाम छापा जायगा।

	८ पेजी	१२ पेजी	१६ पेजी
१० lb. का कागज़	२४॥)	३३)	४४)
८ lb. का कागज़	२२)	२७॥)	३८॥)

मिलने का पता—

गुरुकुल कार्यालय मसूरी मनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत कविता का अपमान करो

श्री देवेन्द्र शर्मा 'नीरस'

यदि कवि को जीवित रखना है, मत कविता का अपमान करो,
कवि को चाहो या ना चाहो, पर कविता का सम्मान करो।

(१)

कवि के उद्गार निराले हैं, कवि का कुछ प्यार निराला है,
मत पूछो कवि के जीवन को कवि का संसार निराला है ॥
भावों की नौका बढ़ती है टकराती है तूफानों से,
कवि युद्ध सदा करता रहता जीवन पथ की चट्टानो से ॥
भावुकता में बहने पर भी, कवि की दृढ़ता का ध्यान करो ॥ यदि कवि ॥

(२)

कवि की है कोई जाति नहीं, कवि का है कोई धर्म नहीं,
अपने को सीमित कर लेना, कवि का होता सत्कर्म नहीं।
कवि सेवक है मानवता का, सब पर अधिकार समझता है।
सब के दिल में उसका घर है जगको परिवार समझता है ॥
कविता ही कवि का ईश्वर है, इससे कविता का मान करो ॥ यदि कवि ॥

(३)

कवि के कुछ पास नहीं होता, फिर भी सम्राट बना रहता,
भूखा प्यासा रहने पर भी, कवि हृदय विराट बना रहता।
जीवन की जटिल समस्याएं, कवि की गति टोक नहीं सकती,
युग की अति कठिन परिस्थितियां, कविता को रोक नहीं सकतीं ॥
कवि का मत देखो बाह्य रूप उसके अन्तस का ज्ञान करो ॥ यदि कवि ॥

(४)

कवि की सीमा को मत नापो कवि की सीमा मानवता है,
मानव मानव का अन्तर ही, बर्बरता है दानवता है।
कवि तो केवल मानव होता मानव में भेद न पाता है,
अपनी रचना के मृदुरस से, सब की ही प्यास बुझाता है ॥
इसलिए तृप्ति यदि इच्छित है, कविता रूपी रस पान करो ॥

यदि कवि को जीवित रखना है, मत कविता का अपमान करो,
कवि को चाहो या ना चाहो पर कविता का सम्मान करो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-विख्यात भौतिक विज्ञानशास्त्री

अलबर्ट आइन्सटाइन

[डा० अलबर्ट आइन्सटाइन का गत १८ अप्रैल को देहावसान हो गया। वे शुक्रवार को अस्पताल में भरती हुए थे। उनके केवल कुछ अन्तरंग मित्रों को ही उनकी बीमारी का पता था। उनकी मृत्यु बिल्कुल अप्रत्याशित थी। उस समय उनकी देख रेख के लिए केवल एक नर्स उपस्थित थी। उनकी लड़की उसी अस्पताल के दूसरे भाग में इलाज करा रही थी। इस समय के वैज्ञानिकों में आपका स्थान सर्वोच्च था। इतना होते हुए भी अपने अन्तिम वर्ष उन्हें देश निकाले में बिताने पड़े। जर्मनी में हिटलरवाद के उदयोपरान्त उनकी बेइज्जती की गई। यहूदी होने व शान्ति का प्रबल समर्थक होने के कारण उनकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गई और देश निकाले पर मजबूर कर दिया गया। गत २२ वर्ष से आप अमेरिका के प्रिन्सटन नामक नगर में रह रहे थे।

उनके जीवन काल में लिखे गए इस लेख से उनके व्यक्तित्व का पूर्ण आभास मिलता है।

—सम्पादक]

प्रिंसटन : मनुष्य की कल्पना के संसार को बिल्कुल बदल डालने वाले डा० एल्बर्ट आइन्सटाइन विचारों की उधेड़बुन में पड़े हुए नित्यप्रति न्यूजर्सी नगर की गलियों में घूमते हुए पाए जा सकते हैं। कस्बे के लोग उनकी अस्तव्यस्त दशा, रजत धवल घने बालों, घनी भौंहों के नीचे गहरे गड्ढों में धंसी हुई आँखों तथा उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व से भली भाँति परिचित हैं। रास्ते में बहुत से लोग प्रेमपूर्वक उनका अभिवादन करते हैं और डा० आइन्सटाइन उसका उत्तर अपनी मुस्कराहट से देते हैं। यद्यपि वह अपने जीवन के ७५ वर्ष पार कर चुके हैं तथा अपने शैक्षणिक कार्यक्षेत्र से अवकाश ले चुके हैं तथापि वह आज भी आधुनिक वैज्ञानिकों में सब से बड़े वैज्ञानिक माने जाते हैं और अमेरिका के सब से अधिक सम्मानित व्यक्ति हैं।

सापेक्षतावाद (थ्योरी ऑव् रिलेटिविटी) के जगतविख्यात सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले डाक्टर आइन्सटाइन के दो मुख्य ध्येय हैं : "यूनिफाइड फील्ड थ्योरी" (सापेक्षतावाद और ऊर्जाणुवाद-क्वान्टस थ्योरी-में सम्बन्ध स्थापित करना) का विकास करना तथा समस्त संसार के लिये एक विश्व सरकार की स्थापना करना। काम में व्यस्त रहने के बावजूद वह नित्यप्रति की समस्याओं को सुलझाने में दूसरों की सेवा के लिये सदा तत्पर रहते हैं। हाल की बात है कि हाईस्कूल की एक १५ वर्षीय छात्रा से रेखा-गणित का एक साध्य हल नहीं हो रहा था। उसने डाक्टर साहब से सहायता मांगी। कुछ ही दिनों में उसे उत्तर प्राप्त हो गया। इसमें एक रेखाचित्र द्वारा उस साध्य को हल करने का तरीका बताया गया था।

यद्यपि उनकी गणना संसार की आठ महान विभूतियों में की गयी है पर उनको इसका तनिक भी अहंकार नहीं है। वेला (वायलिन) बजाना उनका मुख्य मनोरंजन है। पोशाक के बारे में दिखावट के लिये उन्हें अधिक कपड़े पहिनना पसन्द नहीं। ढीली जाकेट और खुला पायजामा उनकी पोशाक है।

विज्ञान के अलावा उनकी रुचि के विषय हैं युद्ध का विरोध और कुछ हद तक यहूदियों को फिलस्तीन में बसाने का सिद्धांत। किन्तु गत वर्ष डा० वीजमैन के स्थान पर इजराइल का प्रैसिडेंट पद स्वीकार करने के इजराइली सरकार के अनुरोध पर संसार के सब से महान यहूदी ने बड़ी कृतज्ञता के साथ अपनी असमर्थता प्रकट की। उन्होंने कहा : मैं इजराइली सरकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावना का आदर करता हूँ पर जो काम मैं अपने संतोष भर नहीं कर सकता, उसे अपने हाथ में नहीं लेता। वैसे तो मेरा काम ही है भौतिक संसार का अध्ययन करना। पर लोगों पर व्यवस्था बनाए रखने की न तो मेरे में क्षमता है और न मुझे अनुभव।"

'राजनीतिक स्वतन्त्रता बनाम एकाधिकारवादी अत्याचार'—के सम्बन्ध में उनका निश्चित मत है। नाजी अत्याचारों के शिकार डा० आइन्सटाइन अमेरीका में शरण लेने वाले प्रथम व्यक्ति हैं। उस समय उन्होंने कहा था "जहां तक मेरा बस चलेगा मैं तो ऐसे ही देश में रहूँगा जहाँ राजनीतिक स्वतन्त्रता व सहिष्णुता हो तथा कानून की दृष्टि में सभी व्यक्ति एक समान हों।"

जर्मनी छोड़ने पर डा० आइन्सटाइन पहले फ्रांस गये। वहाँ से वे बेल्जियम और तब फिर इंग्लैंड गये। उस समय प्रिंसटन (न्यूजर्सी) के 'इंस्टिट्यूट औव ऐडवान्स्ड स्टडी' की ओर से आपको आजन्म प्रोफेसर रहने का निमन्त्रण मिला। उन्होंने निमन्त्रण स्वीकार तो किया पर इतने कम वेतन की मांग की कि उक्त संस्था को अपना स्तर कायम रखने के लिए उनका वेतन अधिक ही रखना पड़ा। आइन्सटाइन को पैसों का लोभ नहीं है उनके सामने धनी बनने के कई मौके आये पर उन्होंने सब को ठुकरा दिया। १९२१ में जब उन्हें भौतिकशास्त्र के लिये नोबेल पुरस्कार मिला तो उन्होंने पुरस्कार की सारी राशि (१,९१,२०० रु०) दान में दे दी। रोकफेलर प्रतिष्ठान से प्राप्त ७,१७० रु० के एक चैक का उपयोग वे कई सप्ताह तक किताब में निशान लगाने के लिये ही करते रहे और अन्त में वह किताब ही उन्होंने खो दी।

वे १९३३ में प्रिंसटन आये और तब से यहीं हैं। १९४० के अक्तूबर मास से वे अमेरिकी नागरिक बन गये हैं।

एक बार उन्होंने कहा—"मनुष्य जो कुछ करता है, अपने लिये उसी में से मुसीबत खड़ी करता है तथा लाभ और अच्छाई बुराई बाहर से मिलती है। मेरी प्रकृति जिस बात का आग्रह करती है वही मैं करता हूं। इतना सम्मान प्राप्त करना और उससे इतना लगाव रखना भारस्वरुप है।

"मैं ऐसे एकांत में रहता हूँ जो नवयुवकों के लिये तो दुखदायक है किन्तु प्रौढ़ावस्था में अत्यन्त सुखकर है।"

★

उत्तम बाल साहित्य

हमारे इस चुने हुए साहित्य में कविताएं कहानियाँ, ड्रामे, गीत तथा अन्य सभी प्रकार की उत्तम पुस्तकें हैं जो आपके बालकों को चरित्रवान तथा चतुर बनायेंगी।

	कमीशन
दो घड़ी की मौज	।) चौथाई
मनोरंजक कहानियाँ	।) "
आदर्श चरितावली	॥) "
नेताओं की कहानी	॥) "
सैर सपाटे की कहानी	।) आधा
देश देश के बालक	।=) "
विदेशी बच्चों की कहानियाँ	।) "
चतुर बालिकायें	।) "
बेसिक ड्रामा	॥) "
सेवा गान	≡) तिहाई
बटुक गान भाग १	=) चौथाई
बटुक गान भाग २	=) "

पूरा सैट प्राप्ति के लिए २॥) का मनीआर्डर भेजें

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य्य का महत्व एवम् विद्यार्थी जीवन

लेखक—श्रीराम पाठक साहित्य "भूषण"

संसार के सभी मनुष्य सुखी स्वस्थ और दीर्घ जीवी होने की आकांक्षा रखते हैं। परन्तु इन तीनों की प्राप्ति, ब्रह्मचर्य्य-पालन के बिना कदापि संभव नहीं। स्वास्थ्य रूपी इमारत की नींव ब्रह्मचर्य्य है। जैसे नींव को पुख्ता किए बिना बड़ी इमारत नहीं बन सकती, वैसे ही ब्रह्मचर्य्य-रूपी नींव के अभाव में स्वास्थ्य-रूपी भवन का निर्माण सर्वथा असम्भव है। आज के युग में छात्रावस्था में ब्रह्मचर्य्य के अभाव के कारण ही आधि-व्याधि-पीड़ित लोगों से हमारा समाज भरता जा रहा है। किन्तु ब्रह्मचर्य्य के बिना इस दुखी रोगी और अल्पायु मानव-समाज को सुखी, स्वस्थ और दीर्घ जीवी नहीं बना सकते। भौतिक संसार के महापुरुष स्व० महात्मा गाँधी ने अरोग्य और ब्रह्मचर्य्य का विवेचन करते हुए एक स्थान पर लिखा था कि—"आरोग्य की बहुत सी कुंजियाँ हैं और उनकी आवश्यकता है। उन सब में मुख्य ब्रह्मचर्य्य है। अच्छी हवा, अच्छी खुराक और अच्छे पानी आदि से हम थोड़ा अयोग्य-सम्पादन करते हैं। परन्तु जिस भाँति हम जितना पैसा कमावें और उतना ही खर्च करदें तो पास में कुछ नहीं बच सकता, उसी भांति हम सब जितना आरोग्य-सम्पादन करें, उतना ही नष्ट कर दें, तो फिर क्या बच सकता है। ठीक यही दशा ब्रह्मचर्य्य जीवन की है। मनुमहाराज ने लिखा है कि ब्रह्मचर्य्य पालन करने वाला मधु, माँस, उग्र रस वाली चीजें न खाये। तैल मालिश, आँखों में अंजन लगाना, जूते पहिनना, नाचना, गाना, निरर्थक बात करना झूठ बोलना आदि किसी को हानि पहुँचाने आदि कर्मों से ब्रह्मचारी को विरक्त रहना चाहिए। यद्यपि आजकल इन नियमों का पालन करना लोगों को लोहे चने का भक्षण ऐसा प्रतीत होता है। प्राचीन आदर्श के अनुसार विद्यार्थियों के लिए कहा गया है कि सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम्। सुखार्थी चेत्यजेद विद्यां विद्यार्थी चेत्यजेत्सुखम्॥ सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ विद्यार्थी को सुख कहाँ, परन्तु आज विद्यार्थी जीवन का सारा क्रम उल्टा चलता पाया जा रहा है। आज का विद्यार्थी इतना शौकीन और दुर्विनीत हो रहा है कि इस सम्बन्ध में कुछ लिखना भी कठिन है। सामान्य आर्थिक स्थिति वाला विद्यार्थी भी ऐसा बनावटी प्रदर्शन करता है कि जिससे उसके संगी साथी उसे धनी समझें मानो वह लखपती हो। अपनी इस मूर्खता के कारण वह स्वयं ही आत्मघात करता है। घर वालों के एड़ी-चोटी के पसीने से प्राप्त सम्पत्ति को वह सिनेमा, सिगरेट, चाय, चाट सुगन्धित तेल, इत्र, स्नो, घड़ी, रूमाल, फैन्सी सूट आदि फैशन की व्यर्थ वस्तुओं पर खर्च करता है। भविष्य के जीवन का भार उसे नहीं मालूम रहता। है ऐसे छात्रों को सर्टिफिकेट लेकर कालेज से बाहर निकलते ही संसार के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है।

बेकारी और दरिद्रता की भयावह स्थिति से जब उसका सामना होता है तब वह अनुभव करता है कि यह संसार एक युद्ध स्थल है और इसमें योग्य व्यक्तियों के लिए ही स्थान है। सुन्दर स्वास्थ्य, कठिन परिश्रम-शक्ति, गम्भीर ज्ञान, सच्चरित्रता, इमानदारी और विनम्रता आदि सद्गुणों वाले नवयुवक का तो सर्वत्र स्वागत होता है, परन्तु बातूनी लफङ्गे और दुश्चरित्र युवकों की कहीं पूछ नहीं होती। आज के स्वतंत्र भारत की बदली हुई परिस्थिति में दासता की पिछली मनोवृत्ति को लेकर उन्नति की बात सोचना अत्यन्त मूर्खता पूर्ण है। इसके लिए भारत के प्राचीन गौरव को पुनः स्थापित कर हमारे राष्ट्र के नौनिहालों को ब्रह्मचर्य्य का व्रत लेना होगा। एक मात्र ब्रह्मचर्य्य-पालन से सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल पत्रिका
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ गुण छात्रों में आकर निवास कर बैठते है। संयम द्वारा संचित वीर्य शरीर में स्फूर्त्ति लाता है, शारीरिक बल बढ़ता है। वीर्य्य ही ओज है उसी के कारण मनुष्य ओजस्वी होता है। वीर्य्य का नाम ही 'सह' है। मन में साहस सहिष्णुता, शक्ति आदि 'सह' (वीर्य्य) के कारण ही होते हैं। ब्रह्मचर्य्य के निश्चित लाभ को जानकर भी बहुत से छात्र अनजान में ब्रह्मचर्य्य से फिसल जाते हैं, उनके पतन के कारणों को नीचे लिखा है—

१—शृङ्गार—आज के शिक्षित समाज का नित्य का कार्य्य विभिन्न प्रकार की वेष-भूषा से अपने को सजाना हो गया है। सूट-बूट वालों की सजावट, तैल, साबुन, क्रीम स्त्री-पुरुष को परस्पर आकर्षित करना ही है और इसलिए यह आर्य्य संस्कृति पर ही नहीं, हमारे आरोग्य की जड़ पर भी कठिन प्रहार है। इस प्रकार के शृङ्गार साधन से काम वासना की उत्पत्ति स्वाभाविक ही है। "ना कामी मन्डन प्रिय" काम-वासना रहित पुरुष शृंगार-साधन प्रिय नहीं होता है, यह एक ध्रुव सत्य आर्ष वचन है। भारतीय छात्रको शृंगार सामग्रियों से अवश्य ही बचना चाहिए यह उसका परम कर्त्तव्य है। उन्हें सोचना चाहिये कि शृंगार का पूर्ण प्रदर्शन तो स्वास्थ्य में ही है। हृष्ट-पुष्ट और कसरती जवान को बनावटी शृंगार की किंचित् भी आवश्यकता नहीं है। अतः ब्रह्मचारी को शृंगार से अवश्य ही बचना चाहिए।

२—कुविचार—मस्तिष्क में जो विचार भरे जायेगें वे ही वहां से निकलेगें, भन्डार में जौ संचय करेगें तो गेहूँ नहीं पा सकते—बोये बीज बबूर को तो आम कहाँ से खाय? कुत्सित विचारों से ब्रह्मचर्य्य को हानि पहुँचती है। आज कल बनावटी पंडितों ने साहित्य रूप गंगा में भी बड़ी चालाकी से कामवासनाओं को उत्तेजित करने वाला अश्लील और कुत्सित साहित्य का गंदा परनाला मिला दिया है। मनुष्य की स्वभाविक दुर्बलता लाभ उठाने वाले लेखकों की कमी नहीं है? वे विष मिला मीठा मिलाकर शिकार करते हैं। अतः ऐसे साहित्यकारों का नाम न जानना ही सर्व श्रेष्ठ है। विद्यार्थियों को चाहिये कि वे जो कुछ साहित्य पढ़े वह गुरु, माता, पिता की आज्ञा से, नहीं तो स्वयं उन्हें विचार कर तय कर लेना चाहिये कि वे इसमें हमारा कोई नैतिक पतन तो न हो सकेगा। भारतीय पूर्वजों ने काम देव को मनोज और मन्मथ कहा है। यह मन से उत्पन्न होता है, अतः मन पवित्र विचारों से भरा रहना चाहिए। हम सबों को सूर और तुलसी की गंगा में स्नान करना चाहिए गन्दे तालाबों में कभी भूलकर भी नहीं।

३—कुसंगति—संगति का मनुष्य पर बहुत प्रभाव पड़ता है दुष्ट पुरुषों का साथ ब्रह्मचारी को नहीं करना चाहिए जैसा कि कहावत भी है कि 'काजल की कोठरी में कैसे हूँ सयानो जाय एक लीक काजर की लागिहें पै लागिहें" अतः नवयुवक ब्रह्मचारियों को स्वप्न में भी दुष्टों की सङ्गति नहीं करनी चाहिए।

४—सिनेमा—आजकल छात्रों के पतन का प्रधान कारण सिनेमा है, श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी लिखते हैं कि "सिनेमा मनोविनोद का साधन नहीं है बल्कि छात्रों को पतन-मार्ग में ले चलने का वाहन हैं। सिनेमा का प्रभाव आज के संसार में किसी से छिपा नहीं है। अतः सिनेमा देखना नवयुवकों एवम् सबों के लिये पाप है।

५—साइकिल—बिना तेल, पानी के खर्च की सस्ती सवारी होने के कारण इसका चलन अधिक हो गया है प्रायः इस सवारी को ऊँच नीच स्थानों में चलाना पड़ता है जिसके कारण वीर्य्य वाहनी धमनियाँ कट जाती हैं साइकिल से नपुंसकता आदि तक का शिकार होना पड़ता है। अतः ब्रह्मचारी को साइकिल का प्रयोग जहाँ तक हो सके न करना चाहिये।

६—अनियमितता—आजकल के लोगों का खान, पान सब विचित्र ढंगों का है न लोग समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर खाते हैं न सोते हैं जिसके कारण पेट संबन्धी या अन्य शारीरिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं अतः ब्रह्मचारी विद्यार्थी को नियम या समय को पालन करना चाहिये।

७—असंयम—अकेली जनेन्द्रिय कभी वश में नहीं रह सकती इसलिए मनुष्य की जीभ, कान, नाक आँख आदि पर संयम करना नितान्त आवश्यक है। संयम ही एक ऐसी वस्तु है जिसके द्वारा मनुष्य सर्व श्रेष्ठ बन सकता है। जितने योगी महात्माओं का जीवन सर्व श्रेष्ठ बना है वह केवल संयम के बल से। स्वतंत्र भारत के नवयुवकों के सामने महान् चुनौती है कि वे शीघ्र से ब्रह्मचर्य्य आदर्श को अपनावें आज हमारे स्वतंत्र-राष्ट्र को स्टील (फौलाद) के जवानों की आवश्यकता है, न कि स्त्रियों जैसे कोमल शृंगार-प्रिय और विलासी युवकों की।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारतीय छात्र ब्रह्मचर्य्य आदर्श को शीघ्र ही अपना सकेगा।

———

हाई स्कूल परीक्षा सालव्ड पेपर्स

सब प्रश्नोत्तर सन् १९५४ ई० तक हल हैं।

भारतीय इतिहास प्रश्नोत्तर	१॥)	क० आधा	जनरल साइन्स	१॥)	क० आधा
प्रश्नोत्तर वर्ल्ड हिस्ट्री	॥।)	,, ,,	इकोनामिक्स	२)	,, ,,
भूगोल प्रश्नोत्तर	२)	,, ,,	आर्थिक भूगोल	२॥)	,, ,,
मैथमैटिक्स प्रश्नोत्तर	२)	,, ,,	इंगलिश प्रश्नोत्तर (एडवान्स)	मूल्य ३)	,, ,,
एलीमेन्ट्री मैथ्स	॥।)	,, ,,	हिन्दी प्रश्नोत्तर	,, ४)	,, ,,
विज्ञान प्रश्नोत्तर	२)	,, ,,	टु डे एंड टुमारो की कुञ्जी	क० ८ मू० २)	क० आ०
सिविक्स	३)	क० आधा	कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग १	,, ≡)	,, ,,
बुक कीपिंग	१॥।)	,, ,,	कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग २	,, ≡)	,, ,,
कामर्स	२)	,, ,,	कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग ३	,, ।=)	,, ,,

मैनेजर—गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य

माधवलाल पाण्डेय

जो मनुष्य जिस बात को जिस प्रकार देखे अथवा करें, उसी का यथार्थ वर्णन वाणी द्वारा प्रकट करना ही सत्य बोलना कहलाता है। मनुष्य को न सिर्फ सत्य बोलना चाहिए बल्कि मन में भी सत्य विचार लाना चाहिए और सत्यता पूर्वक काम करना चाहिए। मनुष्यों को सदा सत्य का व्यवहार करने से स्वार्थ एवं परमार्थ में सच्ची सफलता मिल सकती है जो मनुष्य सदा सत्य का आचरण करता है वह क्रिया सिद्ध एवं वाचा सिद्ध होता है। सत्य वास्तव में ईश्वर का स्वरुप है। जिसके हृदय में सत्य का वास है उसके हृदय में ईश्वर का वास है। किसी कवि ने कहा है:—

"सांच बरोबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप॥

सत्य के समान कोई उच्च नहीं है, और झूठ बराबर कोई पातक नहीं है। उपनिषद में भी कहा है—

"नहीं सत्यात्परोधर्मो, नानृतात्पातकम परम्।
नहिं सत्यात्परम ज्ञानं, तस्मात्सत्यम समाचरेत॥

"सत्य से श्रेष्ठ अन्य कोई धर्म नहीं है और झूठ के बराबर और कोई पातक नहीं है इसी प्रकार सत्य से श्रेष्ठ कोई ज्ञान नहीं है। अतः मनुष्य को सदा सत्य का आचरण करना चाहिए।" संसार में प्रायः देखा जाता है कि सत्य का आचरण करने वाले को कष्ट उठाना पड़ता है और मिथ्याचारी, एवं पाखंडी लोग सुख से जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु यह बात असत्य है। सत्य से ही सारा संसार चल रहा है। यदि सत्य एक क्षण के लिए भी बन्द हो जाय तो प्रलय हो जाय संसार की सारी मासिक शक्तियाँ सत्य से ही चलती हैं चाणक्य नीति में कहा है—

"सतयेन धार्यते पृथ्वी, सत्येन तपेत रविः।
सत्येन पाति वायुश्च, सर्व सत्ये प्रतिष्ठितम॥

अर्थात सत्य से ही पृथ्वी स्थिर है। सत्य से से ही सूर्य तप रहा है। सत्य से ही वायु बह रही है। एवं सत्य में सब स्थिर है" जो लोग सत्य का आचरण नहीं करते हैं उनकी पूजा भी व्यर्थ है। जैसे उसर भूमि में बीज बोने से कोई फल नहीं नहीं होता उसी प्रकार झूठ बोलने वाला, जितना भी धर्म करे, किन्तु वह सत्य के बिना व्यर्थ है। ऋषियों ने कहा भी है—"सत्य की सदैव विजय होगी मिथ्या की नहीं। सत्य के मार्ग में परमात्मा मिलेगा"। हमारे पूर्वज ऋषि मुनि एवं देवतागण ने भी सत्य का मार्ग स्वीकार किया था। सत्य के बल से उनमें यह शक्ति हो गयी थी, कि, जिसके लिये जो कुछ बात कह देते तो वह वह बात सत्य होकर ही रहती। चाहे जिसको श्राप दे देते चाहे जिस वरदान दे देते यह सत्य साधना का ही बल था। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे। वास्तव में मनुष्य का धर्म्माधर्म सत्य पर ही निर्भर है। एक सत्य का वर्ताव कर लिया तो उसका वही धर्म है। साराँश यह है कि सत्यवादी हरिश्चन्द्र आदि सहस्त्रों वर्ष पुराने राजा महाराजा के नाम आज भी उज्जवल तारों की भांति इतिहास अम्बर में जग मगा रहे हैं यह सब सत्य की ही महिमा का सुपरिणाम है। अतः सत्य है वही धर्म है और सत्य का ही आश्रय लेना चाहिए एवं सदा सत्य बोलने का सर्व प्रिय स्वभाव रखना चाहिए। स्मरण रहे।

"सत्यमेव जयते"

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सरकार

राष्ट्रपति—डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद

उपराष्ट्रपति—डाक्टर राधाकृष्णन्

लोकसभा के अध्यक्ष—श्री गणेश वासुदेव मावलंकर।

लोकसभा के उपाध्यक्ष—श्री अनंतशयनम् आयंगर।

राज्य परिषद के अध्यक्ष—डा० राधाकृष्णन्

राज्य परिषद् के उपाध्यक्ष - श्री एम० वी० कृष्ण जी राव।

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल

१. श्री जवाहरलाल नेहरू — प्रधान मंत्री तथा परराष्ट्र विभाग।
२. मौलाना अबुलकलाम आजाद— शिक्षा, प्राकृतिक साधन तथा वैज्ञानिक अनुसंधान।
३. श्री गोविन्द वल्लभ पन्त—गृह।
४. श्री जगजीवन राम—संवहन।
५. श्रीमतीराजकुमारी अमृतकौर—स्वास्थ्य।
६. श्री चिन्तामण द्वारकानाथ देशमुख—वित्त।
७. श्री गुलजारीलाल नन्दा—नियोजन तथा सिंचाई एवं विद्युत।
८. श्री डाक्टर कैलाशनाथ काटजू—प्रतिरक्षा।
९. श्री अजित प्रसाद जैन—खाद्य एवं कृषि।
१०. श्री तिरुवल्लूर तट्टे कृष्णमाचारी--वाणिज्य एवं उद्योग।
११. श्री चारु चन्द्र विश्वास—कानून तथा अल्प संख्यक।
१२. श्री लाल बहादुर शास्त्री--रेल तथा यातायात
१३. सरदार स्वर्णसिंह—निर्माण, आवास तथा पूर्ति।
१४. श्री खंडू भाई देसाई—श्रम।
१५. श्री क्यासम्बली चेंगलराया रेड्डी-उत्पादन

मंत्री

१. श्री सत्यनारायण सिन्हा—संसदीय कार्य।
२. श्री महावीर त्यागी—प्रतिरक्षा संगठन।
३. डाक्टर बालकृष्ण विश्वनाथ केसकर—सूचना एवं प्रसारण
४. श्री दत्तत्रय परशुराम करमकर—वाणिज्य
५ डा० सैयद महमूद—परराष्ट्र विभाग।
६. श्री केशव देव मालवीय-प्राकृतिक साधन तथा वैज्ञानिक अनुसंधान।
७. श्री मणिलाल चतुर भाई शाह—वित्त।
८. श्री अरुणचन्द गुहा—वित्त।
९. श्री मेहरचन्द खन्ना-सहायता तथा पुनर्वास
१०. श्री हरि विनायक पातस्कर—कानून।
११. डाक्टर पंजाबराव देशमुख—कृषि।

उपमंत्री

१. श्री राजबहादुर—संवहन।
२ श्री नित्यानन्द कानूनगो--वाणिज्य तथा उद्योग
३. सरदार सुरजीतसिंह मजीठिया—प्रतिरक्षा।
४. श्री बलवन्तनागेश दातार—गृह।
५. श्री अबिद अली—श्रम
६. श्री श्याम नन्दन मिश्र—नियोजन तथा आयोग।
७. श्री जगन्नाथराव कृष्णराव भोसले—पुनर्वास।
८. श्री ओलेलुर विश्वनाथ अलगेसन—रेलवे तथा यातायात।
९. श्रीमती मरगतम् चन्द्रशेखरन्—स्वास्थ्य।
१०. श्री अनिलकुमार चन्द—परराष्ट्रीविभाग।
११. श्री मोथकपल्ली वेंकटराम गोंडा कृष्णप्पा खाद्य एवं कृषि।
१२. श्री सतीशचन्द्र—रक्षा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा सचिव

१. श्रीमती लक्ष्मी नन्दन मेनन—परराष्ट्र मंत्री से संबद्ध।
२. श्री शाहनवाजखाँ—रेलवे तथा यातायात मंत्री से सम्बद्ध।
३. श्री जोगेन्द्रनाथ हजारिका—परराष्ट्रमंत्री से संबद्ध।
४. श्री बलिराम भगत—वित्तमंत्री से संबद्ध।
६. श्री मनमोहन दास—शिक्षा मंत्री से संबद्ध।
७. श्री कालूराम श्रीमाली—शिक्षा मंत्री से संबद्ध
८. श्री जी० राजगोपाल—सूचना मंत्री से संबद्ध
९. श्री राजाराम गिरधारी लाल दूबे—उत्पादन मंत्री से संबद्ध।

संसार की कुछ ज्ञातव्य बातें।

(गताङ्क से आगे)

संग्रहकर्त्ता—श्रीराम हर्ष पाठक "प्रेमी"

३१ संसार का सबसे बड़ा दुर्बीन माउन्ट पाला मोर केलिफोनिया जिसका रेफलेक्टर व्यास २०० इंच।
३२ ,, ,, ,, राज महल--मेड्रिड का महल (स्पेन)।
३३ ,, ,, ,, बड़ा हीरा क्यूल्लीनन ३१०६ ¾ केरेट।
३४ ,, ,, ,, गिर्जाघर सेन्टपीटर्स का है (रोम)
३५ ,, ,, ,, बड़ा रेलवे सफर रीगा से व्लाडीवोस्टक तक ६८०० मील
३६ ,, ,, ,, सबसे बड़ी नमकीन झील कास्पियन सागर है।
३७ ,, ,, ,, बड़ा बांध लायड डैम ७२६ फीट में है
३८ ,, ,, ,, ऊंचा गिर्जाघर उल्म कैथेड्रल (जर्मनी-५३२ फीट
३९ ,, ,, ,, लम्बा महल वेटिकन (रोम में)
४० ,, ,, ,, ठंडा स्थान बरखोयानास्क (रूस ९५° हिम बिन्दु से नीचे)
४१ ,, ,, ,, गर्म स्थान आजीज (ट्रिपोली टेनियां)
४२ ,, ,, झुकी हुई मीनार पीजा (इटली में)
४३ ,, ,, झूलते हुए बाग बेबीलोन में
४४ ,, ,, पोप के रहने का स्थान रोम में है, जिसमें हजारों कमरे हैं।
४५ ,, ,, प्रसिद्ध भवन आगरा का ताजमहल है,
४६ ,, ,, मन्दिर डियाना का मन्दिर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत वर्ष में:—

१ सबसे घनी आबादी वाला शहर कलकत्ता है। जन संख्या ३०, ००, ००० है।
२ ,, बड़ी झील उलर झील काश्मीर में।
३ ,, बड़ी तथा लम्बी नदी गंगा नदी।
४ ,, ऊंचा जल प्रपात जिरसोया जल प्रपात मैसूर ९६० फीट।
५ ,, बड़ा प्रांत मध्य प्रदेश।
६ ,, बड़ी छावनी मेरठ।
७ ,, बड़ा बांध सक्खर (सिंध में)
८ ,, ,, फाटक बुलन्द दरवाजा (फतेहपुर में) सीकरी १७६ फीट ऊंचा।
९ ,, ,, पशुओं का मेला सोनपुर का मेला है।
१० ,, ,, जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश।
११ ,, ,, पुल हावड़ा का पुल तथा लम्बा पुल सोन नदी का पुल।
१२ ,, ,, अधिक सिंचाई-प्रदेश पंजाब प्रान्त है।
१३ ,, ,, डेल्टा सुन्दर बन है।
१४ ,, ,, गुफा वाला मन्दिर इलौरा (हैदराबाद में) है।
१५ ,, ,, अधिक घनी आबादी वाला जिला विजिगापट्टम।
१६ ,, ,, जंगलों वाला प्रांत आसाम।
१७ ,, ,, मूर्ति गौतमेश्वर मैसूर।
१८ ,, बड़ा अजायबघर—कलकत्ता में है।
१९ ,, प्रसिद्ध इमारतें:—ताजमहल, पतहपुर सीकरीके महल, कुतुबमीनार, दिल्ली का लाल किला, अजंता की गुफा, तथा विक्टोरिया मैमोरियल।
२० ,, प्रसिद्ध मंदिर रामेश्वरम का मंदिर, आबू का मन्दिर चिदम्बरम् का शिव मन्दिर तथा बृन्दावन में रंग जी का मन्दिर।
२१ ,, प्रसिद्ध समाचार पत्र टाइम्स आफ इंडिया, स्टेटस मैन, अमृत बाजार पत्रिका, नेशनल हेरल्ड, और हिन्दुस्तान टाइम्स।
२२ ,, हिन्दी के मुख्य सामाचार पत्र सरस्वती, कल्याण प्रताप भारत, नव भारत तथा आज।
२३ ,, ऊंची मीनार दिल्ली की मीनार, कुतुबमीनार।
२४ ,, प्रसिद्ध कवि, महात्मा तुलसीदास जी महात्मा सूरदास जी, श्री केशवदास जी महाकवि बिहारी कबीरदास जी, रत्नाकर, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला मैथिलीशरण जी, सुमित्रा नन्दन पन्त, जयशंकर प्रसाद तथा अयोध्यासिंह उपाध्याय।
२६ सबसे प्रसिद्ध लेखक:—आचार्य महावीर प्रसाद जी द्विवेदी, माखन लाल चतुर्वेदी, आचार्य्य रामचन्द्र शुक्ल, डा० श्याम सुन्दर दास इत्यादि।

प्रथम भारतीय:—

२७ विज्ञान वेत्ता—सर चन्द्र शेखर वेंकट रमन।
२८ कांग्रेस सभापति-उमेशचन्द्र बनर्जी, बम्बई अधिवेशन १८८१ ई०।
२९ नोबिल प्राइज पाने वाले रवीन्द्रनाथ टैगोर १९१३ ई०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३० आई० सी० एस० सतेन्द्रनाथ ठाकुर।
३१ ,, ,, ,, से इस्तीफा देने वाले नेताजी सुभाषचन्द्र बोस।
३२ प्रांतीय गवर्नर लार्ड एस० पी० सिनहा।
३३ विक्टोरिया क्रास विजेता—नायक खुदा दाद खां प्रथम महायुद्ध १९१४ ई०।
३४ स्वतन्त्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल, लार्ड माउन्ट बैटन।
३५ ,, ,, ,, ,, भारतीय गवर्नर जनरल-श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी।
३६ ,, ,, ,, ,, राष्ट्रपति - डा० राजेन्द्रप्रसाद जी।
३७ ,, ,, ,, ,, प्रधानसचिव—पं० जवाहरलाल जी नेहरू।
३८ प्रथम कमान्डर इन चीफ-जनरल करियप्पा।
३९ सदस्य रायल आर्टिस्ट सोसाइटी —अवनीन्द्र नाथ ठाकुर।
४० क्रिकेट का प्रसिद्ध खिलाड़ी हजारे हैं।
४१ फुटबाल तथा हाकी के विश्व विजेता ध्यानचन्द्र, रूपचन्द्र तथा बाबू हैं।

———

जू० हा० स्कूल परीक्षा प्रश्नोत्तर

विज्ञान प्रश्नोत्तर	छः आना
प्रश्नोत्तर आर्ट, क्राफ्ट	बारह आना
,, व्यापारिक शिक्षा व व्यापार प्रणाली	छः आना
,, ज्यामेट्री	आठ आना
,, भूगोल	दस आना
,, इतिहास	दस आना
,, गणित	एक रुपया
,, स्वास्थ्य रक्षा	आठ आना
,, ग्राम्यज्ञान	बारह आना
प्रश्नोत्तर हिन्दी व्याकरण, साहित्य	चार आना
,, अपठित, रचना	आठ आना
,, इतिहास, भूगोल	सवा रुपया
इंगलिश प्रश्नोत्तर	एक रुपया
संस्कृत प्रश्नोत्तर	चार आना
प्रश्नपत्र पठित, अपठित	आठ आना

कमीशन सब पर चौथाई।

गणित की पुस्तकें

गणित नोट बुक	१॥) तिहाई
बाल बीजगणित	१) आधा
भूमिति शिक्षिका	।) तिहाई
बहीखाता	।=) चौथाई
गणित प्रश्नोत्तर हाई स्कूल	२) आधा
,, ,, जूनियर हाई स्कूल	१) चौथाई

हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकें

इण्टर, हाई स्कूल, जूनियर हाई स्कूल तथा हिन्दी की अन्य परीक्षाओं जैसे विशारद, प्रभाकर तथा प्रथमा आदि के लिए उत्तम पुस्तकें।

	मू० कमीशन
हिन्दी साहित्य कोष	५) चौथाई
काव्य चन्द्रिका	१।) ,,
निबन्धावली	१॥) तिहाई
निबन्ध भूषण	१) ,,
हिन्दी व्याकरण परिचय	१) ,,
हिन्दी व्याकरण सार	।=) ,,
कहावत मुहावरे	॥।) ,,
अनुवाद मंजरी	॥) ,,
अन्त्याक्षरी पद संग्रह	॥) चौथाई
सुमन संचय	१॥) ,,

इतिहास की पुस्तकें व एटलसें

एतिहासिक एटलस भाग १	१) तिहाई
,, ,, भाग २	॥।) ,,
भारतीय इतिहास प्रश्नोत्तर हाई स्कूल	१॥) आधा
,, ,, जू० हा० स्कूल	॥=) चौथाई
भारत का इतिहास कक्षा ६	॥।) आधा
सरल नागरिक ज्ञान	।=) ,,

मैनेजर—गुप्ता ब्रदर्स, मण्डी धनौरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालबन्धु
अप्रैल सन् १९५५ ई०

भगवान से !

आशुकवि पं० रामाधार शुक्ल छिंदवाड़ा

ओ भगवान् अतिथि बन मेरा,
स्वागत मैं नहिं कुछ कर सकता।
केवल उर में ही धर सकता॥
पलक पवणे बिछा मार्ग में
सुमन हार ही पहना सकता,
प्राणांन का द्वारा खोल दूं
मन मन्दिर में धर आ डेरा
ओ भगवान् अतिथि बन मेरा॥१॥
मैंने अब तक कभी न जाना,
न तो कभी तुझको पहिचाना
कहते हैं तू सबको जाने
इससे मैंने अपना माना,
बना दया का पात्र मुझे भी
आ दे मुझको परिचय तेरा
ओ भगवान अतिथि बन मेरा॥२॥

भूल रहा हूँ मैं बचपन से,
वंचित रहा सदा दर्शन से।
निर्जन शुष्क हृदय है मेरा
कभी बुलाया भी नहिं मन से,
माया मोह आदि चक्कर में
विपदाओं ने भी है घेरा
ओ भगवान् अतिथि बन मेरा॥३॥
आ पिला दे ऐसा प्याला,
हो जाऊं तुझ में मतवाला
ज्ञान शून्य है मेरा प्याला
भरदे ज्ञान भक्ति की हाला।
करूं प्रेम से तब पहुनाई।
कर स्वीकार निमन्त्रण मेरा॥
ओ भगवान् अतिथि बन मेरा॥४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साड़ी की साध

श्री भगवानसिंह चन्देल

माधवपुर के एक बाग में,
खिले हुए थे फूल।
जिनकी सुषमा देख देखकर,
मन जाता था भूल॥
उसी बाग में राजवंश की,
रानी जाया करती।
अपने रूप-रंग के कारण,
तन-मन सब का हरती॥
सुन्दरता का उसे गर्व था,
उसमें मन डूबा रहता।
दुनिया का आकर्षण जितना,
धन्य-धन्य उसको कहता॥
एक दिवस उस रानी जी ने,
फूल मनोहर तुड़वाए।
बड़ी टोकनी में संग्रहकर,
रंग अलग सब छँटवाए॥
फिर उस दिन से उसने क्रमशः,
साड़ी पहिनी वैसी।
चुने हुए फूलों की रंगत,
होती उनकी जैसी॥
सभी रंग की साड़ी पहनूं,
उसको आया ध्यान।
फूलों पर बैठी तितली का,
हरण करूँगी मान॥
इनके विविध रंग अद्भुत हैं,
साड़ी भी ऐसी होगी।
तितली सी बन जाऊं मैं भी,
इसमें भूल नहीं होगी॥

अब क्या था-आज्ञा पाकर के,
राज कर्मचारी भागे।
जहां-तहां की तितली पकड़ीं,
आईं सब रानी आगे॥
कुछ सोईं कुछ खोईं तितलीं,
हुआ शून्य उद्यान।
देखो—रानी की हठ धर्मी ने,
ले ली सब की जान॥
रानी के नृशंस कर्म से,
बाग हुआ सब खाली।
तितली वहां न रहने पाईं,
मिटी बाग की लाली॥
जो पराग वाहक तितलीं थीं,
रानी के हठ ने खोईं।
वंश-हीन नर-नारी जैसे,
पुष्प-लता वैसे रोईं॥
हुआ बीज औ वीर्य-हीन वह,
माधवपुर का बाग।
लगी हुई उस दिन से मानो,
वहां प्रज्ज्वलित आग॥
जो राही उस पथ से जाते,
सुनते हैं रानी का हाल।
ऐसी निर्मम लोलुपता सुन,
थू थू करते हैं तत्काल॥
जो बालक फैशन में फँसकर,
देते हैं औरों को कष्ट।
पाप-कर्म के भागी बनते,
गौरव उनका होता नष्ट॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन

रामनाथ मौर्य कक्षा ८ अ

सभाजीत एक साधारण जमींदार का लड़का था। उसके पिता सरल प्रकृति के व्यक्ति थे। लोगों ने कहा है, "पिता के गुण पुत्र में पाये जाते हैं।" पर बात ऐसी न थी। वे दोनों विपरीत दिशा के पथिक थे। सभाजीत अभी केवल १३ वर्ष का ही था, कि उसके पिता का देहान्त हो गया।

पिता के न रहने पर सभाजीत स्वतंत्र था ही। उसने थोड़े समय में अपना धन खर्च कर डाला अब वह निर्धन हो गया। खाने पीने का उचित साधन न देखकर उसने एक दूकान खोली। उसकी दशा सुधरी फिर उसका मन बिगड़ा। उसने अपनी पुरानी आदत के अनुसार मिठाई खानी शुरू कर दी। जो कुछ था उसे खाकर समाप्त करदिया। गाँव वालों ने बार बार उसकी सहायता की। कभी गाँव वालों ने चन्दा लगाकर दूकान खोलवाई। कभी उसे नौकरी दिलवाई। परन्तु यह सब व्यर्थ। यदि वह अपनी मिठाई खाने की आदत को कुछ समय के लिए दूर कर देता तो वह गाँजे से एक दम भी हटने वाला न था। लोगों ने गाँजे का प्रलोभन देकर न मालूम उससे क्या-क्या करवा लिया था। अन्त में एक ऐसा भी समय भी आया कि गाँव के किसी व्यक्ति के पास आश्रय न पा सका। वह भागा। अपने मामा के पास पहुँचा। अब उसकी पढ़ाई का उचित प्रबंध होगया।

मामा के घर रहकर सभाजीत आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगा। धीरे-धीरे ३ वर्ष बीत गये। सभाजीत की मामी का स्वभाव अच्छा न था। वह हवा से लड़ने वाली स्त्री थी। फिर सभाजीत से कैसे पट सकती?

एक दिन मामी ने गाली सुनाई। उसका हृदय दुखी हो गया। बचपन का सोया हुआ स्वाभिमान जाग उठा। वह हर प्रकार का कष्ट सहन कर सकता था पर इस तरह अपमानित होना न चाहता था। वह रेलवे लाइन की तरफ चल पड़ा। अभी गाड़ी आने में देर थी। अतः उसकी प्रतीक्षा में एक वृक्ष के नीचे बैठ कर विश्राम करने लगा।

गाड़ी पर वह सवार हो गया। वह एक शहर में जा पहुँचा जहाँ उसने एक सेठ के यहाँ नौकरी कर ली। अब वह सुख का जीवन बसर करता था।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करे जग भारत का सम्मान

रचयिता—विद्यार्थी कन्हैयालाल मिश्र कक्षा १०

हमें प्रभु दीजै यह बरदान,
करे जग भारत का सनमान।
बने भारत अति ही गुणवान।
पुनः पैदा होवें बलवान॥
न देखें भारत का अपमान।
पड़े अवसर निज दे दें जान॥ हमें०—
निरन्तर भू पर हो यह गान।
जगत में बढ़कर हिन्दुस्थान॥
करे जग अनुपम यह गुणगान।
स्वर्ग पृथ्वी पर हिन्दुस्थान॥ हमें०—
भारत क्यों भूले दयानिधान।
जन्म लीजै फिर से भगवान॥
बने भारत जिससे धनवान।
जगत फिर सीखै हमसे ज्ञान॥ हमें०—
न जावे सुरपुर मेरी जान।
रहूं मरकर भी हिन्दुस्थान॥
करें सुरगण भारत सनमान।
यही हम सबकी बिनय महान॥ हमें०—
कृष्ण "कन्हैया" दो बरदान।
करो मम भारत का उत्थान॥
पुनः इससे होवें विद्वान।
हरो सब भारत का अज्ञान॥
हमें प्रभु दीजै यह बरदान।
करे जग भारत का सनमान॥

———

भूगोल की पुस्तकें, एटलस व अभ्यास कापियाँ तथा नकशे

जगत मान् चित्रावली	ढाई रुपया
एशिया मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
भारत मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
अभ्यासकापी संसार व भारत	बारह आना
" भारत	छः आना
विश्व भू वर्णन	दस आना
एशिया भू वर्णन	पाँच आना
प्राकृतिक भूगोल भाग ३	तीन आना
" " भाग १,२	तीन आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
" भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
नकशे	छः आना प्रति

(संसार, भारत, उत्तर प्रदेश जिला बिजनौर तथा हर एक महाद्वीप का रंगीन राजनैतिक मानचित्र। एशिया, भारत प्राकृतिक मानचित्र)

दुनिया की मश्की कापी	दस आना
एशिया " " "	छः आना
भारत " " "	छः आना
भूगोल प्रश्नोत्तर	दस आना
नवीन भूगोल भारत कक्षा ६	आठ आना
" " एशिया " ७	आठ आना

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकीय प्रकाशन

कृषि और सरल विज्ञान भाग १

कक्षा ३ के लिए

नई लिपि में

१० जून तक तैयार हमारे यहाँ से मिलेगा। मई के अन्त तक अपना आर्डर चौथाई एडवाँस के साथ बुक कराएँ। अथवा पत्र व्यवहार करें।

मैनेजर
गुप्ता ब्रदर्स मंडी धनौरा
(मुरादाबाद)

गृह शास्त्र तथा कला के लिए

गृह शास्त्र भाग १	१॥) कमीशन तिहाई
" भाग २	॥।) कमीशन तिहाई
सूचिका शिल्प भाग १	॥।=) कमीशन चौथाई
" भाग २	।=) कमीशन चौथाई
कला शिक्षक	१॥) कमीशन तिहाई
कला परिचय	॥।) कमीशन तिहाई
आधुनिक पुस्तक कला	॥।) कमीशन तिहाई

उपयोगी प्रश्नोत्तरियाँ

सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी प्राचीन भारत	चार आना
सरल प्रश्नोत्तरी मध्यकालीन भारत	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी अर्वाचीन भारत	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग १	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग २	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग ३	आठ आना

आपके पुस्तकालय के लिए

हमारी चुनी हुई पुस्तकें

आजादी की कहानी	२॥)	क० चौथाई
हिन्दी साहित्य कोष	५)	"
नेताओं की कहानी	॥)	"
मधुर गीता	॥)	"
जादू के खेल	॥=)	"
घरेलू इलाज व दस्तकारी	॥=)	"
केले और पपीते की खेती	।)	"
गृह शास्त्र भाग १	१॥)	तिहाई
" २	॥।)	"
बेसिक ड्रामा	॥)	आधा

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Shiksha-Sudha (April, 1955) Regd. No. A. 497.

॥ भू-प्रदर्शनी ॥

कई वर्ष के परिश्रम के बाद हमने संसार की एक एटलस तय्यार कराई है। साईज नकशों का १० × ८ इञ्च है छपाई बहु-रंगी बढ़िया आफसेट द्वारा की गई है। सब से बड़ी बात इस एटलस की उपयोगिता है जिसको अनुभवी अध्यापक परख सकेंगे। अभी तक छपी किसी हिन्दी एटलस में मानव विकास और अर्थ योजना इतनी स्पष्ट और व्यापक नहीं मिलेगी।

भारतवर्ष के चित्रों के साथ-साथ उत्तरप्रदेश के भी तत्सम्बंधी चित्र दिये हैं। चित्र कितने आकर्षक और उपयोगी है यह देखकर ही जाना जासकता है। चित्रों का थोड़ा सा वर्णन इस प्रकार है:—

१—पृथ्वी की आकृति और ऋतु परिवर्तन।
२—ग्रहण, ज्वार भाटा, भू-भाग निर्मित पर्वत ज्वाला मुखी आदि के १० चित्र।
३—भिन्न प्रकार के सोते, कुवें, घाटियों, मरू-उद्यान आदि के खोज पूर्ण ९ चित्र।
४—पृथ्वी पर वायु भार व चक्रवात के ८ चित्र।
५—भारत तथा यू० पी० की जलवायु के ४ चित्र और वर्षा तथा तापक्रम का ग्राफ।
६—भारत और यू० पी० के वन।
७— ,, ,, ,, खनिज।
८— ,, ,, ,, उपज।
९— ,, ,, ,, नहरों और विद्युत कुओं, तालाबों द्वारा सिंचाई और नवीन जल विद्युत योजनायें।
१०—उद्योग और वार्षिक उत्पत्ति का ग्राफ।
११—वायु मार्ग और सड़कें।
१२—रेलें।
१३—आयात और निर्यात तथा प्रमुख व्यापारिक नगरों का अमूल्य वर्णन।
१४-१५-भारत व यू०पी० के प्राकृतिक और नैसर्गिक प्रदेश १६ से १९ तक एशिया के चित्र हैं
२०—योरूप का राजनैतिक और प्राकृतिक चित्र।
२१—अफ्रीका ,, ,,
(नील की घाटी तथा स्वेज नहर)

२२, २३, २४ - पर उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका और आस्ट्रेलिया के राजनैतिक तथा प्राकृतिक चित्र हैं। २५ से ३२ तक संसार के चित्र हैं।

जिनमें प्राकृतिक, राजनैतिक, जलवायु, वनस्पति, धारायें, शक्तिसाधन; खनिज उपज और उद्योग सम्बन्धी चित्र और आनुमानिक तालिकायें हैं। इस प्रकार यह नवीन एटलस सुन्दर मनोहर सुदृढ़ आवरण पृष्ठ के साथ आपकी भेंट हैं। मूल्य दो रु० कमीशन चौथाई।

गुप्ता ब्रदर्स पब्लिशर्स एण्ड बुक्सेलर्स, मंडी धनौरा (मुरादाबाद)

Printed by Sagar Mal Garg at Gupta Bros Ptg. Works, Mandi Dhana and Published by [illegible] "Shiksha-Sudha".

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के गृहमंत्री पं० गोविन्द बल्लभ पन्त
जिन्होंने साम्प्रदायिकता के विरुद्ध कड़ी
चेतावनी दी है।

वार्षिक मूल्य १) | मई, जून १९५५ ई० | एक प्रति =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

संस्थापक
स्व० रामकुमार अग्रवाल

सम्पादक
वीरेन्द्र कुमार
बी० ए० विशा

इस अंक में

१	जान ले	श्री हरि नारायण प्रसाद सक्सेना 'हरि'	१
२	अध्यापक तथा विद्यार्थी	श्री सूरज पाल जी तिवारी	२
३	कौन देश किस दिन स्वाधीन हुआ	श्री प्रेमनारायण दुबे प्रेमी	४
४	गीत	श्री जगपाल सिंह 'सरोज'	५
५	कबीर	श्री महेन्द्र सागर 'प्रचण्डिया'	६
६	समाज-शास्त्र का अध्ययन		८
७	अन्तर गीत	श्री सत्य प्रकाश 'मिलिन्द'	९
८	संक्रामक रोग	स्वास्थ्य और जीवन से	१
९	अनमोल बोल	श्री कन्हैयालाल मिश्र	१
१०	विनय	श्री शिवेन्दु भय्या	१
११	मित्रता	श्री रामनाथ मौर्य	१
१२	मधुर मुस्कान		१
१३	प्राचीन भारत मे ग्रामों का शासन	श्री भगवती प्रसाद	१
१४	जीवन ही क्या जीवन है	श्री जगदीश शरण 'शीतल'	२
१५	फांसी का कैदी	श्री लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता	२
१६	सोवियत संघ में नेहरू जी	तास समाचार एजेंसी	२

खेद-प्रकाश

'सुधा' का संयुक्तांक आपके हाथ में है इसकी सूचना हम आपको पिछले मास न दे सके जिसके लिए आपको पत्र लिखने का कष्ट करना पड़ा। हमें इस बात का खेद है और क्षमा प्रार्थी हैं

सम्पादक—

वार्षिक मूल्य
एक रुपया।

गुप्ता ब्रदर्स, पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, मण्डी धनौरा

एक प्रति
दो आ

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

कलश १८, बून्द ११-१२ मई, जून १९५५ ई०

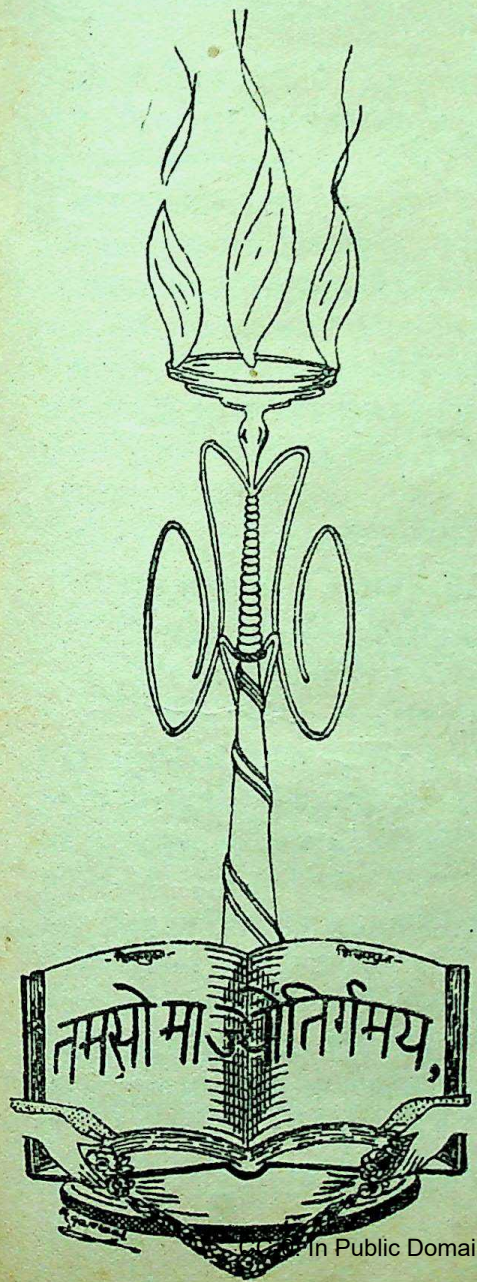

जान ले !

श्री हर नारायण प्रसाद सक्सेना 'हरि'
संपादक—'बाल गोपाल'

चार दिन की जिन्दगी है जान ले
कोई अपना है नहिं यह जान ले
मुसकुरा मत देख तू दुख किसी का
एक क्षण भी तो समझ से काम ले

× × ×

अब भी तू स्वार्थ अपना त्यागकर
मोह-माया और बन्धन त्यागकर
भाव सेवा का हृदय में ठान ले
तन नहीं अपने लिए हैं जान ले

× × ×

रे मनुज ! तू भूलता है क्यों यही
आज है तू कल न फिर रह जायगा
मोल उस प्राणी का होता है यहाँ
जो पराये को भी अपना जान ले

× × ×

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापक तथा विद्यार्थी

—सूरजपाल जी तिवारी एच० टी० सी०

अध्यापक शब्द का अर्थ है कि उपदेश देने या समझाने वाला, सिखाने पढ़ाने वाला, गुरु। अध्यापक का पद सर्वोत्तम तथा महत्वपूर्ण है। विद्यालय का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए उचित प्रबन्ध का होना अनिवार्य है।

उचित प्रबन्ध के लिए अध्यापक का व्यक्तित्व, कक्षा में छात्रों की वाह्य परिस्थिति का अनुकूल होना आवश्यक है।

विद्यार्थी एक चेतनायुक्त प्राणी है। वह अपने शिक्षक के समस्त कार्यों को ध्यानपूर्वक देखता रहता है तथा शिक्षक जो कुछ करता है, उसका स्वयं अनुकरण करता है।

अनुकरणशील होने के नाते बालकों पर अध्यापक के व्यक्तित्व तथा चरित्र का बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है।

अध्यापक सत्यवादी, सत्यनिष्ठ, उदार हृदय संयमी तथा पक्षपात रहित होना चाहिए, क्योंकि विद्यार्थी और अध्यापक का सम्बन्ध पिता-पुत्र जैसा है। अध्यापक अपनी वाणी के द्वारा राष्ट्र के हेतु सुयोग्य नागरिक तैयार करता है।

सच्चरित्र तथा योग्य अध्यापक का विद्यार्थी सदैव सम्मान करता है। सच्चा अध्यापक विद्यार्थी से पैसा नहीं लेगा और न लेने की ही कल्पना करेगा। वह अपने मस्तिष्क रूपी भण्डार में अनेकों भावना रूपी रत्न एकत्र रखता है, पढ़ाते समय अनेक वस्तुयें छात्रों के समक्ष फैंकता जाता है, छात्र भी अपनी रुचि के अनुसार उन्हें ग्रहण करते हैं। पढ़ाते समय शिक्षक को सरलता से कठिनता की ओर अग्रसर होना चाहिए यदि विद्यार्थी उसके पढ़ाने से ऊब उठे तो अध्यापक को समझ लेना चाहिए कि वह अपने विषय में पूर्ण ज्ञान नहीं रखता! शिक्षा-सिद्धाँत के अनुसार वह अपने पाठ को इतनी रोचकता से पढ़ावें कि छात्र उनमें विभोर हो जावें, उसके नीरव संकेतों से बालकों का भ्रम नष्ट हो जाय, चरित्रमें सुधार हो सके, अपने पाठ को भलि भाँति हृदयगम करा सके।

अध्यापक छोटे पौधों के माली के समान है, वह छात्रों की प्रकृतियाँ जिधर चाहे घुमा सकता है। किसी भी प्रवृति का उत्थान पतन कर सकता है। वह उन्हें तश्कर बना सकता है डाकू बना सकता है अनायास ही पथ भ्रष्ट कर सकता है शिक्षक चाहे तो छात्रों को सच्चा नागरिक एवं जगमगाता देश रत्न बना सकता है। शिक्षक के ऊपर देश का बड़ा भारी उत्तरदायित्व है। भावी राष्ट्र की उन्नति एक मात्र बालकों पर ही निर्भर है। वह जितने ही ओजस्वी बुद्धिमान सच्चरित्र तथा देशभक्त होंगे राष्ट्र उतन ही समृद्धिशाली होगा।

सफल अध्यापक में यथोचित गुण—

१—वाह्याकृति का प्रभावशाली होना।
२—शारीरिक दोष रहित।
३—मधुर वाणी ४—स्वच्छता प्रेमी ५—स्थान तथा काल के अनुसार यथा शीघ्र निर्णय करने की शक्ति ६—सच्चरित्र ७—संयमी ८—संतोषी ९—निष्पक्ष १०—भावुक ११—सादा जीवन उच्च विचार १२—नम्र और उदार १३—कुशाग्र बुद्धि १४—मनोविज्ञान का यथोचित ज्ञानी १५—वाकपटु १७—सहनशील १७—राजनीतिज्ञ १८—दुर्व्यसनों से परे प्रभृति गुणों से शिक्षक का जीवन ओत प्रोत होना चाहिए। ऐसे ही अध्यापक विद्यार्थियों के अन्तरतम पर अपनी अमिट छाप छोड़ सकते हैं।

अध्यापक का शासन:—

प्रथम हम यह बतला देना चाहते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासन की परिभाषा क्या है ? शासन शब्द से कुछ लोग समझते हैं कि लोगों को भयभीत कर उनसे काम कराया जावे। समयानुसार शासन में भय और दण्ड ही प्रधान है यह समझना नितान्त भूल है। किसी संस्था की सफलता के लिये उसके नियमों का उचित रूप से पालन करना, अपने अधिकारियों की आज्ञा का प्रसन्नता-पूर्वक पालन करना इन्हीं बातों को शासन के नाम से पुकारते हैं।

शासन 'प्रेम का शासन' एक लोकोक्ति है। अध्यापक क्रोध में आकर शारीरिक दण्ड देकर छात्रों पर असफल नियंत्रण करते हैं शरीरिक दण्ड भी अवस्था भेद के अनुसार देना चाहिए। आधारिक प्राथमिक विद्यालय में जहाँ शिक्षक ३५ छात्र पढ़ाता है और वह अन्य अन्य प्रकृतियों के होते हैं वहाँ प्रेम का शासन करना कुछ कठिन प्रतीत होता है क्योंकि वह इतने समझदार नहीं होते कि वाक-दण्ड को हृदयङ्गम कर कार्य करें, वहाँ पर शारीरिक दण्ड भी देना पड़ता है। कर्कश और उद्दण्ड छात्र भी प्रेम का अंकुश मानने लगें, तो उन्हें शारीरिक दण्ड न देना चाहिए। वाक् दण्ड ऐसा दण्ड है कि जिससे सभ्य तथा शिष्ट छात्र का अन्तसउद्वेलित होकर छटपटाने लगता है। वाक् दण्ड से छात्र का जीवन सुधरता है।

जो अध्यापक छात्रों पर बार-बार क्रोधित होकर झुंझलाता है बेंत लपलपाता है, वह विद्या से सम्पन्न नहीं, यह उसकी निर्बलता का द्योतक है।

आधुनिक काल में ऐसे अध्यापक अधिक संख्या में देखने में आते हैं जिनका पेशा विद्यार्थियों को लूटने खसोटने का है। छात्रों को ट्यूशन के लिये शिक्षक बाध्य करता है बार बार छेड़ता है।

तुम परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकते, बहुत ही कमजोर हो, परीक्षा में उत्तीर्ण होने का एकमात्र साधन है कि तुम मेरी ट्यूशन करलो। मैं चार माह में चन्द्रमा और पाँच माह में 'सूरज' बना दूँगा। "पानी में रहकर मगर से बैर" छात्र को भयभीत होकर ट्यूशन करनी ही पड़ती है। "जगत कहता है जिसे 'तृष्णा', वही तृष्णा ये 'ट्यूशन'
हो सत्यानाश तन का पर गदा-पद हो रहे ट्यूशन

× × ×

न जाने से उन्हें दुख हो, न सुख आने से हो पाता,
जो इसके 'सिद्ध-सन्यासी'; जिन्हें जग से नहीं नाता॥

ऐसे शिक्षक केवल धन ही प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे शिक्षकों के प्रति क्या श्रद्धा-भक्ति छात्रों के मानस में हो सकती है।

सच्चे शिक्षक को भाव सम्मान श्रद्धा-भक्ति के अतिरिक्त तन-मन धन दक्षिणा में मिलता है। सच्चे अध्यापक के ऊपर छात्र धन ही नहीं, प्राणों तक की बाजी लगा देते हैं। सच्चे अध्यापक की पद-रज शीश पर रख कर शिष्य भाल को पवित्र करता है, ऐसे अध्यापक की भृकुटी में अनुशासन रहता है, उसकी टेढ़ी दृष्टि से ही छात्र व्याकुल हो जाते हैं, हलचल मच जाती है। ऐसे ही शिक्षक अपनी अमर कीर्त्ति जगत में त्याग जाते हैं, उनके पद चिन्हों पर छात्र चलता है ऐसे अध्यापक के अभाव में विद्यार्थी रोते और छटपटाते हैं। सदैव अध्यापक को ही नहीं उसके नाम को भी आदर की दृष्टि से देखते हैं और उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन देश किस दिन स्वाधीन हुआ था

(प्रेम नारायण दुबे 'प्रेमी')

प्रत्येक देश में स्वाधीनता दिवस का एक त्यौहार से भी अधिक महत्व रहता है। स्वाधीनता-दिवस को संसार के कई देश उसी विशेषता के साथ मनाते हैं जिस प्रकार भारत २६ जनवरी को अपना गणतन्त्र दिवस मनाता है। संक्षेप में, प्रस्तुत लेख में इस पर प्रकाश डाला जा रहा है कि कौन देश किस दिन स्वाधीन हुआ था।

अमेरिका ने ४ जुलाई १७७६ को अपनी स्वाधीनता की घोषणा की थी। चार जुलाई को ही लिबर्टी-बैल बजाकर अमेरिका में गणतन्त्रीय राज्य की घोषणा हुई थी। उस घोषणा में अपनी स्वाधीनता ही नहीं बल्कि सारे विश्व में मानवीय अधिकारों की रक्षा का जिक्र था।

सोवियत रूस ७ नवम्बर को प्रतिवर्ष अपना स्वाधीनता दिवस मनाता है। सन् १९१७ में ट्राटस्की की सहायता से लेनिन ने अक्टूबर क्रांति का सृजन किया था, जिसके परिणाम स्वरूप कम्युनिस्ट पार्टी ने शासन व्यवस्था को अपने हाथ में ले लिया था। ७ नवम्बर १९१७ से हंसिया हथौड़े को अपने झंडे का प्रतीक बनाकर सोवियत शासन चलने लगा।

एक नवम्बर को हरसाल टर्की में स्वाधीनता दिवस मनाया जाता है। कमालपाशा के तत्वावधान में एक नवम्बर १९२२ को राष्ट्रीय सरकार की सेना का गठन अंकारा में हुआ था। तानाशाह शासक को गद्दी से उतारकर मुस्तफा कमालपाशा प्रथम राष्ट्रपति हुए थे।

पांच अक्टूबर १९१० को पुर्तगाल अधिनायकवादी शासन से मुक्त हुआ था और वहां स्वाधीन सरकार की स्थापना हुई थी। प्रतिवर्ष ५ अक्टूबर को पुर्तगाल में स्वाधीनता दिवस मनाया जाता है।

१४ अप्रैल सन् १९१३ को अल्फान्सो राजा से राज्य छीनकर स्पेन में गणतन्त्र शासन की स्थापना हुई थी अतः प्रतिवर्ष १४ अप्रैल को स्पेन में गणतन्त्रदिवस मनाया जाता है।

२८ नवम्बर १९४५ को चेकोस्लोवाकिया की विधानसभा ने गणतन्त्र सरकार की घोषणा की थी। राज्य की जनता को समान गणतन्त्रवादी अधिकार देते हुए विधान बनाया गया था। प्रति वर्ष २८ नवम्बर को चेकोस्लोवाकिया में गणतन्त्र-दिवस मनाया जाता है।

२५ मई १८१० को अर्जेन्टाइना में जनता का शासन गठित हुआ था, जिससे धीरे धीरे जनतन्त्र की स्थापना हुई थी अतः हरसाल २५ मई को अर्जेन्टाइना में स्वाधीनता दिवस मनाया जाता है।

बेल्जियम, ब्रूसेल्स में हुई भारी बगावत के परिणाम स्वरूप २१ जून १८३० को स्वाधीन हुआ था। राजा लियोपल्ड को गद्दी पर बिठाया गया था। प्रतिवर्ष २१ जून को बेल्जियम में गणतन्त्र दिवस मनाया जाता है।

हिन्देशिया २७ दिसम्बर को प्रतिवर्ष अपना स्वाधीनता दिवस मनाता है, क्योंकि २७ दिसम्बर १९४९ को वह डचों के शासन से मुक्त हुआ था।

थाईलैंड में सैनिक विद्रोह के द्वारा २४ जून १९३२ को साम्राज्यवादी शासन का अन्त हुआ अतः वहां प्रतिवर्ष २४ जून को स्वाधीनता दिवस मनाया जाता है।

बर्मा ४ जनवरी १९४८ को ब्रिटिश राष्ट्र मंडल के बाहर एक स्वाधीन गणतन्त्र घोषित हुआ था। हमारा पड़ौसी बर्मा प्रतिवर्ष ४ जनवरी को अपना गणतन्त्र दिवस मनाता है।

सीलोन को ४ फरवरी १९४८ को और पाकिस्तान को १५ अगस्त १९४७ को ब्रिटिश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रमंडल के अन्तर्गत स्वाधीनता प्राप्त हुई थी।

मैक्सिको भी पोर्तगाल के आधीन एक राज्य था किन्तु जाग्रत जनता की बगावत के परिणाम स्वरूप २५ मार्च १९२४ को स्वतन्त्र हो गया। मैक्सिको में हर साल २५ मार्च को स्वाधीनता दिवस मनाया जाता है।

चीन का स्वाधीनता दिवस प्रतिवर्ष २ अक्टूबर को मनाया जाता है। माओ त्सेतुंग के नेतृत्व में २ अक्टूबर १९४९ में, आन्दोलनकारियों ने कोमिन्ताँग का तख्ता उलटकर चीनी गणतन्त्र की स्थापना की।

गीत

रचयिता—जगपालसिंह 'सरोज'

मैं भला कब मुसकराया ?
आंसुओं से था विनिर्मित,
इसलिए ही तो - कदाचित,
प्यार भी मेरे हृदय का बावरे जग को न भाया।
मैं भला कब मुसकराया ?

× × ×

दर्द का छाला जिगर में,
क्यों न हो, जिसकी डगर में,
एक पल भर को भी निष्ठुर ना कभी मधुमास आया।
मैं भला कब मुसकराया ?

× × ×

भूला बैठा जो किसी को,
जिन्दगी की राह—में वो,
याद आता है मुझे क्यों, भूल मेरा दिल न पाया ?
मैं भला कब मुसकराया ?

राजकीय प्रकाशन

कृषि और सरल विज्ञान भाग १

कक्षा ३ के लिए

नई लिपि में

तैयार है। आज ही आर्डर दीजिए।

मैनेजर
मंडी धनौरा
(मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीर-एक काल्पनिक इन्टरव्यू

महेन्द्र सागर प्रचंडिया

कबीर मुझे उस चौराहे पर खड़े मिले जहाँ से सनातनी हिन्दू धर्माडम्बर और इस्लाम मजहब विभिन्न दिशा की ओर दृढ़ एवं उग्र कदम उठा रहे थे। बड़ी सादगी के साथ मेरा परिचय हुआ उनसे। कई और आदमी उनके पीछे मुझे मिले। छूटते ही उन्होंने मुझसे प्रश्न किया आप कौन भाई हैं और क्या चाहते हैं। मैंने विनम्र और सम्मान भरी वाणी से कहा, महाराज आपके दर्शन करने चला आया सुना था आप पुरानी बातों के एकदम खिलाफ है।

सुन बेटा, पुरानी और नई ये मन के दो विकार हैं। जिस बात से तुम अभी तक छिपे रहे वह बात चाहे कितनी ही पुरानी हो तुम्हारे लिए नई ही है। नई में भविष्य की आशा साथ रहती है और पुरानी में भूत का भय। यथार्थ में दोनों वस्तुएं एक लट्ठे के दोनों सिरों पर क्रमशः स्थिर हैं। जिस सिरे के पास खड़े होकर सामने निहारोगे वही नवीनता लिए हुए नजर आवेगा। मैं पुरानी बातों के खिलाफ़हूँ ऐसी बात तो नहीं है। मुझे व्यर्थ के आडम्बर पसन्द नहीं हैं। बात यदि पुरानी है मगर स्पष्ट और सही अर्थ में हो तो मुझे अमान्य नहीं होगी। मुझे खरी बात में सत्य के दर्शन अधिक हो जाते हैं।

खरी बात के प्रेमी होने से मैं किसी एक मत का अनुयायी या पोषक नहीं हूं। व्याप्त बहुधर्मों में मुझे जो बात रुचिकर भाती है उसे मैं स्वीकार कर लेता हूँ बाकी को नीची दृष्टि से देखता हूँ।

सन्त की बात में व्यवहारिकता के दर्शन अधिक हो रहे थे। अतः कुछ और पूंछने की लालसा मेरे मन में उपजी। साधारणतः मैंने पूंछा, सन्त जी आप की शिक्षा कहाँ तक हुई है। कबीर मार्ग पर चले जा रहे थे और मैं पीछे, बोले, शिक्षा का स्वरूप युगानुसार परिवर्तित होता रहता है, यों तो शिक्षा के भी दो मुख्य माध्यम हैं। एक तो पाठशाला में पढ़ कर और जिसे मैंने 'मसि कागद तक छूओ नाहीं।' सत्संगीय तथा बहु-क्षेत्र-पर्यटन का ज्ञान मुझे हुआ है वही मेरे पास है। मैंने कहा, तो आप गुरु परम्परा को मानते हैं या नहीं। अबकी बार वे हमारे पूँछने के आशय को भली भाँति भाँप गए-बोले, मैं न मौलवी हूँ और न शास्त्री, ढाई अक्षर मैंने पढ़े हैं और मेरी राय में ढाई अक्षर ही पूरी पढ़ाई है-गुरु को मैं गोविन्द से भी बड़ा स्थान देता हूँ। 'पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय ढाई अक्षर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय।'

गुरु को मैं ढाई अक्षर का ज्ञान कराने वाला मानता हूँ—और उसके प्रति मेरे हृदय में ऐसा स्थान है—

'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागों पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।"

मैंने कहा कि सन्त जी मुझे ढाई अक्षर का ज्ञानभास कैसे हो सकता है। मैं तो नित्य मन्दिर जाया करता हूँ किन्तु ऐसा प्रेम मुझे लगा कि कभी नहीं हुआ। कबीर ने कहा, बेटे-

'कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं,
सीस उतारे हाथिकरि, सो पैठे घर माहिं।
कबीर निज घर प्रेम का, मारग अराम अगाध।
सीस उतारै पग तलि धरै तब निकटि प्रेम का स्वाद॥

यह प्रेम उसी को मिल सकता है जो इसे पाने के लिए बलिदान तथा त्याग कर सम्यक साधना कर सकता है। साधारण रूप से इसकी प्राप्ति सम्भव नहीं है।

मैंने कबीर जी से उनकी भाषा सम्बन्धी प्रश्न किए और पूछा कि आपकी भाषा को यदि सधुक्कड़ी और पंच मेल की कहा जाय तो आपकी यह आलोचना कहाँ तक न्याय संगत लगेगी। उन्होंने हंस कर उत्तर दिया मैंने पूर्व ही कह दिया है कि मैंने किसी एक स्थान पर रह कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमाराधना नहीं की है। मुझे पर्याप्त पर्यटन करना पड़ा है अतः मेरी भाषा में विभिन्नता का आरोप है। मगर हिन्दी में अन्य भाषाओं का प्रभाव पड़ा है।

ऐसा लगता था कि कबीर को कहीं दूर जाना था, अतः उन्हें मेरी ओर कुछ अधिक आकर्षण नहीं था, शीघ्र और सूक्ष्म उत्तर देकर जैसे छुट्टी चाहने लगते थे। मगर मैंने आखिरी प्रश्न करके उनसे अपने मिलने का आशय जाहिर किया। मैंने पूछा कि—आपकी कविता का आमूल उद्देश्य क्या है। क्या आप का प्रेम वर्णन लौकिक प्रेम वर्णन से भिन्न है?

मैंने निर्गुणवाद और ज्ञानत्व को अपने काव्य में प्रधानता दी है। इस लिए मेरे काव्य में नीरसता और अरोचकता तुम्हें महसूस हो तो बेजा नहीं है। अपने मत का प्रचार करना ही मेरे काव्य का प्रधान उद्देश्य है। अतः मेरे काव्य में उपदेश एवं नीति शिक्षा का प्रायः बाहुल्य है जिसमें हृदय-तत्व या रसवत्ता की कमी है। गुरु रामानन्द ने वेदान्तीय अद्वैतवाद के साथ निर्विकार और निर्गुण ब्रह्मवाद का भी प्रचार किया था। इसी को लेकर मैंने अपना निर्गुण मत चलाया। इसके अनुसार ईश्वर गुण रहित और निर्विकार माना जाता है। मेरे प्रेम का लगाव एक मात्र आत्मा और परमात्मा के बीच में लगाव नेह का माध्यम है। लौकिक प्रेम से मुझे अरुचि रही। यहाँ तक कि ईश्वर प्रेम को भी मैं मूर्त रूप में नहीं पूजता हूँ। जाति पाँति से मुझे हँसी आती है क्योंकि ये साधन समाज को संकीर्णता की ओर ले जाते हैं। प्रेमोल्लेख का एक मात्र साधन मैं गुरु को मानता हूँ। मैंने करीब ८२ ग्रन्थ लिखे हैं। आप मेरे बीजक को पढ़ कर मेरे बारे में काफी ज्ञानार्जन कर सकते हैं। अब प्रश्न मत कीजिए। और मुझे सूत बुनने दीजिए कुटी की ओर इशारा करते हुए आप ने शीघ्र ही विदाई ली।

मैं अजीब अक्खड़ता की सराहना करता हुआ घर आया और कबीर के साहस और अक्षुण्ण ज्ञान की प्रशंसा में लग गया।

गृह शास्त्र तथा कला के लिए

गृह शास्त्र भाग १	१॥)	कमीशन तिहाई
" भाग २	॥।)	कमीशन तिहाई
सूचिका शिल्प भाग १	॥।=)	कमीशन चौथाई
" भाग २	।=)	कमीशन चौथाई
कला शिक्षक	१॥।)	कमीशन तिहाई
कला परिचय	॥।)	कमीशन तिहाई
आधुनिक पुस्तक कला	॥।)	कमीशन तिहाई

उपयोगी प्रश्नोत्तरियाँ

सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी प्राचीन भारत	चार आना
सरल प्रश्नोत्तरी मध्यकालीन भारत	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी अर्वाचीन भारत	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग १	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग २	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग ३	आठ आना

आपके पुस्तकालय के लिए

हमारी चुनी हुई पुस्तकें

आजादी की कहानी	२॥)	क० चौथाई
हिन्दी साहित्य कोष	५)	"
नेताओं की कहानी	॥)	"
मधुर गीता	॥)	"
जादू के खेल	॥=)	"
घरेलू इलाज व दस्तकारी	॥=)	"
केले और पपीते की खेती	।)	"
गृह शास्त्र भाग १	१॥)	तिहाई
" २	॥।)	"
बेसिक ड्रामा	॥=)	आधा

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिका में—

समाज-शास्त्र का अध्ययन

फ्रेड एम० हेचिंगर

अमेरिका में हाई स्कूल के चार वर्ष के पाठ्य-क्रम में इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि विद्यार्थी को अगले चार वर्ष कालेज में बी. ए. तक पढ़ने के लिये अपेक्षित योग्यता प्राप्त हो। उस पाठ्य क्रम में अंग्रेजी (व्याकरण तथा साहित्य), गणित, एक विदेशी भाषा (फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, इटालियन तथा लैटिन में से कोई एक), विज्ञान तथा समाजशास्त्र (मुख्यतः इतिहास तथा अर्थ-शास्त्र) आवश्यक हैं। ज्यादातर लड़के हाईस्कूल पास करके १७ वर्ष की आयु में निकलते हैं।

अभी हाल में की गयी जांच से पता लगा है कि विषयों को चुनने की स्वतन्त्रता वाली नयी पाठविधि अमेरिका के हाईस्कूलों में तेजी के साथ जारी होती जा रही है।

इस सम्बन्ध में सबसे अधिक नयी बात छात्रों की समाजशास्त्र के अध्ययन में बढ़ती हुई रुचि है। जिन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य मानवी तथा प्राकृतिक साधनों की सुरक्षा करना तथा उनका उचित उपयोग लेना होता है विशेष रूप से उनमें, तथा कुछ अन्य स्थानों पर - विज्ञान और समाज-शास्त्र मिला कर पढ़ाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त मानवी सम्बन्धों के विषय में एक नया पाठ्यक्रम बढ़ाया गया है, जिसके अनुसार दैनिक जीवन में व्यक्ति तथा समाज द्वारा अन्य व्यक्तियों के साथ किये गये व्यवहार की प्रतिक्रिया का अध्ययन करना सिखाया जाता है।

लड़के-लड़कियों के लिये घरेलू अर्थशास्त्र ललित कलायें, व्यापार प्रणाली तथा उसका प्रबन्ध, मनोविज्ञान तथा धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन—ये नये पाठ्यक्रम भी बढ़ाये गये हैं।

इनके अतिरिक्त अन्य विषय भी जोड़े गये हैं—जैसे मौजूदा समस्याओं पर वादविवाद, नृवंशशास्त्र, पारिवारिक सम्बन्ध विज्ञान तथा नीति-शास्त्र।

बहुत से स्थानों पर उन विद्यार्थियों के लिये जो अपने भावी जीवन में वैज्ञानिक बनने की इच्छा नहीं करते पाठ्यक्रम में से भौतिकी तथा रसायनशास्त्र को हटा कर विज्ञान का उच्च अध्ययन रख दिया गया गया है। इन पाठ्यक्रमों में शास्त्रीय विज्ञान के फार्मूले तथा बारीकियों के बजाय 'मनुष्य पर विज्ञान का प्रभाव' विषय पढ़ाया जाता है।

इन सबके अतिरिक्त 'व्यवहारिक कार्यक्रम' की ओर भी छात्रों का ध्यान अधिकाधिक बढ़ता जा रहा है, जिसके अनुसार वे स्कूल से अतिरिक्त समय में व्यवहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं।

अमेरिका के हाईस्कूलों, की शिक्षा-पद्धति में दूसरा मुख्य स्थान 'मार्गदर्शन' को प्राप्त है। इन दिनों अमेरिका के स्कूलों में विशेष रूप से प्रशिक्षित तथा सारे समय काम करने वाले मार्गदर्शक विशेषज्ञों को अधिकाधिक नियुक्त किया जा रहा है।

इस प्रकार का मार्गदर्शक परामर्शदाता अपने प्रत्येक छात्र के प्रारम्भिक जीवन से सम्बन्धित तरह-तरह की सारी सामग्री के अतिरिक्त अन्य कार्यों आदिकी भी छानबीन करता है।

उस सलाहकार का काम अपनी इच्छा को उस छात्र अथवा उसके परिवार पर थोपना नहीं होता, अपितु किसी निर्णय पर पहुँचने के लिये उनकी सहायता करना मात्र होता है (माता-पिता अत्यधिक निकटता के कारण प्रायः बच्चे को ठीक-ठीक नहीं समझ पाते)। वही परामर्शदाता अपने उन छात्रों को हाईस्कूल के पाठ्यक्रम, भावी जीवन के लिये उपयोगी रोजगार तथा उसका शिक्षण, पढ़ने के लिये उपयुक्त कालेज, काम तथा नौकरी और महत्वपूर्ण व्यक्तिगत समस्याएं—इन सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामलों में उपयुक्त निर्णय पर पहुँचने में सहायक होता है।

आधुनिक अमेरिकी स्कूलों का उद्देश्य प्रत्येक छात्र की अलग-अलग मार्गदर्शन की उचित व्यवस्था करना है। इससे जहां छात्र को अभिभावक-शिक्षक से प्राप्त होने वाली उत्तम शिक्षा का लाभ प्राप्त होता है, वहां दूसरी ओर छात्रों को इस प्रकार अधिकाधिक संख्या में अनायास ही उत्तम शिक्षा भी मिल जाती है। अमेरिका के अधिकांश सार्वजनिक शिक्षाशास्त्रियों का विश्वास है कि किसी भी व्यापक शिक्षा-योजना की सफलता का यही एक मापदण्ड है।

———

अन्तर गीत

रचयिता—श्री सत्यप्रकाश मिलिंद]

[१]

व्यर्थ लंगर डालकर क्यों
रोकते तुम नाँव माँझी—
वेग झंझा का बड़ा है
और लहरे हैं प्रकम्पित,
टूटता पतवार देखो
हो रहे यात्री सशंकित
रोकते हो तुम वृथा क्यों
इस प्रलय के वेग को यों—
यह बहे जैसे, बहादो
तुम न रोको नाव माँझी।
व्यर्थ लंगर डालकर क्यों
रोकते तुम आज मांझी॥

[२]

जिंदगी की यह कहानी
तुम नहीं हो रोक सकती,
सांस चलते ही रहेंगे
तुम न यों हो टोक सकती
व्यर्थ का संताप छोड़ो
दूर हट जाओ वहाँ से—
तर्क और वितर्क से मत
पथ करो अवरुद्ध मांझी।
व्यर्थ लंगर डालकर क्यों
रोकते हो नाव माँझी॥

[३]

मौत के ही तो सहारे
ज़िन्दगी चलती रही है,
और दुनिया की समीक्षा
भी कभी रुकती नहीं है
सृष्टि में कब लिप्त स्रष्टा
फिर वृथा मन आज भारी—
कामना करते रहो तुम
हो सदा कल्याण साथी।
व्यर्थ लंगर डालकर क्यों
रोकते तुम नाव मांझी॥

[४]

कूल पर होकर खड़े जो
विश्वजन परिहास करते,
आज शायद ज़िन्दगी पर
वे अमिट विश्वास करते,
लघु तृणों का भरोसा
आज संचित कल विसर्जित—
मौन हूँ संतप्त लेकिन
मौन रहने दो न मांझी।
व्यर्थ लंगर डालकर क्यों
रोकते हो नाँव माँझी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्रामक रोग का सामना कैसे करना चाहिए

जब किसी घर में कोई संक्रामक रोग धावा बोल देता है तो सब कोई अत्यन्त चिन्तित और व्याकुल हो उठते हैं, तथा परिवर्तन व व्यवस्था के लिए काफी दौड़-धूप करनी पड़ती है। दो खास समस्याओं का समाधान आवश्यक होता है। पहली समस्या पीड़ित बालक की सर्वोत्तम सेवा सुश्रुषा से सम्बन्ध रखती है, और दूसरी घर के अन्य सदस्यों को इस छूत रोग से बचाने की व्यवस्था से सम्बन्ध रखती है।

रोगी की सेवा किस प्रकार होनी चाहिए—जब बालक किसी बीमारी के लक्षण उपस्थित कर रहा है तो ये लक्षण इस बात के द्योतक हैं कि वह एक या अधिक रोग का शिकार होने जा रहा है। लक्षणों से प्रगट हो सकता है कि रोग हल्का या तीव्रगामी होगा या वे झूठे भयसूचक लक्षण हैं। यों आशा तो रखनी चाहिए कि सब कुछ निरापद ही है लेकिन साथ ही बुरी से बुरी परिस्थिति का सामना करने के लिए सर्वदा तैयार रहना चाहिए। बीमारी भयंकर रूप धारण कर ले सकती है। इस लिए सुरक्षा का प्रबन्ध कीजिए और डाक्टर को बुलाकर रोग की पहचान करा लीजिए।

रोग की प्रकृति को पहचानने के बहुत पहले से सतर्क हो जाइए और रोगी की पूरी सेवा पर ध्यान दीजिए। उसे आरामदायक खाट पर सुलाकर स्वस्थ होने का मौका प्रदान कीजिए। रोग न फैले, इसलिए उसे दूसरों से दूर रखिए। याद रखिए कि अधिकांश संक्रामक रोग उनके प्रारंभिक काल में ही फैलते हैं, यहां तक कि रोग की पहिचान होने से पूर्व ही फैलने लगते हैं। इस लेख में हम विचार करेंगे कि संक्रामक रोग से पीड़ित बालक की सेवा-सुश्रुषा कैसे करनी चाहिएं और साथ ही कुटुम्ब के अन्य व्यक्तियों की रक्षा कैसी करनी चाहिए।

बालक और उसके संसर्ग में जो जो वस्तुयें आती हैं वे तथा उसके मुंह, नाक, कान, पेट और अंतड़ियों से निकली वस्तुएं छूत का रोग फैलाने वाली होती हैं। प्राचीन काल में जिनको कुष्ट रोग हो जाता था वे "अशुद्ध" "अशुद्ध" चिल्ला-चिल्ला कर दूसरों को अपने पास से दूर रखते थे। आज भी सुरक्षा की दृष्टि से हम रोगियों को "अशुद्ध" समझते हैं, या कहते हैं कि उनमें रोग के कीटाणु हैं। जो व्यक्ति "शुद्ध" हैं अर्थात् रोग से मुक्त हैं उनके लिए वे "अछूत" हैं।

फिर कुटुम्ब के सदस्य जो रोग से मुक्त हैं वे "शुद्ध" गिने जाते हैं। इनको रोगी से दूर रहना चाहिए। उन्हें उस को नहीं छूना चाहिए, उनकी देह से निष्कासित मलमूत्रादि का स्पर्श नहीं करना चाहिए। अंगुलियां, भोजन, मक्खियाँ, खिलौने, बर्तन, वस्त्र, बिछौने के चादर, तौलिए आदि अनेक वस्तुएं एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य के पास रोग फैला सकती हैं।

रोगी और इसके कमरे तथा उसके कुटुम्ब और निवास स्थान के बीच का यह अन्तर तब तक रहना चाहिए जब तक पृथकत्व का समय न गुजर जाय।

रोगी की सुश्रूषा

रोगी के लिए एक अलग कमरा चुन लीजिए कमरा यदि निवास स्थान से दूर रहे तो बेहतर हो। स्वच्छ वायु और सूर्य किरण के लिए कमरा खुला होना चाहिए। कमरे के साथ यदि स्नानागार और पाखाना रहे तो रोगी की सेवा में बड़ी सुविधा होती है। लेकिन यदि फालतू कमरा न रहे तो भी काम चल सकता है।

कमरे से सब अनावश्यक चीजें, जैसे दरी, फालतू वस्त्र, तसवीरें और किताबें हटा देना चाहिए। कमरे के अन्दर एक खाट, एक छोटी मेज एक कुर्सी, एक आइना, नर्स का पहिराव टांगने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए एक रैक अथवा दरवाजे के भीतरी भाग में में एक या दो खूंटियों का होना आवश्यक है। रोगी के काम आनेवाली वस्तुओं को छोड़ नर्स के हाथ धोने के लिए कमरे में एक बर्तन, मैले बर्तनों को रखने के लिए एक बड़ा बर्तन और मैले कपड़े रखने के लिए एक छोटे जालीदार बक्स का होना जरूरी है। सब स्वच्छ कपड़ों और रात में पहनने के लिए वस्त्रों को कमरे से बाहर रखना चाहिए। बर्तनो को उबालने के लिए तथा पानी गरम करने के लिए कमरे में एक अंगीठी या बिजली का चूल्हा होना जरूरी है ताकि रोगी की सेवा में सुविधा हो। नाक, कान और मुंह से निकले स्राव से दूषित रूमाल और कपड़ों के टुकड़ों को रखने के लिए यदि खाट के साथ कागज की बनी एक थैली लगा दी जाय तो बड़ी सुविधा रहती है। बाद में इन दूषित चीजों को थैली के साथ जला देना चाहिए। जो बर्तन रोगी के द्वारा इस्तेमाल किए गए हैं उनको गरम पानी में उबालना चाहिए। रोगी के कपड़े कुटुम्ब के कपड़ों के साथ नहीं धोना चाहिए लेकिन उन्हें अलग रखकर सोडाडालकर पानी या साबुनके पानी में उबाल उबाल कर धोना चाहिए कपड़ों को उबालने से पहले आपका डाक्टर उन्हें विशुद्धकारक दवा (Disinfectant) में भी डालने की सलाह दे सकता है। गद्दे को मोम-जामा से या रबड़ की चादर से ढाँक कर बचाना लाभदायक होता है।

बहुधा माता-पिता अपने पीड़ित बालक के लिए एक मूल्यवान गुडिया, या कीमती पुस्तक या खिलौना मोल लेते हैं। यदि यह बालक के लिए चिरस्थाई धन बनाना हो तो उसे तब तक हाथ में नहीं देना चाहिए। जब तक संक्रामक रोग की अवधि न समाप्त हो जाय। यदि रोग अल्प-कालिक हो तो इस बात पर विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। सिर्फ ऐसे खिलौने उस के हाथ में देना चाहिए जो थोड़े दिनों के बाद जला दिए जा सकते हैं। आप यह देखकर आश्चर्य-चकित हो जायेंगे कि बालक ऐसे कम मूल्यवान साधारण खिलौने से कितना आनन्द ले रहे हैं। यह खिलौना रोग समाप्ति पर नष्ट कर दिया जा सकता है।

सेवा करनेवाली चाहे एक नर्स हो या मां, उसे सावधान रहना चाहिए कि उसके द्वारा बीमारी घर के दूसरे व्यक्तियों के पास न चली जाय। उपर्युक्त चेतावनियाँ उसे भी बचा देंगी। रोगी के कमरे में प्रवेश करते समय उसे लम्बा पहिराव पहिन लेना चाहिए और उसे तभी छोड़ना चाहिए। जब कमरे को छोड़ना पड़े। इसके बाद उसे अपने हाथ साबुन और पानी से अच्छी तरह से धो लेना चाहिए। कड़ी दवा मिश्रित पानी में हाथों को धोने की अपेक्षा साबुन और पानी से अच्छी तरह धोना बेहतर है क्योंकि दवा मिश्रित पानी उस के हाथों की त्वचा को हानि पहुँचा सकता है और फलतः वह रोग का शिकार हो सकती है।

अन्त में बहुत दिनों से प्रतीक्षित छुटकारे का दिन पहुँच जाने पर बालक रोगाणुओं से मुक्त हो जाता है। एकान्तता की अवधि समाप्त हो जाती है और रोग के प्रकोप की अवधि पूरी हो जाती है। अब नर्स का क्या कर्त्तव्य रह जाता है ताकि रोग-मुक्त बालक और अड़ौस-पड़ौस के लोग सुरक्षित रहें ?

शायद अब आप यह सोचते होंगे कि रोगी के एकान्तवास का समय पूरा हुआ या नहीं यह कैसे निश्चय किया जाता है। जब बालक रोगाणुओं से मुक्त हो जाता है ताकि उससे दूसरों को रोग न लग सके तो जानना चाहिए कि उसकी छुट्टी का समय यही है। लेकिन कैसे हम यह जानेंगे कि अब वह दूसरों तक रोगाणु नहीं पहुँचायेगा। किसी किसी रोग के लिए प्रयोगशाला में इसका परीक्षण किया जाता है। जिनको डिपथेरिया (कन्ठरोग) हुआ है उनके थूक का परीक्षण किया जाता है, और टाइफाइड में या आमातिसार में पखाने का परीक्षण किया जाता है। लेकिन कुछ रोग है जिन का परीक्षण प्रयोगशाला में नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकता है और ऐसों के लिए एक अनुमानित अवधि निश्चित की गई है जिसके बाद रोगाणुओं का फैलना रुक जाता है। कदाचित आपका डाक्टर इस अवधि की सूचना आपको न दे, क्यों कि यह तो स्वास्थ्य विभाग के अफसर का काम होता है। कब तक रोगाणुओं की अवधि रहती है और कब वे नष्ट हो जाते हैं तथा कब रोगी स्वछन्दतापूर्वक विचरण कर सकता है इस विषय पर केवल हैल्थ आफिसर का अधिकार रहता है। उनको आपके सहयोग की आवश्यकता है ताकि उनका काम सरल हो जाय।

रोगी का कमरा कैसे फिर रोगाणु-मुक्त किया जा सकता है।

संक्रामक रोग के बाद रोगी अपने को कैसे स्वच्छ करता है? सर्व प्रथम ध्यान स्वभावतः कमरे में रोगी की ओर रहेगा। उसे गर्म पानी और साबुन से अच्छी तरह स्नान कराना चाहिए तथा पूरे सिर को भली भांति धोना चाहिए। अब देखना चाहिए कि जो पहिराव वह पहिनेगा वह रोगी के कमरे में नहीं रखा हुआ था और न रोगाणुओं से दूषित वस्तुओं के संसर्ग में आया था। वह रोगी के कमरे से बाहर था। कहने की आवश्यकता नहीं कि उसे तब तक उस कमरे में फिर सोने नहीं देना चाहिए जब तक कमरा भली भांति स्वच्छ न किया गया हो।

अब कमरे को कैसे साफ करना चाहिए? जला देने योग्य वस्तुओं को जैसे कपड़े, कागज, खिलौने आदि चीजों को आग में भस्म कर देना चाहिए। उबालने योग्य वस्तुओं को जैसे, वस्त्र और बर्तनों को खौलते पानी में उबालना चाहिए कम्बल आदि वस्तुएं जो उबाली जा सकती हैं, गर्म साबुन के पानी में धोकर कमरे के बाहर टाँग देना चाहिए। मेज, कुर्सी, दरवाजे, खिड़की आदि अन्यान्य लकड़ी की बनी वस्तुओं को धोकर इस प्रकार पालिश कर देना चाहिए कि समस्त कीटाणु नष्ट हो जाए। द्वार पर लगी मुट्ठियों पर भी विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि उनमें रोगी के कीटाणु छिपे रह सकते हैं। गद्दे को, जो रबड़-शीट या आइल क्लाथ से ढका था घर से निकाल कर दो दिन तक धूप में रखना चाहिए। उस के ऊपरी भाग को साबुन के पानी और बुरुश द्वारा रगड़ रगड़ कर साफ करना अच्छा होगा ताकि यह निश्चय हो जाय कि रोगाणु अब नहीं रहे। साफ करने का काम समाप्त होने पर कमरे के द्वार और खिड़कियों को दो या तीन दिन तक खोलकर छोड़ देना चाहिए। अब रहने के लिए कमरा स्वच्छ है। कमरा पुतवाया भी जा सकता है। (स्वास्थ्य जीवन से)

अनमोल बोल

संग्रहकर्त्ताः - कन्हैयालाल मिश्र

१ - मनुष्य को सच्चा सुख अपने कर्त्तव्य पालन पर मिलता है।

२—जो मनुष्य अवसर को पहचानते हैं वे बहुत कम धोखा खाते हैं।

३—अमेरिका में मिडवल नामक नगर में एक गृहस्थ महिला जॉनडेविस का कुत्ता ठीक मनुष्यों की भाँति बोलता है।

४—शब्दों में अमृत भी है और हलाहल भी।

५-राजा के बोलने से केवल सेना हिल सकती है परन्तु लेखक के शब्द राष्ट्र को हिला सकते हैं।

६—यद्यपि विदेशी वस्तुयें त्यागने योग्य है परन्तु साहित्य संग्रह करने योग्य है।

७—जहाँ प्रबल इच्छा होती है वहाँ मार्ग स्वतः बन जाता है।

८—सच्चा पश्चात्ताप और प्रायश्चित ही भगवान के कपाट खुलवाता है।

९—यदि किसी देश को लगातार दास बनाये रखना है तो सर्व प्रथम उस देश का इतिहास नष्ट कर देना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालबन्धु

मई, जून सन् १९५५ ई०

'सम्पादक जी से विनय'

(रच० शिवेन्दु भय्या "साहित्य रत्न")

तीन पैर की मेरी सैकिल मैं हूँ उसे चलाता।
और कैरियर पर मुन्नी को बिठला खूब घुमाता॥
टायर ट्यूब नहीं हैं उसमें लगी रबड़ की गद्दी।
है मज़बूत बहुत लेकिन लगती है मुझको भद्दी॥

बाबू जी से मैं कहता हूँ मुझको नई मंगादो।
लेकिन वे कहते हैं पहले मुझको गीत सुनादो॥
गीत सुना चुकने पर भी वे मुझको हैं टरकाते।
चिकनी चुपड़ी बातों में ला मुझको हैं बहकाते॥

सम्पादक जी! कृपया मेरी इतनी सिफ़ारस करदो।
बाबू जी को चिट्ठी लिखकर सैकिल मुझे मंगादो॥
आशा है मेरी विनती पर आप तरस खायेंगे।
कृपा-दृष्टि रखकर मुझको सैकिल न्यू मंगवायेंगे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रता—

रामनाथ मौर्य

बहुत दिनों की बात है एक नदी के किनारे एक जंगल में चार मित्र हिरण, कौवा, चूहा और कछुआ रहते थे। इन चारों में काफी मित्रता थी। एक दूसरे के लिये संकट काल में ये लोग जान देने तक के लिये तैयार रहते थे एक दिन हिरण वन में घूमने गया। बहुत देर पश्चात् भी हिरण जहां तीन दोस्त थे न आ सका। इससे कौवा, चूहा और कछुए को बड़ा दुख हुआ। बहुत देर तक प्रतीक्षा करने के पश्चात चूहे और कछुए ने कौवे को अपने मित्र हिरण का पता लगाने के लिये कहा। कौवे ने अपने मित्र हिरण का पता लगाने के लिये कछुवे तथा चूहे के कहने पर प्रस्थान किया। कौवे ने उड़ते उड़ते सम्पूर्ण वन खोज डाला अन्त में उसने कुछ दूर पर अपने मित्र हिरण को देखा। हिरण को जाल में फंसा देखकर कौवे ने दुख प्रकट किया। तथा अपने मित्र हिरण को साहस बंधाते हुये कहा मैं अभी आता हूँ। धैर्य रखो विपद में घबड़ाना न चाहिये बल्कि धैर्य पूर्वक काम करना चाहिये। यह कह कर कौवा वहां से कछुवे और चूहे के पास को चला।

कौवा कछुवे और चूहे के पास आया और समस्त घटना कह सुनायी। यह घटना सुनकर कछुवा तथा चूहे को बड़ा दुख हुआ कौवे ने चूहे से कहा कि "तुम चलकर जाल को काट डालो। ऐसा करने से ही हमारा मित्र हिरण स्वतंत्र हो सकता है। शीघ्रता करो नहीं तो शिकारी आजायेगा। कौवे का यह उपाय सुनकर चूहे ने अपने मित्र को स्वतंत्र करने के हेतु चलना प्रारंभ किया। उसके साथ कछुवे ने भी चलना निश्चय किया।

अपने मित्र हिरण के पास पहुँच कर चूहे ने अपने तेज दांतों द्वारा जाल को काटना आरम्भ किया ज्योंही जाल काट डाला त्योंही अचानक शिकारी करीब में आ पहुँचा। हिरन छलाँग मार कर भाग गया, कौवा उड़ गया तथा चूहा पास की झाड़ी में घुसकर छिप गया, परन्तु कछुवा अपनी मन्द गति से भागना शुरु किया। परन्तु झाड़ी में भी न पहुँच सका हिरण के भाग जाने के कारण शिकारी अत्यन्त क्रोधित हुआ। क्रोध में आकर शिकारी ने उसी कछुवे को ही अपने झोले में रख लिया।

जब ये तीन दोस्त कौवा, हिरण, तथा चूहा इकट्ठे हुए तो उन्होंने अपने दोस्त कछुवे को न पाया। हिरण के स्वतंत्र होते ही उनका दूसरा मित्र कछुआ शिकारी के हाथ लगा।

हिरण, कौवे तथा चूहे ने अपने मित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कछुवे को छुड़ाने के हेतु उपाय सोचना प्रारम्भ किया। अन्त में फिर कौवे ने ही अपने मित्र कछुवे को स्वतंत्र करने के हेतु उपाय सोचा और कहा कि हे भाई हिरण! तुम शिकारी के पास लंगड़ाते हुआ जाओ। इससे शिकारी तुम्हारी दशा को देखकर झोला जमीन पर रखकर तुम्हारा पीछा करेगा कौवे ने चूहे को झोला काट देने को कहा। ऐसा उपाय सुनकर हिरण शिकारी के पास आया। शिकारी ने हिरण को लंगड़ाता हुआ देखकर हिरण का पीछा करने के लिये अपने झोले को रखकर हिरण का पीछा किया। हिरण कुछ दूर लंगड़ाता हुआ गया फिर जब उसने सोचा कि कछुआ अब स्वतंत्र होगया होगा तो हिरण ने छलांग मारी और पवन वेग की तरह अपने मित्रों के पास पहुँचा।

जब चारों मित्र इकट्ठा हुये तो उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की। हिरण, चूहे तथा कछुवे ने कौवे की बुद्धिमत्ता की पूरी-पूरी खूब प्रशंसा की। क्योंकि कौवे ने ही अपनी बुद्धि द्वारा एक बार हिरण को तथा दूसरी बार कछुवे को शिकारी के पंजे से जान बचाई।

अब ये चारों मित्र आनन्द पूर्वक अपने स्थान पर रहने लगे। इन चारों मित्रों ने किस प्रकार अपने परिश्रम द्वारा एक दूसरे का संकट के समय सहायता पहुँचाकर जान बचाई।

अतः इन चारों की मित्रता को हमें अपने सामने आदर्श मानकर अपने मित्रों को विपत्ति के समय में सहायता पहुँचाना हमारा कर्त्तव्य है।

उत्तम बाल साहित्य

कहानियाँ, ड्रामे, गीत तथा अन्य सभी प्रकार की उत्तम पुस्तकें हैं जो आपके बालकों को चरित्रवान तथा चतुर बनायेंगी।

	कमीशन
दो घड़ी की मौज	।) चौथाई
मनोरंजक कहानियाँ	।) "
आदर्श चरितावली	॥) "
नेताओं की कहनी	॥) "
चतुर बालिकायें	।) "
बेसिक ड्रामा	॥) "
सेवा गान	≡) तिहाई
चटुक गान भाग १	=) चौथाई
चटुक गान भाग २	=) "

पूरा सैट प्राप्ति के लिए २॥) का मनीआर्डर भेजें

अमूल्य पर मुफ्त

वर्षों के सतत प्रयास का परिणाम

'स्मृतिदाता रस' यह प्रभावशाली और भरोसे वाली दवाई विशेषज्ञों के मशवरे से तैयार की गई इसके सेवन से स्मरण शक्ति की कमी, दिल और दिमाग की कमजोरी आदि आदि दूर होकर मुँह की झाइयाँ, दाग, झुर्रियाँ आदि मिट जाते हैं, त्वचा कोमल हो जाती है और रंग निखर आता है।

मूल्य सिर्फ लागत मात्र १२) रुपये मूल्य पेशगी भेजें।

पतः—महादेव धर्मार्थ औषधालय पोचानेर परगना बोरखेड़ा जिला आस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुर मुसकान

(१)

शिक्षक— (लड़कों से) बस्ता लेते आना। कल से पढ़ाई होगी।

विद्यार्थी-कल से (मशीन से) पढ़ाई होगी तो बस्ता लाने की क्या आवश्यकता।

(२)

शराबी—(नशे में मस्त होकर) नौकर से देखरे! कौन गिरा।

नौकर—हजूर! आप ही तो?

शराबी—तब तो सब हड्डियाँ चूर हो गई होंगी।

(३)

शिक्षक—जोखन सिंह तुमने श्यामपट पर एक आदमी बनाया है। इसलिये तुम दो घंटे मैदान में खड़े रहो।

विद्यार्थी—मास्टर साहब! हमने तो एक आदमी बनाया है तिस पर दो घंटे खड़े रहेंगे बतलाइये भगवान ने बहुत से आदमियों को बनाया है और बनाते ही चले जा रहे हैं वे कितने घंटे तक खड़े रहेंगे।

(४)

ड्राइवर--(गाड़ी रोककर) साहब अब गाड़ी आगे न जायगी।

साहब—आगे अब न जायगी।

ड्राइवर—नहीं।

साहब—तो पीछे को चलो।

(५)

जमादार—(कैदी से) क्यों जी कैसा काम करते हो।

कैदी—पसंद न हो तो छुट्टी दे दो।

रामनाथ मौर्य कक्षा ८ अ जू० हा० स्कूल धर्मगंज

(६)

एक देहाती अपने ९ मास के बीमार बच्चे को डाक्टर के यहां ले जाता है। डाक्टर ने अच्छी तरह से निरीक्षण करके कहा—"इसके पेट में तिल्ली बढ़ गयी है।" देहाती ने सुनते ही तुरन्त उत्तर दिया, "अरे एकदम साहब! अबै यू तो खालिस नौ महीना क्यार है, महतारी क्यार दूध निखालिस पियति है महिकै प्यार मैंहा तिल्ली कहां तेने आगया।

(७)

मास्टर साहब क्लास में इतिहास में पानीपत का युद्ध पढ़ा रहे थे। क्लास का चंचल लड़का राम बाहर घूरे पर लड़ते हुये सुअरों को देख रहा था। मास्टर साहब ने उसका ध्यान आकर्षित कराते हुये पूछा "राम! पानीपत के मैदान में कौन कौन लड़ रहे थे। "राम ने हड़बड़ा कर शीघ्र ही उत्तर दिया, "मास्टर साहब! सुअर।

"शिवेन्दु भइय्या विशारद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन भारत मे ग्रामों का शासन

लेखक – भगवतीप्रसाद

इतिहास इस बात का साक्षी है कि देश में शासन उन्हीं का सफल हो सका है, जिन्होंने ग्रामों के ढांचे को सुदृढ़ किया है। जिन राजाओं ने ग्रामों की चेतना प्राप्त की है वही शान्ति से देश का शासन चला सके हैं। अशोक, हर्ष, चन्द्रगुप्त आदि इसके प्रमाण हैं। प्रत्येक राजा ने वैदिककाल से लेकर मुस्लिम काल तक में ग्राम वासियों के सुख का ध्यान रखा है। यहाँ तक कि चाणक्य ने पाटलीपुत्र में न रह कर एक ग्राम में झोंपड़ी डलवा कर रहना पसन्द किया था, क्योंकि वहां का जीवन ही हमें प्रकृति की ओर बढ़ाता है, हम उन्हीं ग्रामों में रहकर इस नर जीवन से देव बनने का प्रयत्न कर सकते हैं। इसीलिए तो सन्यासियों ने ग्रामों में ही रहना पसन्द किया था, पर आज लोग ग्रामों से ऊबकर भागने का प्रयत्न कर रहे हैं, शायद वे इतिहास से अनभिज्ञ हैं। अतः उनका शासन जो प्राचीन काल से चला आता है उस पर विहंगम दृष्टि डालना आवश्यक है, क्योंकि ग्रामवासी उस शासन को समझकर गाँधी जी की इच्छा पूर्ण करने का प्रयत्न करें तो देश का कल्याण शीघ्र हो सकेगा।

सतयुग

सतयुग मानव की रचना का प्रारम्भिक काल माना जाता है। शायद आर्य का अर्थ किसान ही है, यह वेदों से प्रमाणित है [ऋ० १। ११७। २१] राजा पृथु की कथा, सीता जी के जन्म काल के समय बड़े-बड़े ऋषियों के हल जोतने की चर्चा मिलती है। हलधर तो एक किसान का ही रूप हो सकता है, जैसा रामदास गौड़ ने लिखा भी है। अतः भूमि-व्यस्वथा का भी प्रश्न उठता है, किस प्रकार भूमि का कार्य लगान इत्यादि का चलता था? क्योंकि राजा अवश्य थे यह सत्य है। उनको शासन को सुदृढ़ बनाने के लिये किसान समुदाय ही सहयोग प्रदान करता था। कृषि दृष्टि में रख कर धरती के चार विभाग माने गये थे—१ वास्तु, भूमि २—कृषि योग्य भूमि, ३—गोचर भूमि, ४—जंगल। इसमें बाप के मर जाने पर बेटा स्वाभाविक ढंग से मालिक होता था यह वास्तुभूमि की व्यवस्था थी। जंगल आदि पर सब का अधिकार होता था और हर एक ग्राम अपनी भूमि व्यवस्था करने को स्वतंत्र था।

राजकर की व्यवस्था यह थी कि उस समय किसान लोग राजा को पशु और सोने का पचासवाँ भाग देते थे तथा लगान के लिए ⅙ भाग अनाज देते थे। इसके बदले में राजा रक्षा करता था और रक्षा करने वालों को इसी से वेतन अदा करना पड़ता था। कुछ किसानों को केवल अनाज का छठा भाग ही देना पड़ता था, शुल्क नीति में इस प्रकार का वर्णन है। उस समय का राजा भूपाल या नरपाल कहलाता था क्योंकि वह धरती तथा मनुष्य की रक्षा करता था।

त्रेता और द्वापर

इस काल में ग्रामों का शासन कैसा था भली भाँति पता नहीं चलता है, पर राजा एक पूरे देश का मालिक होता था और मंत्रियों की राय से ग्रामों का शासन होता था उस काल में पंचायतें अवश्य थीं, पर वह पंचायतें देश के दृष्टिकोण से थीं और अधिकतर फैसले जातियाँ अपने अन्दर ही तय कर लेती थीं। इन पंचायतों सभा-का सभा पति ही श्रेष्ठ कहलाता था इसी की आज्ञा सभी पेशे के लोगों को मानना पड़ती थी। सरकार की ओर से एक-एक मुखिया व सरदार प्रत्येक ग्राम में होता था, जो सभी पेशेवरों की देखा-भाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता था तथा राजा का सभी कर उगाह कर राजा के पास भेजता था पंचायतों द्वारा प्रत्येक ग्राम स्वाधीन रूप से अपना बन्दोबस्त किया करता था, यद्यपि इन सभी पंचायतों की रक्षा का दायित्व राजा का था।

बौद्ध काल

इस समय गाँव काफी सुव्यवस्थित रीति से शासन चलाते थे। शहर बहुत कम थे। राजा बुद्ध के समय १६,००० ग्राम थे। मिथिला एक बड़ा शहर था जिसे छोड़कर सिद्धार्थ तपस्या के लिये गये थे। ग्रामों में छोटी इकाई परिवार थीं पर वह भी एक हजार तक के थे। प्रत्येक ग्राम का एक मुखिया होता था जिसे लोग भोजक भी कहते थे। भोजक को कुछ धन कर और दण्डके रूप में मिल जाता था प्रत्येक समस्या पर ग्राम के सभी लोग सलाह करते थे, भोजक भी उनके साथ ही बैठता था। जातक की कहानियों से पता चलता है कि बोधिसत्व और गाँव वाले सभी मिलकर गलियों रास्तों को साफ करते और उंची-नीची जमीन काटकर बराबर करते थे गांवों के चारों ओर दो दीवालें होती थीं। गांव अपनी आय का दसवाँ भाग राजा को स्वाभाविक ढंग से देते थे। इसको ग्राम का मुखिया या भोजक या सरकारी कर्मचारी खलिहान के सामने नाप लेता था। कभी-कभी खेतों में खड़ी फसल को ही कूत लिया जाता था। कभी-कभी राज्य कर आठवाँ या छठवाँ भाग हो जाता था और कभी कभी-कभी कम भी। एकाध जगह पंचायतों द्वारा कर उगाहने की चर्चा पाते हैं। एक जगह मल्लाहों ने बुद्ध के स्वागत के लिए लोगों को भेजा था, जो न जायेगा ५०० रु० दण्ड देगा। उस काल में मगध में जमीन बेची नहीं जा सकती थी, पर दान के रूप में किसान दे सकता था। उस काल में ग्राम के किसानों के लिए नियम कठिन थे अतः किसानी का कार्य कठिन लगता था।

बौद्ध काल के अन्त तक सभी जातियाँ पंचायतें बना चुकी थीं। हर पंचायत का सरपंच जेठक कहलाता था और यही जेठक राज दरबार का मंत्री भी होता था। इसी जेठक को यमुक्क या सभापति भी कहते थे। यह सरपंच सारे राज्य का कोषाध्यक्ष भी होता था जैसा कि जातक के ३। ३८७ में स्पष्ट लिखा है। यही पंचायतें कानून बनाती थीं। मुकदमें फैसला करती थीं। पंचायत स्त्री पुरुष के झगड़े भी अपने ढंग पर तय करती थीं। विनय पिटिटका में लिखा है कि स्त्रियाँ सजा होने पर सन्यासी बन जाती थीं। इस प्रकार की ग्राम व्यवस्था चन्द्रगुप्त के शासन तक चलती रही पर चन्द्रगुप्त के समय से चाणक्य का इतिहास में प्रवेश होता है। वह एक नयी ही रूप रेखा ले कर आया था।

चाणक्य कालीन ग्राम व्यवस्था

इस काल में ग्राम कई तरह के विभागों में बंटे थे जैसा कि अर्थ शास्त्र से पता चलता है। प्रथम, मध्यम, नीच कोटि के ग्रामों के अलावा भी ग्राम थे, जो कर के बदले राज्य को बेगार देते थे। गाँव के बड़े बूढ़ों की एक पंचायत होती थी और इसी पंचायत का सरपंच ग्राम का मुखिया होता था। प्रत्येक किसान अपने खेत का स्वामी था। गोचर स्थान पंचायतों की ओर से छोड़े गये थे जिन पर सबका सम अधिकार था। इनमें घूमने वाली जातियां डेरा डाला करती थीं। ग्रामों की सीमाएं निश्चित थीं पंचायतों के काम के लिये चौपालें, दालान बने थे गाँव का अर्थशास्त्र स्वतन्त्र था। सब कुछ अपने आप ग्रामावसी मिलकर निपटारा कर लेते थे। प्रत्येक गांव १०० परिवार से ५०० परिवार तक का होता था। जिसमें शुद्ध कृषक अधिक हों, उनकी सीमा दो कोस से अधिक हो। नदी पहाड़ पेड़ों से सीमा निर्धारित की जाती थी। आठ सौ ग्रामों के मध्य में एक स्थानीक, चार सौ के मध्य में द्रोणमुख, दो सौ के मध्य का एक सार्वटिक तथा दस ग्रामों के मध्य का संग्रहण नाम का दुर्ग बनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता था।

उस काल में पंचायतों का संगठन बड़े महत्व का था। इन्हीं छोटी छोटी पंचायतों को मिलाकर संघ बनाये जाते थे जिनका वर्णन अर्थ शास्त्र में भली-भाँति है। यह लोग अपनी सेना का प्रबन्ध स्वयं करते थे। राजा पर विश्वास था। राजा पंचायतों में तोड़-फोड़ मचाये रखता था ताकि संगठन न हो पाये। यह उनकी भेदनीति थी। दस-दस परिवार एक साथ गांवों में रहते थे। ग्रामोंमें मजदूर के साथ मजदूरी तय नहीं होती थी, वह समय के साथ पा जाते थे या आमदनी का १/६० भाग ले लेते थे। इन मजदूरों के भी संघ थे उन सघों को संघ भृताह कहते थे ग्रामों में इस काल बारटर (अदल बदल) पद्धिति का प्रयोग होता था।

कुशान और आँध्र काल

मौर्य काल के पश्चात् कुशान और आँध्र का शासन आता है। इस काल में गाँवों का विकास दक्षिणी भारत तक हो गया था। गाँव घोषों और और पत्तियों में विभक्त थे। आंध्रों के समय मुखिया की नियुक्ति सरकार की ओर से होती थी। वह झगड़ों का निबटारा करता था, करों की वसूली करता था। राजा गांव के मामलों में हस्त क्षेप न करता था किसानों के खेत और घर पर राजा का अधिकार न था। इस समय पेशे के अनुसार पंचायतें बनी थीं, इन्हीं से राज्य को सहायता मिलती थी। महाभारत में लिखा है कि जब दुर्योधन गन्धर्व से हारता है तो कहता है कि पंचायतों के सरपंच को मुख कैसे दिखलाऊंगा। इसका अर्थ है कि सर पंच का काफी महत्व था पंचायतों ही की सज़ा सर्व मान्य थी।

गुप्त काल

गुप्त काल में प्रविष्ट करते ही हम परिवर्तन पाते हैं। मौर्य काल के पश्चात गाँवों की दशा अच्छी नहीं थी पर इस काल में पंचायतें काफी सुचारु रूप से कार्य करती थीं। यहां तक कि नटों और सन्यासियों की पंचायतें भी थीं यह पंचायतें सरकार की ओर से बनायी गई थी। जो लोग पंचायतों का उल्लंघन करते थे उन्हें सज़ा मिलती थी। जो लोग पंचायत की चोरी करते थे या वचन तोड़ते थे उन्हें देश से निकाल दिया जाता था। पंचायतों के पास पंचायती रकम भी थी और इसी पंचायत की नियमावली को समय कहते थे। पंचों को कार्यचिन्तक कहते थे। इन कार्यचिन्तकों की बातों को मानना ही पड़ता था। इन पंचों के निर्णय के लिए राजा जिम्मेदार होता था। पंचायत अपने धन का बड़ा ध्यान रखती थी, यदि किसी को पंच न निकाल पाते थे तो सरकार द्वारा निकाला जाता था। ग्रामों में पंचायतों द्वारा ही पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार होता था। सूर्य के मन्दिर को विक्रमी ४९२ में पंचायत ने ही बनवाया। पेशे की पंचायतों का शासन पीढ़ी दर पीढ़ी चलता था। इस प्रकार संगठन की भावना काफी थी।

हर्ष काल

इसके बाद हर्ष के काल में कोई नवीनता नहीं मिलती है। उसी प्रकार गांव के लोग मिलकर पंचायतें बनाते थे एक पंचायत पंचायतनामा भी लिखती थी। पंचायत में अब सरपंच की जगह श्रेष्ठी होता था। पंचायत लोगों से श्रमदान भी कराती थी। सब बातों का पता बृहस्पति संहिता से चलता है। हर्ष के समय की व्यवस्था बड़ी अच्छी थी। ग्राम का शासन दो प्रकार से होता था, प्रथम वहीं के प्रतिष्ठित नागरिक जिन्हें महत्तर कहते थे शासन करते थे। इन महत्तरों का प्रभाव काफी होता था। इसके अलावा दो अधिकारी और होते थे। अष्ट कुलाधिकरण और ग्रामिक यही ग्रामिक गांव का मुखिया होता था और अष्टकुलाधिकरण आठ कुलों का निरीक्षण करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। मुखिया का पद प्राचीन है। इसके अलावा गाँव का एक लेखा रखने वाला होता था जिसे अशपटलिक कहते थे। यज्ञ घाटों पर कर लगता था। इस कर को वसूल करने वाले शौल्कि कहलाते थे। ग्रामों में बेगार की पद्धति न थी पर श्रमदान करना पड़ता था। ग्राम के लोग हथियार रखते थे, इस प्रकार ग्रामों में लोग शान्ति से जीवन व्यतीत करते थे।

गीत

श्री जगदीश शरण 'शीतल'

वह जीवन ही क्या जीवन है जिस जीवन में उल्लास नहीं।
नर होकर भी मन में तेरे
जब रहती घोर निराशा है।
इस कंटक मय जीवन पथ पर,
फिर चलने की क्या आशा है।
बुद्धि तो पर मनन नहीं या अपने पर विश्वास नहीं।
वैसे तो कीट पतंगे भी,
जीते हैं जीवन भार लिए।
पर तू तो जग में आया है,
कुछ ऊँचे ही उद्गार लिए
वह हृदय नहीं जिसमें मिलता परहित का आभास नहीं।
वर्षा की चोटें सह सह कर,
हैं पर्वत फिर भी दृढ़ रहते।
सागर की चंचल धारा में,
जल पोत निरंतर ही बहते।
जलपोत नही है तूफाँ में जब रहने का अभ्यास नहीं।
यह जीवन है संघर्षों का,
इस जीवन में विश्राम नहीं।
हंस हंस कर आगे बढ़ना है,
यहाँ रोने का कुछ काम नहीं।
वह मानव क्या दुख में जिसके हो अधरों पर मधुहास नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाँसी का कैदी--मैं

लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता

मैं गाड़ी में बैठा शहर की सड़कों को रून्दता हुआ चला जा रहा था।

अचानक अदालत का दरवाजा आ गया मैं गाड़ी में से उतरा। मैं अकेला ही नहीं था बल्कि मेरे साथ थे मेरे पहरेदार ४ सिपाही, अदालत में देखा आदमियों की भीड़ लगी हुई थी। मेरे को देखते ही लोगों में कोलाहल मच गया।

अदालत के एक कमरे में एक कुर्सी पर चीफ जज बैठे थे। उनके सामने रखी हुई टेबिल पर गुलाब के फूलों से सजे गुलदस्ते टेबिल की शोभा बढ़ा रहे थे। टेबिल के एक कोने पर बिजली का पंखा लगा हुआ था। जज के सामने टेबिल के एक तरफ पुलस वकील खड़ा हुआ था और एक तरफ खड़ा हुआ था शहर का प्रसिद्ध वकील अरुण गुप्ता।

मैं इसी कमरे में लाया गया। मेरे हाथ पैरों में हथकड़ियां व बेड़ियाँ थीं।

आज मेरे भाग्य का अन्तिम दिन है, आज ही निर्णय होने जा रहा है कि मुझे छोड़ दिया जाय या फांसी दी जाय। मेरा हृदय धड़क रहा था कि न जाने क्या होने जा रहा है।

मैंने देखा उस कमरे में लोगों की भीड़ लगी हुई थी। क्यों ? मुझे देखने के लिये।

इतने में जज साहब खड़े हुए और उन्होंने फैसला सुनाया जो मेरे जीवन का अन्तिम फैसला था ..... हमने सोचा और समझा .... हम इस निर्णय पर पहुँचे कि वास्तव में इसी आदमी ने कत्ल किया है, इसलिये इसको दसवें महीने की १५ तारीख को मैनलो पार्क में फांसी दी जायगी।

यह कहकर जज साहब इजलास छोड़कर बाहर चले गये। पुलिस का वकील मुस्कराया। मेरी मां वहीं फूट फूट कर रोने लगी मैंने सुना कई आदमी कह रहे थे—कि ठीक हुआ फांसी ही होनी चाहिये थी, और कई एक दूसरे से पूछ रहे थे कि अरे यार जाओगे उस दिन मैनलो पार्क में ? मैं गाड़ी में बैठ कर फिर अपने कारागृह में आ गया।

आज मैं कैदी हूँ, सांकलों में जड़ा हुआ—फांसी कोठरी का रहने वाला हूँ। एक भीषण निष्ठुर हत्या कलंक की कालिमा मुझको घेरे हुए है। चौबीसो घंटे मेरे हृदय में द्वन्द मचा रहता है, मन कहता है—फांसी !

हा ! हा ! कारागृह का यही प्रतिबिम्ब है। अरे यहां की तो प्रत्येक वस्तु पहरेदार लोहे की गरादे और ये पत्थर की दीवारें सब जीवित मालूम होती हैं सब मिलकर मेरा पहरा दे रहे हैं—और यह कारागृह, चूने पत्थर का बना हुआ निष्ठुर कारागृह - मुझको मानों इसने जकड़ कर बांध रखा है। अरे इस कारागृह को भी मुझ पर विश्वास नहीं !

और इस कारागृह की अन्धेरी कोठरी—यही कोठरी अब मेरा जीवन क्षेत्र है इसी निर्जन कोठरी में मुझे तीन माह बिताने हैं। क्या सिर्फ तीन माह ही ? मेरे को ऐसा लगा मानो कोई मुझसे प्रश्न कर रहा था मैंने चारों तरफ देखा पर उस कोठरी में मैं ही अकेला था, हाय मैं ही अभागा था, सोचा और समझा कि उस कोठरी की दीवारें ही ऐसा कह मेरा अट्टहास कर रहीं थीं। इस कोठरी की २ छोटी छोटी खिड़कियां भी अपने को मोटे मोटे सरियों से घेर मेरा मजाक उड़ा रही थीं। इस कोठरी के छोटे झरोखे में से कभी कभी मुझे दिख जाती थी दुनियां की छत—नीला आसमान और ऊषा की लाली में चहचहाती हुई चिड़ियां, और कभी कभी सुनाई दे जाती थी कोयल की कूक ! कूक ! !

अगस्त का महीना है और उसकी है बास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारीख। निर्मल स्निग्ध और सुन्दर प्रभात है। कोयल की कूक इस बात की साक्षी है कि प्रकृति पृथ्वी को बसन्त का उपहार दे चुकी है। परन्तु मेरे जीवन बाग में अब भी पतझर ही है।

हाय एक दिन था जब मैं भी स्वतन्त्र था, और मुझे पतझर में भी बसन्त दिखता था मैं भी बागों में जाकर नित्य जीवन के लवरेज तराने छेड़ा करता था। लोग मुझे देखते थे मैं शहर की सड़कों को रूंदा करता था और सदा डूबा रहता था कल्पना के सागर में। पर आज यह छोटी सी कोठरी ही मेरा सर्वस्व है इसी में उठता हूँ, बैठता हूँ और निद्रा देवी की आराधना करता हुआ लेट जाता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि अपने को भूल जाऊं पर असफलता ही मेरा साथ देती है। उसके कठिन स्पर्श से मैं अछूता नहीं रह सका। दिन रात मेरे को कोई घेरे रहता है, न जाने मेरे कमरे में कौन घूमा करता है जिसकी जबान पर एक ही शब्द है—फांसी।

मैं सोचता हूँ भाग जाऊँ-हाँ भाग जाना ही अच्छा है दरवाजा खिड़की छत सबको पार करके जैसे भी हो भाग जाऊं यदि ये मेरा मांस लेलें तो भी मैं अपनी सूखी हड्डियों को लेकर भाग जाऊँ।

परन्तु हाय मैं कैसे भाग जाऊँ ये सिपाही ये फांसी कोठरी की मर्म भरी दीवारें क्या मुझे देख नहीं लेंगी? अवश्य मेरे में इतनी शक्ति भी शेष नहीं कि मैं इनका उच्छेद कर सकूं-अभागा हूँ-आशा नहीं!

हाय अब तो इन पत्थर की दीवारों ने मुझे और कड़ी नजर से बांध लिया है पहरेदार सतर्क रहकर मेरा पहरा देने लगे हैं कि कहीं मैं आत्म हत्या न कर बैठूं और कहीं ऐसा न हो कि जल्लाद मेरे गले में फांसी की डोरी न लगा सके, और लाखों आदमियों की आशा पर निराशा का पानी न फिर जाय। फांसी कोठरी की दीवारें सावधान थीं और घूर घूर कर देखा करतीं थीं कहीं मैं कुछ कर न बैठूं।

डा० वर्मा जो किसी से सीधी तरह बात न करते थे, मेरे पास दिन में तीन तीन बार आते हैं और पूछते हैं कि मेरी तबियत कैसी है जेलर ठीक बर्ताव करता है या पहिले की तरह तंग करता है।

अब तो मुझे जेल के सहन में घूमने की इजाजत मिल गई थी, आगे पीछे दो सिपाही चलते थे मानो नेहरू जी ही भ्रमण करने जा रहे हों। यहीं नहीं दो एक अभागे कैदियों से बातचीत करने की भी स्वीकृत मिल गई थी। आज ये कैदी भी सहानुभूति प्रकट करते थे जो कि मुझे फांसी कहकर जलाया करते थे, चिढ़ाया करते थे।

"अरे चलोगे नहीं क्या?" ये शब्द सुनते ही मैं भड़भड़ाते हुए उठ बैठा। मैंने आंख मलकर आश्चर्य करते हुए पूछा?

"कहां"

"अरे तुमको नहीं पता" पुलिस वाले ने भी आश्चर्य प्रकट किया।

"क्या?" मैंने झल्लाते हुए कहा फिर जरा मुस्कराने का असफल प्रयत्न किया।

"आज सौ कैदी और आने वाले हैं।"

'यहीं?" मैंने प्रश्न किया।

"हां'

"क्यों पकड़े गये हैं?"

"इन्होंने षडयन्त्र किया था" मुझे उसका यह उत्तर धुन्धला सुनाई दिया अच्छा कहता हुआ मैं कोठरी से निकल कर चल दिया।

थोड़ी देर बाद मैं लौटकर आया। मेरे आते ही पुलिस वाला खड़ा हो गया मानो उसने मेरा अभिवादन किया हो। हम कोई पचास सौ गज ही चले होंगे कि सामूहिक आवाज आने लगी। जूतों की चरमराहट के कारण आवाज में धुन्धला पन था। मैंने आगे बढ़ना उचित न समझते हुए अपनी कोठरी की ही ओर कदम रखे मैंने देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि पुलिस वाला आगे बढ़ा जा रहा था उसी गति से उसी लग्न से। मैं कमरे में आकर उसी टूटी चारपाई पर बैठ गया। रह रह कर मुझे याद आती थी न जाने किस की। अचानक वही सामूहिक आवाज सुनाई देने लगी। जितनी देर मैं बैठा रहा मुझको आवाज की तीव्रता का आभास होने लगा मैं इसका कारण बहुत देर सोचने के उपरांत भी नहीं समझ सका।

कुछ ही क्षणों में मेरी आंखों ने देखा कि एक जन समूह मेरी खिड़की के सामने खड़ा था। खिड़की के सामने यह भीड़ इस तरह खड़ी थी जिस तरह लोग-बाग सिनेमा के टिकिट खरीदने के लिये खड़े होते हैं। मैं यह समझ गया कि वो ही कैदी है जो इस कारागार में लाये गये हैं। मैंने देखा मेरा कोई मजाक उड़ा रहा है, कोई मुझे घूर घूर देख रहा है जिनकी आंखें मुझे मूक स्वर में कुछ कह लज्जित कर रही हैं। कोई कह रहा है—अरे रुक यार जरा फांसी की आसामी तो देख लेने दे, तो कोई व्यंग में कह रहा था ये हैं इस जेल के मालिक। यह सुन सुनकर मेरा हृदय धड़क रहा हैं। फांसी का आसामी सुनते ही मुझे वह क्षण याद हो आये जिस समय कि मैंने थानेदार को बन्दूक का निशाना बनाया था।

आज मैं अच्छा हूँ। मेरे अच्छे होते ही मेरी खातिर पर मुहर लग गई। मैं तो यह सोच रहा था कि तीन माह इसी तरह खातिर में बीत गये पर मेरे ठीक होते ही जेलर को इस बात की स्वीकृति मिल गई कि वह मुझे तंग करे। घंटे के घंटे फिकर में सरक जाते थे। रह रह कर याद आती थी फांसी!

अब मुझे नींद नहीं आती है। रात में मेरे भाई दिखते हैं। मैं खाट पर से उठ बैठता हूँ और टटोलते २ लैम्प उठाता हूँ। इस बीच माँ का चित्र मेरी आंखों के सामने रील की भांति आता है। हर एक चित्र में एक नवीनता रहती है। मां के इन चित्रों और भाईयों को रोते देख हृदय की धड़कन के कारण मेरे हाथ में से लैम्प छूट जाता है, और अन्धकार में टटोलते टटोलते मैं अपनी उसी टूटी खाट पर आकर गिर पड़ता हूँ। सुबह उठते ही मैं देखता हूँ कि मेरे हाथों में मकड़ी का जाल लगा होता है।

आज सुबह ही आकर जेलर ने मेरी कोठरी के किवाड़ खोल दिये। खातिर ने फिर से पुराना रुप धारण कर लिया। आज मेरी ऐसी खातिर हुई जैसी शायद मेरे ससुर ने ससुराल में भी नहीं की थी। जेलर भला कैसा मीठी मीठी बातें कर रहा है मधुर दृष्टि से देखता है हा! हा! कारागृह का यही प्रतिबिम्ब है।

इतने में उसने मीठे शब्दों में कहा मेरे साथ आईये। मैं उठकर उसके पीछे हो लिया। बाहर से एक बार मैंने निर्जन कमरे की ओर देखा इतने दिनों का आश्रम कुछ ममता हो चली थी। मन मूक स्वर में कह रहा है मैं इस कमरे को सूना छोड़ चला हूँ परन्तु अधिक देर के लिये नहीं १५ दिन तक अवश्य कोई इस कमरे में नया महमान आ जायेगा।

मैं जेल के दरवाजे पर पहुँचा देखा गाड़ी बाहर खड़ी थी—हां यह गाड़ी थी जिस में मैं बैठकर अदालत जाया करता था और मेरे साथ सिपाही होते थे। गाड़ी क्या थी लोहे का दैत्य था, सरियों का जाल बिछा था कि कहीं मैं किसी को देख न लूं।

मैंने इस कब्र में जीते जी घुसने के पहिले एक बार फिर से उसी कोठरी को देखा जिसका आश्रय मैंने लिया था।

मैं गाड़ी में बैठकर सड़क पर जा ही रहा था कि अचानक मुझे मेरा घर दीख पड़ा और मुझे दीख पड़ी मेरी मां जो हजारों आदमियों के बीच सड़क के किनारे मुझे देखने के लिये मेरे भाइयों को लिये खड़ी थी।

खड़ खड़ करती हुई गाड़ी निश्चित स्थान पर पहुँच गई मैं फिर से एक कोठरी में जाकर बिठाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया जिसकी दोनों खिड़कियाँ लोहे के सींकचों से बन्द थीं। इसी समय टन टन करके घंटा घर की घड़ी ने बारह बजा दिये मैंने सोचा और समझा अब मेरी जिन्दगी के ६ घंटे और शेष हैं।

मैंने देखा उस कमरे में मैं अकेला ही नहीं हूं। मेरी माँ और भाई भी उसी कमरे में हैं। मुझे देखते ही माँ की आँखों में आंसू न रुक सके और भाई भी फूट फूट कर रोने लगे।

"महेन्द्र कहां है" मैंने मां से अपने आंसू पौंछते हुए पूछा।

"बेटा वो तेरी याद में तुझसे पहिले ही चला गया।" यह सुनते ही मैं धरती पर गिर पड़ा।

मैंने सुना मां कहती जा रही थी बेटा तेरे बिना घर का खर्च चलना मुश्किल हो गया है। तेरी बहिन को उसके आखिरी समय मेरे पास इतने पैसे भी नहीं हैं कि मैं उसके मुँह में डाक्टर की दवा डाल सकूँ। तेरे भाई रात को भूंख से तड़फते तड़फते मेरी सूखी हड्डियों से चिपक जाड़ों की रात बिताते हैं। हाय बेटा अब तू चला मैं क्या करूँगी।" कहते हुए माँ ने आँखों के आंसू अपनी जरजर हुई धोती से पोंछे।

चार बज चुके हैं। अब केवल २ ही घंटे शेष हैं, दो घंटे बाद मैं अपनी माँ को और बिलखते हुए भाइयों को छोड़ जाऊंगा और छोड़ जाऊंगा इस धरती को जहाँ मैंने २० साल बिता दिये हैं।

मैंने देखा मेरे कमरे में एक अखबार पड़ा था जिसके मुख पृष्ठ पर छपा था।

"फांसी का मुलजिम"

अखबार वालों ने भी मेरी खबर बड़े बड़े अक्षरों में छापी थी।

घंटा घर की वह घड़ी मेरी ओर देखकर अट्टहास करती हुई मुझे अन्तिम समय की याद दिला रही है। सूर्य अस्त हो चुका है केवल उसकी लालिमा अवशेष है। मैंने इसी लालिमा में देखा उस मानव समुदाय को जो मुझे देखने के लिये अपने साथियों सहित कोसों दूर से आ उस पार्क में एकत्रित था।

अब मैं फांसी के तख्ते पर खड़ा था, और जल्लाद रस्सी का फंदा हाथ में लिये हुए निर्मम घड़ी की ओर देख रहा था।

शहर के प्रतिनिधियों ने आकर मेरे गले में हार डाले। आज हार के फूल भी मुरझा रहे थे। मैंने सुना इन हारों की ओर संकेत कर कोई कह रहा था।

..... फूलों की भारी भीड़ तुझे घेरे है जो .....
यह भीड़ नहीं है कफन उढ़ाया गया तुझे

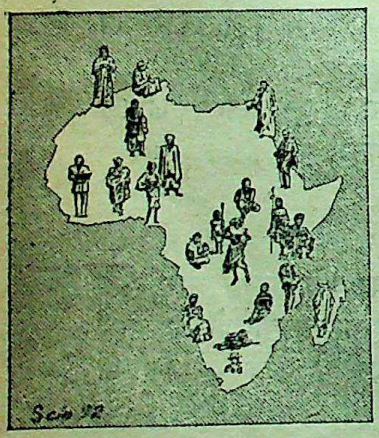

अफ्रीका में ७०० भाषाएं बोली जाती हैं

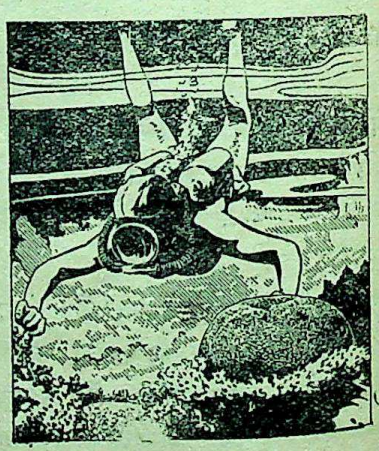

विश्व में गोताखोरी का रिकार्ड ३५०फिट गहराई तक का है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत संघ में नेहरू जी

भारतीय गणतंत्र के प्रधानमंत्री एवं परराष्ट्र मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू सरकारी यात्रा पर अपने दलबल सहित ७ जून को मास्को पहुँचे।

केन्द्रीय हवाई अड्डा सोवियत संघ और भारत के गणतंत्र की राष्ट्रीय ध्वजाओं से सुशोभित था। ६ बजे शाम को वायुयान वहां उतरा। श्री जवाहर लाल नेहरू, उनकी पुत्री इन्दिरा गांधी, भारतीय गणतन्त्र के परराष्ट्र मन्त्रालय के महासचिव श्री एन० आर० पिल्ले, तथा भारतीय गणतंत्र के परराष्ट्र मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री एम० ए० हुसेन वायुयान से उतरे। बहुत से सरकारी आदमियों तथा विदेशी राजदूतों ने हवाई अड्डे पर स्वागत किया।

मास्को के तरुण पायोनियरों ने मेहमानों को गुलदस्ते भेंट किये। श्री जवाहरलाल नेहरू तथा श्रीमती इन्दिरा गांधी ने पुष्पमालाओं के लिए बच्चों को हार्दिक धन्यवाद दिया। भारतीय दूतावास के अधिकारियों के बच्चों ने कामरेड एन० ए० बुलगानिन और श्री जवाहरलाल नेहरू को फूल भेंट किये।

भारतीय गणतंत्र के राष्ट्रीय गान की गम्भीर ध्वनि के पश्चात् सोवियत संघ के राष्ट्रीयगान के भव्य तराने गूंज उठे। कामरेड एन०ए० बुलगानिन और श्री जवाहरलाल नेहरू ने गार्ड आफ आनर का निरीक्षण किया।

श्री नेहरू का भाषण

श्री जवाहरलाल नेहरू ने माईक के सामने खड़े होकर निम्न भाषण किया। यहां सोवियत संघ में आने की मेरी दीर्घकालीन इच्छा रही है। इस प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण शहर में मैं एक अर्से से आना चाहता था। आज यह इच्छा पूरी हुई है। यहां आकर मुझे बहुत खुशी हुई है। मैं अपने को एक यात्री समझता हूँ और आपकी सरकार और जनता के लिए महान् शुभेच्छाएं लिए हुए एक यात्री के रूप में यहां आया हूँ. मैं आपके विषय में और भी अच्छी तरह तथा और भी अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए यहां आया हूँ। और मेरा पूर्ण विश्वास है कि मेरे आने से हमारे सम्बन्ध और भी सुदृढ़ होंगे। इस हार्दिक एवं मैत्रीपूर्ण स्वागत् के लिए मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ। हवाई अड्डे से मेहमान उस इमारत की ओर चले जहां मास्को में श्री जवाहर लाल नेहरू का आवास होगा। लेनिनग्राद राजमार्ग की दोनों ओर कतार बांधे हजारों श्रमिक जनता ने उत्साहपूर्वक उनका अभिनन्दन किया, उत्तरोत्तर बढ़ती हुई सोवियत-भारत मैत्री के सम्मान में हर्ष ध्वनि की, तथा भारत की समृद्धि एवं शांति के लक्ष्य की सफलता के लिए शुभेच्छाएं प्रकट कीं।

गोर्की मार्ग भी जनाकीर्ण था। बहुतों के हाथ में फूलों के गुलदस्ते थे। सड़क के एक किनारे से दूसरे किनारे तक बृहत् पताकाओं के ऊपर ये शब्द अंकित थे। 'भारत के प्रधानमंत्री श्री नेहरू का अभिवादन' 'स्वागतम्.'

८ जून को प्रधानमंत्री श्री नेहरू व मार्शल बुलगानिन में आज सुबह उनके क्रेमलिन कार्यालय में ९० मिनट तक औपचारिक वार्ता हुई। इससे पहले वे गत रात वे अनौपचारिक रूप से बातचीत कर चुके थे। इन दोनों ही बैठकों में रूस के विदेश मंत्री श्री वी. एम. मोलोतोव उपस्थित थे। उन्होंने बाद में भारतीय प्रधान मंत्री को एक भोज दिया जिसमें रूस की सरकार के उच्च अधिकारी उपस्थित थे।

मार्शल बुलगानिन से भेंट के बाद श्री नेहरू ने लेनिन व स्टालिन के शवों को देखा, जिन्हें मसाला भर के सुरक्षा के साथ एक विशेष तापमान में रखा गया है। स्टालिन के शव को, जो सजीव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लग रहा था. देख कर श्री नेहरू अत्यधिक प्रभावित हुए। स्टालिन के शव को देख कर ऐसा लगता था, जैसे वे वर्दी पहन कर सोये हुए हैं।

९ जून को भारत के प्रधान एवं परराष्ट्र मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ के सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष श्री के० ई० वोरोशिलोव से मिले।

९ जन को प्रधानमंत्री श्री नेहरू अपने दलबल सहित मास्को के एक हवाई जहाज बनाने का कारखाना देखने गये जो इस तरह के सबसे पुराने कारखानों में एक है।

कारखाने के श्रमिकों ने मेहमानों का प्रेमपूर्ण स्वागत किया। श्री जवाहरलाल नेहरू ने कारखाने के संचालक पी० वोरोनिन से बातें कीं और सामान्यतया उत्पादन के संघटन में एवं विशेषतया हवाई जहाजों के निर्माण में दिलचस्पी दिखाई। प्रधानमंत्री श्री नेहरू द्वारा पूछे गये सभी प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दिये गये।

मेहमान कारखाने के असेम्बली शाप (कलपुर्जे जोड़ने की जगह) से हवाई अड्डे पर गये और वहां उन्होंने जैट हवाई जहाज को देखा। कारखाने के पोलीक्लिनिक का मुआईना करते हुए मेहमानों ने कारखाने के श्रीमकों एवं कर्मचारियों की स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा व्यवस्था के बारे में जिज्ञासा की।

× × ×

उसी दिन के० ई० वोरोशिलोव ने भारतीय गणतंत्र के प्रधानमंत्री एवं परराष्ट्र मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के सम्मान में भोज दिया जो सरकारी यात्रा पर मास्को आये हैं। भोज का वातावरण मैत्री एवं हार्दिकतापूर्ण था।

× × ×

९ जून को संघ की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष एन० ए० बुलगानिन ने भारतीय गणतंत्र के प्रधानमंत्री एवं परराष्ट्र मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के सम्मान में एक समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में श्री नेहरू, उनकी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, तथा उनके दल के अन्य सदस्य उपस्थित थे। समारोह का आरम्भ भारतीय गणतंत्र तथा सोवितय संघ के राष्ट्रीय गानों से हुआ।

श्री नेहरू और उनकी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने दलबल सहित उद्यानों, खेतों और फव्वारों का निरीक्षण करते हुए प्रदर्शनी भूमि की सैर की। जिधर भी मेहमान जाते थे तुमुल हर्षध्वनि के साथ उनका स्वागत होता था।

प्रदर्शनी के मंडपों की सैर मुख्य मंडप से आरम्भ हुई जिसपर समाजवादी कृषि के विकास का इतिहास चित्रित है। इसके बाद मेहमान उजबेक जनतंत्र का मंडप देखने गये जो कपास, रेशम, तथा फारस के मेम्नों के रोएं के लिए विख्यात है। श्री नेहरू ने फारस के मेम्नों के रोयें में जो वहाँ प्रदर्शित थे दिलचस्पी ली। तुरुमेनिया में श्री नेहरू का ध्यान एक हाथ के बुने वृहज्त् कालीन की ओर आकृष्ट हुआ जिसमें 'सोवियत जातियों की मैत्री' के प्रतीक बहुजातीय सोवियत राज्य के प्रतिनिधियों का चित्रण है। कालीन का आकार प्रकार २४ वर्गमीटर है। इसी मंडप में श्री नेहरू ने एक मानचित्र में दिलचस्पी ली जिसमें काराकूम नहर का मार्ग दिखलाया गया है जो इस समय तुर्कमेनिया में बनाई जा रही है। कई सौ किलोमीटर लम्बी यह नहर जलहीन मरूभूमि से गुजरेगी और लगभग १५०,००० हेक्टर में सिंचाई करेगी।

कृषि के यंत्रीकरण एवं विद्युतीकरण के मंडप में श्री नेहरू ने कपास चुनने की सोवियत मशीनों पर तथा उत्कृष्ट सर्विस के लिए विख्यात जी० ए० जेड०-६९ मोटरगाड़ियों पर विशेष ध्यान दिया।

पशुपालन विभाग में श्री नेहरू और उनके दल ने खुली हवा में विभिन्न नस्लों के खाद्य एवं दुधारू पशुओं, भेड़ों का मुआईना किया जो सामूहिक एव राज्यीय कृषिशालाओं में पाले-पोसे गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। मेहमानों का ध्यान ओरेल (यहां के घड़े मशहूर होते हैं) के तीन घोड़ों के रथ की ओर आकृष्ट हुआ जिन पर जीन कसी हुई थी।

मेहमानों ने जलस्रोत-साधन के मंडप का मुआईना किया तथा शक्तिशाली जल-विद्युत् स्टेशनों के निर्माण को चित्रित करने वाली प्रदर्शित चीजें देखीं। श्री नेहरू ने मध्य एशियाई जनतंत्रों की नयी सिंचाई पद्धति में दिलचस्पी ली जिससे सिंचित भागों के सभी कामों—नहरों की यंत्रीकृत सफाई तथा सिंचाई व्यवस्था के अन्तर्गत आबपाशी और जल-वितरण के नवीनतम टेकनीकों का यंत्रीकरण सम्भव है।

दर्शकों की पुस्तक में श्री जवाहरलाल नेहरू ने ये शब्द लिखे—"यह एक आश्चर्यजनक प्रदर्शनी है और मुझे सिर्फ इसी बात का अफसोस है कि मैंने यहां और अधिक समय नहीं बिताया।"

१० जून को प्रातः काल मेहमान स्कूल नं० ५४५ में गये। छात्रों और शिक्षकों ने प्रेमपूर्वक श्री नेहरू का अभिवादन किया और उन्हें फूल भेंट किये। तूफानी हर्षध्वनि के बीच स्कूल के बच्चों ने श्री जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती इन्दिरा गांधी को तरुण पायोनियरों की टाइयां भेंट कीं।

उनके हार्दिक स्वागत से गद्गद् हो श्री नेहरू ने बच्चों को अपनी चन्दन की छड़ी भेंट की जिसको उन्होंने प्रायः कभी भी अपने से अलग नहीं किया था।

दर्शकों की पुस्तक में श्री नेहरू ने यह लिखा। "मुझे इस स्कूल में आकर बच्चों के खिले चेहरे देखने से खुशी हुई है। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लिखा। "मैं आशा करती हूँ कि इस स्कूल में हमारे आने से भारत के विषय में और भी अधिक दिलचस्पी पैदा होगी और हमारे देशों के बच्चों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए नूतन सम्भावनाएं पैदा होंगी।"

स्कूल के बच्चों द्वारा किये गये स्वागत् में श्री नेहरू ने कहा-"आपके स्कूल में आकर मुझे बहुत खुशी हुई है और मैं आपके अभिवादन भारत के स्कूली बच्चों तक पहुँचा दूंगा।"

इसके पश्चात् मेहमानों ने भूगर्भ-स्थित मास्को का मुआईना किया। आर्बात्स्काया स्टेशन पर जहाँ से उन्होंने अपना परिभ्रमण शुरू किया हजारों मास्कोवासियों ने भारत के प्रधान मंत्री की जय-ध्वनि की। भूगर्भ रेलवे निर्देशक ए० येफोव ने भूगर्भ-स्थित प्रासादों की स्थापत्यकला के विषय में तथा जटिल वैद्युतिक यांत्रिक प्रसाधनों के बारे में जिन से रेलगाड़ियों को बिल्कुल ठीक ठीक चलाना सम्भव है, विस्तारपूर्वक बताया। कीवस्काया-कोल्तसेवाया स्टेशन पर श्री नेहरू ने एक रंगीन पैनेल की तारीफ की जिसमें रूस के साथ यूक्रेन के पुनर्मिलन की ३०० वीं सालगिरह के अवसर पर यूक्रेनी जनता के लोकप्रिय समारोहों का चित्रण है। मेहमानों ने रेलगाड़ी में ड्राइवर के डब्बे का मुआईना किया जिसमें उन्होंने सफर किया और ट्रेन-ड्राईवर श्रीमती फेदोरोवा तथा उसकी सहायिका श्रीमती विश्नेवस्काया से जान-पहचान की

भूगर्भ रेलवे का निरीक्षण करने के बाद श्री नेहरू अपने दलबल सहित मोटरगाड़ी में लेनिन पर्वत पर मास्को विश्वविद्यालय की नई इमारत देखने गये। प्रधान ने शिक्षकों और छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा—"आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। आपका देश अत्यन्त विशाल है। लेकिन आपके लोगों के मस्तिष्क एवं हृदय की महानता देश की विशालता से भी बड़ी है।

श्री नेहरू ने यह विश्वास प्रकट किया कि यह विश्वविद्यालय न केवल सोवियत संघ वरन समस्त संसार की जनता के बीच मैत्री को सुदृढ़ बनाने का कार्य सम्पन्न करेगा।

मेहमानों ने छात्रों का संस्कृति सदन तथा अर्थशास्त्र विभाग के छात्रों का छात्रावास देखा।

विश्वविद्यालय से मेहमान सोवियत संघ की कला अकादमी में आयोजित "भारत की कला एवं संस्कृति" प्रदर्शनी देखने गये जहां सोवियत संघ के संस्कृति मंत्री एन० मिखालोव, सोवियत संघ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कला अकादमी के अध्यक्ष ए० गेरासीमोव तथा मास्को के चित्रकारों और मूर्तिकारों के एक बड़े दल ने उनका स्वागत किया। प्रदर्शनी देखने के पश्चात् श्री नेहरू ने दर्शकों की पुस्तक में यूं लिखा। "इस अद्भुत संग्रह को देख मैं चकित एवं आनन्द-विभोर हूँ।"

सोवियत संघ की कला अकादमी के अध्यक्ष श्री ए० गेरासीमोव ने मेहमानों को अलबम और पुस्तकें भेंट कीं। दोपहर को नेहरू जी ने २ घन्टे तक का० बुलगानिन से बात चीत कीं इसके बाद भारतीय दूतावास में भोज हुआ। जिसका वातावरण बहुत मैत्रीपूर्ण था।

स्टालिनग्राड

११ जून को प्रधान मन्त्री श्री नेहरू अन्दरूनी रूस की दो सप्ताह की यात्रा के आरंभ में आज सुबह इस्पात के कारखानों के ऐतिहासिक नगर स्टालिनग्राड में पहुँच गये।

स्टालिनग्राड, जो ऐतिहासिक द्वितीय विश्वयुद्ध में स्टालिन की विजय और हिटलर की पराजय का अखाड़ा रह चुका है, कल उस समय तुमुल हर्षनाद से गूंज उठा, जबकि इस नगर के निवासियों ने भारतीय प्रधानमन्त्री श्री नेहरू के मास्को से यहां आगमन पर उत्साहपूर्ण स्वागत किया।

स्वागत के लिये सड़क के दोनों ओर खड़ी जय जयकार करती हुई भीड़ तथा युद्ध के ध्वंसावशेषों को पार करने के बाद श्री नेहरू शहर के बीचो बीच खड़ी उस बिल्डिंग को देखने गये, जहां मार्शल ज्हुकोव ने नाजियों की तीनो सेनाओं के सेनापति जर्मन फील्ड मार्शल विल्हम पालास से आत्मसमर्पण कराया था।

बाद में श्री नेहरू ने स्टालिनग्राड के २५ युद्ध स्मारकों में से तीन पर पुष्प-मालायें चढ़ाई। इनमें एक वोल्गा के तट पर स्थित लेनिन हिल का स्मारक भी था, जहां ८० हजार लाल सैनिकों ने नगर की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी।

स्टालिनग्राड की रक्षा-प्रदर्शनी में श्री नेहरू ने जर्मनों से छीने हुए हथियार तथा युद्ध की ट्राफियां देखीं। श्री नेहरू ने वह तलवार भी देखी, जो इंग्लैंड के पंचमजार्ज ने इस नगर की बहादुरी के लिये उपहार में दी थी। यह तलवार खुद श्री विस्टन चर्चिल ने १९४४ में श्री स्टालिन को पहुँचाई थी।

दोपहर बाद श्री नेहरू स्टालिनग्राड के निकट वोल्गा और दोन नदियों के संगम स्थल पर बन रही रूस की भीमकाय जलविद्युत योजना देखने गये। यह योजना जब पूरी हो जायगी तो विश्व-विख्यात दनीपर बांध से भी तीन गुना बड़ी होगी

जब प्रधानमंत्री एक किश्ती पर बैठ कर वोल्गा की सैर करने के लिये निकले तो वोल्गा के हजारों नाविकों ने तुरहियां बजाकर अपने मान्य अतिथि का स्वागत किया।

क्रीमिया में

१२ जून को प्रधान मंत्री नेहरू स्टालिनग्राड से क्रीमिया आ गये थे। सिम्फरोपोल में नेहरू जी का भारी स्वागत हुआ। यह शहर छुट्टी में खाली हो जाता है परन्तु लोगों ने नेहरू के दर्शन के लिए छुट्टी नहीं मनाई। पायनियरों ने नेहरू को टाइयाँ पहनाईं। नेहरू ने बच्चों को चन्दन की छड़ी दी जिस पर हाथी दाँत का काम भी था। नेहरू जी ने यहाँ से याल्टा के लिए प्रस्थान किया। उन्होंने कैस्पियन सागर की सुन्दरता को देखा मैनशिकोव ने कैस्पियन तट की प्रसिद्ध वस्तुओं की ओर इशारा किया। यह सुखद यात्रा २ घंटे तक जारी रही। याल्टा में नेहरू जी ने आराम से रात बिताई और अगले दिन तिबलिसी पहुँचे।

तिबलिसी

भारत के प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू अपने दल-बल सहित १३ जून को यहां पहुँचे। तिबलिसी का हवाई अड्डा भारतीय गणतंत्र, सोवियत संघ तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जार्जियाई जनतंत्र की राष्ट्रीय ध्वजाओं से सुशोभित था। लाल पताकाओं पर ये शब्द हिन्दी, रूसी, एवं जार्जियाई भाषाओं में लिखे थे "प्रधान मंत्री श्री नेहरू का अभिवादन! स्वागतम्!, "भारत की शाँतिप्रिय जनता चिरंजीवी हो!" तथा "भारत और सोवियत संघ की जनता की मैत्री चिरंजीवी हो!"

तिबलिसी के सार्वजनिक क्षेत्रों के अनगिनत प्रतिनिधियों ने मेहमानों का स्वागत किया तरुण पायोनियरों ने श्री जवाहरलाल नेहरू को पुष्प भेंट किए। भारतीय गणतंत्र, सोवियत संघ तथा जार्जियाई जनतंत्र के राष्ट्रगान हुए।

जी० डी० जावारिवश्विली ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि सोवियत संघ और भारत विश्वशाँति को सुनिश्चित बनाने के अपने संयुक्त जीवन्त प्रयास द्वारा एक दूसरे के निकट आ रहे हैं। उन्होंने यह विश्वास प्रकट किया कि सोवियत संघ में श्री नेहरू के आने से दोनों देशों के मैत्री पूर्ण सम्बन्ध और भी सुदृढ़ होंगे।

श्री नेहरू ने हार्दिक स्वागत के लिए तिबलिसी की जनता को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी वे गये हैं उनका प्रेमपूर्ण हार्दिक स्वागत हुआ है। इस स्वागत से वे भारत और सोवियत संघ की जातियों के बीच समानता का अनुभव करते हैं। श्री नेहरू ने कहा कि शाँति की सदा भारी आवश्यकता रही है और इस समय तो विशेष रूप में।

श्री नेहरू के वक्तव्य के बाद देर तक हर्षध्वनि होती रही।

१३ जून को थोड़ा आराम करने के बाद प्रधान मंत्री श्री नेहरू और उनकी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने अपने दलबल सहित रुस्तावी के दृश्य देखे। रुस्तावी एक नगर है जिसका विकास आज से दस साल पहले तिबलिसीके निकट स्तपीय भूमि में हुआ था रुस्तावी की श्रमिक जनता ने श्री नेहरू का हार्दिक स्वागत किया। नगर की सड़कों के किनारे कतार बाँधे हजारों लोगों ने भारतीय मेहमानों का प्रेमपूर्ण अभिवादन किया।

रुस्तावी में श्री नेहरू ने ट्राँसकाकेशियाई लोहे और इस्पात का कारखाना देखा जिसका नाम स्तालिन के नाम पर रखा गया है। उन्होंने कारखाने के उत्पादन, उसके टेकनिकल साज-सामान तथा कार्यकर्त्ता मंडल के प्रशिक्षण के विषय में बहुत से प्रश्न पूछे।

रुस्तावी से श्री नेहरू दिगोमस्की का अंगूर उद्यान देखने गये जो जार्जिया के सैनिक राजमार्ग पर एक सुरम्य स्थान में है। श्री नेहरू और उनकी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने अंगूर उगाने के तरीकों, फसल की पैदावार तथा वायु-अवरोधक रक्षापाँति में दिलचस्पी दिखाई।

शाम को श्री नेहरू ने अपने दलबल सहित तिबलिसी के पालियाशिवली स्टेट ओपेरा और बाले थियेटर में डी० तोराजे रचित "गोर्दा" नामक राष्ट्रीय जार्जियाई बाले देखा।

अशखाबाद

१४ जून को सवेरे तिबलिसी से ताशकंत जाते हुए मार्ग में श्री जवाहर लाल नेहरू ने तुर्कमैन जनतंत्र की राजधानी में अशखाबाद का परिदर्शन किया।

भारतीय गणतंत्र, सोवियत संघ तथा तुर्कमैन जनतंत्र की राष्ट्रीय ध्वजाओं से सुसज्जित हवाई अड्डे पर हजारों व्यक्ति इकट्ठे थे।

बाद में श्री नेहरू तुर्कमैन जनतंत्र की सरकार द्वारा अपने सम्मान में दिये गये भोज में शामिल हुए। अशखाबाद की जनता ने श्री नेहरू को तुर्कमेनिया की पोशाक और रोयेंदार हैट भेंट किये। बाद में श्री नेहरू अपने दलसहित ताशकंत को रवाना हुए।

ताशकंत

भारतीय गणतंत्र, सोवियत संघ तथा उज़बेक जनतन्त्र की राष्ट्रीय ध्वजाओं से सुशोभित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई अड्डे पर श्री नेहरू और उनके दल का स्वागत हुआ।

भारतीय गणतंत्र सोवियत संघ तथा उज़बेक जनतंत्र के राष्ट्रगान हुये। बच्चों ने श्री नेहरू और उनकी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी को गुल दस्ते भेंट किये।

सोवियत उज़बेकिस्तान की सरकार तथा श्रमिक जनता की तरफ से एन० ए० मुखित-विनव ने श्री नेहरू का हार्दिक अभिनन्दन किया। श्री नेहरू ने अपने भाषण के दौरान में कहा—

अध्यक्ष महोदय और प्यारे मित्रों ! सलाम आलेकुम ! (हर्षध्वनि) उज़बेकिस्तान में आने, आप से मिलने तथा आपके जनतंत्र को देखने की अर्से से मेरी इच्छा रही है। हम पड़ौसी हैं और पड़ौसियों को तो निश्चय ही एक दूसरे को अच्छी तरह जानना चाहिए। हमारे पारस्परिक सम्बन्ध बहुत पुराने हैं। सुदूर अतीत में भी हमारे सम्बन्ध अच्छे थे, हमारे देशों के बीच बड़े पैमाने पर चीजों का आदान-प्रदान होता था और हम एक दूसरे के यहाँ आते जाते थे। एक ऐसा भी समय आया जब ये पुराने सम्बन्ध टूट से गए। यही वजह है कि अपने मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का पुनःस्थापन इतना आनन्द मय एवं सुखद मालूम होता है।

मैंने आपके जनतंत्र की त्वरित प्रगति के विषय में बहुत कुछ सुना है और मैं आशा करता हूँ कि यह प्रगति जारी रहेगी। आपने कहा कि सारे संसार में शांति की रक्षा करना जरूरी है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यदि शांति न रहे तो आपके देश में या हमारे देश में कहीं भी प्रगति नहीं हो सकती। अतः हमें शांति की जरूरत है और हम सबों को शांति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिये।

मैंने सोवियत संघ में केवल छः दिन फिरे हैं लेकिन मैंने बहुत कुछ देखा है और बहुत स्थानों का निरीक्षण किया है। हर जगह हमें अत्यन्त शिष्टपूर्ण एवं हार्दिक स्वागत हुआ। यह अत्यन्त आह्लादकारी वस्तु है। आज आप भी हमारा अत्यन्त शिष्टतापूर्ण एवं हार्दिक स्वागत किया है। धन्यवाद। जैसा कि पहले कहा है हम पड़ौसी हैं, अतएव मुझे ऐसा मालूम होता है कि अपने ही लोगों के बीच में हूँ। एक बार और मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

श्री नेहरू के भाषण के दौरान में बीच २ में हर्ष ध्वनि होती थी। ये नारे लगाए जाते थे। "भारत और सोवियत संघ की मैत्री चिरजीवी हो!"

ताशकंत के निवासियों ने सड़कों पर कतार बान्धे हवाई अड्डे से श्री नेहरू के प्रासाद तक मेहमानों का प्रेमपूर्ण अभिवादन किया।

उसी दिन शाम को श्री नेहरू और उनकी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अपने दलबल सहित आलीशेरनवोई ओपेरा और बाले थिएटर में एक कांसर्ट देखा। उज़बेक, रूसी तथा भारतीय नृत्यगीत का प्रदर्शन हुआ।

कांसर्ट के बाद दर्शकों तथा कलाकारों ने श्री नेहरू की तुमुल जयध्वनि की। प्रधान मंत्री और उनकी पुत्री को गुलदस्ते भेंट किए गये।

श्री नेहरू ने रंगमंच पर जाकर हर्ष ध्वनि के बीच कलाकारों को धन्यवाद दिया।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

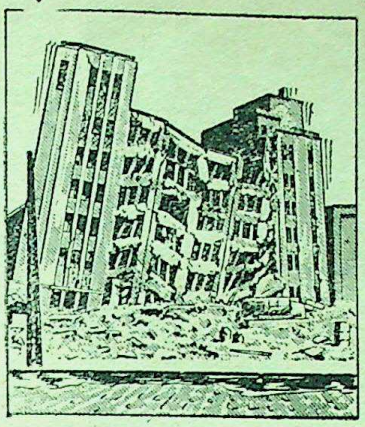

विश्व भर में एक वर्ष में २० हजार भूचाल आते हैं।

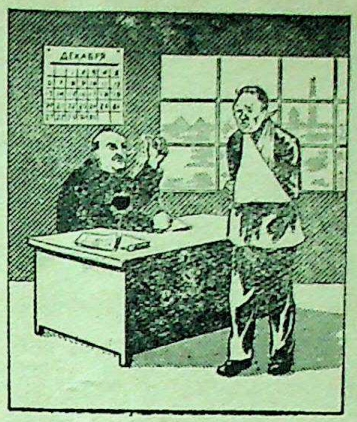

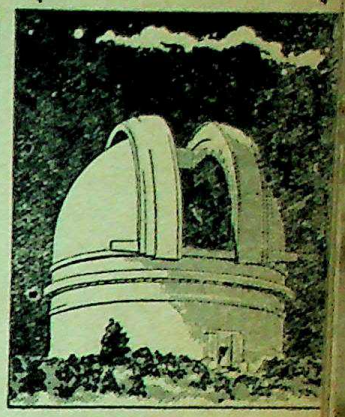

अमेरिका स्थित पाल्मर पहाड़ पर लगा हुआ यह दूर्बीन इतनी शक्तिशाली है कि १८००० मील दूर जलती हुई मोमबत्ती को भी बता सकता है।

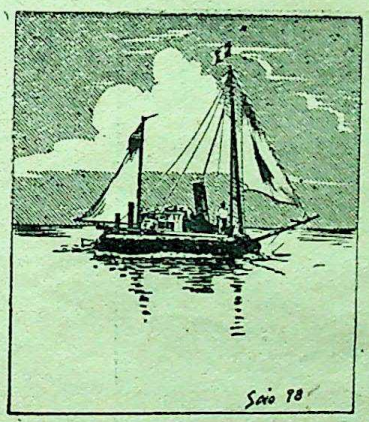

६१ वर्षीय अमेरिकन एक बेड़े पर ९००० मील यात्रा शांत महासागर में करके पेरू से पागोपागो (सोमआ में पहुँचे।

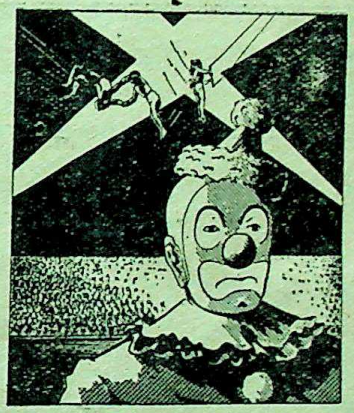

रूमानिया के सरकस का जोकर

उष्ण कटिबन्ध में एक जहाज काला रंगे होने के कारण सफेद रंगे की अपेक्षा १०° अधिक गर्म हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय अणु शक्ति कमीशन के अध्यक्ष डा० होमी भाभा एक अमेरिकन वैज्ञानिक से बात कर रहे हैं।

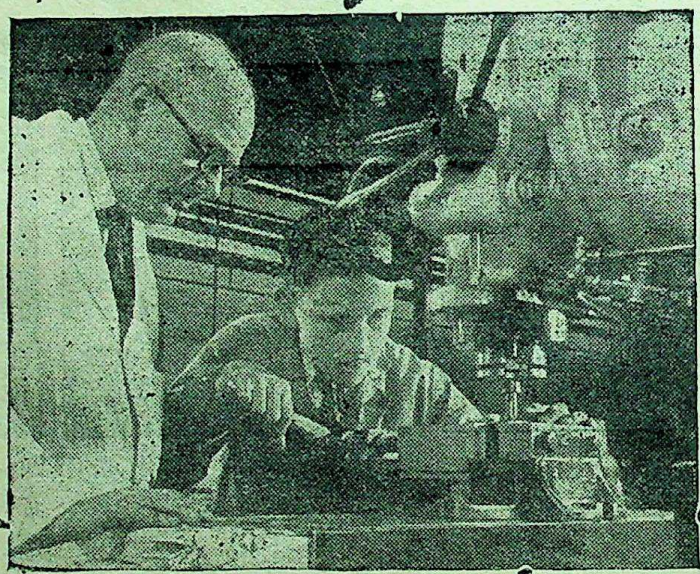

ब्रिटेन में बचपन से ही कारीगरी सिखाई जाती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

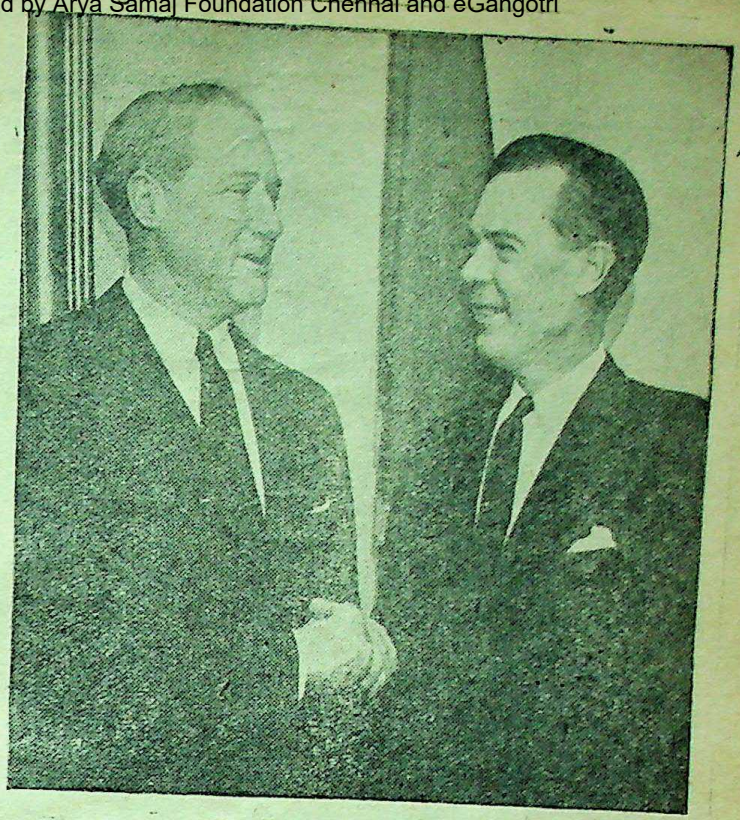

अमेरिका के नए राजदूत श्री जान शरमन कूपर भूतपूर्व राजदूत श्री जार्ज एलन से हाथ मिलाते हुए।

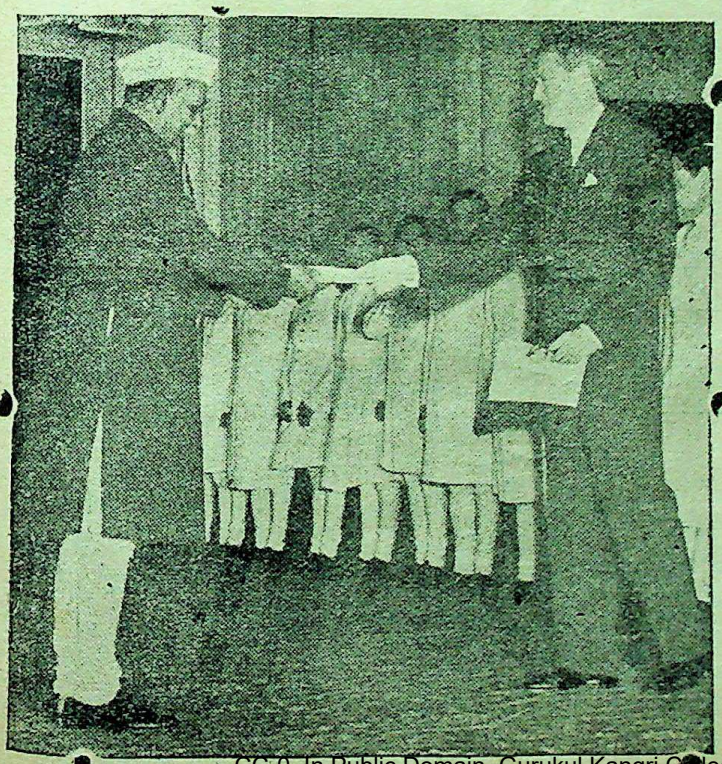

अमेरिका के भारत स्थित राजदूत श्री जान शरमन कूपर, डा० राजेन्द्र-प्रसाद को प्रमाण पत्र भेंट करते हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

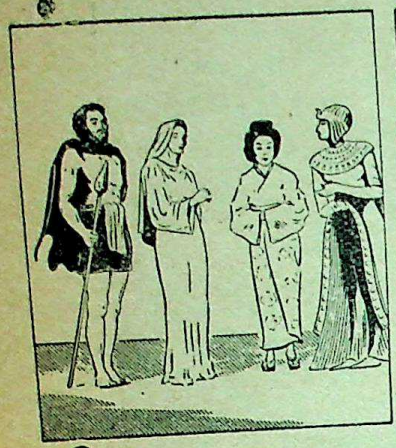

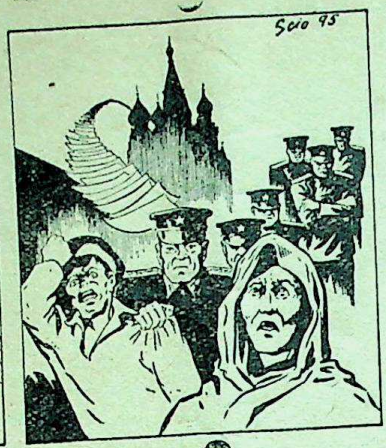

ऊन सर्व प्रथम, रूई दूसरे, सिल्क तीसरे और अन्य रेशे चौथे नम्बर पर कपड़ा बनाने में प्रयुक्त किए गए।

ग्रीन विच रेखा, भूमध्यरेखा को जहाँ काटती है वह बिन्दु अफ्रीका के पश्चिमी तट के पास है समुद्र तल पर होने के कारण केवल यही एक बिन्दु है न जिसका अक्षांश है न देशांतर और नहीं ऊँचाई है

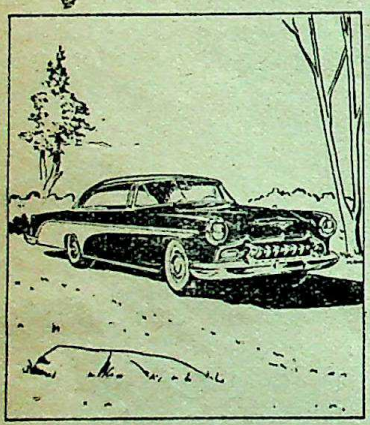

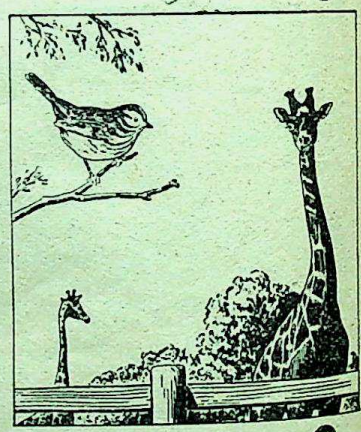

५६ देशों से ३०० वस्तुएं लाकर एक अमेरिकी मोटर बनती है।

३२,८७,८४२ वर्ग मील का क्षेत्रफल होने से ब्राजील विश्व का सब से बड़ा गण तंत्र है।

धोबिन चिड़िया की गरदन में १४ छल्ले और जिराफ की गर्दन में रीढ़ की हड्डी के ७ छल्ले ही होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीड्स विश्वविद्यालय संघ के नव अध्यक्ष श्री वी० सी० जानसन चुने गये। आप पश्चिमी अफ्रीका के निवासी हैं। साथी छात्रों ने जोश में कन्धे पर उठा रक्खा है।

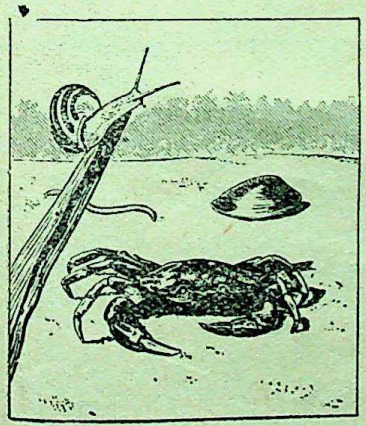

केकड़ा, घोंघा और कीड़ों (जैसे केचुआ) का खून नीला होता है।

एक शब्द बोलने में ७० माँसलों (Muscles) का प्रयोग होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

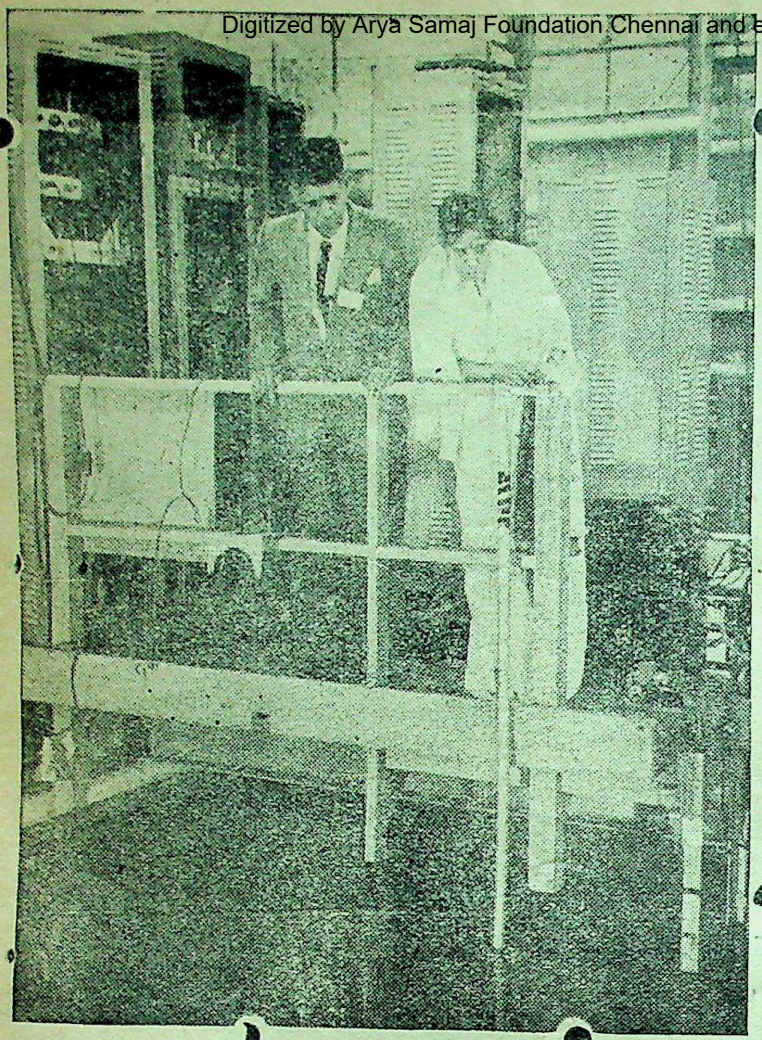

कुमारी जानकी अम्मल (लखनऊ) और बोशीसेन (अलमोड़ा) ओकरिज की अणु शक्ति पंठ में २० फिट पानी के नीचे एक अणुशक्ति की प्रक्रिया को देख रहे हैं क्रिया होते ही तालाब चमक उठता है। तथा पानी की तह देखने वालों पर कुप्रभाव नहीं होने देती।

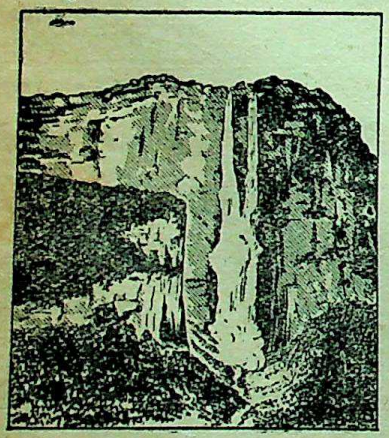

वेनेजुला का ऐंजलफाल (देवताप्रपात) ३२१२ फिट की ऊँचाई पर स्थित है यह ऊँचा और दुर्गम स्थान पर होने के कारण बहुत कम आदमियों ने देखा है।

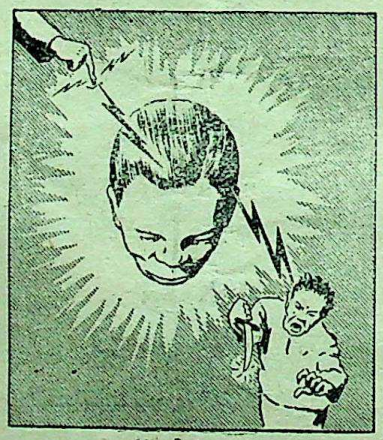

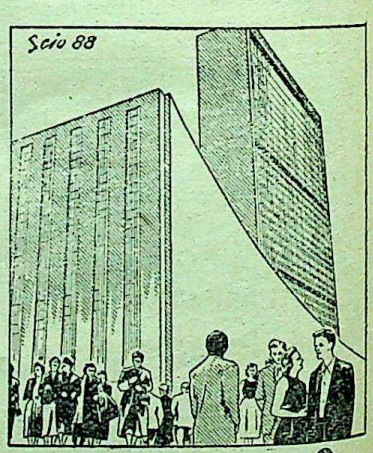

संयुक्त राष्ट्र संघ के भवन के देखने के हेतु विश्व भर के यात्री आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाई स्कूल परीक्षा सालव्ड पेपर्स

सब प्रश्नोत्तर सन् १९५५ ई० तक हल हैं।

भारतीय इतिहास प्रश्नोत्तर	१॥)	क० आधा
प्रश्नोत्तर वर्ल्ड हिस्ट्री	॥।)	,, ,,
भूगोल प्रश्नोत्तर	२)	,, ,,
मैथमैटिक्स प्रश्नोत्तर	२)	,, ,,
एलीमेन्ट्री मैथ्स	॥।)	,, ,,
विज्ञान प्रश्नोत्तर	२)	,, ,,
सिविक्स	३)	क० आधा
बुक कीपिंग	१॥।)	,, ,,
कामर्स	२)	,, ,,
जनरल साइन्स	१॥)	क० आधा
इकोनामिक्स	२)	,, ,,
आर्थिक भूगोल	२॥)	,, ,,
इंगलिश प्रश्नोत्तर (एडवान्स)	मू० ३)	,, ,,
हिन्दी प्रश्नोत्तर	,, ४)	,, ,,
टु डे एण्ड टुमारो की कुञ्जी	क० ८	मू० २) क० आ०
कुंजी संस्कृत प्रवेशिका भाग १	,, ≡)	,, ,,
कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग २	,, ≡)	,, ,,
कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग ३	,, ।)	,, ,,

जू० हा० स्कूल परीक्षा के

प्रश्नोत्तर

विज्ञान प्रश्नोत्तर	छः आना
प्रश्नोत्तर आर्ट, क्राफ्ट	बारह आना
,, व्यापारिक शिक्षा व व्यापार प्रणाली	छः आना
,, ज्यामेट्री	आठ आना
,, भूगोल	आठ आना
,, इतिहास	आठ आना
,, गणित	एक रुपया
,, स्वास्थ्य रक्षा	आठ आना
,, ग्राम्यज्ञान	बारह आना
प्रश्नोत्तर हिन्दी व्याकरण, साहित्य	चार आना
,, अपठित, रचना	आठ आना
,, इतिहास, भूगोल	सवा रुपया
इंगलिश प्रश्नोत्तर . . .	एक रुपया
संस्कृत प्रश्नोत्तर	चार आना
प्रश्नपत्र पठित, अपठित	आठ आना

कमीशन सब पर चौथाई।

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा

(मुरादाबाद)

भूगोल की पुस्तकें एटलसें व अभ्यास कापियाँ तथा नकशे

जगत मान् चित्रावली	ढाई रुपया
एशिया मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
भारत मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
अभ्यासकापी संसार व भारत	बारह आना
,, भारत	छः आना
विश्व भू वर्णन	दस आना
एशिया भू वर्णन	पाँच आना
प्राकृतिक भूगोल भाग ३	तीन आना
,, ,, भाग १,२	तीन आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
,, भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
नकशे	छः आना प्रति

(संसार, भारत, उत्तर प्रदेश जिला बिजनौर तथा हर एक महाद्वीप का रंगीन राजनैतिक मानचित्र। एशिया, भारत प्राकृतिक मानचित्र)

दुनिया की मश्की कापी	दस आना
एशिया ,, ,, ,,	छः आना
भारत ,, ,, ,,	छः आना
भूगोल प्रश्नोत्तर	दस आना
नवीन भूगोल भारत कक्षा ६	आठ आना
,, ,, एशिया ,, ७	आठ आना

मैनेजर—गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ भू-प्रदर्शनी ॥

कई वर्ष के परिश्रम के बाद हमने संसार की एक एटलस तय्यार कराई है। साईज नकशों का १० × ८ इञ्च है छपाई बहु-रंगी बढ़िया आफसेट द्वारा की गई है। सब से बड़ी बात इस एटलस की उपयोगिता है जिसको अनुभवी अध्यापक परख सकेंगे अभी तक छपी किसी हिन्दी एटलस में मानव विकास और अर्थ योजना इतनी स्पष्ट और व्यापक नहीं मिलेगी।

भारतवर्ष के चित्रों के साथ-साथ उत्तरप्रदेश के भी तत्सम्बंधी चित्र दिये हैं। चित्र कितने आकर्षक और उपयोगी है यह देखकर ही जाना जासकता है। चित्रों का थोड़ा सा वर्णन इस प्रकार है:—

१—पृथ्वी की आकृति और ऋतु परिवर्तन।
२—ग्रहण, ज्वार भाटा, भू-भाग निर्मित पर्वत ज्वाला मुखी आदि के १० चित्र।
३—भिन्न प्रकार के सोते, कुवें, घाटियों, मरु-उद्यान आदि के खोज पूर्ण ९ चित्र।
४—पृथ्वी पर वायु भार व चक्रवात के ८ चित्र।
५—भारत तथा यू० पी० की जलवायु के ४ चित्र और वर्षा तथा तापक्रम का ग्राफ।
६—भारत और यू० पी० के वन।
७— ,, ,, ,, खनिज।
८— ,, ,, ,, उपज।
९— ,, ,, ,, नहरों और विद्युत कुओं, तालाबों द्वारा सिंचाई और नवीन जल व विद्युत योजनायें।
१०—उद्योग और वार्षिक उत्पत्ति का ग्राफ।
११—वायु मार्ग और सड़कें।
१२—रेलें।
१३—आयात और निर्यात तथा प्रमुख व्यापारिक नगरों का अमूल्य वर्णन।
१४-१५-भारत व यू०पी० के प्राकृतिक और नैसर्गिक प्रदेश १६ से १९ तक एशिया के चित्र हैं।
२०—योरूप का राजनैतिक और प्राकृतिक चित्र।
२१—अफ्रीका ,, ,,
(नील की घाटी तथा स्वेज नहर)
२२, २३, २४ - पर उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका और आस्ट्रेलिया के राजनैतिक तथा प्राकृतिक चित्र हैं। २५ से ३२ तक संसार के चित्र हैं।

जिनमें प्राकृतिक, राजनैतिक, जलवायु, वनस्पति, धारायें, शक्तिसाधन: खनिज उपज और उद्योग सम्बन्धी चित्र और आनुमानिक तालिकायें हैं। इस प्रकार यह नव न एटलस सुन्दर और मनोहर सुदृढ़ आवरण पृष्ठ के साथ आपकी भेंट हैं। मूल्य दो रु० कमीशन चौथाई।

गुप्ता ब्रदर्स पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, मंडी धनौरा (मुरादाबाद)

Printed by Sagar Mal Garg at Gupta Bros Ptg Works, Mandi Dhanaura and Published by him for Editor "Shiksha-Sudha".

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

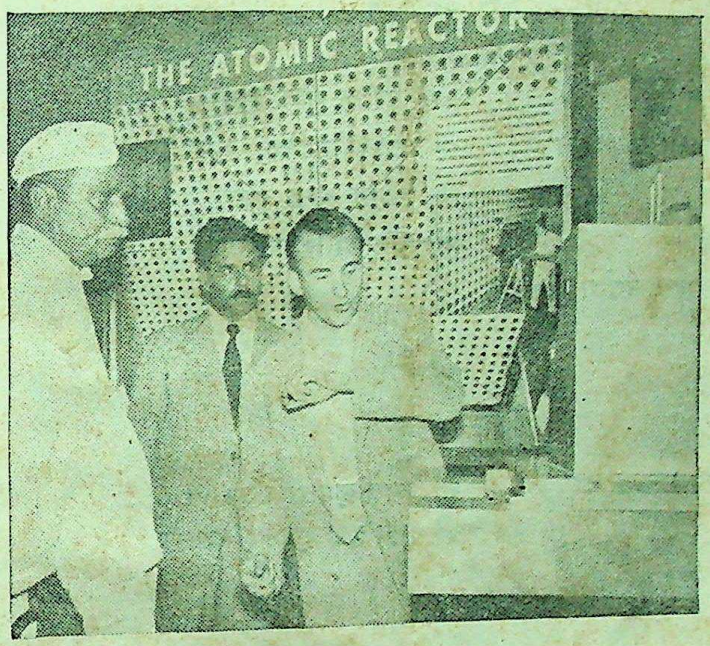

निज़ाम कालेज हैदराबाद में राष्ट्रपति अणु सम्बंधी प्रदर्शिनी देखते हुए।

वार्षिक मूल्य १) | जौलाई १९५५ ई० | एक प्रति =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

संस्थापक
स्व० रामकुमार अग्रवाल

सम्पादक
वीरेन्द्र कुमार
बी० ए० विशारद

इस अंक में

१	नये युगों की समस्या	श्री सुशील गुप्त 'शुलभ'	१
२	प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप	श्री उदयवीर विद्या भास्कर	२
३	मैं नीरस हूं	श्री लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता	८
४	परीक्षा का मनोविज्ञान	श्री रामकिशोर 'पाषाण'	९
५	उ० प्र० की महान शिक्षा उद्योग योजनायें		११

★

बाल बन्धु

६	घड़ी (कविता)	श्री प्रसन्न कुमारी कक्षा ११	१७
७	उपकार का बदला	श्री इन्द्रा देवी शुक्ला विशारद	१८

वार्षिक मूल्य
एक रुपया

गुप्ता ब्रदर्स, पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, मण्डी धनौरा

एक प्रति
दो आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

कलश १९, बून्द १
जौलाई १९५५ ई०

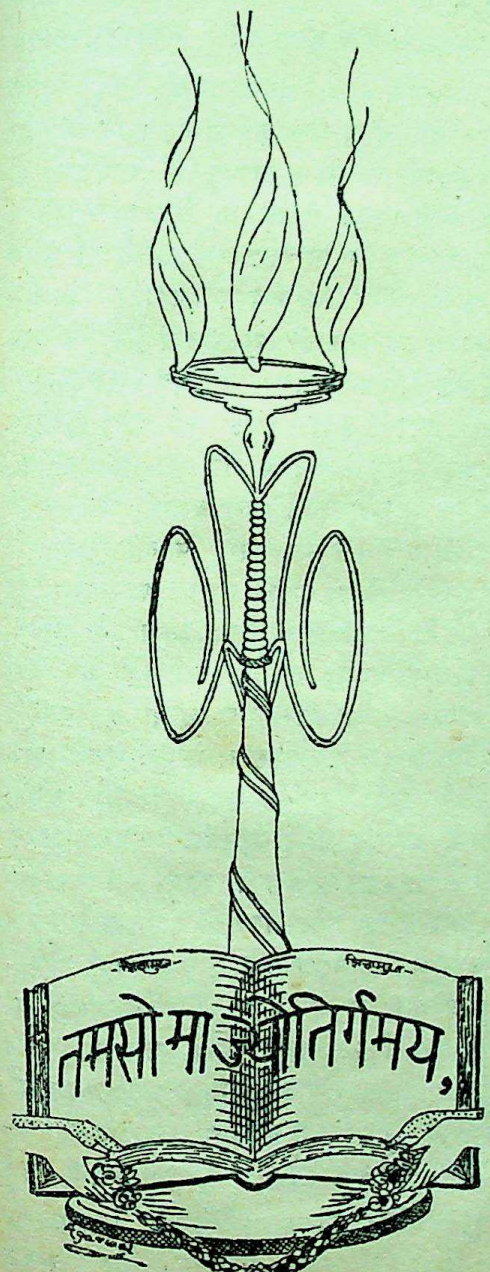

नये युगों को नई मान्यता

सुशील गुप्त "शुलभ"

जग के बन्धन जिनमें व्याकुल मानव का मन,
जग की नश्वरता जिससे दानव बनता है जन।
उन जड़पाशों से उन्मुक्त बने धरती का प्राँगण॥
जग के धूमिल कण से, यही माँगता जीवन॥

जग की लोलुपता जिसमें लोलुप रहता नर,
जग की नश्वरता जिसमें बन्दी सचरा चर।
वह कामुकता क्षण क्षण विलीन हो कातर स्वर।
वह नश्वरता बने अमरता चंचल पथ पर॥

खुलता रहता द्वार सजग सा, युग का पल पल,
रो उठता मन मनु का लुटकर अपलक चंचल।
हड्डी का कंकालित नर, श्वासे गिन गिन चलता,
पथ पर सहसा डोल उठी, उसकी निश्छलता॥

युग की सिसक सिसक कर रोती करूण कहानी,
युगारम्भ के नव नर्त्तन् में, भूला मानव ज्ञानी।
संघर्षों का छिड़ा युद्ध जन् के दुर्बल बल पर.
जिसकी खड्ग बोलती अब भी शत शत कम्पित स्वरभर।

युगान्त के पल्लव कर में, उसका भार निहित है,
युगारम्भ के चरण कमल में, उसकी गति निश्चय है।
युग युग से युग निशेष की अपनी युग—मानवता,
युगों के द्वारे, नये युगों की नई मान्यता।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप

श्री उदयवीर शास्त्री, विद्याभास्कर

अध्ययन का महत्व—रामायण, महाभारत एवं अन्य भारतीय साहित्य के अनुसार आर्य मानस के लिए अध्ययन एक पवित्र वस्तु है। वह ज्ञान का उद्गम स्थान है, जो अमरत्व की ओर ले जाता है, (विद्ययाऽमृतमश्नुते, यजु० ४० । १४)। अतः ज्ञान प्राप्ति के लिये अनवरत परिश्रम प्राचीन ऋषि मुनियों एवं जनसमाज के जीवन का एक महान लक्ष्य था, जिन्होंने घोषित किया था, कि अध्ययन की ओर उपेक्षा का भाव कभी न आने देना चाहिये, [स्वाध्यायान्मा प्रमदः, तै० उप० १ । २ । १]। महाभारत में कहा है, कि विद्याहीन मानव की दशा शोचनीय हो जाती है, [अविद्यः पुरुषः शोच्यः, महा० ५ । ३९ । ७७]। इसलिये जीवन की प्रत्येक स्थिति में मानव के मुख्य कर्त्तव्यों में अध्ययन एक आवश्यक एवं महान् कर्त्तव्य है, इस, बात को भारतीय साहित्य में बार २ बार दोहराया गया है। मानव जीवन का चतुर्थांश केवल इसी कार्य को पूरा करने के लिये नियत था। ब्रह्मचर्य, दृढ़ अभ्यास और कठोर परिश्रम का समय माना गया था, जब कि देश के नवयुवक पवित्र मूल ग्रन्थों का अध्ययन करते थे और आगे जीवन में आने वाले कर्तव्यों के लिये अपने आप को तैयार करते थे।

यह निश्चित है कि उस काल में अध्ययन का आदर बहुत किया जाता था, पर रामायण, महाभारत आदि साहित्य में अध्यापन विधि के बहुत न्यून वृत्तान्त उपलब्ध होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा सम्बन्धी बहुत से महत्वपूर्ण पहलू सम्पूर्ण रीति से उपेक्षित किये गये हैं। सम्भव है वर्णन के समय साधारण अथवा सर्वजन-विदित समझ कर ही उनकी उपेक्षा कर दी गई हो। ऐसी स्थिति में रामायण महाभारत आदि वर्णनों में, विभिन्न आश्रमों और उनके निवासियों की जो सूक्ष्म झलक मिलती है, उसके आधार पर ही एक विचारक को अपना परिणाम प्रस्तुत करना पड़ता है।

संस्था—प्रतीत होता है कि रामायण, महाभारत आदि में दो विभिन्न प्रकार की शिक्षा पद्धति प्रचलित थी। द्रोण और कृप जैसे विद्वान् आचार्य अपने शिष्यों के घरों व आश्रय में रह कर ही उनको विद्याध्ययन कराते थे, पर दूसरे धौम्य भारद्वाज आदि विद्वान् ऋषियों ने छात्रों को अपने घर में रख कर विद्याध्ययन कराया। प्राचीन साहित्य में यह प्रणाली 'गुरुकुल-प्रणाली' के नाम से प्रसिद्ध है, जो कालान्तर में सार्वजनिक शिक्षा संस्था के रूप में प्रस्फुटित हुई। सम्भवतः गुरुकुल शब्द पहले गुरु के कुटुम्ब तक ही सीमित था, कालान्तर में कुलपति के द्वारा चलाई जाने वाली संस्था को सूचित करने लगा। पहली स्थिति में छात्र गुरू के समीप आकर रहता, आसपास की बस्ती से अपने निर्वाह के लिये भिक्षा ले आता, और गुरु को अर्पण कर देता, इस में से कुछ अंश गुरु स्वीकार करता और शेष छात्रों में वितरित कर दिया जाता। इस परम्परा में एक गुरु के पास छात्रों की संख्या बहुत सीमित रहती थी। दूसरी स्थिति में कुलपति द्वारा संचालित संस्था सहस्रों छात्रों के अध्ययन का प्रबन्ध करती थी। इसका व्यय भार जनता और राज्य वहन करते थे। ऐसे गुरुकुलों में विद्यार्थी का प्रवेश, एक नवीन अविनाशी जन्म माना जाता था, [आचार्यशिष्टा या जातिः सा दिव्या साजरामरा, म. भा. १२। १०८ । २० ।। आचार्य उपनयमानो कुरुते गर्भमन्तः, अथर्व० ५ । ११ । ५ ।। आचार्य योनाविह ये प्रविश्य भूत्वा गर्भे ब्रह्मचर्य चरन्ति, म. भा. ५ । ४। ४६] जहां पितृतुल्य आचार्य अपने शिष्यों की पवित्र पीढ़ी को सन्मार्ग दिखलाने के लिए अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको सर्वात्मना अर्पण कर देता था। के अधीन शिष्यों की यह पीढ़ी 'ब्रह्मवंश' के नाम से प्रसिद्ध थी, [देववंशान ब्रह्मवंशान् पितृवंशांश्च शाश्वतान्, म० भा० १२ । ११ । १९ महाभारत [१ । ३] के प्रारम्भ में धौम्य और वेद के गुरुकुल छोटे और अपने घर में ही सीमित थे। दुर्वासा मुनि के संचालन में एक बहुत बड़ा आश्रम था, जिसमें लगभग दस सहस्र विद्यार्थी निवास व अध्ययन करते थे, ['शिष्यायुतसमापेतः', म.भा. ३ । २६२ । ८ ॥ तथा 'अभ्यगच्छत् परिवृतः शिष्यैरयुतसम्मितैः' म. भा. ३ । २६३ । २]। मार्कण्डेय मुनि का आश्रम भी एक बहुत बड़ी, संस्था के रूप में रहा होगा और वहां एक अच्छी संख्या में छात्र रहते होंगे। एक बार स्वयं कुरुराज युधिष्ठिर ने इस इस आश्रम का अवलोकन किया था [म. भा. ३ । २७१ । ४८] इसी प्रकार कण्व मुनि का आश्रम भी अपने समय में एक प्रामाणिक शिक्षा-संस्थान था, जहां विद्या की अनेक शाखाओं के अध्ययन का प्रबन्ध था [म. भा. १ । ७० । १८]। प्रतीत होता है रामायण में वर्णित भारद्वाज और बाल्मीकि मुनि के आश्रम भी अपने समय में महान शिक्षणालय थे, [राम० ४ । १२३ । ५१ तथा २ । ५५ । ९, ११ ॥ १ । ४] जहां एक साथ सहस्रों छात्र विद्याध्ययन करते थे। ऐसा ज्ञात होता है कि इन संस्थाओं का परस्पर कोई सम्बन्ध न था, प्रत्येक संस्था अपने रूप में एक स्वतन्त्र शिक्षा-केन्द्र रहता था।

संस्थाओं का उपयुक्त स्थान—वेद का स्वाध्याय उस काल में विशेष रूप से पवित्र माना जाता था और इसके लिये मनुष्यों की भीड़भाड़ से दूर किसी एकान्त स्थान का चुनाव किया जाता था। व्यास मुनि का आश्रम हिमालय के शांत व स्वास्थ्यकर वायु मण्डल में निर्मित किया गया था। कण्व और परशुराम के आश्रम का स्थान स्पष्ट रूप से सूचित करता है कि शिक्षा प्रायः एकांत जङ्गल में दी जाती थी, [शैलराजस्य विविक्ते पावने तटे पाराशर्यो महातपोवने वेदानध्यापयामास, म. भा. १२ । ३२७ । २६ ॥ मालिनीमभित तपोवनमनोरमे, म. भा. १२ । ३२७ । २६]। फिर भी पुरोहित और दूसरे अध्यापकों द्वारा लौकिक साहित्य धनी आबादी में भी पढ़ाया जाता था। द्रोण ने धनुर्विद्या की शिक्षा हस्तिनापुर में दी और द्रुपद के पुत्रों ने राज्य शासन विधि का शिक्षा घर में ही प्राप्त की। अर्जुन ने उत्तरा को संगीत और नृत्य विराट के राजमहल में ही सिखाये। वृषपर्वा का मन्त्री शुक्र राजधानी में रहता था और शिष्यों को शिक्षा देता था। फिर भी ऐसे उदाहरण बहुत कम हैं और सामान्यतया राजघराने तक सीमित हैं। राजकुमारों की शिक्षा सामान्य रूप से घर के बाहर निजी अध्यापक के अधीन हुआ करती थी। पर राजघरानों के लिये भी ऐसा कोई व्यवस्थित नियम नहीं था। द्रुपद ने अपने तेजस्वी सहपाठी द्रोण के साथ भारद्वाज के आश्रम में शिक्षा पाई थी। दशरथ के पुत्र राम आदि ने विश्वामित्र के आश्रम में जाकर धनुर्विद्या तथा अन्य कलाओं का अध्ययन किया था।

विद्यार्थी घर में रहता है या नगर में अथवा जङ्गल में, यह इतना महत्वपूर्ण नहीं था, किन्तु उसको अपने अध्यापक अथवा आचार्य के मार्गदर्शन के अधीन रहना चाहिये, यह अत्यन्त महत्वपूर्ण समझा जाता था। और अध्यापक भी केवल उसकी शिक्षा के लिये नहीं, प्रत्युत आचरण और सांस्कृतिक योग्यता के लिए भी अपने आपको उत्तरदायी समझता था केवल शिक्षक के रूप में उसकी योग्यता अप्रधान समझी जाती थी [आचार्यः कस्मात् ? आचारं ग्राहयति, निरु० १ । ४ । १२]।

प्रवेश के योग्य छात्र—प्राचीन भारत में छात्र से अध्ययन अथवा निवास आदि के लिए किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था। कोई भी अध्यापक किसी छात्र को केवल इस आधार पर संस्था में प्रवेश के लिए निषेध नहीं कर सकता था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वह किसी प्रकार का शुल्क देने में असमर्थ है। धन लेकर वेदों का अध्ययन निन्दनीय समझा जाता था [म० भा० १२। ३४। ६] और जो व्यक्ति लोभ आदि के कारण कभी ऐसा कर बैठता था, उसे समाज व शास्त्र की प्रेरणा के अनुसार प्रायश्चित करना पड़ता था। विद्यार्थी का चरित्र और विद्या-प्राप्ति के लिए उसकी पात्रता ही प्रवेश के लिए कसौटी थी। निरुक्त में वर्णित यास्क के सिद्धांतानुसार [विद्या ह वै ब्राह्मण माजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेहमस्मि, असूयकायानृजवेऽ यताय न मा ब्रूया वीर्यवती तथा स्याम् २ । ४] श्री कृष्ण ने अर्जुन उपदेश दिया कि जो अयोग्य है, जिसने तप भक्ति और गुरु-सेवा की उपेक्षा की है, और जो ईश्वर अथवा महान आत्माओं के प्रति अविश्वास रखता है, उसको ज्ञान का रहस्य नहीं बताना चाहिए, [म० भा० ६ । ४२-४७ ॥ भग० गी० १८। ६७] महर्षि व्यास ने अपने शिष्यों को समावर्तन के समय जो उपदेश किया है, उसमें विद्यार्थी के चरित्र और योग्यता पर अधिक बल दिया गया है। छात्र की जातीय स्थिति तथा उसके अन्य सद्गुणों को भी सावधानी से देखा जाता था। वेदों की शिक्षा ब्राह्मणों को और जिसको वेद के लिए कार्य करने की इच्छा होती, उसको दी जाती थी (ब्राह्मणाय सदा देया ब्रह्मशुश्रूषवे तथा, ब्रह्मलोकनिवासं यो ध्रुवं समभिकांक्षति. म० भा० १२।३२७।४३-४७)। ब्रह्मलोक की प्राप्ति के लिए दृढ़ झुकाव को ही वेद के अभ्यास के लिए वास्तविक योग्यता का चिन्ह माना जाता था। रामायण की महाभारत तथा अन्य प्राचीन भारतीय साहित्य के अनुसार ब्रह्मचर्य द्वारा ही विद्या की प्राप्ति हो सकती थी, (विद्या हि सा ब्रह्मचर्येण लभ्या,म०भा०४।४४।२ ब्रह्मचर्यण तपसा देवा मत्युमुपाघ्नत, अथर्व० ११।५।१९ यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि ओ३मित्येतत्, कठो १।२ १५॥ तथा प्रश्न० ५ ३॥ मुण्ड० ३।१।५) यह नियम वेद के स्वाध्याय के विषय में विशेष रूप से माना जाता था। इससे यह अनुमान करना भ्रांति पूर्ण न होगा कि प्राचीन भारत में जिस छात्र की वेदादि के प्रति दृढ़ प्रवृत्ति होती थी तथा जो सांसारिक प्रलोभनों से विचलित नहीं होता था, अन्य सब धन्धों से अलग रह कर उसी कार्य में अपने आपको नियन्त्रित रख सकता था और जीवन के उस भाग को पूर्ण संयम के साथ व्यतीत कर सकता था वही छात्र शिक्षा की संख्या में प्रवेश के योग्य समझा जाता था, (विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् , म. भा. ५।४०।६।)

प्रवेश की आयु—रामायण, महाभारत में विद्यार्थी के गुरुकुल प्रवेश की आयु का प्रमाण कहीं स्पष्टरूप से उपलब्ध नहीं होता। स्मृति तथा वैदिक सूत्र ग्रन्थों से प्राप्त वृत्तांत के आधार पर उपनयन संस्कार विद्यार्थी अवस्था के प्रारम्भ में था। प्रायः सब ही प्राचीन आचार्यों के लेख इस विषय, में समान हैं कि ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य का उपनयन यथाक्रम ८ वें ११ वें और १२ वें वर्ष में हो जाना चाहिए, अथर्ववेद भी उपनयन को गुरु के कुल में प्रवेश पाने के लिए एक आवश्यक आज्ञापन के रूप में स्वीकार करता है। अथर्व० ११।५३ 'आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिण कृणुते गर्भमन्तः)। फिर भी इस संस्कार और तत्सम्बन्धी आयु के प्रमाण की सामग्री रामायण महाभारत में बहुत कम मिलती है। आश्रम में प्रवेश पाने के लिए अथवा वेद के अभ्यास के लिए कितनी आयु में उपनयन को आवश्यक योग्यता के रूप में समझा जाता था और इस नियम का दृढ़ता के साथ सार्वजनिक रूप में पालन किया जाता था, इस प्रकार के स्पष्ट उल्लेख रामायण आदि में उपलब्ध नहीं होते। कभी कभी द्रोण, भीष्म, युधिष्ठिर यज्ञोपवीत पहने हुए वर्णित मिलते हैं परन्तु वह संस्कार कब अथवा कितनी आयु में किया गया था, इसकी सूचना हमें नहीं मिलती। महाभारत में प्रायः प्रत्येक नेता को वेद विद्या व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनुर्विद्या आदि में प्रवीण बताया है। रामायण में भी राम आदि तथा हनुमान आदि को वेद विद्या आदि में पारंगत बताया गया है, परन्तु विद्या प्राप्ति के प्रारम्भ में नियमानुसार उनके उपनयन आदि संस्कार के विषय में कोई संकेत नहीं मिलते। महाभारत में केवल दो स्थलों पर उपनयन संस्कार का उल्लेख मिलता है, परन्तु वहां भी विद्यार्थी की आयु का निर्देश नहीं किया गया। प्रथम युधिष्ठिर के पुरोहित धौम्य ने क्रमशः द्रोपदी के सब ही पुत्रों का उपनयन कराया, (जातकर्माण्यानुर्व्या चूडोपनयन तथा, चकार विधिवत् धौम्यस्तेषां भरतसत्तम, म. भा. १।२२१।८७)। यहां ग्रन्थकार जातकर्म से उपनयन तक सब संस्कारों की एक साथ गणना करता है। इस संस्कार की विधि के अनन्तर राजकुमारों ने वेद का अध्ययन किया, ऐसा कहा गया है। किन्तु संस्कार के समय प्रत्येक की आयु कितनी थी इसका उल्लेख वहां नहीं है।

दूसरा महत्वपूर्ण उपनयन संस्कार महाभारत में व्यास के ज्येष्ठ पुत्र शुक का मिलता है। यह कहा जाता है कि उसके जन्म के अनन्तर उसके पिता व्यास ने शुकदेव के सब सब संस्कारों की विधि को पूर्ण करके वेद के अभ्यास व अध्ययन के लिये शिष्य रूप से शिक्षा संस्था में प्रवेश दिया। इस प्रसंग में भी छात्र की आयु के सम्बन्ध का कोई संकेत नहीं है। रामायण में भी दशरथ के पुत्रों के नामकरण आदि संस्कार इस रूप में वर्णित है—

अतीत्यैकादशाहं तु नामकर्म तथाकरोत्।
ज्येष्ठं रामं महात्मानं भरतं कैकयीसुतम्॥
सौमित्रिं लक्ष्मणमिति शत्रुघ्नमपरं तथा।
वसिष्ठः परमप्रीतो नामानि कुरुते तदा॥
तेषां जन्मक्रियादीनि सर्वकर्माण्यकारयत्।
(१।१८।२१२-४)

जातकर्म के आगे 'आदि' पद लगाकर यहां भी उपनयन पर्यन्त संस्कारों के विधान का संकेत किया गया है। रामायण के व्याख्याकारों ने इस प्रसंग का ऐसा ही अर्थ किया है और यह सम्भव है। इसके आगे राम आदि का विविध विद्याओं में पारंगत होने का वर्णन है। किन्तु कौन सा संस्कार किस आयु में किया गया और उपनयन के अनन्तर विद्याभ्यास के लिए राम आदि ने गुरुकुल में प्रवेश कितनी आयु में किया इसका कोई संकेत प्रस्तुत प्रसङ्ग में नहीं है। प्रतीत होता है कि उस काल में यह एक ऐसी साधारण व सार्वजनिक बात थी कि इसका विशेष रूप से लेखकों ने उल्लेख करना अनावश्यक समझा। क्योंकि उपनयन की आयु का निर्देश वैदिक सूत्र ग्रन्थों में वर्णित किया हुआ था और वह समस्त समाज से अनुमोदित था, इसलिये एक सार्वजनिक एवं सर्वानुमोदित घटना को बार बार उल्लेख करने की उपेक्षा की गई है।

कुछ आधुनिक विद्वानों का विचार है कि रामायण महाभारत में प्राप्त सामग्री के प्रकाश में स्मृतियों द्वारा दी हुई आयु अत्यन्त सन्देहयुक्त प्रतीत होती है। सम्भवतः सबसे पहले रामायण महाभारत के काल में लोगों ने उपनयन को अधिकता से उपेक्षित किया हो। इस संस्कार के उल्लेख की ऐसी उपेक्षा से सुरक्षित परिणाम यही दिखाई देता है कि प्राचीन समय के दूसरे साहित्य के समक्ष रामायण महाभारत भी सब द्विजों के लिए यह विधि संस्कार के रूप में आवश्यक थी, ऐसा नहीं मानते। वे उसकी विशेष अधिकार के रूप में गणना करते थे, जो कि जाति के भवन में प्रवेश के लिए एक अधिकार पूर्ण आज्ञापत्र देता था। अतः उस समय के अधिकारी नेता आश्रम में प्रवेश के लिए निश्चित आयु की व्यवस्था नहीं करते। यह सम्भव है कि भिन्न भिन्न अध्ययन क्रम और विशिष्ट विषय के ग्रहण की योग्यता के अनुसार आयु भी बदलती रही हो। इसलिए इसमें आश्चर्य करने की बात नहीं है कि कभी तरुण अध्यापक अपने से आयु में बहुत बड़े शिष्यों को पढ़ाता हुआ मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुतः आधुनिक विद्वानों की उपर्युक्त धारणा रामायण, महाभारत की भावना के साथ मेल नहीं खाती। उस समय के समाज ने इस संस्कार की सार्वजनिक रूप में उपेक्षा की हो, यह भावना रामायण, महाभारत की प्रतीत नहीं होती। महाभारत में द्रोपदी के पुत्रों का धौम्य ऋषि के द्वारा उपनयन कराये जाने का जो उल्लेख किया गया है, उस पर गम्भीरता पूर्वक ध्यान देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उक्त धारणा महाभारत आदि के कहां तक समीप है। वहाँ यह स्पष्ट लेख है—

'चकार विधिवत् धौम्यस्तेषां भरतसत्तम।'

यहाँ 'विधिवत्' पद के ऊपर ध्यान देना चाहिए। इस पद के द्वारा यह निश्चित परिणाम निकलता है कि संस्कार की विधि का निर्देश करने वाला कोई अन्य शास्त्र था, जिसके अनुसार धौम्य ने इस संस्कार को सम्पन्न कराया। उस शास्त्रमें ही प्रत्येक संस्कार की अन्य अन्य आवश्य विधियों के समान आयु का भी निर्देश होना चाहिये। जैसे महाभारत में संस्कार की अन्य आवश्यक विधियों का उल्लेख नहीं हैं, उसी प्रकार आयु का भी उल्लेख नहीं है। वस्तुतः रामायण, महाभारत विधिशास्त्र नहीं है। अन्य विधि शास्त्रों में आयु का निर्देश भी स्पष्ट रूप में उपलब्ध होता है। पर भारतीय प्राचीन साहित्य के अवगाहन से यह निश्चित परिणाम प्रतीत होता है कि विधि पूर्वक आश्रम में प्रवेश के लिए एक निश्चित आयु का बन्धन था, जो प्रायः आठ से बारह तक व्यवस्थित थी पर विभिन्न विद्याओं के अभ्यास क्रम के अनुसार प्रत्येक आयु के व्यक्ति के लिए आश्रमों के द्वार सदा खुले रहते थे।

———

भूगोल की पुस्तकें एटलसें व अभ्यास कापियाँ तथा नकशे

जगत मान् चित्रावली	ढाई रुपया
एशिया मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
भारत मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
अभ्यासकापी संसार व भारत	बारह आना
" भारत	छः आना
विश्व भू वर्णन	दस आना
एशिया भू वर्णन	पाँच आना
प्राकृतिक भूगोल भाग ३	तीन आना
" " भाग १,२	तीन आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
" भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
नकशे	छः आना प्रति

(संसार, भारत, उत्तर प्रदेश जिला बिजनौर तथा हर एक महाद्वीप का रंगीन राजनैतिक मानचित्र। एशिया, भारत प्राकृतिक मानचित्र)

दुनिया की मश्की कापी	दस आना
एशिया " " "	छः आना
भारत " " "	छः आना
भूगोल प्रश्नोत्तर	दस आना
नवीन भूगोल भारत कक्षा ६	आठ आना
" " एशिया " ७	आठ आना

मैनेजर—गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा गीत—

(१)

तर्क मुझको डस रहा है
औ वितर्क सता रहा है—
तूलिका से व्यर्थ मैंने
चित्र क्यों यह खींच डाला,
और फिर हो क्षुब्ध क्यों अब
पुण्य कृति को नोंच डाला,
इस बवंडर के बहाये
नाव कब बहसकेगी—
आज लो पतवार कर में
वेग झंझा बढ़ रहा है।
तर्क मुझको डस रहा है,
औ वितर्क सता रहा है॥

(२)

मौन जीवन के स्वरों में,
शाप या वरदान फूंको।
कवि अंतर की व्यथा से,
मत अरे निज देह फूंको।
सांस की रफ्तार ऐसी,
कौन युग भर चल सकेगी।
इसलिए मन मान्यता,
स्वीकार जग की कर रहा है।
तर्क मुझको डस रहा है,
औ वितर्क सतारहा है।

(३)

आंख मूंदो, पाल खोलो,
नाव भंवरों पर बहादो,
तर्क और वितर्क छोड़ो
सृष्टि के संग ही बहादो,
कम न नूतन आज खोजो
रूढ़ियाँ चलती रहेंगी—
क्लिष्ट प्रचलित क्रम बदलना
प्रति निमिष यह कह रहा है।
तर्क मुझको डस रहा है
औ' वितर्क सता रहा है।

(४)

क्यों नहीं स्वीकार करते
विश्व के प्रचलित नियम को,
बुद्धिवादी व्यर्थ बनकर
तुम सिखाते भ्रम जगत को,
यह प्रगति अवरुद्ध होगी
यों नहीं यह बह सकेगी—
मन हुआ है क्षुब्ध मेरा
और अन्तर डर रहा है!
तर्क मुझको डस रहा है
औ' वितर्क सता रहा है॥

हाई स्कूल परीक्षा सालव्ड पेपर्स

सब प्रश्नोत्तर सन् १९५५ ई० तक हल हैं।

भारतीय इतिहास प्रश्नोत्तर	१॥)	क० आधा
प्रश्नोत्तर वर्ल्ड हिस्ट्री	॥।)	,, ,,
भूगोल प्रश्नोत्तर	२)	,, ,,
मैथमैटिक्स प्रश्नोत्तर	२)	,, ,,
एलीमेन्ट्री मैथ्स	॥)	,, ,,
विज्ञान प्रश्नोत्तर	२)	,, ,,
सिविक्स	३)	क० आधा
बुक कीपिंग	१॥।)	,, ,,
कामर्स	२)	,, ,,
जनरल साइन्स	१॥)	क० आधा
इकोनामिक्स	२)	,, ,,
आर्थिक भूगोल	२॥)	,, ,,
इंगलिश प्रश्नोत्तर (एडवान्स) मू० ३)		,, ,,
हिन्दी प्रश्नोत्तर ,, ४)		,, ,,
टुंडे एण्ड टुमारो की कुञ्जी क० ८ मू० २)		क० आ०
कुंजी संस्कृत प्रवेशिका भाग १ ,, ≡)		,, ,,
कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग २ ,, ≡)		,, ,,
कुन्जी संस्कृत प्रवेशिका भाग ३ ,, ।)		,, ,,

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं नीरस हूं ! मातम हूं !

लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता

उस घने जंगल के बीच कितना सुन्दर था वह सरोवर ? आकाशीय मेघमालाओं के लिए अपनी छबि देखने का बड़ा सा दर्पण था, और उस सरोवर के किनारे झाड़ियाँ थीं मानो दर्पण सुन्दर बेल बूटेदार चौखट में जड़ा हो, उसके किनारे लगे आम के पेड़ जिन पर बैठीं हुई कोयल की कूक मानव के हृदय को बाँध लेती थी, झुके हुए वृक्ष मानो वे उस दर्पण में अपनी छबि निहार रहे हों, उस सरोवर के हृदय में तैरती हुई मछलियाँ कितनी सुन्दर लगती थीं ?

उन्हीं झाड़ियों में मैंने उसे देखा और उससे दो क्षण के लिये आँखें चार हुईं वह रुकी और बोली—क्या तुम मेरे·····?

मैंने कहा— सौंदर्य के कारण यदि तुझे मुझसे प्रेम हो गया है तो तू मुझे भूलजा ! नादान तू भ्रम में है, मुझसे अधिक सुन्दर मुझसे अधिक आकर्षक, मुझसे अधिक मनोरम है यह नीला आकाश जिसके हृदय में मेघ वास करते हैं जो कभी कभी तारिकाओं से अच्छादित रहता है जहाँ कभी चकोर का चाँद रहता है ! तू प्रेम कर उसे—

तू इस प्रकृति से प्रेम कर, तू उसकी गोद में पले हुए उस फूल से प्रेम कर जो हार में गूंथा जाता है तू उस सागर से प्रेम कर जिसमें अथाह पानी है, तू इस पर्वत के पत्थरों से प्रेम कर ! ये मुझसे अधिक सुन्दर हैं।

यदि मेरी मधुर वाणी सुन कर तुझे मुझसे प्रेम हो गया है तो तू मुझे तू भूलजा : बसन्त की दूत कोयल से प्रेम कर जिसकी कूक के फन्दे में मानव का हृदय फंस जाता है तू उसकी वाणी का रस्वासादन कर उसका जीवन मुझसे अधिक सुन्दर है—

मेरे इस बिखरते हुए यौवन को देखकर यदि तेरे मन में प्रेम की लहरें हिलोरें लेने लगी हैं तो तू मतिहीन हुई है ! मुझसे अधिक यौवन तो प्रति वर्ष नये आते बसन्त में हैं—उसके यौवन का मधुर प्याला कहीं अधिक छलाछल, अधिक मादक है ! तू उसे प्रेम कर—

यदि तू चाहती है कि तेरे हृदय में कोई बसे तो तू अपने हृदय में ईश्वर को बसा ! वह जिसका स्वप्न यह सारा विश्व है— जिसने इस मानव को मानवीय अनुभूति दी। सुन्दर है ! सर्व शक्तिशाली है ! अमर है ! मैं तो नीरस हूँ मातम हूँ !

———

आपके पुस्तकालय के लिए

हमारी चुनी हुई पुस्तकें

आजादी की कहानी	२॥)	क० चौथाई
हिन्दी साहित्य कोष	५)	"
नेताओं की कहानी	॥)	"
मधुर गीता	॥)	"
जादू के खेल	॥=)	"
घरेलू इलाज व दस्तकारी	॥=)	"
केले और पपीते की खेती	।)	"
गृह शास्त्र भाग १	१॥)	तिहाई
" २	॥।)	"
बेसिक ड्रामा	॥=)	आधा

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा का मनोविज्ञान

लेखक—रामकिशोर "पाषाण"

'परीक्षा" और जाँच" ये दो शब्द विद्यार्थी-जगत में बहुत प्रचलित हैं। इनमें भी परीक्षा शब्द अधिक प्रचलित है—और आज के विद्यार्थी अगर डरते हैं तो सिर्फ इस परीक्षा से ही। विद्यार्थी-जीवन का उद्देश्य ही आज परीक्षा पास करना हो गया है। इसी की ओर उनका सारा प्रयत्न रहता है। परीक्षा पास करने और उसमें अधिक अंक प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी हर एक प्रकार के कार्य करने को उद्यत रहता है। परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए देवी-देवताओं की पूजा करना, उनकी मनौतियाँ मानना आवश्यक प्रश्नों के उत्तरों को कंठस्थ करना, इन उत्तरों को कहीं छिपी जगह में रखना और परीक्षा के समय उनसे सहायता लेना, प्रश्न पत्र जानना, परीक्षा के समय अन्य दूसरे प्रकार से नकल करना आदि बातें साधारण बन गई हैं।

१५ अक्टूबर, ४७ को खादी विद्यालय सेवा ग्राम में अपने प्रवचन में विनोबा जी ने कहा था—

"पुरानी तालीम पर इतने आक्षेप किए गए हैं कि मेरे लिए किसी ने कुछ बाकी नहीं छोड़ा है। लेकिन उसका बुरा से बुरा चित्र तो मेरे सामने खड़ा होता था जब हमारी परीक्षाएं ली जाती थीं उस वक्त हम पर देख-रेख के लिए निरीक्षक रखे जाते थे, इसलिए कि विद्यार्थी चोरी से एक दूसरे की नकल न करें। मुझे दुःख होता था कि अगर हमारे बारे में पहले से ही यह धारणा रखी गई है कि हम चोरी कर सकते हैं, तो विद्यार्थी के नाते हम पहले ही फेल हो गए। फिर हमारी परीक्षा लेने को क्या बाकी रहा ?" लेकिन परीक्षा का एक दूसरा पहलू भी है। इसे आप आत्म समीक्षा कहें अथवा जाँच कहें।

बुनियादी शिक्षा में परीक्षा का कोई स्थान ही नहीं रखा गया है। हां उसमें आत्म समीक्षा और जाँच को अवश्य स्थान दिया गया है। उसमें जो दृष्टि कोण रखा गया है, वह बहुत सही है। सैद्धांतिक दृष्टि से बहुत लाभकारी है। समय समय पर शिक्षक विद्यार्थियों को भी मौका देते हैं. कि वे स्वयं इस बात की जाँच करें कि उन्होंने कहां तक प्रगति की है इसके लिए सिर्फ लिखित परीक्षा ही काफी नहीं होती, विद्यार्थियों के काम के लेखे और चार्ट रखे जाते हैं और स्वयं विद्यार्थियों से भी यह सलाह ली जाती है. कि उसकी कमजोरी कहाँ है, ताकि उस कमी को पूरी कर सकें।

आज शिक्षा-जगत में जो परीक्षा की प्रणाली विद्यमान है, संभवतः उसका भी मूल उद्देश्य योग्यता की जाच ही रहा होगा। किन्तु जिस ढंग से आज परीक्षा ली जाती है तथा विद्यार्थी जिस ढंग से उसे ग्रहण करते हैं, वह बिलकुल गलत सिद्ध हो रही है। इसके कारण आज सारी शिक्षा ही निरर्थक गई है—वह सिर्फ परीक्षा पास करने का साधन ही बन गई है। आरंभिक कक्षाओं में मुख्यतः गणित, भाषा और भूगोल ये तीन विषय पढ़ाये जाते हैं। कहीं कहीं सामान्य ज्ञान की बातें भी "पढ़ाई" जाती है। हर एक विषय के लिए एक (या अधिक) पुस्तक रहता है। कक्षा में इन पुस्तकों में से पढ़ाया जाता है और परीक्षा में प्रायः उन्हीं में से प्रश्न पूछे जाते हैं। विद्यार्थियों के मन में जब यह बात जम जाती है कि उन पुस्तकों की परीक्षा पास करने के लिए) पढ़ना है, तो उनके लिये उसके मन में अरुचि-सी पैदा हो जाती है। पाठ्यक्रम की इन दो या तीन पुस्तकों के सिवाय और कोई पुस्तक पढ़ने योग्य है—यह बात बात विद्यार्थियों के शिक्षक और माता-पिता नहीं मानते, और विद्यार्थी तो बाध्य होकर ही पाठ्यक्रम की पुस्तकें (बड़ी अनिच्छा से) पढ़ता है। और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी अनिच्छा के कारण वह उन्हें याद भी नहीं रहती। वर्तमान स्कूलों के विद्यार्थियों में से मैं बहुत कम को वाचनालय या पुस्तकालय का उपयोग करते देखता हूँ। और जिन थोड़े से विद्यार्थियों को पुस्तकालय का "चस्का" लग जाता हैं, उनका सामान्य ज्ञान भले ही बढ़ जाय, पाठ्यक्रम के विषयों में कच्चे ही रह जाते हैं। यह भावना ही बड़ी अरुचिकर है कि उन पुस्तकों में से साल अन्त में प्रश्न पूछे जाएंगे जिनके उत्तर गलत होने पर हमारी साल भर की मेहनत व्यर्थ जायगी, हमारा एक बर्ष व्यर्थ जायगा, मां बाप का धन व्यर्थ जायगा।

मुझे अपने विद्यार्थी जीवन का स्मरण है कि "इतिहास की कहानियां" और भाषा की पुस्तकों में अच्छी से अच्छी कहानियाँ होते हुए भी उनमें मुझे कोई स्वाद नहीं आता। अपनी पुस्तकें कभी खोलकर पढ़ता भी नहीं था, इसके विरुद्ध पाठ्यक्रम की पुरानी पुस्तकों को, अपनी बड़ी बहन की पुस्तकों को या वाचनालय की अन्य पुस्तकों को मैं बड़े चाव से पढ़ता था क्योंकि वह तो सिर्फ "स्वान्तः सुखाय' होती थीं, यह डर नहीं रहता था कि उन्हें याद करना है या उनमें से परीक्षा प्रश्न पूछे जाएंगे। नतीजा यह होता था कि कक्षा में जो कुछ पढ़ाई हो जाय, बस वही मेरी पढ़ाई होती थी। अधिक से अधिक शिक्षक द्वारा घर में हल करने के लिए दिए प्रश्नों का उत्तर घर में लिखा करता था।

इन पुस्तकों में से स्कूलों में कितनी पढ़ाई होती है, यह भी एक बात है। मैट्रिक को छोड़ अन्य कक्षाओं में मैंने देखा है कि औसतन पाठ्यपुस्त के २४ पाठों में से ८ या ९ पाठ पढ़ाये जाते हैं। बाकी पाठ क्यों नहीं पढ़ाये जाते, इसका उत्तर मैं नहीं दे सकूंगा। मैट्रिक की परीक्षा में अवश्य प्रयत्न किया जाता है कि पाठ्य क्रम में से यथा संभव अधिक से अधिक चीजें पढ़ा दी जाँय। लेकिन उसमें भी (और विश्व-विद्यालयों में भी) परीक्षा में न आने वाली चीजें प्रायः छोड़ दी जाती है। शिक्षकों और अध्यापकों से यदि कोई विद्यार्थी कोई प्रश्न पूछे तो वह कह सकता है कि यह परीक्षा में नहीं आयगा इसे छोड़ दो।

यह हाल है हमारी परीक्षा-प्रधान शिक्षा का। शिक्षा शास्त्री सोचा करते हैं कि परीक्षा-की बुराइयों को किस तरह दूर किया जाय। वैसे तो शायद परीक्षा या जांच को शिक्षा-जगत से हटा देना व्यावहारिक दृष्टि से ठीक नहीं होगा, क्योंकि सभी स्थितियों में यह जांच लेना आवश्यक हो जाता है कि हमने विद्यार्थियों को जो शिक्षा दी, उसमें से वे कहां तक आत्मसात कर पाये, या दूसरे शब्दों में-हम अपने उद्देश्य में कहाँ तक सफल हो पाये। आवश्यकता इस बात कि है की जांच या परीक्षा का ढंग ऐसा हो, कि वह विद्यार्थी के लिए एक डरावनी चीज न बने, बल्कि उसे अपनी योग्यता अधिक बढ़ाने के लिए प्रेरित करे। परीक्षा द्वारा यह जाँचा जाय कि वास्तव में उसके ज्ञान में, उसकी योग्यता में कहाँ तक प्रगति हुई है, परीक्षा सिर्फ इस बात की न हो कि विद्यार्थी रटी हुई चीजों को कहाँ तक उगल सकता है। लोग प्रायः वास्तविक ज्ञान और सिर्फ जानकारी का फर्क नहीं कर पाते हैं और परीक्षा में सिर्फ जानकारी की ही जाँच की जाती है, जो कि गलत है। जहां तक संभव हो, वार्षिक परीक्षा को इतना महत्व न दिया जाय जितना आज दिया जाता है, वरन् समय समय पर, हर मास और हर तीन मास में विद्यार्थी की जाँच हो। जिन विषयों में उसकी प्रगति कम मालूम पड़े उनमें उसे समय देकर शीघ्र से शीघ्र उस कमी को दूर करने का प्रयत्न किया जाय। इस प्रकार की जाँच से स्वयं विद्यार्थी को अपना लाभ स्पष्ट दिखाई देगा। वह उससे डरेगा नहीं वरन् अपनी कमजोरियो को स्वयं प्रकट करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी सिलसिले में यह प्रश्न भी उठ सकता है कि सिर्फ आत्म विकास के लिए लोग राष्ट्र भाषा या हिन्दुस्तानी परीक्षायें देते हैं वह कहाँ तक उचित है। कुछ लोगों को इसमें विरोधाभास प्रतीत होता है कि गांधी जी ने जहाँ बुनियादी शिक्षा में वर्तमान परीक्षा प्रणाली को अस्वीकार किया। वहाँ राष्ट्रभाषा और हिन्दुस्तानी की परीक्षा लेने की उन्होंने स्वीकृति दी थी। विचार करने पर इन दोनों परीक्षाओं में अंतर स्पष्ट दिखाई देगा। भाषा की या ऐसी ही परीक्षायें हम सिर्फ उस विषय का ज्ञान बढ़ाने और उसकी प्रगति जाँच लेने की दृष्टि से लेते देते हैं। इसके पीछे वैसी भय की भावना नहीं होती, और वैसा विचार नहीं होता, जैसा कि आम शिक्षा में होता है।

उ० प्र० की महान शिक्षा व उद्योग योजनायें

शिक्षा पर ३५० करोड़ रुपए की अधिक व्यय किये जायेंगे

योजना आयोग तथा अन्य सम्बन्धित संस्थाओं व्यक्तियों के और परामर्श के परिणाम स्वरूप दूसरी पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के लिये प्रथम पचवर्षीय योजना से ३५० करोड़ रुपये अधिक निश्चित किये जायेंगे।

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने केन्द्र और राज्यों में १०८० करोड़ रुपये की अतिरिक्त धनराशि व्यय करने की सिफारिश की है। किन्तु सामाजिक सर्विसों को जिनमें शिक्षण संस्थायें भी शामिल हैं, प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत स्वीकृत की गयी धनराशि से ५०० करोड़ रुपये से अधिक मिलेंगे।

शिक्षा मन्त्रालय की १०८० कसोड़ रुपये की योजना का मुख्य उद्देश्य ६ और ११ वर्ष मध्य की आयु के ७८ प्रतिशत बालक और बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा देना है। प्रथम पंचवर्षीय योजना में ५० प्रतिशत बालकों और बालिकाओं की शिक्षा की व्यवस्था है। इसका उद्देश्य यह भी है कि सन् १९५१ तक ३० प्रतिशत बालक और बालिकायें स्कूल जांय जबकि वर्तमान काल में यह संख्या १५ प्रतिशत ही है। प्राथमिक स्कूलों की संख्या १ लाख २० हजार होगी जिसमें से ५० प्रतिशत बुनियादी स्कूल होंगे।

उक्त योजनानुसार समस्त प्रकार के अध्यापकों को अच्छा वेतन मिलेगा। अशिक्षित अध्यापक का बुनियादी वेतन ५) होगा।

माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या १० प्रतिशत से बढ़ा कर २० प्रतिशत करदी जायगी।

योजना में विश्वविद्यालय शिक्षा में सुधार करने का भी उल्लेख है।

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय के सेक्रेटरी प्रो० कबीर ने द्वितीय पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के विकास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसका उद्देश्य समस्त नागरिकों को निश्चित न्यूनतम स्तर पर शिक्षा प्रदान करना है।

उ० प्र० में हरिजन छात्रों को अधिक सुविधा

उत्तर प्रदेश हरिजन सहायक बोर्ड ने, जिसकी बैठक नैनीताल में यहां शिक्षामंत्री ठाकुर हरगोविंद सिंह की अध्यक्षता में हुई थी, निश्चय किया है कि राज्य के उन सभी हरिजन छात्रों को, जो इण्टरमीजियेट में पढ़ते हैं, न केवल पाठ्य-शुल्क से ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त रखा जाय, बल्कि उनसे छात्रावास का किराया भी न लिया जाय और उनको जो वजीफे मिलते हैं वे जारी रहें। इस निश्चय का प्रभाव राज्य के ५००० हरिजन छात्रों पर पड़ेगा, जो वजीफा पाने के अलावा ये दो शुल्क मुक्तियां अलग से पा जायेंगे। शिक्षामंत्री ने यह भी घोषित किया कि उन्होंने राज्य के सभी ट्रेनिंग कालेजों को यह परिपत्र भेजने का आदेश दिया है कि जिन कालेजों में भर्ती के समय १८ प्रतिशत हरिजन उम्मीदवार नहीं लिये गये हैं वहां इस गलती को दुरुस्त कर लिया जाय। शिक्षामंत्री ने यह भी दावा किया कि हरिजनों के कल्याण पर उत्तर प्रदेश सरकार जितना व्यय करती है, यह देश के अन्य सभी राज्यों की अपेक्षा अधिक है। बैठक में एक विचित्र निश्चय यह अवश्य हुआ कि हरिजन सहायक बोर्ड का नाम बदलकर हरिजन वेलफेयर बोर्ड कर दिया गया।

उ० प्र० की शिक्षा योजना पर ६७ करोड खर्च का अनुमान

उत्तर प्रदेश की द्वितीय पंच-वर्षीय शिक्षा योजना में निःशुल्क प्राइमरी शिक्षा माध्यमिक स्कूलों के शुल्क में कमी तथा अध्यापकों के लिए सुविधाओं की व्यवस्था होगी। इस शिक्षा-योजना पर, जो राज्य विधान मंडल की स्थायी समिति को पेश की गयी, अनुमानतः ६७ करोड़ रुपया खर्च होगा।

इसमें निःशुल्क प्राइमरी शिक्षा पर १ करोड़ रुपया खर्च होगा हाई स्कूलों के शुल्क में कटौती करने तथा अध्यापकों की वेतनवृद्धि पर क्रमशः १ करोड़ और ३॥। करोड़ रुपया खर्च होगा।

योजना में लगभग ५० हजार व्यक्तियों को अध्यापक नियुक्त करने की व्यवस्था होगी। साथ संस्कृत की शिक्षा का अधिक प्रसार किया जायगा।

योजना के अधीन ४ करोड़ ६५ हजार रुपए के खर्च से वर्तमान ३१ हजार जूनियर बेसिक स्कूलों की स्थिति सुधारी जायगी और ४ करोड़ रुपए के खर्च से साढ़े ७ हजार नए जूनियर बेसिक स्कूल खोले जायेंगे।

प्राइमरी शिक्षा का कुल आवर्तक तथा अनावर्तक खर्च अनुमानतः २५ करोड़ रुपए से अधिक होने की संभावना है।

योजना के अधीन दस्तकारी और कृषि की शिक्षा दिए जाने का भी विचार है जिस पर अनुमानतः १ करोड रुपया खर्च होगा।

उच्च माध्यमिक स्कूलों से सम्बद्ध योजनाओं पर ९ करोड़ रुपया खर्च होने का अनुमान है। लड़कियों के लिए भी माध्यमिक स्कूल खोले जायेंगे।

योजना में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना काशी के सरकारी संस्कृत कालिज के पुस्तकालय तथा पाठशालाओं के सुधार की भी व्यवस्था है। इस कार्य पर ५१ लाख १२ हजार रुपया खर्च किया जाएगा।

लखनऊ, आगरा, तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालयों की आर्थिक सहायता बुद्धि एवं नक्षत्र वेधशाला तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए २५०.५० लाख रुपया निश्चित किया गया है।

हिन्दी साहित्य के विकास के लिए २५ लाख रुपए अतिरिक्त खर्च की व्यवस्था है।

उ० प्र० में करघा, छोटे उद्योग व दस्तकारियों का विकास

केन्द्रीय सरकार ने सितम्बर १९५३ और १९५४ के अन्त में उत्तर प्रदेश में हथकरघा उद्योग के विकास के लिये ५८७९, ४८८ रुपए ऋण और अनुदान के रूप में स्वीकार किये।

ऋण की राशि में से २८ लाख सहकारी समितियों की चालू पूंजी के लिये तथा २,७५,००० रुपये बुनकरों की हिस्सा पूंजी के लिये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२,२३,७३० रुपये सोज समान की खरीद आदि के लिये थे जिसमें अधिकतर रुपये आधुनिक साज-सज्जा से युक्त खड्डियों की खरीद के लिये थे।

१,५४,४०० रुपये चलती-फिरती गाड़ियां खरीदने और ७५,००० रुपये इन गाड़ियों में बेचने के लिये कपड़ा खरीदने के लिये चालू पूंजी के रूप में स्वीकार किये गये अनुदान के रूप में दी हुई राशि में से ३१२,००० रुपये बिक्री के डिपो खोलने और ३३,००० रुपये अन्तर-प्रांतीय डिपो खोलने के लिये स्वीकार किये गये। १२,६०,००० रुपये का अनुदान हथकरघा कपड़े की बिक्री पर छूट देने के लिये दिया गया। इसके अतिरिक्त नमूने खरीदने प्रदर्शन दलों के लिये साज-समान और कच्चा माल खरीदने कपड़े के निरीक्षण, संगठन, प्रचार, गवेषणा और इनाम बांटने आदि के लिये भिन्न २ रकमें दी गई।

लघु उद्योग

लघु उद्योगों के विकास के लिये १९५४-५५ में १७,५६,००० रुपये ऋण और १२,८१,५५२ रुपये अनुदान के रूप में देना स्वीकार किया गया। इसमें से १० लाख का ऋण और घरेलू और उद्योगों को ऋण देने के लिये था। ३,७६,००० रुपये का ऋण और ३१,००० रुपये का अनुदान घरेलू और लघु उद्योगों के लिये शिक्षण और उत्पादन के मिश्रित केन्द्र स्थापित करने के लिये दिया गया। वर्गीकरण योजना को जारी रखने के लिये १,००,५०० अनुदान के रूप में दिया गया। ५ लाख रुपये का ऋण और ७०,१०० रुपये का अनुदान जूता उद्योग के विकास के लिये एक सहकारी उत्पादन केन्द्र खोलने के लिये स्वीकार किया गया। ५,०८,०९१ रुपये का अनुदान और २,२५,००० रुपये का ऋण खाल उतारने और उसे पकाने के उद्योग के विकास के लिये दिया गया। इलाहाबाद और बरेली में लकड़ी से उद्योग, कैंची, छुरी इत्यादि के उद्योग के विकास के लिये और आगरे में नापने की मशीन लगाने के लिये भिन्न २ रकमें स्वीकार की गई।

दस्तकारियों के विकास के लिये १९५४-५५ में उत्तर-प्रदेश को ८,२०० रुपये अनुदान के रूप में देना स्वीकार हुआ। उसमें से ५००० रुपया लखनऊ में खिलौने बनाने के लिये शिक्षा-केन्द्र खोलने के लिय दिया गया।

राजकीय प्रकाशन

कृषि और सरल विज्ञान भाग १

कक्षा ३ के लिए

नई लिपि में

तैयार है। आज ही आर्डर दीजिए।

मैनेजर

गुप्ता ब्रदर्स मंडी धनौरा

(मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोरिया में ठहरे हुए अमेरीकी सिपाही ४ लाख डालर चन्दा कर रहे हैं ताकि एक सीने के रोगों (तपेदिक को विशेष रूप से) दूर करने के लिए एक मेडिकल कालेज खोला जा सके।

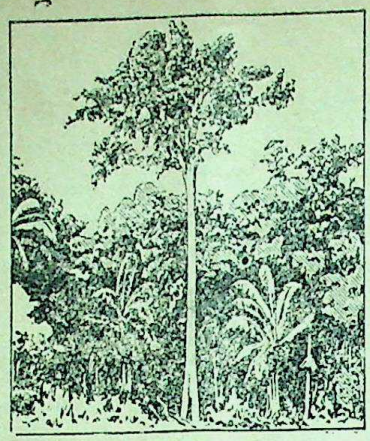

वेनेजुला और ब्राजील में गाय पेड़ नामक पेड़ से दूध जैसा शक्तिदायक सफेद रस प्राप्त होता है उसे दूध की तरह विभिन्न रूप से प्रयोग कर सकते है।

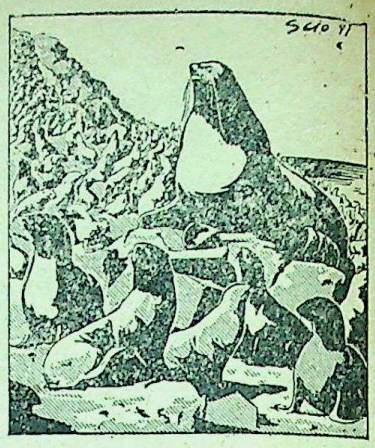

बेरिंग समुद्र के प्रीबिलोफ द्वीप पर संसार के जंगली पशुओं की सबसे बड़ी सभा होती है। बच्चे देने के मौसम में लगभग १५ लाख सील मछली इकट्ठी होती हैती हैं।

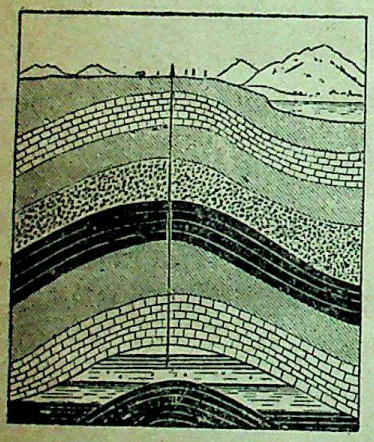

मनुष्य ने धरती को २०५२१ फिट तक गहराई तक छोड़ लिया है। यह गहराई अमेरिका के तेल कुएं की है।

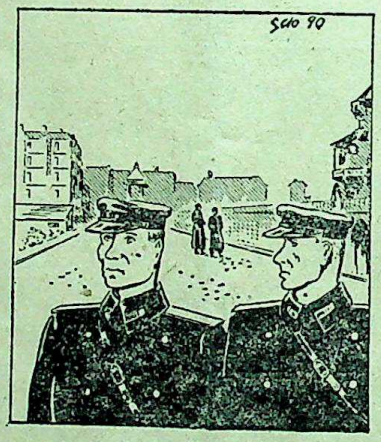

सोवियत सिपाही भी एक दूसरे पर यह राकेले हैं।

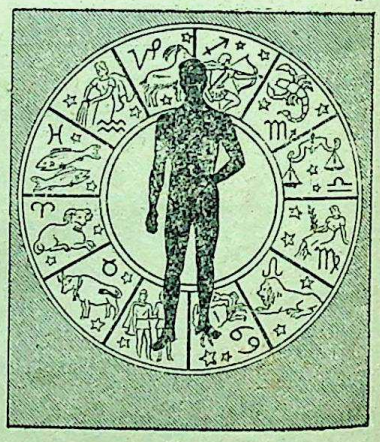

प्राचीन विश्वास कि मनुष्य का शरीर ७ वर्ष में पूरा बदल जाता है अब वैज्ञानिकों ने बदल दिया है। उनका विचार है कि एक वर्ष में ही ९८% शरीर की वस्तुएं नई हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार में दस जीवित प्राणियों में से ९ कीड़े हैं। यह आश्चर्य ही है कि मनुष्य इनके बीच जीवित रहता है।

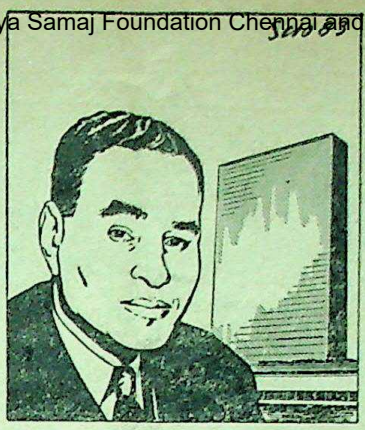

१९५० में नोबल शान्ति पुरस्कार के विजेता डा० राल्फ-बुंच यू० एन० ओ० के डिप्टी सेक्रेट्री जनरल नियुक्त हुए हैं।

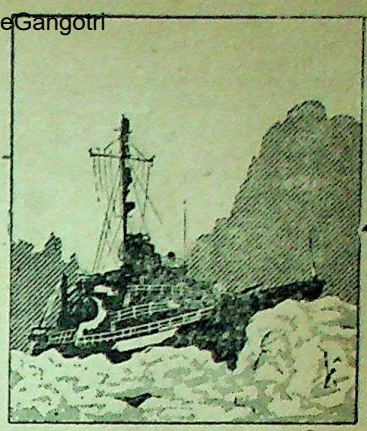

कनाडा के ऊपर आर्कटिक वृत्त में दो अमेरिकन जहाजों ने अगस्त १९५४ में उत्तरी पश्चिमी रास्ता ढूंढ निकाला।

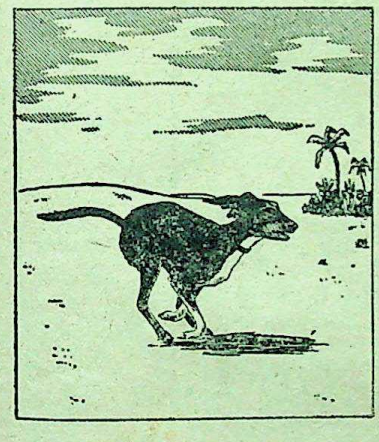

बहरों के पालतू कुत्ते सालू की गति संसार भर में सबसे तेज ५५ मील प्रति घंटा है।

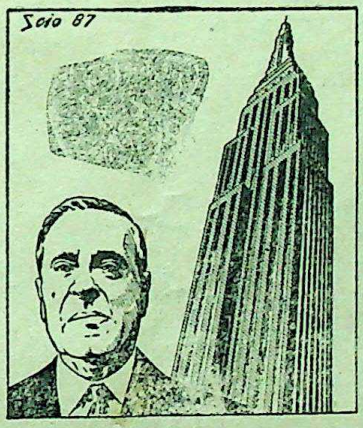

अमेरिका की उच्चतम बिल्डिंग न्यूएम्पायर स्टेट के मालिक हेनरी क्राऊन ने इसे ५१० लाखडालर में खरीदा। उसने अपना जीवन एक चपरासी की हैसियत जिसे ४ डालर फी हफ्ता मिलता था शुरू किया था।

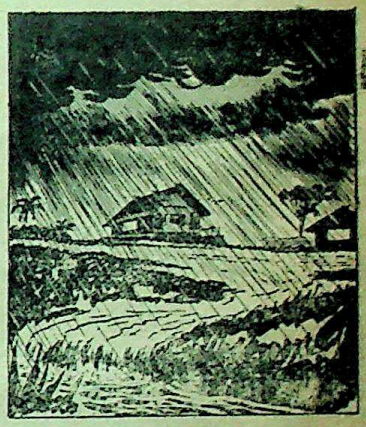

फिलीपाइन की राजधानी बेगयोलजोन में १९११ की जुलाई में एक दिन में ही ४६" वर्षा हुई इससे अधिक संसार में कहीं भी नहीं हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

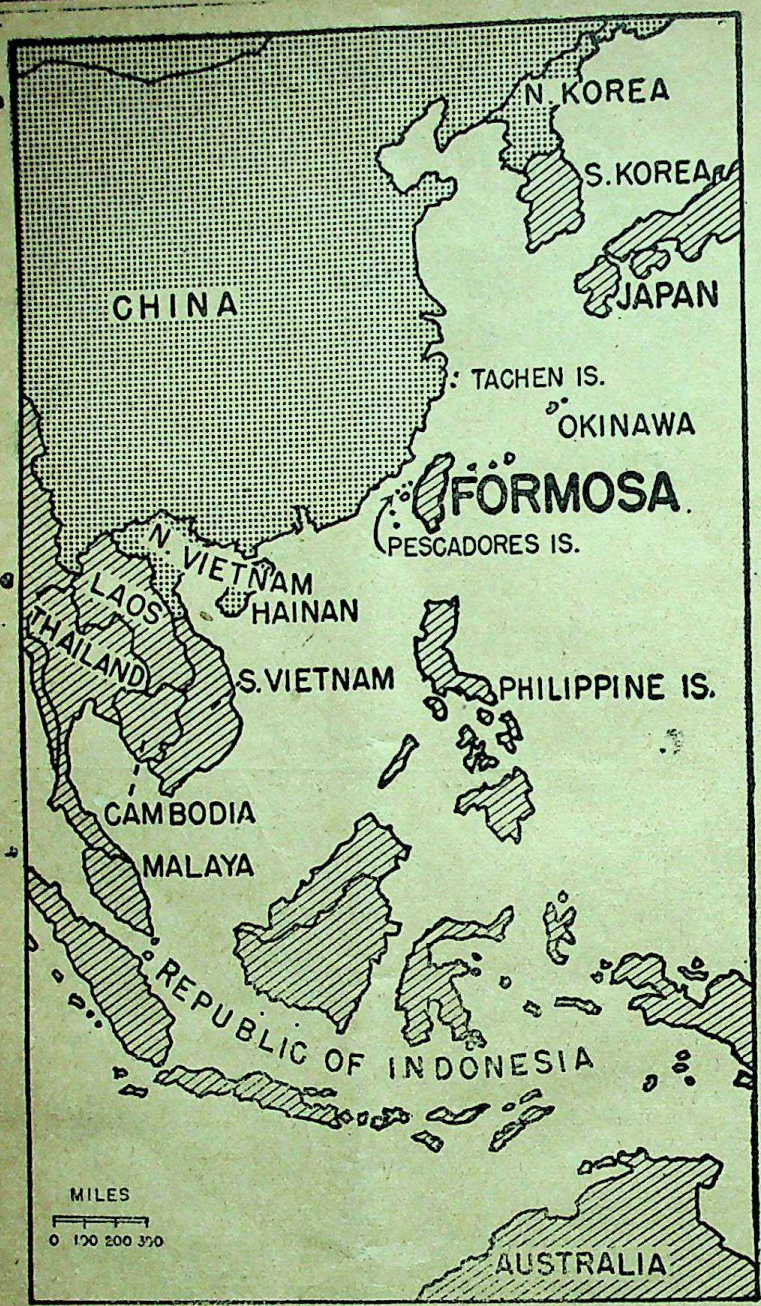

फारमूसा द्वीप—जो विश्व के राजनीतिज्ञों के लिए एक समस्या बना हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालबन्धु

जोलाई सन् १९५५ ई०

घड़ी

मूल लेखक— गुरुदेव टैगोर

अच्छी, अम्मा।
समय की डिबिया
जो खुल जाए कहीं ?
और
यह घंटे और मिनट
निकल कर भाग जाँय ?
तब मुझे स्कूल न जाने पर
बुरा न कहना तुम,
तब तो स्कूल जाने का समय
होगा न जैसे कभी।
जितनी भर भी घड़ियाँ हैं
संसार में,
सब की सब
देख लेना
दस बजाना ही न जानेंगी कभी।
देखो, अम्मा !
अब जो सोने के लिए
लेटूँ न मैं,
तुम मुझ पर
अब क्रोध न करना
अपराध मेरा नहीं।
कैसे सोऊँ मैं ?

चिन्ह तक भी न हों जब
रात्रि के,
मेरी माता
अब तो रातें सारी
ग़ायब हो गईं।
अच्छी, अम्मा
आज तो एक बात मेरी
मान लो,
बस कहानी ही कहानी
मुझसे तुम कहती रहो।
तुम कहोगी
यह कहानी
समाप्त होती ही नहीं,
समाप्त हो जाएगी कहानी
रात
जब आगे बढ़ी।
देख लेना आज सोने को
न होगी देर कुछ,
समय की डिबिया
के खुल जाने से
रातें सब खुल ही गईं

अनुवादक— प्रसन्न कक्षा ११

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपकार का बदला

ले – इन्द्रा देवी शुक्ला दि०

किसी ग्राम में एक ब्राह्मण देवता रहते थे। वे बड़े ही गरीब थे। ठाकुर जी के मन्दिर में पूजा करके जो कुछ पा जाते उसी से किसी प्रकार अपना निर्वाह करते थे। उनके घर में उनकी पतिव्रता पत्नी के सिवाय कई बच्चे भी थे। गृहचिंता के मारे बेचारी ब्राह्मणी मन ही मन घुली जाती थी। वह भी मेहनत मजदूरी द्वारा चार पैसे पैदा कर पति की सहायता करती थी। तो भी गरीबी ने उनका पीछा न छोड़ा उन्हें कंगाली ही आती गई ब्राह्मण लोग बहुधा दयालु होते हैं। हमारे पंडित जी भी दयालु थे। इतनी गरीबी रहते हुए भी यदि यहाँ कोई भूखा प्यासा भिक्षुक आ जाता तो वे उसे भोजन कराते और खुद भूखे रह जाते थे। इसी प्रकार दुख सहते-सहते बहुत दिन बीत गये। इतनी कंगाली होने पर भी उन पर एक आपत्ति और आ गई। उनकी एक कन्या विवाह योग्य हो गई ब्राह्मण देवता चिंता के भार से दबे जाते थे। उनकी चिंता देख कर ब्राह्मणी को भी सुख की नींद नहीं आती थी।

एक दिन दो सज्जनों ने पंडित जी से कहा आप किसी प्रकार की चिंता न कीजिए आपकी दशा देखकर हम लोग भी दुखी हैं। यदि आज्ञा हो तो हम लोग कन्या के विवाह का प्रबन्ध करें। ब्राह्मण देवता पूरे स्वाभिमानी थे वाक्य उनके हृदय में तीर के समान चुभ गये। उन्होंने नम्रता-पूर्वक उत्तर दिया—आपकी इस कृपा के लिए मैं कृतज्ञ हूँ। परन्तु क्षमा कीजिए मैं किसी के भार से दबना ठीक नहीं समझता। मैं स्वयं धन एकत्र कर कन्या के विवाह की कोशिश करूंगा। वे लोग ब्राह्मण की बात सुनकर आश्चर्य में आ गये और आपस में कहने लगे इतनी कंगाली रहने पर भी इतनी आत्म निर्भरता भाई सच्चा ब्राह्मण है। ऐसा अभिमानी और त्यागी कहाँ मिलेगा।

उसी दिन ब्राह्मण ने ब्राह्मणी से कहा—अब पुत्री विवाह के योग्य हो गई है। बिना हाथ पैर चलाये पूरा न पड़ेगा। इसलिए मैं कल ही दूसरे नगर में जाकर अपने भाग्य की परीक्षा करूँगा। तुम घर में रहकर मेहनत मजदूरी द्वारा घर का खर्च चलाना।

ब्राह्मणी को यह सुनकर बड़ा दुख हुआ पर बेचारी करती क्या कन्या का विवाह करना भी तो आवश्यक था। उसने दुखित मन से पति को विदा किया।

पंडित जी ने किसी नगर में पहुँच कर एक महाजन के यहाँ १५) माहवारी की नौकरी करली ५) घर भेजकर शेष रु० आप अपना खर्च में लाते और कुछ बचाकर भी रखते जाते थे। कुछ दिनों में आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने कन्या के विवाह लायक रुपया इकट्ठा कर लिया। तब एक दिन आपने बाजार से कुछ सामान खरीद कर घर की राह ली।

रास्ते में उन्होंने देखा कि बहेलियों एक हन्स, एक कौए, एक तेंदुए और एक अहीर को कैद किए है। ब्राह्मण देवता दयालु तो थे ही ऐसा दृश्य कब देख सकते थे। उन्होंने तुरन्त अपना सब रुपया देकर उन जीवों को उस दुष्ट के फन्दे से छुड़ा दिया। वे चारों पंडित जी के पैरों पर गिर पड़े कई प्रकार उनकी बड़ाई करने लगे चलते समय पंडित जी से बोले—भगवान यदि आपको कभी अवकाश मिले तो हमारे स्थानों को भी पवित्र कीजिएगा।

कुछ समय में पंडित जी भी घर पहुँचे लोगों ने पूछा कहिए क्या कमा कर लाये। अब पंडित जी क्या कहते मन ही मन प्रसन्न होकर चुप हो जाते थे तब गांव वाले कहने लगे। यह तो पागल सा हो गया है मन ही मन हंसता है किसी को कुछ बतलाता भी नहीं। पर पंडित जी ऐसी बातों की परवाह कब करते थे।

एक दिन ब्राह्मण ने विचार किया कि अब चलकर उन जीवों की परीक्षा करनी चाहिए। ऐसा सोच वे पहले कौए के यहाँ गये। उसने उनका खूब आदर सत्कार किया। जब वे वहाँ से चलने लगे तब कौआ भी उनके साथ हो गया। अब वे दोनों हंस के यहां चले पर वह उन्हें रास्ते में ही मिल गया और अब दोनों बड़ी खुशी से उन दोनों को अपने घर ले गया वह हंस सब हंसों का राजा था। उसने नाना प्रकार के मणि-मुक्ता मंगाकर प्रेम पूर्वक पंडित जी को भेंट कर सदैव के लिए उनकी गरीबी दूर कर दी फिर दोनों पक्षियों के साथ पंडित जी तेंदुएं के यहां गये उसने सेवा में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं की, और पंडित जी को सोनेके बहुमूल्य आभूषण भेंट किये।

अब अहीर की बारी आई। पंडित जी तीनों जीवों के साथ उनके स्थान की ओर चले। वहां अहीर के लड़के को बड़े जोरों से माता निकली थी उसने देवी जी को ब्राह्मण का बलिदान देने का संकल्प किया था यह सुन उस नगर के सब ब्राह्मण प्राण लेकर भाग गये थे अहीर बड़ी चिंता में फँसा था। भाग्य की बात ऐसे ही समय में पंडित जी वहाँ जा पहुँचे। उन्हें देख अहीर बहुत प्रसन्न हुआ। वह पंडित जी की नेकी भूल गया और उसने अपने स्वार्थ के लिए उन्हें तुरन्त बन्दी कर लिया।

पंडित जी को साथ लेकर अहीर तालाब के किनारे पहुँचा और उनसे बोला—जल्दी स्नान करो। अभी देवी जी के सामने तुम्हारा बलिदान दिया जायगा। बेचारे पंडित जी बड़े संकट में पड़े। उन्होंने से बहुत-कुछ अनुनय विनय की अपने उपकार की याद दिलाई पर वह दुष्ट उनकी एक भी न सुनता था। तालाब के पास ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी दूर पर वे तीनों जीव भी बैठे थे अपने उद्धारक की ऐसी दशा देख तीनों घबराये उन्होंने पंडित जी के छुटकारे के लिए तरह तरह की युक्तियाँ सोचीं। अन्त में हँस बोला—ज्यों ही पंडित जी स्नान के लिए सरोवर में उतरेंगें, त्यों ही मैं उन्होंने उड़ा ले जाऊंगा। परन्तु इससे अहीर को कुछ भी शिक्षा न मिलेगी इसीलिये मित्र तेंदुए जी तुम अहीर के लड़के को लेकर भाग जाना और कौआ जी तुम उसके घर में आग लगा देना यही सलाह ठीक है। इतने में पंडित जी स्नान करने तालाब में उतरे। हंस तुरन्त ही उन्हें उड़ा ले गया। अहीर यह देखकर बहुत ही खुश हुआ और मन ही मन में सोचने लगा---अहा मैं कैसा भाग्यवान हूँ देवी जी स्वयं आकर बलिदान ले गई। वह मारे खुशी के नाच उठा। जब वह घर पहुँचा तब उसने देखा कि लड़का बाहर मरा पड़ा है घर धू धू करके जल रहा है पुत्र-कलत्र चारों ओर रोते चिल्लाते फिर रहे हैं। यह देख अहीर माथा पकड़ कर बैठ गया वह यह कहने लगा--हाय पंडित जी का उपकार भूल गया, इसलिये मेरा इतना अनिष्ट हुआ। यहाँ पंडित जी कुशल-पूर्वक घर पहुँच गये उनकी कन्या का विवाह अच्छी धूम धाम से हो गया।

वालीबाल

वालीवाल के रंग हरे, लाल बादामी होंगे। सफेद के लिए प्रति केस ।). गोट लगे हुए के लिए ।।।) प्रति केस और दाम लगेंगे।

शेप	नं १	२	३
टी शेप	८।।।)	७।।।)	६।)
उम्दा	९।।)	८)	
१२ टुकड़े	७)	६)	५)

नैट	१	२	३
वालीवाल ३२ × ३; ९ जाली इकहेरा	६।।)	५।।)	
उम्दा	०।।)	८।।।)	७।।)

विविध सामान

फीते चमड़े के	प्रति –)
सूजा अलग	≡)
सेल्यूशन शीशी	≡)
फुटबाल व वालीबाल के लिए ब्लैडर	१।।). १।)
हवा भरनेके पंप	२). २।।) ३) ४)

सब प्रकार की हाकी स्टिक्स क्रिकेट, हाकी व क्रिकेट की गेंद. बैडमिण्टन, रैकिट, बैट, शटल आदि सब चीजें आर्डर देने प मिल सकती हैं।

क्वालिटी की गारंटी है। नं. १ व २ चीजों में शिकायत पैदा होने की हालत में बदल दिया जावेगा और टूट फूट की हालत में मरम्मत की जावेगी। १०) का माल मँगाने पर सवा छः प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा। प्रत्येक सामान मंगाते समय चौथाई मूल्य अग्रिम भेजें। विशेष विवरण के लिए लिखिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक ४ रुपया

'माता'

एक प्रति ६ आना

(आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यक)

मासिक

प्रधान संपादक—श्री मोहन स्वामी

श्री अरविन्द ज्ञान की एक मात्र मासिक पत्रिका "माता" सात वर्ष से नियमित रूप से प्रकाशित होकर भारतवर्ष तथा अन्य देशों में आध्यात्मिक धारा बहा रही है।

कुछ विशेषतायें--उच्च कोटि के लेख, कहानी कवितायें आपके प्रश्न, साहित्य-समालोचना, धारावाही उपन्यास आदि।

(छपाई सुन्दर एवं आकर्षक) (आदर्श विज्ञापन के लिए स्थान खाली)

"माता" प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें—

नवद्वीप, आत्मगान, महाक्राँति (प्रथम भाग), विनय-गीत, आनन्द-गान, स्प्त-ज्योति। विशेष विवरण एवं एजेन्सी के लिए लिखें।

प्रबन्धक—

"माता' कार्यालय, श्रीमातृकेंद्र, गाजियाबाद (उ० प्र०)

हमारी कृषि

भाग १

कक्षा के विद्यार्थियों के लाभ के लिए अनुभवी और योग्य प्रसाराध्यापक श्री दामोदर सिंह वर्मा राजन्य ने यह संक्षिप्त पुस्तिका प्रश्नोत्तर रूप में लिखी है। मूल्य छः आना कमीशन तिहाई।

भारतीय बालकों और माता-पिता तथा शिक्षकों के प्रति एक अमर प्रयास।

❀ दक्षिण भारती ❀

का

बाल-शिक्षण-विशेषांक

गत पाँच वर्षों से 'दक्षिण भारती' ने हिन्दी संसार की एक अभूतपूर्व सेवा की है। अब उक्त पत्रिका का बाल-शिक्षण-विशेषांक बहुत ही सज-धज के साथ प्रकाशित हो रहा है। इस विशेषांक में देश ही नहीं वरन समस्त विश्व के बाल शिक्षण के उद्भट विद्वानों की सामग्री का संकलन किया जा रहा है जो कि भारतीय बालकों माता-पिताओं और शिक्षकों के प्रति एक सबल और रचनात्मक संकेत है।

वार्षिक मूल्य ६) पृष्ठ संख्या १५० इस विशेषाँक का मूल्य १)।

व्यवस्थापकः—'दक्षिण भारती' अफजलगंज, हैदराबाद दक्षिण।

कृषि प्रश्नोत्तर।

जूनियर हाई स्कूल परीक्षा में कृषि एक अनिवार्य विषय है। इसी विषय के १९५२ से १९५५ तक के वार्षिक परीक्षा के प्रश्न पत्रों का संग्रह करके श्री दामोदर सिंह वर्मा राजन्य प्रसार अध्यापक (स्वर्ण पदक प्राप्त) ने उत्तर में लिखे हैं। उत्तर सरल भाषा तथा सुन्दर शैली में हैं। पुस्तक का मूल्य ।=) और कमीशन चौथाई है।

पुस्तकें मिलने का पता—

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनीरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जू० हा० स्कूल परीक्षा के

प्रश्नोत्तर

कृषि प्रश्नोत्तर	चार आना
विज्ञान प्रश्नोत्तर	छः आना
प्रश्नोत्तर आर्ट, क्राफ्ट	बारह आना
,, व्यापारिक शिक्षा व व्यापार प्रणाली	छः आना
,, भूगोल	आठ आना
,, इतिहास	आठ आना
,, इतिहास, भूगोल	सवा रुपया
,, गणित	एक रुपया
,, ज्यामेट्री	आठ आना
,, स्वास्थ्य रक्षा	आठ आना
,, ग्राम्यज्ञान	बारह आना
प्रश्नोत्तर हिन्दी व्याकरण, साहित्य	चार आना
,, अपठित, रचना	आठ आना
इंगलिश प्रश्नोत्तर	एक रुपया
प्रश्नपत्र पठित, अपठित	आठ आना
संस्कृत प्रश्नोत्तर	चार आना

उपयोगी प्रश्नोत्तरियाँ

सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी प्राचीन भारत	चार आना
सरल प्रश्नोत्तरी मध्यकालीन भारत	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी अर्वाचीन भारत	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग १	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग २	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग ३	आठ आना

हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकें

इण्टर, हाई स्कूल, जूनियर हाई स्कूल तथा हिन्दी की अन्य परीक्षाओं जैसे विशारद, प्रभाकर तथा प्रथमा आदि के लिए उत्तम पुस्तकें।

	मू०	कमीशन
हिन्दी साहित्य कोष	५)	चौथाई
काव्य चन्द्रिका	१।)	,,
निबन्धावली	१॥)	तिहाई
निबन्ध भूषण	१)	,,
हिन्दी व्याकरण परिचय	१)	,,
हिन्दी व्याकरण सार	।=)	,,
कहावत मुहावरे	॥।)	,,
अनुवाद मंजरी	॥)	,,
अन्त्याक्षरी पद संग्रह	॥)	चौथाई
सुमन संचय	१॥)	,,

भूगोल की उत्तम पुस्तकें

भूप्रदर्शिनी	२॥	कमीशन तिहाई
जगतमान चित्रावली	३)	,,
एशियामान चित्रावली	१॥)	,,
भारतमान चित्रावली	१॥)	,,
विश्व भूवर्णन	॥=)	,,
एशिया भूवर्णन	।-)	,,
भारत भूवर्णन	॥)	आधा
प्राकृतिक भूगोल भाग १, २	≡)	तिहाई
,, , भाग ३	≡)	,,

"गुप्ता-ब्रदर्स" की पुस्तकों पर दिये जाने वाले कमीशन व अन्य शर्तों के लिए निम्न पते से सूची पत्र मुफ्त मँगाएं।

मैनेजर—गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

Printed by Sagar Mal Garg at Gupta Bros Ptg. Works, Mandi Dhanaura

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

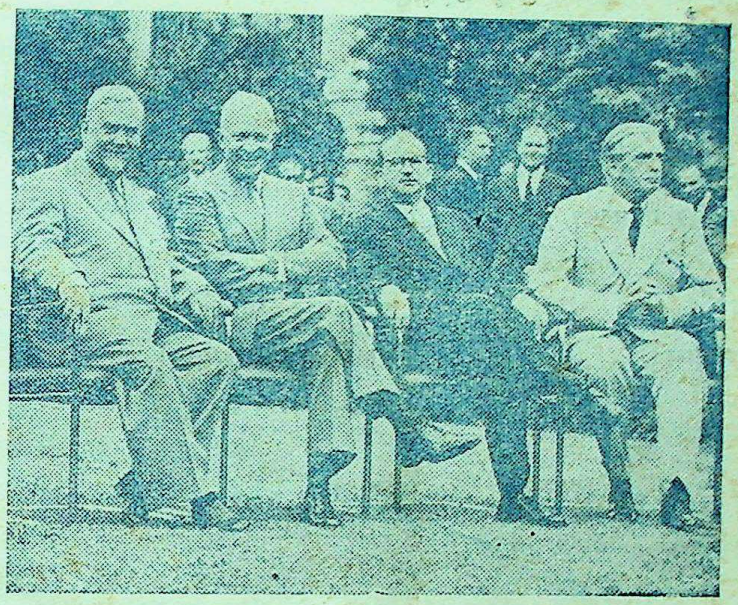

१९ जुलाई १९५५ को जेनेवा में चार बड़ों के सम्मेलन का फोटो। बांए से दांए मार्शल बुलगानिन, प्रेसीडेंट आइसन होवर, फ्राँस के प्रधान मंत्री 'फोरे', ब्रिटेन के श्री ईडन।

वार्षिक मूल्य १) | अगस्त १९५५ ई० | एक प्रति =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

संस्थापक
स्व० रामकुमार अग्रवाल

सम्पादक
वीरेन्द्र कुमार
बी० ए० विशारद

इस अंक में

१	गीत	श्री हरनारायण प्रसाद सक्सैना	१
२	अन्तर राष्ट्रीय डाक व्यवस्था		
३	गुरु देव नानक	श्री प्रेम नारायण दुबे प्रेमी	४
४	गोआ किसका	श्री देवेन्द्र शर्मा नीरस	७
५	गोस्वामी तुलसीदास	श्री आशुकवि रामाधार शुक्ल	१४
६	जीने की कला	श्री रामचरण महेन्द्र	१५

★

बाल बन्धु

७	प्रीत का गीत	श्री 'हफीज' जालन्धरी	१७
८	लालच का फन्दा	श्री भगवान सिंह चन्देल	१९

वार्षिक मूल्य
एक रुपया

गुप्ता ब्रदर्स, पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, मण्डी धनौरा

एक प्रति
दो आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-सुधा

कलश १९, बून्द २
जौलाई १९५५ ई०

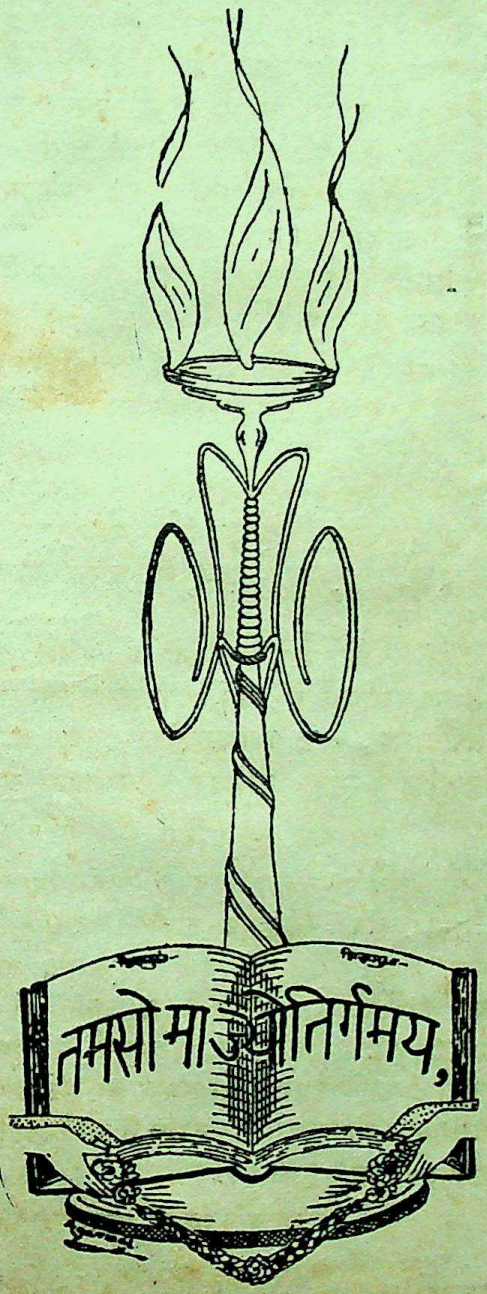

गीत

रचयिता—हरनारायण प्रसाद सक्सेना 'हरि'
सम्पादक 'बाल गोपाल'

तुम्हारे गीत मैं गाता, नहीं जग साथ जब देता
जगत से जोड़ता नाता, न कोई साथ पर देता
नई आशा जन्म लेती
न पूरी एक हो पाती
नजर जब भी उठाता हूँ, निराशा देख मैं पाता
तुम्हारे ... ...
कहो खेलूँ कहाँ तक और
मिट्टी के खिलोनों से
बढ़ाया प्यार जिससे भी, जनाजा देख मैं पाता
तुम्हारे ..
न मुझमें है समझ इतनी
जगत को जा समझ पाता
जगत ऐसी पहेली है, न जिसको बूझ 'हरि' पाता
तुम्हारे ... ...
बनाई खूब दुनिया है
समझ पाया न कोई है
जगत से ऊब कर मानव, तुम्हारे पास ही आता
जगत से जोड़ता नाता न कोई साथ पर देता

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तराष्ट्रीय डाक व्यवस्था कहानी

वे भी दिन थे जब एक देश से दूसरे देश को पत्र भेजने पर कभी कुछ डाक महसूल देना होता था और कभी कुछ और।

लगभग २ पीढ़ियाँ पहले, विदेशों की डाक भेजने की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं थी। उस समय यदि एक देश से दूसरे देश को पत्र भेजना होता था, तो उसके लिए विभिन्न १२०० डाक-दरों के हिसाब से खर्च अदा करना पड़ता था। अनेक देश अत्यधिक डाक-व्यय वसूल करके अनुचित लाभ उठाते थे।

डाक की दरें केवल ऊंची ही नहीं थीं, बल्कि उनमें बहुत अधिक अन्तर भी था। उदाहरण के तौर पर, जो पत्र अमेरिका से आस्ट्रेलिया भेजा जाता था उसके लिए ५, ३३, ४५, ५५, ६० अथवा १०० अमेरिकी सेण्ट तक अदा करने पड़ते थे। यह सब उपलब्ध जहाजों तथा उनके आने-जाने के मार्गों की दूरी पर निर्भर करता था। डाक भेजने वालों की भावना को उस समय कोई महत्व प्राप्त नहीं था।

कई देशों में से होकर जाने वाले पत्रों की फीस का हिसाब किताब लगाना अच्छे २ अनुभवी डाक अधिकारियों के लिए भी कोई आसान कार्य नहीं था। कभी कभी डाक में भेजी गयी विभिन्न वस्तुओं के डाक-व्यय का हिसाब लगाने में अधिक समय लग जाने के कारण पत्रों के पहुँचने में कई कई दिन का विलम्ब हो जाता था।

कुछ राष्ट्रों की तीव्र प्रतिस्पर्द्धा ने इस स्थिति को और भी बिगाड़ दिया। इनमें से प्रत्येक राष्ट्र-यही चाहता था कि उनके द्वारा नियत दरें ही सर्वत्र लागू होनी चाहिए। इस तीव्र विरोध के कारण बड़ी गड़बड़ी पैदा हो गयी।

श्री ब्लेयर के प्रयत्न

अन्तराष्ट्रीय डाक व्यवस्था में सुधार करने के लिए अमेरिका के एक पोस्ट मास्टर जनरल की मोण्टगुमरी ब्लेयर ने अनेक कदम उठाये। उस समय अब्राहमलिंकन अमेरिका के प्रेसिडेंण्ट थे। ४ अगस्त १८६२ को आपने अन्य देशों के कुछ डाक प्रशासनों को एक पत्र लिखा, जिस पर उस समय के विदेशमंत्री श्री सेवार्ड के हस्ताक्षर थे। उस पत्र में भी ब्लेयर ने एक सम्मेलन में अपने प्रतिनिधि भेजने के लिए विभिन्न राष्ट्रों से अनुरोध किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय डाक सम्बन्धी समस्याओं पर विचार-विनिमय करना तथा उनके सम्बन्ध में सुझाव प्राप्त करना था।

११ मई १८६३ को पेरिस में १५ देशों का एक सम्मेलन हुआ। उस सम्मेलन तथा प्रशियन पोस्टल सर्विस के अध्यक्ष डा० हाहनरिक वान स्टीफन द्वारा बुलाया गयी काँग्रेस के परिणाम स्वरूप युनिवर्सल पोस्टल सर्विस की स्थापना हुई। इसने १ जुलाई १८७५ में अपना कार्य प्रारम्भ किया।

जिन १५ देशों के प्रतिनिधियों ने पेरिस के प्रारम्भिक सम्मेलन में भाग लिया, उनमें समस्त यूरोपीय राष्ट्र, मिस्र तथा अमेरिका शामिल थे।

यूनिवर्सल पोस्टल युनियन की स्थापना के बाद हुई प्रगति

यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन ने डाक-व्यवस्था में अन्तर्राष्ट्रीय एकरूपता उत्पन्न करने तथा विभिन्न राष्ट्रों में इस सम्बन्ध में सद्भावना का संचार करने की दशा में तेजी से प्रगति की। आसमान दरों, राजनीतिक अविश्वसों में तथा अन्तर्राष्ट्रीयप्रतिस्पर्द्धाओं को समाप्त कर संसार के राष्ट्रोंकेमध्य संवादवहन के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का जन्म हुआ।

यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन की व्यवस्था के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण आज प्रतिवर्ष डाक द्वारा भेजे जाने वाले दो अरब पत्र व अन्य वस्तुएं तेजी से एक देश से दूसरे देश में पहुँच जाती हैं। इन वस्तुओं को गन्तव्य स्थान तक सुरक्षित रूप में पहुँचाने के लिए बहुत थोड़ी फीस अदा करनी पड़ती है। यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन का प्रधान कार्यालय वर्न में संसार के दो अरब से अधिक व्यक्ति इसके नियमों का पालन करते हैं।

यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन का यह ८० वाँ वर्ष है। पोस्टल यूनियन अन्तर्राष्ट्रीय संघटनों में सबसे पुरानी संस्था है। इसकी सदस्य संख्या भी सबसे बड़ी है। ९४राष्ट्र एवं प्रदेश इसके सदस्य हैं, जो २०० डाक-प्रशासनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये प्रशासन प्रायः समस्त संसार के राष्ट्रों की डाक की व्यवस्था करते हैं। यह संयुक्तराष्ट्र-की विशिष्ट संस्थाओं में सबसे बड़ी संस्था भी है।

आज विभिन्न देशों के मध्य संवादवहन की महत्वपूर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में जो सहयोग विद्यमान है, वह निः सन्देह एक दिन अथवा सम्मेलन में स्थापित नहीं हुआ है। इस कार्य में अनेक वर्ष लगे हैं। फिर भी, इससे यह सिद्ध हो गया है। कि उत्तम कार्य करने का संकल्प करने वाले लोग आपसी लाभ की समस्याओं को हल करने के लिए सम्मेलनों द्वारा कितना महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं।

आज विभिन्न देशों को पार्सल, मनीयार्डर और विभिन्न वस्तुएँ भेजने तथा अन्य भी बहुत सी अन्तराष्ट्रीय सेवाओं के सुलभ होनेकी बात कम या अधिक सर्व-स्वीकृत सी है, लेकिन यदि इस यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन की स्थापना तथा उसके उपरान्त पैदा हुआ अद्वितीय सहयोग न होता तो आज भी अन्तराष्ट्री संवाद-वहन व्यवस्था का स्वप्न वास्तविकता न होकर स्वप्नमात्र ही रहता।

कार्य कुशलता का प्रमाण

आज विभिन्न प्रकार के प्रशासनों से शासित विभिन्न देशों में, वायुयान अथवा जहाज, रेल अथवा ट्रक द्वारा सुगमतापूर्वक पत्र भेजे जा सकते हैं, यह इस बात का प्रमाण है कि यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन के कार्य का बड़ी कुशलता के साथ संचालन होता है।

अधिकाँश देशों के लोगों को लाभ पहुँचाने के लिए इस अन्तर्राष्ट्रीय संघटन ने बहुत सी रियायतों की व्यवस्था कर रखी है। इनमें डाक की दरों में कमी, कूटनीतिक व्यवहार के लिये विशेष सुविधाएं, अन्तर्राष्ट्रीय हवाई डाक के उपयोगके सम्बन्ध में समझौते आदि कुछ रियायतें ही हैं, जिनका यहाँ उल्लेख किया जा रहा है।

पोस्टल यूनियन युद्ध के दिनों में भी युद्ध-बन्दियों तथा उन नागरिकों के लिए डाक कीव्यवस्था करता है, जिनका अपने देश तथा परिवारों से सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं।

यह संघटन अन्धों को भी सहायता प्रदान करता है। १९५२ में संघटन ने ब्रसेल्स में हुए सम्मेलन में ब्रेल लिपि की भारी पुस्तकों को निःशुल्क भेजने की व्यवस्था की थी। इसी प्रकार, इस सम्बन्ध में भी प्रयत्न किए जा रहे हैं कि टीकों तथा अन्य आवश्यक औषधियों को एक देश से दूसरे देश में भेजने के लिए प्राथमिकता प्रदान की जाये।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिख धर्म के प्रवर्तक:—

गुरुदेव नानक

प्रेमनारायण दुबे 'प्रेमी'

पन्द्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, जब दिल्ली की गद्दी पर लोदी वंश का शासन था और प्रजा को साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों से नाना प्रकार के कष्ट पहुँच रहे थे, तब संवत् १५२६ विक्रम, सन् १४६९ ई०, कार्तिक पूर्णमासी के दिन रामभोई तलबण्डी (ननकाना साहिब) में बेदी-वंश के श्री कालूचन्द पटवारी के गृह में माता तृप्ता जी ने एक महान् पुरुष को जन्म दिया था। सिख धर्म के प्रवर्तक यही गुरु नानक देव हुए।

बचपन से ही नानक जी एकान्तसेवी और भजनोपासक थे। संवत् १५३२ में गोपाल पंडित से आपने हिन्दी का अध्ययन प्रारम्भ किया। पंडित जी ने पढ़ाना शुरू किया कि आपने उन्हें यह पद बनाकर सुना दिया:—

"जालि मोह घस मसकर,
मति कागदि कर सार।
भाव कलम कर चित्त लिखारी,
गुरु पुछ लिख्ख विचार।
लिख नाम सलाह लिख,
लिख अन्त न पारावार।
बाबा इन्हूँ लेखा लिख जान,
जित्थे लेखा मंगये तित्थे होय संज्यानिशान।"

"मोह को घिस घिसकर स्याही बनालो। उससे बुद्धि रूपी कागज पर प्रेम रूपी कलम से, चित्त को लेखक बनाकर, गुरू से पूछकर पवित्र विचारों को लिख। ईश्वर के पवित्र नाम और गुणों को बार बार लिखते जाओ। हे गुरु जी! ऐसा लेख लिखो जिसे तुम जानते हो कि परलौकिक सुखों के लिए यह सच्चा निशान होगा।"

संवत् १५३५ में बृजलाल पंडित के पास आप संस्कृत पढ़ने बैठे। पंडित जी ने जब आपको ओंकार का अर्थ नहीं बतलाया और यह कह दिया कि ओंकार का गूढ़ार्थ तुम्हारी समझ में नहीं आएगा, तब नानक जी ने स्वयं ही ओंकार की महिमा का यह पद गुरूजी को सुना दिया:—

ओंकार ब्रह्मा उत्पत्त,
ओंकार किया जिन चित्त।
ओंकार सैलगुन भए,
ओंकार वेद निर्भये।
ओंकार का शहु विचार,
ओंकार अक्खर त्रिभुवन।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंकार अर्थात ईश्वर ने ब्रह्मा को उत्पन्न किया है। ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की है, उन्हीं ने वेदों को बनाया ओंकार तीनों लोकों का सार है।'

संवत् १५३९ में मौलवी कुतबुद्दीन के पास आप फारसी पढ़ने बैठे। मौलवी ने जब आपको फारसी वर्णमाला के अलिफ, बे, ते, पढ़ाना शुरू किया, तब नानक ने एक पद उन्हें भी सुनाया, जिसका तात्पर्य था:—'अलिफ' का मतलब है कि अल्लाह को याद कर। 'बे' का अर्थ है कि बिद्-अत अर्थात धर्म की मर्यादा के विरुद्ध कोई काम न कर। 'ते' का मतलब यह है कि तोबा कर। हे कुतबुद्दीन अपने जन्म को व्यर्थ न गंवाओ।'

विद्यार्थी नानक ने अपने अद्भुत, कुशाग्र, बुद्धि कौशल से अपने हिन्दी, संस्कृत और फारसी के गुरुजनों को ही अपना शिष्य बना लिया था।

संसार मिथ्या है:—कालूराम जी पटवारी ने जब अपने बालक की साधु-सन्यासियों जैसी प्रवृत्तियाँ देखीं तब एक दिन उन्होंने नानक को मनुष्य जीवन के चारों आश्रमों की महत्ता समझाई और प्रयत्न किया कि नानक का मन ग्रहस्थाश्रम की ओर उन्मुख हो, किन्तु सब कुछ सुनने समझने के बाद नानक ने कहा—'पिताजी' यह दुनिया झूठी है। यहां की कोई वस्तु स्थायी नहीं है। जो वस्तु स्थायी रहने वाली नहीं है। उसका मूल्य ही क्या है? संसार के ऐश्वर्य, धन, सम्पत्ति और विषय वासना से मनुष्य को वास्तविक सुख नहीं मिल सकता। संसार में बड़े बड़े धनी-मानी लोग हैं, पर क्या वे वास्तव में सुखी हैं? इसी से महात्माओं ने यह निश्चय किया है कि एकमात्र ईश्वर ही सत्य है और सभी वस्तुएं क्षणभंगुर हैं। भगवान सब सुखों के दाता, कल्याण के कर्ता हैं। उन्हीं का ध्यान, पूजा, सेवा करने से मनुष्य कल्याण-पद को प्राप्त कर सकता है।

अद्भुत वंज:—नानक के पिताजी को जब यह विश्वास हो गया कि उनका पुत्र ग्रहस्थी होने वाला नहीं तब उन्होंने उसे व्यापार करने का भार सौंपा। नानक, भाईबाला के साथ नमक खरीदने गए। रास्ते में आपको साधुओं की एक जमात मिली जो तीन दिन से भूखी थी, आपने सब रुपया उसी को खिला दिया और बिना नमक की खरीद किए, खाली हाथ घर लौट आए। साधुओं की सेवा करने के उपरान्त आप अत्यन्त प्रसन्न थे, घर आकर पिता से बोले—'मैंने ऐसा' सच्चा सौदा। खरीदा है जो कोई नहीं खरीद सकता।' जब पिता जी को वास्तविक हाल मालूम हुआ तब उन्होंने अत्यन्त रुष्ट होकर नानक को पीटा।

नानक पर उनकी बहिन नानकी का अत्यन्त प्रेम था। बहिन-बहिनोई नानक को अपने घर ले आए और संवत् १५४२ में आपने दौलतखाँ लोदी के मोदीखाने की नौकरी कर ली। मोदीखाने से नानक, दीन दुखियों को भरपूर अनाज बांटा करते थे. यहाँ तक कि मोदीखाने से बिना हिसाब-किताब के अनाज, बांटा जाने लगा, लुटाया जाने लगा। लोगों ने नानक की शिकायत नवाब से की, किन्तु जब मोदीखाने का हिसाब मिलाया गया तब सब बराबर निकला। संवत् १५५४ की बात है। गुरु-नानक, एक, दो, तीन, चार, गिनते हुए आटा तोल रहे थे। जब बारह के बाद गिनती तेरह पर आई तब अपने 'तेरा' तेरा रटना शुरू कर कहा—भला विश्व में अपना क्या है?, और सब आटा तौल दिया। उसी दिन मोदीखाने की नौकरी भी समाप्त हो गई।

विवाह एवसन्यास:—नानक का विवाह संवत् १५५४ के ज्येष्ठ मास में मूलचन्द जी की सुपुत्री सुलक्षण देवी के साथ हुआ था। उनसे आपको दो पुत्र श्रीचन्द और लक्ष्मीदास प्राप्त हुए। पत्नी से आपकी सदैव अनबन रहती थी। आपका चित्त सदैव भक्ति और वैराग्य की ओर ही लगा रहता था। जब आपका गृहत्याग देने का विचार लोगों ने पक्का देखा तब नाना प्रकार से आपको समझाया गया, स्त्री और पुत्रों को संभालने का कर्तव्य बतलाया गया। नानक ने कहा—'इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार में कौन किसका पुत्र है ? कौन किसकी स्त्री है ? कौन किसके लिए चिन्ता करने वाला है ? केवल एक है जिसने पैदा होने के पहले माता के गर्भ में रक्षा की, माता के स्तनों में दूध दिया, वही जीवों का भार ग्रहण कर सकते हैं, वही आहार की व्यवस्था कर सकते हैं। मूर्ख मनुष्य समझता है कि मैं ही सब कुछ करने वाला हूँ।"

संवत १५५५ के लगभग गुरु नानक ने गृह त्यागकर सन्यास ग्रहण कर लिया। धार्मिक अन्ध-विश्वास, रूढ़िवाद वैर-विरोध एवं ईर्ष्या-द्वेष में फंसी हुई अकर्मण्य जनता को, ईश्वर के नाम का साक्षात्कार कराने और शान्ति का सन्देश देने के लिए आपने देशाटन प्रारम्भ किया।

देश भक्तिः—गुरु नानक केवल धार्मिक महा-पुरुष ही नहीं थे वे सच्चे देशभक्त भी थे। अपनी प्रथम यात्रा में आप ऐबनाबाद गए जहाँ विदेशी मुगल घोर अत्याचार कर रहे थे। आपने अन्याय का तीव्र विरोध किया और तत्कालीन कमजोर सरकार के विरुद्ध आवाज उठाई। बादशाह बाबर ने आपको कैद कर लिया। रिहा होने पर आप न केवल भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक गए बल्कि नैपाल, भूटान, सिक्कम, तिब्बत, चीन, ईरान, अफगास्तिान और अरब भी गए।

गुरुनानक का मतः—गुरु नानक के उपदेश, हिन्दू मुसलिम जैन, पारसी, ईसाई सब के लिए थे। वे सब धर्मावलम्बियों से समान भाव से मिले। आपने अधिकारियों प्रजाजनों तथा धर्मान्ध व्यक्तियों को उनकी त्रुटियां इस प्रकार बतलाई की वे उनसे प्रभावित हुए। आपसी भेदभाव, धार्मिक एवं सामाजिक वैमनस्य को गुरु नानक ने नष्ट किया। गुरुदेव ने बुराई, कुरीतियों अन्धविश्वास से घृणा की किन्तु पतितों को सदैव गले लगाया। जनता को उन्होंने बतलाया कि हम सब एक पिता के बालक हैं। वह हमारा पिता ईश्वर अजन्मा, निर्विकार और अनन्त है। मूर्तिपूजा से कोई लाभ नहीं है और तीर्थ और व्रत का वास्तविक फल तो अपने चित्त की शुद्धि ही में है। जो जैसा कर्म करेगा उसे वैसा फल अवश्य भोगना पड़ेगा।

महानिर्वाणिः—पच्चीस वर्ष के अथक भ्रमण के उपरान्त कर्तारपुर में आश्विन शुक्ल १० संवत् १५९६ में लगभग इकहत्तर वर्ष की आयु में गुरुदेव नानक ने मोक्ष पद प्राप्त किया। आपकी अन्त्येष्टि के लिये, सिख, हिन्दू तथा मुसलमान शिष्यों में विवाद हुआ किन्तु उस दिव्यात्मा ने स्वयं विवाद का अन्त कर दिया। शरीर पर का वस्त्र उठाया गया तो मृत शरीर था ही नहीं संभ-वतः इस महामावन ने सशरीर स्वर्गारोहण किया था।

राजकीय प्रकाशन

कृषि और सरल विज्ञान भाग १

कक्षा ३ के लिए

नई लिपि में

तैयार है। आज ही आर्डर दीजिए।

मैनेजर

गुप्ता ब्रदर्स मंडी धनौरा

(मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ गोआ किसका ॥

रचयिता—देवेन्द्र शर्मा "नीरस"

ओ पुर्तगाल ! क्यों ज़ालिम अन्यायी कहलाता है।
क्यों निरपराध गोआ - वासी को व्यर्थ सताता है ॥

[१]

क्या आजादी की माँग दोष है इन बेचारों का,
या मानवता अधिकार नहीं है इन लाचारों का।
क्या नहीं इन्हें इन्सान दृष्टि तेरी ने पाया है,
या सत्ता के मद ने तुझको खूखार बनस्या है ।
क्यों आज निहत्थों पर गोली के वार चलाता है।
ओ पुर्तगाल क्यों जालिम अन्यायी कहलाता है ॥

[२]

क्या शक्ति अहिंसा की हिंसा से तोल रहा है तू,
या बल पर और किसी के बढ़कर बोल रहा है तू।
क्या इस युग में तानाशाही तेरी चल पायेगी,
या सोच रहा गोआ की आज़ादी टल जायेगी ।
क्यों स्वार्थ - स्वप्न को आज अन्ध हो सत्य बताता है।
ओ पुर्तगाल क्यों ज़ालिम अन्यायी कहलाता है ॥

[३]

गोआ छोटा है किन्तु शक्ति उसकी तूफ़ानी है,
मत भूल निवासी गोआ का भी हिन्दुस्तानी है ।
यदि इच्छित है गोआ तो लोहा भारत से लेना होगा,
यह भारत का है अंग तुझे भारत को ही देना होगा ।
नर - भक्षी बन क्यों निर्दोषों का खून बहाता है।
ओ पुर्तगाल क्यों ज़ालिम अन्याय कहलाता है ॥

[४]

ले सोच नहीं आसान शहीदों से टकराना है,
आजादी के दीवानों से सीखा मिट जाना है ।
यदि नहीं होश आया तो फिर पछ ताना ही होगा,
यही निश्चित है तुझको गोआ से जाना ही होगा ।
निज राष्ट्र - भाल पर क्यों कलंक का तिलक लगाता है।
ओ पुर्तगाल क्यों ज़ालिम अन्यायी कहलाता है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुन्देल खण्ड साहित्य परिषद कबरई (हमीरपुर)

का

सन १९५५ की परीक्षा 'साहित्यांकुर'

का परीक्षा-फल

टिप्पणीः—इस वर्ष "साहित्य-पल्लव" का परीक्षा-फल ७३% तथा "साहित्यांकुर" का परीक्षा फल ८७% रहा है। कुछ केन्द्र व्यवस्थापकों की असावधानी से परीक्षा काल में अव्यवस्था रही है अतः "साहित्य-पल्लव" का सम्पूर्ण परीक्षा फल तथा "साहित्यङ्कुर" के कुछ केन्द्रों का परीक्षा-फल परीक्षा समिति के निर्णय की प्रतीक्षा में स्थगित कर दिया है। शेष केवल "साहित्याङ्कुर" का परीक्षा फल प्रकाशित हो रहा है। केवल क्रमाङ्कार दिए गए है।

"सासित्याङ्कुर परीक्षा"

केन्द्र मुस्करा—प्रथम श्रेणी ८
द्वितीय श्रेणी २. ३, ४, ५, ९
तृतीय श्रेणी १, ६, ७

केन्द्र श्री नगर—प्रथम श्रेणी १६
द्वितीय श्रेणी १०, १४, १८, २१, २२ २३, २४
तृतीय श्रेणी १२,

केन्द्र महेबा—प्रथम श्रेणी २९, ३५
द्वितीय श्रणी २५, २६, २७, २८, ३२, ३४, ३७,
तृतीय श्रेणी ३०, ३३, ३८, ३९, ४० ५०.

केन्द्र मऊ—प्रथम श्रणी ४६, ४७, ४९
द्वितीय श्रेणी ४१, ४२, ४३, ४५,४८ ५१, ५२, ५३, ५४, १०६
तृतीय श्रेणी ४४, ५०, ५५,

केन्द्र लुगासी—द्वितीय श्रेणी ५२, ५३, ५४
तृतीय श्रेणी ५५,

केन्द्र चरखारी—प्रथम श्रेणी ५७
द्वितीय श्रेणी ५६, ५८, ५९, ६०, ६१ ६३, ६६,

केन्द्र पनवाड़ी—प्रथम श्रेणी ६७, ६८, ७८
द्वितीय " ६९, ७०; ७१, ७२. ७३ ७५, ७६, ७७, ७९, ८० ८१, ८६, ८७, ८८, ९२, ९३, ९५, ९८,
तृतीय " ८५, ८९, ९०, ९४, ९६, ९९; १००, १०१, १०२ १०५,

केन्द्र बटम—द्वितीय श्रेणी १०८, १०९
तृतीय " १११, ११२,

केन्द्र राठ—प्रथम श्रेणी १२१
द्वितीय " ११८, ११९, १२०, १२२ १२३, १२४, १२५, १२७ १२८,
तृतीय " १२६

केन्द्र नेदो—द्वितीय श्रेणी १२९, १४७, १५२, १५६ १५७,
तृतीय श्रेणी १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५' ५३६, १३७, १३८' १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४८, १४९, १५०, १५१, १५३, १५४, १५५, १५८, १५९,

नोटः—जिन केन्द्रों का परीक्षा फल नहीं निकला उन्हें परीक्षा समिति के निर्णय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। परीक्षा फल केन्द्रों में ही भेज दिया जाएगा। भविष्य में केन्द्र व्यवस्थापकों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना है कि वे परीक्षा काल में उत्तर दायित्व के साथ कार्य करें यदि असमर्थ हों तो परीक्षा केन्द्र बनाने का कष्ट न करें। क्यों कि एक केन्द्र की अव्यवस्था का प्रयोग सारी परिषद् तथा परीक्षाओं पर पड़ता है। नए केन्द्र जो लोग स्थापित करना चाहते हों अभी से पत्र व्यवहार आरम्भ करदें।

भवदीय—
योगेश्वर प्रसाद त्रिपाठी कार्यालय मन्त्री

भूगोल की पुस्तकें एटलसें व अभ्यास कापियाँ तथा नकशे

जगत मान् चित्रावली	ढाई रुपया
एशिया मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
भारत मान् चित्रावली	डेढ़ रुपया
अभ्यासकापी संसार व भारत	बारह आना
" भारत	छः आना
विश्व भू वर्णन	दस आना
एशिया भू वर्णन	पाँच आना
प्राकृतिक भूगोल भाग ३	तीन आना
" " भाग १,२	तीन आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
" भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
नकशे	छः आना प्रति
(संसार, भारत, उत्तर प्रदेश जिला बिजनौर तथा हर एक महाद्वीप का रंगीन राजनैतिक मानचित्र। एशिया, भारत प्राकृतिक मानचित्र)	
दुनिया की मश्की कापी	दस आना
एशिया " " "	छः आना
भारत " " "	छः आना
भूगोल प्रश्नोत्तर	दस आना
नवीन भूगोल भारत कक्षा ६	आठ आना
" " एशिया " ७	आठ आना

मैनेजर गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

आपके पुस्तकालय के लिए

हमारी चुनी हुई पुस्तकें

आजादी की कहानी	२॥)	क० चौथाई
हिन्दी साहित्य कोष	५)	"
नेताओं की कहानी	॥)	"
मधुर गीता	॥)	"
जादू के खेल	॥=)	"
घरेलू इलाज व दस्तकारी	॥=)	"
केले और पपीते की खेती	।)	"
गृह शास्त्र भाग १	१॥)	तिहाई
" २	॥।)	"
बेसिक ड्रामा	॥=)	आधा

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

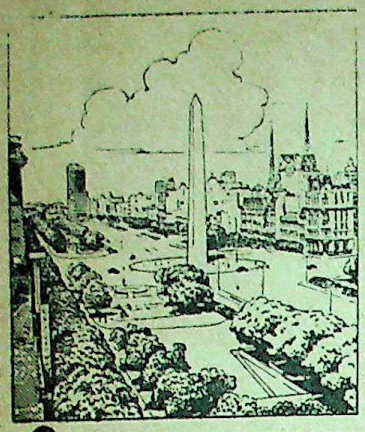

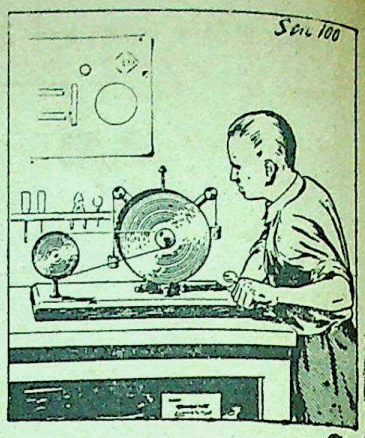

अर्जेन्टाइना के ब्यूनिस आयर्स नामक नगर में ९ जूलाई चौराहा संसार में सबसे चौड़ी सड़क है।

प्रकृति के नियमों के अनुसार कोई भी मशीनी कार्य निरन्तर चालू नहीं रह सकता।

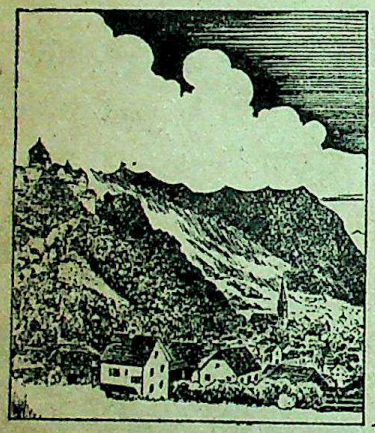

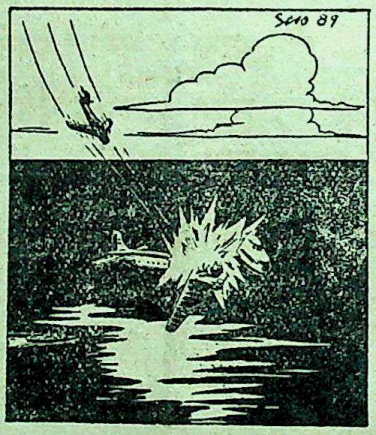

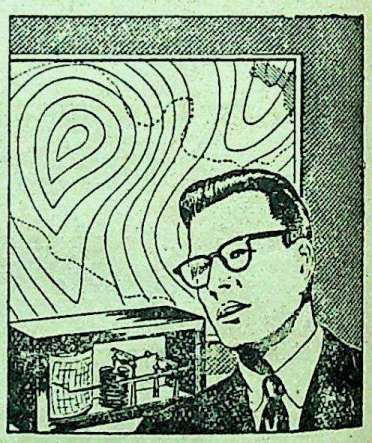

मध्य यूरुप में स्थित लिशटैन्सटिन नामक प्रदेश में न गरीबी न बेरोजगारी और न अन्य आर्थिक कठिनाइयाँ हैं। यूरुप में सबसे कम टैक्स हैं। यहाँ कोई सिपाही नहीं है।

वैज्ञानिकों का विश्वास है कि वर्ष के चारों मौसम धीरे धीरे अधिक गर्म होते जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

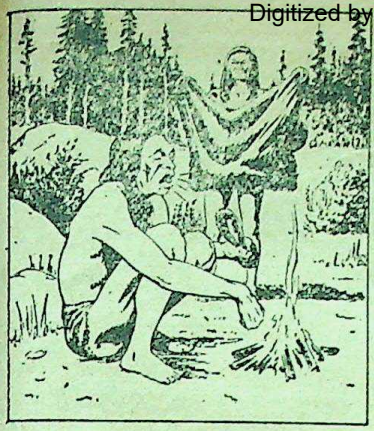

जुकाम संभवतय पुरानी बीमारियों में से एक है। २००० वर्ष से वैद्य व डाक्टर इसका कारण जानने का प्रयास कर रहे हैं।

सुप्रीम सोवियत में आज-तक किसी भी प्रतिनिधि ने सरकारी प्रस्ताव के विरोध में वोट नहीं दिया हैं।

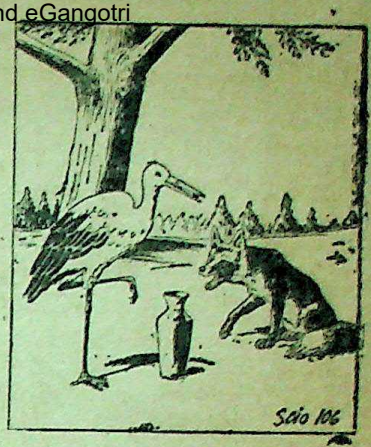

सारस और लोमड़ी का किस्सा ईसा से ३०० वर्ष पूर्व लिखा गया। यह किस्सा विश्व के प्रत्येक देश में प्रचलित है।

एक मक्खी एक ऋतु में ५ अरब नई मक्खीयों को जन्म देती है। अतः स्वास्थ्य के हित में अधिक से अधिक मक्खी मारना ही ठीक है।

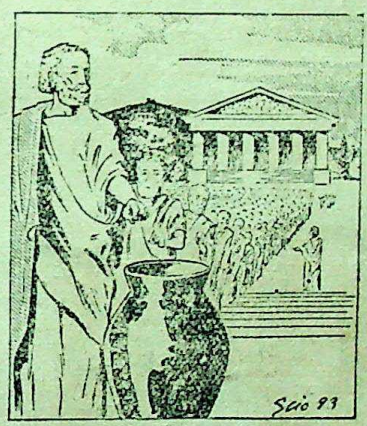

चुनाव की प्रथा २४०० वर्ष पूर्व यूनान में प्रचलित हुई। उस समय एक बर्त्तन में पत्थर डाले जाते थे।

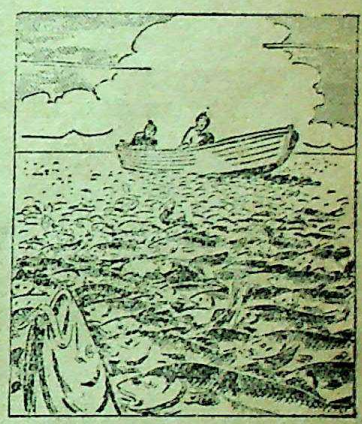

एक काड मछली एक मौसम में ४५०० लाख अंडे देती है। अगर उन सब अंडों से बच्चे निकलें तो सारा एटलांटिक महासागर मछलियों से भर जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटेन में ११ वर्ष से अधिक आयु के लड़के व लड़की को मुफ्त आध्यमिक शिक्षा दी जाती है। इसी तरह के एक स्कूल में बालिका एक कक्षा में दीवार पर बने मानचित्र में समुद्री मार्ग लगाते हुए।

लन्दन के एक स्कूल में पाठ को मनोरंजन बनाने के लिए बच्चे दूकान का खेल खेल रहे हैं इसके द्वारा वे 'रुपया' के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

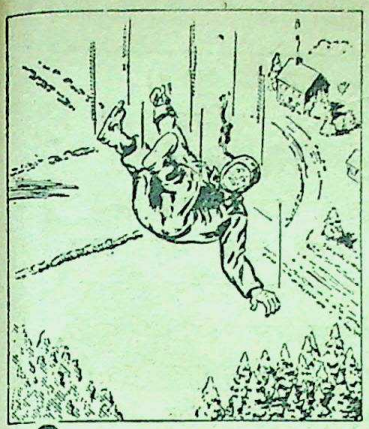

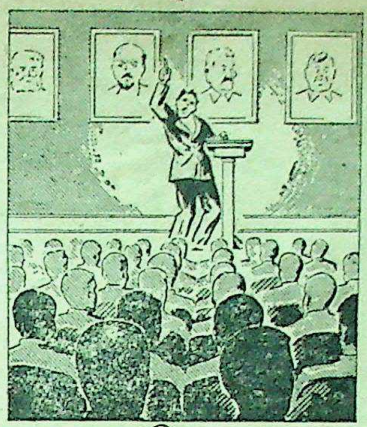

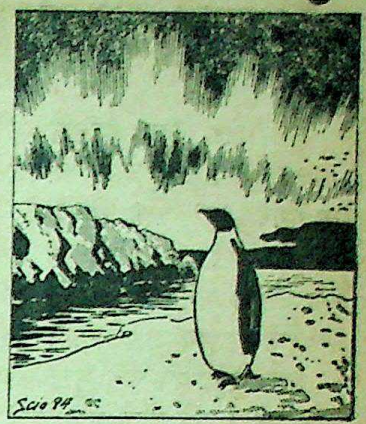

१९४४ में एक ब्रिटिश उड़ाका १८००० फिट की ऊंचाई से बिना छतरी के ही गिर पड़ा परन्तु उसके चोट नहीं आई क्यों कि वह पेड़ों तथा वफ के किनारे द्वारा रोक लिया गया।

एनटार कटिक वृत्त में न कोई फर दार जानवर न कोई आदिवासी रहता है केवल समुद्री चिड़िए ही आबाद हैं।

अमेरिका के युवक कवि कालेज शापिरो जो भारत के दौरे पर १० जुलाई को आये हैं। गांधी जी की अहिंसा से यह इतने प्रभावित हुए थे कि विद्यार्थी जीवन में ही गांधी के ऊपर एक कविता लिखी। इन्हें विविध पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। भारत में जगह भाषण करेंगे और साथ ही अपने द्वारा सम्पादित पत्रिका के 'भारत की आधुनिक कविता' विशेषांक के हेतु कविता संग्रह भी करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गो स्वामी तुलसीदास

(र० आशु कवि प० रामाधार शुक्ल)

स्वामी तुलसीदास विज्ञ आचार्य हमारे,
विद्या वारिध सुकवि पुत्र हुलसी के प्यारे ।
साहित्य गगनके सूर्य कला कोविद में न्यारे,
रहे राम के भक्त राम आँखों के तारे ।
राम चरित मानस विमल रच दिया संसार को ।
तारे पतित महान जो पढ़ेसमझ सख सार को ॥१॥

काव्य कुमुद बन चन्द्र सुकविकल्पद्रुम डाली,
वाल्मीक प्रति बिम्ब श्रेष्ठ कवि प्रतिभाशाली ।
वाणी में अनुपम शक्ति ज्ञान गुण गरिमा आगर,
कलित कल्पना कुंज बुद्धि सर-पदम उजागर ।
दुग्ध सा उज्वल सुयश दिखाता चारों ओर है ।
राम चरित मानस शशी तुलसी बना चकोर है ॥२॥

त्यागी सिद्ध महान मातृ भाषा के ज्ञाता,
दिव्य ज्ञान की ज्योति राम गीता निर्माता ।
सौम्य मूर्ति मतिमान राम पद के व्रतधारी,
धर्म निष्ट गुणवान साहित्य पुजारी ।
हिंदी हिंदू हिंद का करता रहा उपकार है ।
शैव वैष्णव एक कर जन का किया उद्धार है ॥३॥

मानस मंजु मराल बहाई अमृत धारा,
पतितों को तरने हेतु राम महिमा विस्तार ।
स्वर्णिम सुन्दर सरस सरल सबकों अति प्यारी,
महलों से लेकर कुटी तकों में साज सवारी ।
राम चरित मानस महा भव से करती पार है ।
कालिमल नाशक सदा मुक्ति का वह द्वार है ॥४॥

तुलसी महिमा गातेकवि वाणी सकुचाती
नहीं लेखनी चलती, चलती तो रुक जाती ।
भक्तों की माला में सुमेर का पद पाया ।
राम रमा का गायक वाल्मीक सा आया ।
कलाधर काव्य आकाश कीर्ति कलित अभिराम है ।
धन्य-धन्य तुलसी महिम अमर तेरा नाम है ॥५॥

ये पावस के कजरारे घन ।

रचियता—श्री० प्रचंडिया, एम० ए०

घिर आये हैं उमड़ घुमड़ कर बरस रहे हैं ये जन मन घन

ये पावस के कजरारे घन !!
बीती याद साथ में लाते,
जिससे विरही मन अकुलाते,
तपते उर पर करते वर्षन ।
ये पावस के कजरारे घन !!१!!
सूखी धरा, मनुज मन रूखें,
हरियाते आशाङ्कुर रुखे,
पाकर द्रवीभूत तत्व-दर्शन ।
ये पावस के कजरारे घन !!२!!
जल सीकर ये नहीं, ही कनक,
धरती पर बरसाते कंचन,
कंचन दाता तेरा शत शत वन्न ।
ये पावस के कजरारे घन !!३!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जाने की कला

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक—रामचरण महेन्द्र

सफल जीवन व्यतीत करना भी एककला है। कलाकार अपनी प्रतिभा के बल से जिस प्रकार एक साधारण-सी कूची और रंगों की सहायता से एक आकर्षक कलात्मक चित्र का निर्माण करता है, मामूली इकतारे सारंगी या बांस की बांसुरी के सहारे जिस प्रकार एक प्रतिभाशाली संगीतज्ञ मधुर संगीत की सृष्टि करता है, सड़क पर पड़े हुये पत्थर को अपनी छोटी छेनी से काट-काट कर जिस प्रकार शिल्पकार उत्तम मूर्ति का निर्माण करता है या मिट्टी से जैसे मूर्तिकार सुन्दर बर्तनों, मूर्त्तियों, खिलौनों का निर्माण करता है, उसी प्रकार मानव जीवन का कलाकार भौतिक जीवन में प्राप्त साधारण उपकरणों द्वारा केवल अपनी मौखिक प्रतिभा, सूझ-बूझ, दूरदृष्टि सफल आनन्द-मय जीवन का निर्माण करता है।

मिट्टी, सोना, लकड़ी, रंग वाद्य यंत्र आदि सब निर्जीव पदार्थ हैं। इनमें कोई आकर्षकण नहीं है। अपने आप में ये निराधार निष्प्राण है। कलाकार के सहज स्पर्श से इनमें प्राणों का संचार होता है जैसे इनकी आत्मा अनायास ही जाग्रत हो उठी है। साधारण उपकरणों के सहारे स्वर्णकार, मूर्तिका, शिल्पकार और संगीतज्ञ युगों से उत्कृष्ट कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करते आ रहे हैं।

जीवन के कलाकार के पास कौन से उपकरण है? उसके पास मिट्टी, सोना, लकड़ी, पत्थर, रंग आदि के सदृश -कौन-सी वस्तु है, जिसे सफलता से सांचे में ढालना है। उसका कच्चा, पदार्थ क्या है? वह किन औजारों की सहायता से अपनी कला का सौन्दर्य प्रकट करता है।

जीवन के शिल्पकार के पास मनुष्य का जीवन ही कच्चा लोहा या सोना है। उसका जीवन तथा परिस्थितियाँ टेढ़ी, तिरछी, नुकीली, पथरीली, विषमता से पूर्ण हो सकती हैं। कांटों में पूर्ण उसका पंथ हो सकता है। जिस प्रकार शिल्पकार के हाथ में कैसी भी शक्ल का पत्थर कलात्मक कृति के रूप में निखर कर सप्राण हो जाता है, उसी प्रकार जीवन का सच्चा कलाकार किसी भी स्थिति; वातावरण प्रतिकूलता से भयभीत नहीं होता। नाना विषमताओं के होते हुये भी वह अपनी कला का चमत्कार प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर देता है।

जीवन कलाकार जीवन के ऊबड़-खाबड़ मार्ग को समतल बना लेगा, कंटकाकीर्ण स्थान को स्वच्छ कर जीवन के माधुर्य को स्थिर रखेगा। जहाँ मार्ग नहीं दीखता, वहाँ मार्ग बना लेगा। नर्क में भी वह अपनी विद्याबुद्धि के बल पर एक छोटे से स्वर्ग का निर्माण कर सकेगा। जीवन के दिन सप्ताह, मास और वर्ष वे कच्ची धातु हैं, जिन्हें जीवन के शिल्पकार को अपनी कला के स्पर्श से सजीव और मधुर बनाना होता है। महत्व बाह्य भौतिक साधनों या उपलब्ध पदार्थों का नहीं, उसकी कला जीवन, दर्शन योजना तथा दृष्टि कोण का है।

जीवन-कला का उद्देश्य

जीवन-कला का उद्देश्य क्या है? सौंदर्य की सृष्टि, साधारण वस्तुओं की सहायता से नवीनता की उत्पत्ति, सुख-सुविधा का निर्माण, जीवन में मिठास का आनन्द। जीवन का कलाकार उस तथ्य का अनुभव करता है जो सत्य है, शिव है, सुन्दर है। विघ्न-बाधा संकुल परिस्थितियों में भी वह सुन्दर जीवन की सृष्टि करता है। विषमता में भी वह सौन्दर्य की आभा निखरता है। जब जीवन क्षितिज पर काले-काले भयंकर मेघ छाये रहते हैं और विद्युत कौंधती रहती है, तब भी वह काले बादलों के किनारे-किनारे दीखने वाली रुपहली क्षीण आभा को देखती है। कांटों से घिरा होने पर भी उसे पुष्प ही दिखायी देता है।

एक विचारक का कथन है—"इस संसार में अनेक प्रकार के पुण्य और परमार्थ है। शास्त्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नाना प्रकार के धर्म अनुष्ठानों का सविस्तार विध-विधान है और उनके सुविस्तृत महात्म्यों का वर्णन है। दूसरों की सेवा, सहायता करना पुण्य कार्य है। इससे कीर्ति आत्मसंतोष और सद्गति प्राप्त होती है। या इन सबसे भी बढ़कर एक पुण्य परमार्थ है और वह है--आत्म निर्माण। अपने दुर्गुणों को, विचारों को, कुसंस्कारों तथा ईर्ष्या, तृष्णा, क्रोध, द्रोह, चिन्ता, भय, वासनाओं को विवेक की सहायता से आत्मज्ञान की अग्नि में जला देना इतना बड़ा धर्म है, जिसकी तुलना सहस्रों अश्वमेधों से नहीं हो सकती। अपने अज्ञान को दूर कर मन-मन्दिर में ज्ञान का दीपक जलाना भगवान की सच्ची पूजा है। अपनी मानसिक तुच्छता, दीनता, हीनता, दासता को हटाकर निर्भयता, सत्यता, पवित्रता एवं प्रसन्नता की आत्मिक प्रवृत्तियाँ बढ़ाना करोड़ों मन सोना दान करने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।"

जीवन-कलाकार अपना एक निश्चित उद्देश्य रखता है तथा सदा उसी की ओर बढ़ता रहता है। इन उद्देश्यों निर्माण का वह एक सुनिश्चित,सुकल्पित लक्ष्य के द्वारा करता है और उनके प्रति सदा दृढ़ रहता है। आप कहेंगे ऐसे सुन्दर जीवन लक्ष्य सिद्धि के लिए तो असंख्य भौतिक उपकरण, नाना वस्तुएं, असंख्य साज-समान, ढेर के ढेर वस्त्र, फैशनेबिल वस्तुएं चाहिये। किन्तु यह बात गलत है। वास्तव में इनकी आवश्यकता नहीं है।

जीवन के कलाकार बनिए और अपनी छोटी शक्तियों और अल्पसाधनों द्वारा ही जीवन को सुन्दर, मधुर और परिष्कृत बनाना प्रारम्भ कर दीजिये। यदि आपके पास मनचाही सौंदर्य/वृद्धि की वस्तुएं नहीं है तो निराश होने की आवश्यकता नहीं है। निराशा तो एक प्रकार की नास्तिकता है। आपके पास जो टूटी-फूटी साधारण वस्तुएं, अल्प साधन गरीबी की सम्पदा है, उसी के सहारे अपनी लका का चमत्कार दिखाइये।

अन्धकार का विनाश

दीपक को देखिए। जब चारों ओर घनघोर अन्धकार छाया रहता है, छदाम की मिट्टी, अधेले के तेल और दमड़ी रुई वाला दीपक शुभ्र प्रकाश से घर भर देता है, जब कि सहस्रों रुपए वाली बिजली की रोशनी क्षण भर में फेल ही जाती है। दीपक कभी यह रोना नहीं रोता कि मेरे पास इतने मन तेल होता, इतने सेर रुई होती, इतना बड़ा आकार होता तभी प्रकाश करता। आप भी दीपक के समान अल्पसाधनों से अपनी मौलिक प्रतिभा का प्रदर्शन कीजिये। दीपक का छोटा कार्य है। बेशक हम मानते हैं, पर उस छोटे पन में भी सफलताका उतना ही महत्व है, जितना सूर्य तथा चन्द्र के चमकने की सफलता का है।

फिर आप अपनी गरीबी अथवा अल्पसाधनों से क्यों परेशान हैं। आपकी जो परिस्थिति, औकात या हैसियत है उसी में एक सुन्दर कलात्मक जीवन व्यतीत किया जा सकता है। उसी छोटेपन में सफलता के दर्शन किये जा सकते हैं। अपनी हैसियत के अनुसार व्यसनों और कुविचारों से बचते हुए छोटी शक्ति से ही आत्म-निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिजीये।

उन आदतों का परित्याग कर दीजिये जो असुन्दर, निंद्य और कुरूप हैं। आपकी अपेक्षा व्यय की आदत जीवन में असंख्य कठिनाइयों कोनिमंत्रण देना है। इसी प्रकार व्यसन और व्यभिचार कुरूप और सर्वथा निंद्य आदतें हैं। वस्तुतः इन गन्दी आदतों का संहार कर दीजिये। इसी प्रकार नीच विचार रखना एक खतरा है। ईर्ष्या, क्रोध, घृणा, झूठ, छल-कपट और स्वार्थ की नीतियों का अवलम्बन लौकिक एवं पारलौकिक दोनों ही दृष्टियों से कुरूप, हानिकारक और दुःखदायी है भ्रष्टाचार के मार्ग पर चलने वालों को पग-पग पर घृणा, अपयश, तिरस्कार अप-

शेष पृष्ठ २० पर देखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालबन्धु

अगस्त सन् १९५५ ई०

प्रीत का गीत

('हफीज' जालन्धरी)

अपने मन में प्रीत
बसाले
अपने मन में प्रीत

मन मन्दिर में प्रीत बसाले, प्रीत बसाले प्रीत बसाले।
दिल की दुनिया करले रोशन, अपने घर में ज्योति जगाले
प्रीत है तेरी रीत पुरानी, भूल गया ओ भारत वाले।
भूल गया ओ भारत वाले
प्रीत है तेरी रीत
बसाले
अपने मन में प्रीत

क्रोध कपट का उतरा डेरा, छाया चारों ओर अंधेरा
यह है डाकू, वह है [1]रहजन, एक से बढ़कर एक लुटेरा।
[2]जाहिरदारों की संगत में, कोई नहीं है संगी तेरा।
कोई नहीं है संगी तेरा
मन है तेरा मीत
बसाले
अपने मन में प्रीत

नफरत एक [3]आजार है प्यारे, दुख का दारू प्यार है प्यारे।
आजा असली रूप में आजा, तू ही प्रेम अवतार है प्यारे।
यह हारा तू सब कुछ हारा, मन के हारे हार हैं प्यारे।
मन के हारे हार हैं प्यारे
मन के जीते जीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसाले
अपने मन में प्रीत
देख बड़ों की रीत न जाए, सर जाए पर प्रीत न जाए।
मैं डरता हूँ कोई तेरी, जीती बाजी जीत न जाए।
जो करना है जल्दी करले, थोड़ा समय है बीत न जाए।
थोड़ा समय है बीत न जाए
समय न जाए बीत
बसाले
अपने मन में प्रीत

१—रहजन--रास्ता लूटने वाला २—वाहिरदारों---कपटी ३--आजार--दुख

हमारी कृषि

भाग १

कक्षा के विद्यार्थियों के लाभ के लिए अनुभवी और योग्य साराध्यापक श्री दामोदर सिंह वर्मा राजन्य ने यह संक्षिप्त पुस्तिका प्रश्नोत्तर रूप में लिखी है। मूल्य छः आना कमीशन तिहाई।

कृषि प्रश्नोत्तर।

जूनियर हाई स्कूल परीक्षा में कृषि एक अनिवार्य विषय है। इसी विषय के १९५२ से १९५५ तक के वार्षिक परीक्षा के प्रश्न पत्रों का संग्रह करके श्री दामोदर सिंह वर्मा राजन्यसार अध्यापक (स्वर्ण पदक प्राप्त) ने उत्तर में लिखे हैं। उत्तर सरल भाषा तथा सुन्दर शैली में हैं। पुस्तक का मूल्य ।=) और कमीशन चौथाई है।

पुस्तकें मिलने का पता—

गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा

(पृष्ठ १६ का शेष)

मान और उपहास का सामना करना पड़ता है। अतः इन सब कृतियों से मुक्त रहिये।

जीवन का सच्चा कलाकार वह है जो अपने अल्पसाधनों के द्वारा अपने जीवन को प्रतिष्ठित, सरस और सुन्दर बनाता है। उसकी विशेषता, उसकी योजना एवं जीवन दृष्टि है। साधन अथवा परिस्थितियाँ नहीं।

परीक्षा की कापी

प्रति हजार ३½" × ८½' साइज की कवर पर आपके स्कूल का नाम छापा जायगा।

	८पेजी	१२ पेजी	१३ पेजी
१० lb का कागज	२४॥)	३३)	४४)
८lb. का कागज	२२)	२७।)	३८॥)

मिलने का पता—

गुप्ता ब्रदर्श मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लालच का फन्दा

ले०—भगवानसिंह चन्देल, 'चन्द्र' चन्देल-भगवन, आलमपुर।

एक पूर्णिमा की यामिनी में, ब्रह्मा ने दरबार किया।
सृष्टी के जीवों को चटपट, अपने थल पर बुला लिया॥
नाना रूप-रंग के वाहन, नाना वस्त्र वेष धारी।
शिव बरात सा ठाट जमा था, सब की ऐसी तैयारी॥
बोला—सृष्टा सुनो, जीवगण, मुझको तुम सब हो प्यारे।
देख तुम्हारे करतब सुन्दर, मन में अति हर्ष हमारे॥
तुम चाहो तो, तुम्हें भूमि पर, अधिक काल जीने दूंगा।
आयुष्मान बनाकर सबको, सुखी जगत में कर दूंगा॥
अपनी आयु वृद्धि की चर्चा, ब्रह्मा से जो सुन पाई।
सब जीवों के हृदय देश में खुशी मनोहर तब छाई॥
जलचर-थलचर नभचर प्राणी, प्रति विनीत वाणी बोले।
"हमको स्वामी चिन्ता यह है, मरकर झट बन्धन खोले॥
गर्धव से बोले ब्रह्मा जी, "नहीं आप हैं कुछ कहते।"
'कुम्भकार के गेह नेह में, आप सदा भूले रहते॥
खाओ फूट, दुलत्ती झाड़ो, तुमसे सृष्टि धन्य रहती।
पिल जाओ अपनी धुन पर तो वाह वाह दुनिया कहती॥
बोला—शीश झुकाकर गदहा, "जी हुजूर कैसी मर्जी।
मेरा संकट मुझे याद है, बात नहीं कहता फ़र्जी॥
तुमसे छिपी नहीं आफत हैं, मैं चाहूँ थोड़ा जीना।
मेरे जीवन की वर्षों को, चाहे जिसे बांट देना॥
कुत्ते का जब नंबर आया, उसने अपनी पूंछ हिलाई।
बोला—"मैं तो इस जीवन से, नफरत करता हूँ भाई॥
दर दर के टुकड़े खाकर के, निशि-दिन ठुकराया जाऊं।
बात नहीं कोई भी सुनता, चाहे कितना खिसयाऊं॥
मैं भी इस जीवन से ऊबा, मेरी आयु बांट देवें।
स्वामी भक्त होने का गौरव, वापस मुझसे ले लेवें॥"
फिर बारी बंदर की आई, बोला—"मैं तो धाय गया।
नर हूँ या बानर मैं ही हूँ, रूप अनोखा खूब दिया॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112 720

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरती कहती तू लचार है, तेरा रूप नहीं अपना।
प्रात लेय जो नाम हमारा, रोटी मिलना हो सपना॥
इन जीवों की घृणा आयु पर, मानव सुनकर चकराया।
मन में बोला—"बड़े पूर्ख हैं, सुभ अवसर को ठुकराया॥
सच है, बुद्धि-हीन क्या जीवन, ये मजा मौज हैं खोते।
आयु बढ़ाने के मौके पर, हाय हाय करके रोते॥
बोला, मानव सृष्टा से तब, "मुझे आयु यह मिल जावे।
सुखमय जीवन मेरा होवे, स्वर्ग धरा पर आ जावे॥"
बोला, ब्रह्मा—"रे मानव तू चाहे तो आयुष ले ले।
सब जीते हैं अल्प काल तक, तू सौ का तौफ़ा ले ले॥
उसी रोज से नर जीवन है, लंबा इतना बन आया।
सार-हीन संसार मनुज ने, सार-पूर्ण यह करपाया॥
दुख है यही एक भारी अब, बूढ़ा जब मानव होता।
युवा अवस्था के खो जाने पर, जरा जीर्ण दुख से रोता॥
जिन जीवों से आयु बढ़ा कर, खुशी खुशी मन में रहता।
उनके बदले, उनका संकट, ले अपना जीवन दहता॥
पाकर युवा आयु मानव को, विविध भार ढोना पड़ता।
मानव तन से गधा पार्ट का, पार्ट अदा करना पड़ता॥
फिर आता है वृद्ध काल-तब, गोल मोल चेहरा बनता।
बाल सफेद दांत गिर जाते, मुंह बानर सा है फबता॥
बैठ रहो द्वार रक्षक सम, यही बला सिर पर आती।
स्वामी भक्त कुत्ते से भौंको, बात सुनी कब है जाती॥
नर जीवन की करणी पर, आँसू स्वयं गिराता॥
पछतावे की आयु बिताकर, जरा जरा पर शरमाता॥
तरुणाई की मोहकता वश, नर भूल भूल पथ जाता।
लालच का फन्दा जग में यह, अद्भुत दुख दिखाता॥

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कक्षा ६ व ७ का नवीन संशोधित | ६—शारीरिक विकास (फिजिकल-कल्चर) प्रति सप्ताह ४० मिनट के

कक्षा ६ व ७ का नवीन संशोधित पाठ्य-क्रम

जो जौलाई सन् १९५४ से चालू है

(गवर्नमेंट गजट दिनांक ६ अगस्त सन् १९५५ के अनुसार)

पाठ्य-विषय

१—बेसिक क्राफ्ट तथा सम्बधित कला।

(प्रति सप्ताह ४० मिनट के १२ घंटे)

निम्न विषयों में से एक :

(अ) कृषि तथा सम्बन्धित कला (उन विद्यालयों के लिए जहाँ १० एकड़ भूमि प्राप्त हो

(ब) कताई-बुनाई तथा सम्बन्धित कला।

(स) काष्ठ-कला तथा सम्बन्धित कला।

(द) पुस्तक कला तथा सम्बन्धित कला।

(य) धातु-कला तथा सम्बन्धित कला।

(फ) चर्म-कला तथा सम्बन्धित कला।

(क) सिलाई तथा सम्बन्धित कला।

(ख) गृह-शिल्प तथा सम्बन्धित कला (केवल बालिकाओं के लिए।

२—हिन्दी अनिवार्य संस्कृत सहित (प्रति सप्ताह ४० मिनट के ८ घंटे)।

३—गणित (अंकगणित, बीजगणित तथा रेखागणित) (प्रति सप्ताह ४० मिनट के ६ घंटे)

४—सामाजिक विषय (इतिहास, भूगोल तथा नागरिकशास्त्र) (प्रति सप्ताह ४० मिनट के ५ घंटे)।

५—सामान्य-विज्ञान (प्रति सप्ताह ४० मिनट के ४ घंटे)।

६—शारीरिक विकास (फिजिकल-कल्चर) प्रति सप्ताह ४० मिनट के ३ घंटे)।

७—निम्न वैकल्पिक विषयों में से कोई दो (प्रति सप्ताह ४० मिनट के ८ घंटे)—

(अ) अंग्रेजी।

(ब) एक आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी के अतिरिक्त बंगाली, पंजाबी, सिंधी, उर्दू, गुजराती, मराठी।

(स) प्राचीन भाषाएं (संस्कृत, अरबी या फारसी)

(द) संगी। (य) वाणिज्य। (म) आर्ट।

नोट १—इस नवीन संशोधित कोर्स के अनुसार कक्षा ६ व ७ में क्राफ्ट के विषयों के साथ आर्ट का विषय सम्बंधित कला के रूप में तो रहेगा ही, साथ ही ऐच्छिक विषय बजाय एक के दो कर दिये हैं और ऐच्छिक विषयों में आर्ट विषय भी बढ़ा दिया है। क्राफ्ट में चमड़े और टेलरिंग का विषय बढ़ा हुआ है, परन्तु, ग्राम्य-ज्ञान और स्वास्थ्य विज्ञान के विषय छोड़ दिये गये हैं। सामान्य-विज्ञान अब अनिवार्य नहीं रहा। कक्षा ८ में पुराना कोर्स ही पढ़ाया जायगा।

नोट २—इस समय जहाँ साइंस का पढ़ाया जाना कठिन हो, वहाँ साइंस की जगह पर जिला निरीक्षक की अनुमति से कोई स्थानीय क्राफ्ट का विषय पढ़ाया जा सकता है।

नोट ३—आप अपने स्कूल की विषयवार संख्या प्रत्येक कक्षा की शीघ्र भेजने की कृपा करें।

भवदीय—

के० एन० शाह

रजिस्ट्रार स्थानीय जू० हा० स्कूल परीक्षा

मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Shiksha-Sudha (अगस्त १९५५ ई०) Regd. No A. 497

जू० हा० स्कूल परीक्षा के

प्रश्नोत्तर

कृषि प्रश्नोत्तर	चार आना
विज्ञान प्रश्नोत्तर	छः आना
प्रश्नोत्तर आर्ट, क्राफ्ट	बारह आना
,, व्यापारिक शिक्षा व व्यापार प्रणाली	छः आना
,, भूगोल	आठ आना
,, इतिहास	आठ आना
,, इतिहास, भूगोल	सवा रुपया
,, गणित	एक रुपया
,, ज्यामेट्री	आठ आना
,, स्वास्थ्य रक्षा	आठ आना
,, ग्राम्यज्ञान	बारह आना
प्रश्नोत्तर हिन्दी व्याकरण, साहित्य	चार आना
,, अपठित, रचना	आठ आना
इंगलिश प्रश्नोत्तर	एक रुपया
प्रश्नपत्र पठित, अपठित	आठ आना
संस्कृत प्रश्नोत्तर	चार आना

उपयोगी प्रश्नोत्तरियाँ

सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग १	छः आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग २	आठ आना
सरल भूगोल प्रश्नोत्तरी भाग ३	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी प्राचीन भारत	चार आना
सरल प्रश्नोत्तरी मध्यकालीन भारत	आठ आना
सरल प्रश्नोत्तरी अर्वाचीन भारत	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग १	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग २	आठ आना
सुबोध शरीर विज्ञान, स्वच्छता भाग ३	आठ आना

हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकें

इण्टर, हाई स्कूल, जूनियर हाई स्कूल तथा हिन्दी की अन्य परीक्षाओं जैसे विशारद, प्रभाकर तथा प्रथमा आदि के लिए उत्तम पुस्तकें।

	मू०	कमीशन
हिन्दी साहित्य कोष	५)	चौथाई
काव्य चन्द्रिका	१।)	,,
निबन्धावली	१॥)	तिहाई
निबन्ध भूषण	१)	,,
हिन्दी व्याकरण परिचय	१)	,,
हिन्दी व्याकरण सार	।=)	,,
कहावत मुहावरे	॥।)	,,
अनुवाद मंजरी	॥)	,,
अन्त्याक्षरी पद संग्रह	॥)	चौथाई
सुमन संचय	१॥)	,,

भूगोल की उत्तम पुस्तकें

भूप्रदर्शिनी	२॥	कमीशन तिहाई
जगतमान चित्रावली	३)	,,
एशियामान चित्रावली	१॥)	,,
भारतमान चित्रावली	१॥)	,,
विश्व भूवर्णन	॥=)	,,
एशिया भूवर्णन	।-)	,,
भारत भूवर्णन	॥)	आधा
प्राकृतिक भूगोल भाग १, २	=)	तिहाई
,, , भाग ३	=)	,,

"गुप्ता-ब्रदर्स" की पुस्तकों पर दिये जाने वाले कमीशन व अन्य शर्तों के लिए निम्न पते से सूची पत्र मुफ्त मँगाएं।

मैनेजर—गुप्ता ब्रदर्स मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

Printed by Sagar Mal Garg at Gupta Bros Ptg Works, Mandi Dhanaura

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri